



मुसलमान के लिए

महत्वपूर्ण अहकाम व मसाईल

मेरे इस्लामी भाईयो और बहनो! -अल्लाह आप पर दया करे- ज्ञात होना चाहिए कि हमारे ऊपर चार मसाईल का सीखना अनिवार्य है :

① **पहला मसअला : ज्ञान :** इस से मुराद अल्लाह तआला का ज्ञान, उसके पैगम्बर ﷺ का ज्ञान और इस्लाम धर्म का ज्ञान है। क्योंकि बिना ज्ञान और जानकारी के अल्लाह की इबादत करना वैध नहीं, और जो आदमी ऐसा करता है उसका अन्जाम गुमराही और पथ भ्रष्टता है, और ऐसा करने में वह ईसाईयों की मुशाबहत (छवि) अपना रहा है।

② **दूसरा : अमल :** अतः जिस आदमी ने ज्ञान प्राप्त किया और उसके अनुसार अमल नहीं किया, उस ने यहूदियों की मुशाबहत अपनाई, क्योंकि उन्होंने ने ज्ञान तो प्राप्त किया, किन्तु उसके अनुसार अमल नहीं किया। तथा शैतान के हीलों में से एक हीला यह भी है कि वह मनुष्य के दिमाग में यह वहम डालते हुए उसे ज्ञान से घृणा दिलाता है कि वह ऐसी अवस्था में अपनी अज्ञानता के कारण अल्लाह के यहाँ मा'जूर (क्षम्य) समझा जाएगा। हालाँकि उसे नही मालूम कि जिस मनुष्य के लिए ज्ञान प्राप्त करना सम्भव है और उसने ज्ञान प्राप्त नहीं किया तो उस पर हुज्जत कायम हो गई। और यही हीला नूह अलैहिस्सलाम की कौम का भी था जिस समय : **“उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया।”** ताकि उन पर हुज्जत कायम न हो।

③ **तीसरा: दावत :** (जो कुछ धर्म-ज्ञान आप ने सीखा है उसकी ओर दूसरों को दावत देना) क्योंकि उलमा (धर्मज्ञानी) और दावत का कार्य करने वाले ही पैगम्बरों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं, और अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल पर धिक्कार किया है; क्योंकि वे लोग **“आपस में एक दूसरे को बुरे कामों से जो वे करते थे, रोकते न थे, जो कुछ भी यह करते थे यकीनन वह बहुत बुरा था।”** दावत और शिक्षा फर्जे किफाया है, यदि यह कर्तव्य इतने लोग अन्जाम देते हैं जो पयाप्त हैं तो कोई भी गुनहगार नहीं होगा, और अगर सभी लोग इसे छोड़ देते हैं, तो सब के सब गुनहगार होंगे।

④ **चौथा : कष्ट पर धैर्य करना :** अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने, उस पर अमल करने और उसकी ओर दावत देने के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों और कष्टों पर सब्र करना।

हम ने इस पुस्तक में संछेप को ध्यान में रखने के साथ-साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शुद्ध रूप से प्रमाणित बातों का उल्लेख किया है, हम सम्पूर्णता का दावा नहीं करते, क्योंकि सम्पूर्णता को अल्लाह ने अपने लिए विशिष्ट किया है, बल्कि यह एक निम्न योग्यता वाले व्यक्ति का प्रयास है, यदि यह उचित है तो अल्लाह की ओर से है, और यदि ग़लत है तो यह हमारे नफ्स और शैतान की ओर से है, और अल्लाह और उसके पैगम्बर इस से बरीयुज़्ज़िम्मा हैं, और अल्लाह उस आदमी पर दया करे जो उद्देश पूर्ण रचनात्मक आलोचना के द्वारा हमें हमारी त्रुटियों और कमियों से अवगत करे।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि इस पुस्तक के संकलन, इसकी छपाई और वितरण, इसके पाठन और शिक्षा में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को बेहतरीन प्रतिफल से सम्मानित करे, इसे उनकी ओर से स्वीकार करे और उनके अज़्र व सवाब को दूना करे।

अल्लाह तआला ही सर्वाधिक ज्ञान रखने वाला है, तथा अल्लाह तआला की दया और शान्ति अवतरित हो हमारे पैगम्बर व सरदार मुहम्मद ﷺ पर, और आप की सभी संतान और साथियों पर।

इस्लामी दुनिया के विद्वानों और छात्रों के एक समूह ने इस किताब को सराहा और सिफारिश की है।

अधिक जानकारी, या इस किताब को मंगाने के लिए : साइट / [www.tafseer.info](http://www.tafseer.info) ईमेल / [hin@tafseer.info](mailto:hin@tafseer.info)

प्रथम संस्करण : रबीउल अब्वल, 1431 हि.

## विषय सूची

विषय	पेज नं.
क़ुरआन मजीद तिलावत करने की फ़ज़ीलत, सूरतुल फ़ातिहा	2
क़ुरआन करीम के अन्तिम तीन पारे और उनकी संछिप्त तफ़सीर	4
मुसलमान के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न	71
दिलों के कर्म	88
एक गंभीर बात-चीत	99
ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही	117
मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही	119
तहारत	121
हैज़ और इस्तिहाज़ा के मुसाल	126
इस्लाम में औरतों का मुक़ाम	128
नमाज़	132
ज़कात	138
रोज़ा	142
हज्ज तथा उम्मा	145
विभिन्न लाभदायक बातें	150
शरई झाड़-फूँक	155
दुआ	162
कुछ अहम दुआएं	164
लाभदायक व्यापार	169
सवेरे-सांझ की दुआएं	171
महान सवाब वाले कथन और कर्म	174
ऐसे काम जिन्हें करना निषिद्ध है	181
सदा के लिए जन्नत या जहन्नम की ओर	185
वुजू का तरीका	
नमाज़ का तरीका	
इान अनुसार कर्म की अनिवार्यता	

## कुरआन मजीद तिलावत करने की फ़ज़ीलत

कुरआन अल्लाह का कलाम है, और सारे कलामों से अफज़ल और बढ़कर है, इसकी बड़ाई सारी बातों पर उसी तरह है जिस तरह अल्लाह तआला की फ़ज़ीलत उसकी सृष्टि पर है, मुंह से निकलने वाली तमाम बातों में सब से उत्तम बात इसकी तिलावत है।

❖ **कुरआन सीखने सिखाने और पढ़ने वालों की फ़ज़ीलत में बहुत सी हदीसें आई हैं, जिन में से कुछ हदीसें यह हैं :**

❖ **कुरआन सिखाने की फ़ज़ीलत (स़वाब) :** नबी ﷺ का फ़र्मान है :

(خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ) “तुम में बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और सिखाए।” (बुख़ारी)

❖ **कुरआन पढ़ने की फ़ज़ीलत :** नबी ﷺ का फ़र्मान है :

(مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ وَحَسَنَةٌ بَعْشَرِ أَمْثَالِهَا) “जिस ने अल्लाह की किताब का एक हर्फ़ (अक्षर) पढ़ा उस के लिए एक नेकी है, और एक नेकी दस गुना नेकियों के बराबर है।” (तिर्मिज़ी)

❖ **कुरआन सीखने, उसे याद करने और तिलावत में मद्दात की फ़ज़ीलत :** नबी ﷺ का फ़र्मान है:

(مَثَلُ الَّذِي يَقْرَأَ الْقُرْآنَ وَهُوَ حَافِظٌ لَهُ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَّةِ وَمَثَلُ الَّذِي يَقْرَأُ وَهُوَ يَتَعَاهَدُهُ وَهُوَ عَلَيْهِ شَدِيدٌ فَلَهُ أَجْرَانِ) “उस आदमी की मिसाल जो कुरआन पढ़ता है और वह उसका हाफिज़ भी है, मुकर्रम और नेक लिखने वाले (फ़रिश्तों) जैसी है, और जो आदमी कुरआन बार-बार पढ़ता है और उसके पढ़ने में उसे कठिनाई होती है तो उसके लिए दो गुना सवाब है।” (बुख़ारी व मुस्लिम)

**और नबी ﷺ ने यह भी फ़रमाया :**

(يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: اقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرْتِّلُ فِي الدُّنْيَا فَإِنَّ مَنْزِلَتَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا)

“कुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा : कुरआन पढ़ता जा और चढ़ता जा, और उसी तरह से ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि संसार में पढ़ा करता था, क्योंकि तेरा मक़ाम अन्तिम आयत के पास है जिसे तू पढ़ेगा। (तिर्मिज़ी)

ख़ताबी कहते हैं कि असर में यह बात आई है कि : कुरआन की आयतें जन्नत की सीढ़ियों के बराबर हैं, अतः क़ारी को कहा जाएगा : कुरआन की जितनी आयतें तू पढ़ता है उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ता जा, तो जो पूरा कुरआन पढ़ लेगा वह आख़िरत में जन्नत की सब से ऊँची सीढ़ी पर पहुँच जाएगा, और जो कुछ हिस्सा पढ़ेगा वह उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ेगा, तो सवाब की सीमा वह होगी जहाँ उसकी क़िराअत का अन्त होगा।

❖ **उस व्यक्ति का स़वाब जिसके बच्चे ने कुरआन की ता'लीम हासिल की:** नबी ﷺ का फ़र्मान है :

(من قرأ القرآن وتعلمه وعمل به ألبس يوم القيامة تاجاً من نور ضوءه مثل ضوء الشمس، ويكسى والداه حلّتين لا يقوم بهما الدنيا فيقولان: بم كسبنا؟ فيقال: بأخذ ولدكما القرآن) الحاکم.

“जिसने कुरआन पढ़ा, उसे सीखा और उसके अनुसार अमल किया तो उसके वालिदैन को क़ियामत के दिन नूर का ताज पहनाया जाएगा, जिसकी प्रकाश सूरज की किरण की जैसी होगी, और उन्हें दो ऐसे जोड़े पहनाए जाएंगे जिनकी बराबरी संसार नहीं कर सकती, तो वे पूछेंगे : यह हमें किस अमल के कारण पहनाया गया है? तो जवाब दिया जाएगा: तुम्हारी औलाद के कुरआन सीखने के कारण।” (ह़ाकिम)

❖ **आख़िरत में कुरआन पढ़ने वालों के लिए कुरआन की शिफ़ाअत :** नबी ﷺ का फ़र्मान है :

(اقْرءُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِأَصْحَابِهِ) مسلم  
“कुरआन पढ़ा करो, इसलिए कि वह क़ियामत वाले दिन अपने पढ़ने वाले के लिए शिफ़ारिशी बन कर आएगा।” (मुस्लिम)

**और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया :** (أحمد والحاکم)

“रोज़ा और कुरआन बन्दे के लिए क़ियामत के दिन शिफ़ारिश करेंगे।” (अहमद और ह़ाकिम)

❖ **कुरआन पढ़ने और सीखने के लिए इकट्ठा होने वालों का स़वाब :** नबी ﷺ का फ़र्मान है :

(وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللَّهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَيَتَدَارَسُونَ بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَقَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ) أبو داود

“जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में इकट्ठा होकर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं, और एक दूसरे को उसका दर्स देते हैं तो उन पर (अल्लाह की ओर) से शान्ति नाज़िल होती है, और रहमत उन्हें ढांप लेती है, और फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने पास मौजूद फ़रिश्तों में उनका ज़िक्र फ़रमाता है।” (अबूदाऊद)

❖ **कुरआन की तिलावत के आदाब** : इब्ने कसीर رحمته ने कई एक आदाब बताए हैं जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : **1-** कुरआन पढ़ने वाला व्यक्ति पाकी के बिना न तो कुरआन छुए और न पढ़े, **2-** तिलावत करने से पहले मिस्वाक करे, **3-** अच्छा कपड़ा पहने, **4-** का'बा की ओर चेहरा करे, **5-** जमाही आने लगे तो कुरआन पढ़ने से रुक जाए, **6-** तिलावत करते समय बिना ज़रूरत बात न करे, **7-** ध्यान के साथ पढ़े, **8-** वादे की आयतों पर ठहर कर अल्लाह से मांगे और सज़ा वाली आयतों के पास पनाह चाहे, **9-** कुरआन खुला हुवा न छोड़े और न ही उस पर कोई चीज़ रखे, **10-** तिलावत करते समय कारी एक दूसरे पर अपनी आवाज़ ऊँची न करें, **11-** और बाज़ार, शोर और हल्ला वाली जगह पर कुरआन की तिलावत न करे।

❖ **कुरआन की तिलावत कैसे की जाए** : अनस رحمته से नबी ﷺ की किराअत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया : आप तिलावत करते समय अपनी आवाज़ को खींचते थे, जब आप بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ते तो بِسْمِ اللَّهِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, الرَّحْمَنِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, और الرَّحِيمِ के साथ अपनी आवाज़ को खींचते।

❖ **तिलावत के सवाब का कई गुना बढ़ना** : जो व्यक्ति इज़्लास के साथ कुरआन पढ़ेगा वह सवाब का हकदार है, लेकिन उसका यह सवाब उस समय कई गुना बढ़ जाता है जब वह दिल को हाज़िर करके ध्यान देकर और समझ कर पढ़ता है, तो हर हर्फ़ (अक्षर) के बदले एक से लेकर सात सौ गुना तक उसे नेकी मिलती है।

❖ **दिन और रात में कुरआन की तिलावत की मात्रा** : सहाबए किराम رضي الله عنهم ने हर दिन के लिए एक हिस्सा मुक़रर (नियुक्त) कर रखा था, और उनमें से किसी ने सात दिन से पहले कुरआन ख़तम करने की पाबन्दी नहीं की, बल्कि तीन दिन से कम में कुरआन ख़तम करने से रोका गया है।

इसलिए मेरे भाई कुरआन की तिलावत के लिए आप अपना समय लगाइए और हर दिन के लिए एक हिस्सा नियुक्त कर लीजिए जिसकी हर हाल में पाबन्दी किजिए, क्योंकि थोड़ा सा काम जिसे बराबर किया जाए ज़्यादा करने से बेहतर है जिसकी पाबन्दी न की जाए। यदि आप भूल गए या सो गए तो उसे दूसरे दिन पढ़ लीजिए, आप ﷺ का फ़र्मान है :

(مَنْ نَامَ عَنْ حُزْبِهِ أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَقَرَأَهُ فِيمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَصَلَاةِ الظُّهْرِ كُتِبَ لَهُ كَأَنَّمَا قَرَأَهُ مِنَ اللَّيْلِ)

“जो अपने मुक़रर हिस्से या उसमें से कुछ को बिना पढ़े सो जाए फिर उसे अगले दिन फ़ज्र और ज़ूह के बीच पढ़ ले तो वह उसके लिए उसी तरह लिखा जाता है गोया कि उसने उसे रात ही में पढ़ी हो” (मुस्लिम)

और आप उन में से न होजाएं जिन्होंने ने कुरआन को छोड़ दिया या उसे भूला दिया, यह छोड़ना किसी भी प्रकार का क्यों न हो, जैसे तिलावत छोड़ देना, या तर्तील छोड़ देना, या ध्यान न देना, या उसके अनुसार काम न करना, या उस के माध्यम से शिफ़ा न चाहना।

## सूरतुल फातिहा

- 1 अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।
- 2 सब तारीफें सर्व संसार के पालनहार अल्लाह के लिए हैं।
- 3 बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।
- 4 बदले के दिन (क़ियामत) का मालिक है।
- 5 हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते और तुझ ही से मदद माँगते हैं।
- 6 हमें सीधा (सत्य) रास्ता दिखा।
- 7 उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आम किया, उन का नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न गुमराहों का।

## सुरतुल मुजादिला। - 64

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।
- 1 अवश्य अल्लाह तआला ने उस औरत की बात सुनी जो तुझ से अपने शौहर के बारे में झगड़ रही थी<sup>1</sup> और अल्लाह के आगे शिकायत कर रही थी, अल्लाह तआला तुम दोनों के प्रश्न व उत्तर को सुन रहा था<sup>2</sup> अवश्य अल्लाह सुनने देखने वाला है।
  - 2 तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं<sup>3</sup> (अर्थात् उन्हें मां कह बैठते हैं) वह हकीकत में उनकी माँ नहीं बन जाती<sup>4</sup> उनकी माँ तो वही है जिन के पेट से वह पैदा हुए<sup>5</sup>, अवश्य यह लोग ना पसन्दीदा और झूठी बात कहते हैं<sup>6</sup>, बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है<sup>7</sup>।
  - 3 जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करें फिर अपनी कही हुई बात को वापस ले लें<sup>8</sup> तो उनके जिम्मे आपस में एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले<sup>9</sup> एक गर्दन आजाद करना है<sup>10</sup>, इसके



- द्वारा<sup>11</sup> तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह तुम्हारे सभी कामों को जानता है<sup>12</sup>।
- 4 हां जो व्यक्ति न पाए उस के जिम्मे एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले दो महीनों के लगातार रोजे हैं<sup>15</sup>, और जिस व्यक्ति को इस की भी ताकत न हो<sup>14</sup> उस पर साठ गरीबों को खाना खिलाना है<sup>15</sup>, यह आदेश इस लिए है कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ<sup>16</sup>, यह अल्लाह तआला की मुकर्रर की हुई हदें (सीमाएँ) हैं<sup>18</sup> और काफ़िरों के लिए ही<sup>19</sup> दुखदायी अज़ाब<sup>20</sup> है।

करना है, चाहे दास हो या दासन, और एक राय यह भी है कि आयत में लौटने का अर्थ ज़िहार के बाद तलाक़ की ताकत रखने के बावजूद उसे पत्नी बना कर रखना है।

10 दोनों के एक दूसरे को हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है, इसलिए ज़िहार करने वाले के लिए उस समय तक सुहबत करना जायज़ नहीं है जब तक कि वह कफ़ारा न दे दे सुहबत करना जायज़ नहीं।

11 ऊपर बताए हुए आदेश द्वारा।

12 अर्थात् इसी का तुम्हें आदेश दिया जाता है, अथवा इस द्वारा ज़िहार करने से तुम्हें रोका जाता है।

13 अर्थात् जिस के पास गुलाम या लौंडी न हो और न ही इतना पैसा हो कि उस से वह कोई गुलाम या लौंडी लेकर आजाद कर सके तो उस पर लगातार दो महीने के रोजे हैं, इन दोनों महीनों में वह एक दिन का भी रोज़ा नहीं तोड़ सकता, और यदि बिना किसी मजबूरी के उसने किसी दिन का रोज़ा नहीं रखबा तो उसके पिछले सभी रोजे भंग होजाएंगे और उसे फिर से लगातार दो महीने रोजे रखने पड़ेंगे, और यदि उस ने इन दो महीनों के बीच जान बूझ कर दिन में या रात में संभोग कर लिया तो भी शुरू से फिर यह रोजे रखने पड़ेंगे।

14 अर्थात् जिसे लगातार दो महीने रोजे रखने की ताकत न हो।

15 हर गरीब को आधा सा'अु गेहूँ, खजूर, चावल या इसी तरह की कोई दूसरी खाने की चीज दे, उन्हें पकाकर खिलाना कि उनका पेट भर जाए या इतना देना जो उनका पेट भर दे दोनों जायज़ है।

16 अर्थात् हमने यह आदेश इसलिए दिए हैं ताकि तुम इस बात को स्वीकार करो कि अल्लाह ने इसी का आदेश दिया है, और इसी को शरीअत बनाया है इसलिए शरीअत की सीमाओं के पास आकर रुक जाओ और उस से आगे न बढ़ो और फिर दोबारा ज़िहार न करो जो कि नापसन्दीदा और हकीकत के खिलाफ बात है।

17 यह बताए हुए आदेश।

18 इसलिए तुम इस से आगे न बढ़ो क्योंकि उस ने तुमहें यह बता दिया कि ज़िहार गुनाह है, और उस का कफ़ारा जो ऊपर बताया गया क्षमा और बख़्शिश का माध्यम है।

19 जो अल्लाह की सीमाओं पर नहीं रुकते।

20 अर्थात् जहन्नम का अज़ाब है।

1 अर्थात् वह अपने शौहर के बारे में आप से जो झगड़ा कर रही थी उसे अल्लाह ने सुन लिया। उम्मुल् मुमिनीन आइशा رضي الله عنها रिवायत करते हुए फर्माती हैं : बड़ी बर्कत वाला है अल्लाह जो हर चीज सुन लेता है, मैं खोला बिन्ते सा'लबा की बात जो वह अपने शौहर के बारे में नबी صلى الله عليه وسلم से कह रही थीं सुन रही थी, कुछ बातें मैं नहीं सुन पा रही थी, वह अल्लाह के रसूल से अपने शौहर की शिकायत कर रही थीं और कह रही थीं : "अल्लाह के रसूल वह मेरी जवानी खाए, मैं ने अपना पेट उन के लिए फैलाया यहां तक कि जब मेरी उम्र छल ढाई और बच्चे होने बन्द होगए तो उन्होंने मुझ से ज़िहार कर लिया, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से शिकायत करती हूँ। आइशा फर्माती हैं अभी वह आप के पास से हटी भी नहीं थी कि जिब्रईल वय्य लेकर उतरे : उनके शौहर एक अन्सारी सहाबी थे जिन का नाम औस बिन सामित था।

2 अल्लाह तुम दोनों का झगड़ा सुन रहा था।

3 ज़िहार का मतलब है आदमी का अपनी बीवी से कहना : (أنت على كظهر أمي) (तू मुझ पर मेरी मां की पीठ की तरह है)। इस के ज़िहार होने में कोई विवाद नहीं है।

4 अर्थात् उनकी पत्नियाँ उनकी माँ नहीं हो जाती हैं, यह उनकी ओर से झूठी बात है, इस में ज़िहार करने वालों के लिए फटकार है।

5 उनकी माँ तो मात्र वही है जिन्होंने उन्हें जनम दिया है।

6 यकीनन ज़िहार करने वाले यह कह कर कि उनकी बीवियाँ उनकी मां समान हैं बहुत ही नापसन्दीदा बात कह रहे हैं, यह उनकी माताओं के लिए बहुत अपमान जनक बात है।

7 ज़ूर का अर्थ है : हकीकत के खिलाफ बात।

8 एवँ غفور दोनों मुबालगा के सेगें हैं, अर्थात् वह बहुत ही ज्यादा क्षमा करने वाला और बख़्शने वाला है, क्योंकि उसने कफ़ारा के जरिए इस नापसन्दीदा बात से छुटकारे का रास्ता पैदा कर दिया।

9 अर्थात् जो बात उन्होंने कही थी उसे वापस लेकर अपनी पत्नी से संभोग करना चाहें।

10 तो उस बात के कारण जो उन्होंने कही उन पर एक गर्दन आजाद

## سُورَةُ الْحَجَّاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ  
وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرِكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝۱  
مِنْكُمْ مِنْ نِسَائِهِمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ إِلَّا الَّتِي  
وَلَدْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ  
اللَّهَ لَعَفْوٌ غَفُورٌ ۝۲  
وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ  
لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّا ذَلِكُمْ تُوعَظُونَ  
بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝۳  
فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامَ شَهْرَيْنِ  
مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّا فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامَ سِتِّينَ  
مِسْكِينًا ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَبِالْحُدُودِ الَّتِي  
وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝۴  
إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنُوا  
كَمَا كَانَتْ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ يَبِّنَاتٍ وَلِلْكَافِرِينَ  
عَذَابٌ مُهِينٌ ۝۵  
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنْتَهَمُ بِمَا  
عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝۶

1 बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत करते हैं वह अपमानित किए जाएंगे, जैसे उन से पहले के लोग किए गए थे 2, और बेशक हम खुली आयतें उतार रहे हैं और काफिरों के लिए जलील करने वाला अज़ाब है। 3  
4 जिस दिन अल्लाह उन सब को दोबारा उठाएगा, फिर उन्हें उनके किए हुए अमल की जानकारी देगा 4, जिसे अल्लाह ने गिन रखा है 5, और जिसे यह भूल गए थे 6, और अल्लाह तआला हर चीज से अवगत (बाखबर) है 7।  
8 क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाशों और धरती को हर चीज को जानता है 8, तीन व्यक्तियों की कानाफूसी नहीं होती मगर अल्लाह उनका चौथा होता है 9, और न पाँच 10 की

मगर वह उनका छटा होता है, और न उस से 11 कम की और न उस से ज्यादा की मगर वह उनके साथ ही होता है 12 जहाँ भी वह हों 13 फिर कियामत के दिन उन्हें उनके अमल की जानकारी देगा 14, अवश्य अल्लाह हर चीज का जानकार है।  
15 क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोके दिया गया था 15? वह फिर भी उस मना किए हुए काम को दोबारा करते हैं, और आपस में पाप की और नाईसाफी की और रसूलों की नाफरमानी की 17, कानाफूसियां करते हैं। और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन शब्दों में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह ने नहीं कहा 18, और अपने दिल में 19 कहते हैं कि अल्लाह (तआला) हमें हमारे इस कहने पर सजा क्यों नहीं देता 20? उनके लिए नरक काफी है 21, जिसमें ये जाएंगे 22, तो वह कितना बुरा ठिकाना है 23।  
24 हे ईमानवालो! जब तुम कानाफूसी करो तो यह कानाफूसी पाप, उद्दण्डता और रसूल की नाफरमानी की न हो 24, बल्कि नकी और तक्वा की बातों पर कानाफूसी करो 25, और उस अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुम सब इकट्ठा किए जाओगे 26।  
27 कानाफूसी 27 तो शैतान का काम है 28, जिस से ईमान वालों को दुःख हो 29, परन्तु अल्लाह की मर्जी बिना वह 30

जाहिर सभी को जानता है उस से कोई भी बात छिपी नहीं रहती।  
11 अर्थात् उल्लिखित संख्या से न कम, जैसे एक और दो, और न ही उस से ज्यादा, जैसे छः और सात।  
12 अर्थात् वह जो कानाफूसी करते हैं उसे उसका ज्ञान होता है, उस में से कोई भी चीज उस से छुपी नहीं रहती।  
13 अर्थात् जिस जगह भी हों।  
14 जानकारी देगा ताकि वह जान लें कि उनकी कानाफूसियां उस से छुपी नहीं थी, और ताकि उस का बताना उन लोगों के लिए फटकार हो जो बुरी और नाहक कानाफूसियां करते हैं। और उनके खिलाफ प्रमाण और हुज्जत हो।  
15 यहूद के पास से कोई मुसलमान गुजरता तो वह आपस में कानाफूसी करने लगते यहाँ तक कि मुसलमान बुरा गुमान करने लगता तो अल्लाह तआला ने उन यहूदियों को ऐसा करने से रोका लेकिन वह नहीं रुके तो यह आयत उतरी।  
16 अर्थात् ईमानवालों की पीठ पीछे बुराई करना उन्हें तकलीफ देना और इसी तरह की चीजें जैसे : झूठ और अन्याय वाली कानाफूसियां।  
17 अर्थात् अल्लाह के रसूल विरोधी कानाफूसियां।  
18 इस से मुराद यहूद हैं वे जब नबी ﷺ के पास आते तो अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह न कह कर अस्सामु अलैक (अर्थात् : तुम पर मौत आए) कहते, और जाहिर यह करते कि वह आप को सलाम कर रहे हैं, पर उनके हृदय में यह होता कि आप की मृत्यु हो, इसके जवाब में नबी ﷺ मात्र (व अलैकुम) कहते। (अर्थात् तुम ने जो कहा वह तुम्हें ही आए)।  
19 अर्थात् आपस में।  
20 अर्थात् यदि मुहम्मद अवश्य नबी होते, तो उनके बारे में हमारी अपमान जनक बातें करने पर अल्लाह हमें ज़रूर अज़ाब देता। और एक राय अनुसार इसका अर्थ यह है कि यदि वह नबी होते तो हमारे बारे में जो वह (व अलैकुम) कहते हैं ज़रूर कबूल किया जाता और उसी समय हमें मौत आ जाती।  
21 अर्थात् उन्हें तुरन्त मारने और हलाक करने के बजाए अज़ाब के लिए नरक ही काफी है।  
22 अर्थात् चुसंगे।  
23 मसीर का अर्थ ठिकाना है। और वह नरक है।  
24 जैसा कि यहूद और मुनाफिकीन किया करते हैं।  
25 अर्थात् फरमाबदारी की और पाप न करने की कानाफूसी किया करो।  
26 और वह तुम्हारे आमाल का बदला देगा।  
27 अर्थात् पाप, अन्याय और रसूल की नाफरमानी की कानाफूसियां।  
28 शैतान की ओर से हैं किसी और की तरफ से नहीं, वहीं उन चीजों को सुन्दर बनाकर लोगों पर पेश करता और उन्हें गुम्राह करता है।  
29 ताकि वह ईमानवालों को भ्रम में लाकर दुःखित कर सके, कि वह छल कपट के निशाने पर हैं और उनके विरुद्ध साजिशें हो रही हैं।  
30 अर्थात् शैतान उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, अथवा यह कानाफूसियां जो जिन्हें वह सुन्दर बनाकर पेश करता है ईमान वालों को कुछ

1 मुहादह का अर्थ दुश्मनी और मुखालफत के हैं।  
2 यह उसी तरह अपमानित किए जाएंगे जैसे उन से पहले के लोग अपमानित किए गए थे।  
3 एक साथ एक ही हालत में उठाएगा, कोई ऐसा नहीं बचेगा जो न उठाया जाए।  
4 अर्थात् वह उन्हें उनके धिनाउने कर्तव्य से जो उन्होंने दुनिया में किए उन्हें अवगत करे ताकि उन पर दलील पूरी होजाए।  
5 अल्लाह ने उन सब को गिनी कर रखी है ऐसा नहीं होगा कि कोई छूट जाए।  
6 जिसे वह लोग भूल चुके हैं उसे भी वह लोग मौजूद और अपने नामए आमाल में लिखा हुआ पाएंगे।  
7 अर्थात् हर चीज से बाखबर है क्योंकि सभी चीजें उस की नज़रों के सामने है।  
8 उस का ज्ञान आकाशों और धरती की सारी चीजों को घेरे है, इस तरह से कि इन दोनों में जो चीजें भी हैं उन में से कोई भी उस से छुपी नहीं है।  
9 जो इस कानाफूसी को जानने में उनका साझी होता है।  
10 क्योंकि वह हर संख्या के साथ होता है कम हो या ज्यादा, छिपे और

उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें<sup>1</sup>।

**11** हे ईमानवालो! जब तुम से कहा जाए कि सभाओं में थोड़ा फैल कर बैठो, तो तुम जगह कुशाद करो<sup>2</sup>, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (विस्तार) देगा<sup>3</sup>, और जब कहा जाए उठ खड़े होजाओ, तो तुम उठ खड़े होजाओ<sup>4</sup>, अल्लाह तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाए हैं और जो इल्म दिए गए हैं पद ऊँचे कर देगा<sup>5</sup>, और अल्लाह तआला हर उस काम को जो तुम कर रहे हो अच्छी तरह जानता है।

**12** हे मोमिनो! जब तुम अकेले में रसूल से बात करना चाहो, तो अपनी इस अकेले में बात करने से पहले कुछ दान कर दिया करो<sup>6</sup>, यह<sup>7</sup> तुम्हारे हक में अच्छा है और पाक है<sup>8</sup>, हाँ यदि न पाओ तो अवश्य अल्लाह माफ करने वाला रहम करने वाला है<sup>9</sup>।

**13** क्या तुम अपनी अकेले की बातों से पहले दान करने से डर गए<sup>10</sup>? तो जब तुम ने यह न किया<sup>11</sup> और अल्लाह

नुकसान नहीं पहुँचा सकती, परन्तु यदि अल्लाह की यही मर्जी हो।

<sup>1</sup> अर्थात् ईमान वाले अपने सभी काम अल्लाह के हवाले करें, अल्लाह से शैतान की पनाह चाहें और उन कानाफूसियों की एकदम परवाह न करें जिन्हें वह सुन्दर बनाकर पेश करता है। बुखारी और मुस्लिम वगैरह ने इब्ने मस्जद رضي الله عنه से रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया : “जब तीन लोग हों तो उनमें से दो आदमी तीसरे को छोड़कर कानाफूसी न करें क्योंकि यह चीज उसे दुःखित और उदास कर देगी।

<sup>2</sup> इसमें अल्लाह तआला ने अच्छे अदब की शिक्षा दी है कि वह सभा में एक दूसरे के लिए फैलाव पैदा करें और उसमें तंगी न करें। कतादा और मुजाहिद कहते हैं, वह नबी ﷺ की सभा में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते थे, तो उन्हें आदेश मिला कि वे खुल कर बैठें, अर्थात् सभा का दायरा फैला हुआ रखें ताकि पीछे आने वालों के लिए बैठने की जगह रहे।

<sup>3</sup> अर्थात् तुम फैलाव पैदा करो अल्लाह जन्नत में तुम्हें कुशादगी अता करेगा, और यह हर उस सभा को शामिल है जिस में मुसलमान भलाई और नेकी हासिल करने के लिए इकट्ठा हुए हों, जंग का सभा हो या ज़िक्रा व अज़्कार और जुमुआ का, हर व्यक्ति अपनी उस जगह का ज़्यादा हकदार है जहाँ वह पहले से बैठा हो, लेकिन उसे चाहिए कि वह अपने भाई के लिए कुशादगी पैदा करे, नबी ﷺ से मरवी है कि आप ने फरमाया : **لا يقيم الرجل الرجل من : مجلسه ثم يجلس فيه ولكن تمشوا ونسوا** “कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को उसकी जगह से उठाकर न बैठे, लेकिन तुम कुशादगी और फैलाव पैदा करो”।

<sup>4</sup> अर्थात् जब सभा में बैठने वालों से अपनी जगह से उठ जाने के लिए कहा जाए ताकि उस जगह ज्ञानी और प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठ सकें तो उन्हें उठ जाना चाहिए।

<sup>5</sup> अर्थात् जो तुम में ज्ञानी हैं अल्लाह उनके पद ऊँचे कर देगा, अर्थात् संसार में प्रतिष्ठा देगा और आखिरत में सवाब देगा और पद ऊँचा करेगा, तो जो व्यक्ति मोमिन हो और ज्ञानी भी हो तो अल्लाह उसके ईमान के कारण उसके पद ऊँचा करेगा। फिर उसके ज्ञान के कारण उसके पद अधिक ऊँचा करेगा।

<sup>6</sup> इसका अर्थ यह है कि जब तुम अपने किसी काम में अल्लाह के रसूल से अकेले में बात करना चाहो तो अपनी इस अकेले की बात से पहले दान और सद्का कर दिया करो, अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी तो ब्रध्त्तचारी कानाफूसी करने से रुक गए, इसलिए कि वह अपनी कानाफूसियों से पहले सद्का नहीं कर सकते थे, और यह चीज मुमिनो के लिए भी परेशानी का कारण हो गई और उन्हें भी अकेले बात करने से रुक जाना पड़ा; क्योंकि उनमें से बहुत से लोग गरीब थे, सद्का नहीं कर सकते थे, तो इसके बाद वाली आयत उतार कर अल्लाह ने उनके लिए आसानी कर दी।

<sup>7</sup> अर्थात् अकेले बात करने से पहले सद्का करना।

<sup>8</sup> क्योंकि इसमें अल्लाह के आदेश का पालन है।

<sup>9</sup> अर्थात् उनमें से जिस के पास कुछ भी सद्का करने के लिए न हो तो सद्का किए बिना भी अकेले में बात कर सकता है, ऐसा करने से वह पापी नहीं होगा।

<sup>10</sup> अर्थात् क्या तुम अकेले में बात करने से पहले सद्का करने के कारण फकीरी से डर गए, मुक़ातिल कहते हैं, यह आदेश मात्र दस रातों तक

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكْتُوْنَ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا حَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا آدْفَنٍ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يَنْتَهُمُ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ تَرَ لِي الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يُعَادُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَنْجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَإِذْ أَجَاءَكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يَحْكَمْ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبِهِمْ جَهَنَّمُ بَصُلْوًا فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٨﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا إِذَا نَزَجْتُمْ فَلَا تَنْجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنْجَوْنَ بِالْبِرِّ وَالنَّفْوَى وَأَتَقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩﴾ إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ فَفَسَحُوا فِي الْمَجْلِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ أَنْشُرُوا فَأَنْشُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾

ने भी तुम्हें माफ कर दिया<sup>12</sup>, तो अब परिपूर्ण नमाजों को कायम रखो, ज़कात देते रहा करो और अल्लाह और उसके रसूल की फरमांबदारी करते रहो<sup>13</sup>, तुम जो कुछ करते हो उन सब से अल्लाह अच्छी तरह अवगत (बाखबर)<sup>14</sup> है।  
**14** क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ने उस समुदाय से दोस्ती की<sup>15</sup> जिन पर अल्लाह गुस्सा हो चुका है<sup>16</sup>, न ये मुनाफिक तुम्हारे ही हैं न उन के हैं<sup>17</sup>, और जानने के बावजूद<sup>18</sup> ये झूट पर कस्में खा रहे हैं<sup>1</sup>।

रहा फिर उठा लिया गया।

<sup>11</sup> अर्थात् अकेले में बात करने से पहले जिस सद्के का तुम्हें आदेश मिला है उसके भारी होने के कारण जब तुमने उसे नहीं किया।

<sup>12</sup> और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया इस तरह से कि सद्का न करने की तुम्हें छूट दे दी।

<sup>13</sup> अर्थात् अकेले में बात करने से पहले सद्का करने को यदि तुम बोझ समझ रहे हो तो नमाज कायम करने, ज़कात देने और अल्लाह और उस के रसूल की फरमांबदारी और उनके आदेशों का पालन करो।

<sup>14</sup> अर्थात् वह तुम्हें उसका बदला देने वाला है।

<sup>15</sup> (الَّذِينَ تُولُوا) से मुनाफिकीन मुराद हैं।

<sup>16</sup> और (فَوَمَا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ) से मुराद यहूद हैं, अर्थात् मुनाफिकीन ने यहूद से दोस्ती की।

<sup>17</sup> जैसा कि अल्लाह ने उनके बारे में फरमाया : **لَا يُؤْمِنُ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَحْمِلُ الذُّنُوبَ وَأَنَّا لَا نَحْمِلُهَا وَأَنَّا كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يَتَذَكَّرُونَ** (مَذِّبِينَ بَيْنَ ذَلِكَ لَا : إِنَّهُ هُوَ الَّذِي يُحْكُمُ بَيْنَهُمُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّهُ عَلِيمٌ ذَاتُ فَهْمٍ) और सम्भव यह भी है कि यह यहूद हों, अर्थात् अल्लाह मोमिनो से कह रहा है कि यहूदी तुम में से नहीं हैं और न मुनाफिकीन में से हैं, तो मुनाफिकीन उन से दोस्ती क्यों नहीं कर लेते।

<sup>18</sup> अर्थात् जिस बात पर वह कस्में खा रहे हैं उस के बालित होने के बारे में



يَسْأَلُهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَجَّيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِمُوا بَيْنَ يَدَيْ جُنُودِكُمْ  
صَدَقَةٌ ذَلِكَ خَيْرٌ لَكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِن تَرَ جُنُودًا فَإِنَّ اللَّهَ عَمُورٌ رَّحِيمٌ  
﴿١٢﴾ ءَأَسْفَقْتُمْ أَن تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَيْ جُنُودِكُمْ صَدَقْتُمْ فَاذ تَرَ تَقْعَلُوا  
وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ  
وَرَسُولَهُ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾ ﴿١٣﴾ التَّوَارِثُ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا  
غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَاهُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ  
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَنَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ  
عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾ لَنْ نَغْفِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ مِنَ اللَّهِ  
شَيْئًا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ  
اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَى شَيْءٍ أَلَّا  
إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ  
اللَّهِ أُولَئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ  
﴿١٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أَوْلَئِكَ فِي الْأَذْلَى  
﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَبُ بَكَ أَنَا وَرُسُلِي إِنَّكَ اللَّهُ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾

- 15 अल्लाह ने उन के लिए कठोर अजाब तैयार कर रखा है और अवश्य ये लोग जो कुछ कर रहे हैं<sup>3</sup> बुरा कर रहे हैं।  
16 इन्होंने तो अपनी कस्मों को ढाल बना रखा है<sup>4</sup>, और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं<sup>5</sup>, तो इनके लिए अपमानजनक अजाब है<sup>6</sup>।  
17 उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के यहाँ कुछ काम न आएंगे, यह तो जहन्मी हैं, सदा ही उस में रहेंगे।  
18 जिस दिन अल्लाह तआला उन सब को उठा खड़ा करेगा तो यह जिस तरह तुम्हारे सामने कस्में खाते हैं अल्लाह तआला के सामने भी कस्में खाने लगेंगे<sup>7</sup> और समझेंगे कि वे भी किसी

- प्रमाण पर हैं<sup>8</sup>, यकीन करो कि अवश्य वही झूठे हैं,  
19 उन पर शैतान ने गुल्बा हासिल कर लिया है<sup>9</sup>, और उनसे अल्लाह का जिक्र भुला दिया है<sup>10</sup> यह शैतानी सेना हैं<sup>11</sup> कोई शक नहीं कि शैतानी सेना ही घाटा उठाने वाला है<sup>12</sup>।  
20 अवश्य अल्लाह तआला और उसके रसूल के जो विरोधी हैं<sup>13</sup> वही लोग अधिक अपमानितों में हैं<sup>14</sup>।  
21 अल्लाह तआला लिख चुका है<sup>15</sup> कि अवश्य मैं और मेरे रसूल ही विजयी रहेंगे, यकीनन अल्लाह तआला ताकतवर और गालिब है<sup>16</sup>।  
22 अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उसके रसूल के विरोधियों के साथ महबूत रखे हुए कभी भी नहीं पाएंगे<sup>17</sup> चाहे वे उनके पिता, या पुत्र, या भाई, या समुदाय के सम्बन्धी ही क्यों न हों<sup>18</sup>, यही लोग हैं<sup>19</sup> जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान को लिख दिया है<sup>20</sup>, और जिन की पुष्टि अपनी रूह से की है<sup>21</sup>, और जिन्हें उन जन्तों में प्रवेश करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, और जहां यह सदा रहेंगे, अल्लाह उन से खुश<sup>22</sup> है और यह अल्लाह से खुश हैं<sup>23</sup>, यही अल्लाह के सेना हैं<sup>24</sup>, और जान लो कि अवश्य अल्लाह के सेना ही सफल हैं<sup>25</sup>।

उनकी बहुत ही बड़ी बद बखती होगी क्योंकि कियामत के दिन हकीकतें स्पष्ट होजाएंगी, और मसले देखकर जान लिए जाएंगे।

- 8 अर्थात वे यह समझेंगे कि कियामत के दिन भी इन झूठी कस्मों के द्वारा कुछ लाभ उठा लेंगे या किसी घाटे से बच जाएंगे जैसे वे संसार में झूठी कस्मों के द्वारा कुछ देर के लिए कुछ लाभ उठा लिया करते थे।  
9 अर्थात उन पर शैतान ने गुल्बा पा लिया है और उन्हें धरे में ले लिया है।  
10 तो उन्होंने अल्लाह के आदेशानुसार काम करना छोड़ दिया।  
11 अर्थात यही उसके अनुकारी ही उस के गुप के लोग हैं।  
12 क्योंकि उन्होंने जन्त का जहन्म से, हिदायत का गुमराही से सौदा कर लिया है, और अल्लाह और उस के नबी के बारे में झूठी बातें कही हैं, और झूठी कस्में खाई हैं, वह दुनिया और आखिरत दोनों में घाटे में रहेंगे।  
13 अल्लाह और उस के रसूल से विरोध करने का अर्थ इस सूरत के शुरू में बत चुका है।  
14 यह भी उन्हीं लोगों में से हैं जिन्हें अल्लाह दुनिया और आखिरत दोनों में अपमानित करेगा।  
15 अर्थात अल्लाह अपने पिछले ज्ञान की रोशनी में यह निर्णय कर चुका है कि मैं और मेरे रसूल ही प्रमाण तथा ताकत में गालिब रहेंगे।  
16 अर्थात अपने औलिया की सहायता पर कादिर और शत्रुओं पर गालिब है उसे कोई पछाड़ नहीं सकता।  
17 अर्थात तुम मोमिनों को ऐसे लोगों से जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी और विरोध कर रखा हो, दोस्ती करने वाला नहीं पाओगे।  
18 गर्चिं अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करने वाले, दोस्ती करने वालों के बाप ही हों; क्योंकि ईमान उन्हें इस से रोकता है, और ईमान का पास रखना पिता, पुत्र, भाई और समुदाय के सम्बन्धों का पास रखने से मजबूत है।  
19 अर्थात जो लोग उन लोगों से दोस्ती नहीं करते जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से विरोध किया है।  
20 अर्थ का अर्थ अَيْمَنَهُمْ : (पुख्ता कर दिया) और एक विचार यह है कि इसका अर्थ है : (कर दिया), और एक विचार के अनुसार इसका अर्थ है (जमा कर दिया)।  
21 अर्थात उन के दुश्मनों पर उनकी सहायता करके संसार में उन्हें ताकत बख्शी है, और अपनी इस सहायता का नाम रूह रखा है; क्योंकि इसी सहायता द्वारा उनके मसले में जीवन आता है।  
22 अर्थात उसने उनके कर्मों को स्वीकार कर लिए हैं और उन पर अपनी दुनिया और आखिरत की रहमत की वर्षा बरसा दिया है।  
23 और वे उन चीजों से खुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें दुनिया और आखिरत में दिए हैं।  
24 यही लोग अल्लाह के सेना हैं जो उसके आदेशों का पालन करते हैं, उसके दुश्मनों से लड़ते हैं और उसके दोस्तों की सहायता करते हैं।  
25 अर्थात दुनिया और आखिरत में सफलता उन्हें मिलने वाली है, इन्हे अबी हातिम, तब्रानी और हाकिम ने रिवायत की है कि अबू उबैदा बिन जराह

वह जानते हैं, और जानते हैं कि वह झूठ है उस की कोई वास्तविकता नहीं।

- 1 अर्थात कस्में खा खा कर कह रहे हैं कि वह मुसलमान हैं, अथवा वे कस्में खा खा कर कह रहे हैं कि उन्होंने ये यहूदियों को खबरें नहीं बताई हैं।  
2 इस दोस्ती और बातिल पर उन के कसम खाने के कारण।  
3 बुरे कर्तव्यों में से।  
4 यह वही झूठ है जिस पर कुफ्र के कारण कत्ल कर दिए जाने से बचने के लिए वे कस्में खा खा कर कहते थे कि वे मुसलमानों में से हैं, अपने उन कस्मों को उन्होंने अपने लिए ढाल और बचाव का माध्यम बना लिया था, चुनाव के कत्ल किए जाने से बचने के लिए जुबान द्वारा ईमान जाहिर करते जबकि उन के दिल मोमिन नहीं होते थे।  
5 अर्थात वे लोगों को अपनी इन कर्तव्यों के कारण इस्लाम से रोकते हैं।  
6 जो उन्हें अपमानित कर देगा।  
7 अर्थात वे झूठ पर कियामत के दिन अल्लाह के सामने अल्लाह की कस्में खाएंगे जैसे कि वे तुम लोगों से संसार में कस्में खाते हैं। और कहेंगे कसम है अल्लाह की है हमारे रब हमने यह नहीं किया, और यह

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 आकाशों और धरती की हर चीज अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता) बयान करती है, और वह गालिब हिक्मत वाला है।  
2 वही है जिसने अहले किताब में से काफिरों को उनके घरों से, पहले हश्म के समय निकाला, तुम्हारा गुमान भी न था कि वे निकलेंगे और वे स्वयं इस भ्रम में थे कि उनके मजबूत किले उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह का अज़ाब ऐसी जगह से आ पड़ा कि उन्हें गुमान भी न था और उनके दिलों में अल्लाह ने भय डाल दिया, वे अपने घरों को स्वयं अपने ही हाथों से उजाड़ रहे थे, और मुसलमानों के हाथों बर्बाद करवा रहे थे, तो ऐ आँखो वालो! नसीहत हासिल करो।

3 और यदि अल्लाह तआला उन पर देश-निकाला न लिखा होता तो अवश्य उन्हें संसार ही में अज़ाब देता, और

का बाप चाहता था कि वह उसकी तलवार तले आजाएँ ताकि वह उन्हें कत्ल करदे, और स्वयं अबू उबैदा के तलवार तले जब वह आता तो अबू उबैदा कतरा जा रहे थे, मगर जब उन्होंने देखा कि वह इनका खयाल नहीं कर रहा है और इन्हें कत्ल कर देना ही चाहता है तो इन्होंने भी उसका कोई खयाल नहीं किया और उसे कत्ल कर दिया तो यह आयत उतरी।

1 इस से मुराद बनु नज़ीर हैं, यह यहूदियों का एक समुदाय था, जो हास्न के संतान में से थे, बनु इस्राईल के कठोर दिनों में वह मदीना में आकर बस गए थे, नबी से उनका ऐग्रीमेंट था, परंतु आगे चलकर इन्होंने ऐग्रीमेंट तोड़ दिया और मक्का के मुशरिकों के साथ हो गए, तो अल्लाह के रसूल ने उनका घेराव किया यहाँ तक कि वे मदीना छोड़ने पर तैयार होगए। कलबी का कहना है कि अहले किताब में से सबसे पहले यही लोग अरब महाद्विप से निकाले गए, फिर उनमें से जो लोग बच गए थे उन्हें उमर के समय खतबा के समय निकाल दिया गया, इस तरह पहले हश्म के समय उनकी जलावतनी मदीना से हुई, और उनकी अन्तिम जलावतनी अहदे फारुकी में हुई, और एक राय अनुसार आखिरी हश्म से मुराद हश्म के मैदान में सभी लोगों का इकट्ठा किया जाना है।

2 अर्थात् ऐ मुसलमानो! बनु नज़ीर के गल्बा और उनकी आन-बान के कारण तुम्हें यह गुमान न था कि यह अपने घरों से निकाल दिए जाएँगे, क्योंकि यह मजबूत किलों वाले और भूमिपति थे, और इनके पास बड़े बड़े खजूर के बागीचे थे, और संतान वाले भी थे और सभी तरह के हथियार भी इनके पास थे।

3 अर्थात् स्वयं बनु नज़ीर भी इसी भ्रम में थे कि उनके मजबूत किले उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे।

4 अर्थात् ऐसी तरफ से उन पर अल्लाह का अज़ाब आ पड़ा कि उनके दिल में भी यह खयाल नहीं आया था कि यहाँ से भी उन पर अल्लाह का अज़ाब आ सकता है, और वह यह था कि अल्लाह ने अपने नबी को उन से लड़ने और उन्हें देश-निकाला करने का आदेश दे दिया था, वे कभी भी यह नहीं समझ रहे थे कि हालत यहाँ तक पहुँच जाएगी, बल्कि वे अपने को ताकतवर और गालिब समझ रहे थे।

5 रोब से मुराद बहुत ज्यादा भय है, नबी के फरमान है : **نُصِرْتُ بِالرُّعْبِ** **مَسِيرَةُ** मेरी सहयता ऐसे भय से की गई है कि मेरा शत्रु एक महीने की बराबरी की दूरी पर होता है तभी से उस पर मेरा डर बैठ जाता है।

6 ऐसा उस समय हुआ जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि अब उनका देश-निकाला होगा, तो वे इस डह में कि मुसलमान उनके घरों में न रह सकें और यह उनके रहने के काबिल न रह सकें, वे अन्दर से अपने घरों को स्वयं उजाड़ने लग गए, और मुसलमान बाहर से उजाड़ने लगे। और ज़ोह्री और उर्बा बिन जुबैर का कहना यह है कि जब नबी ने उनसे इस बात पर सुलह कर ली कि जितना सामान वे अपने ऊँटों पर लाव कर ले जा सकते हों ले जाएँ, तो उन्हें जो लकड़ियाँ और शहतीर अच्छे लागते उन्हें उजाड़कर अपने ऊँटों पर लाव लेते और जो बचा रहता उन्हें मुसलमान नष्ट कर देते।

7 अर्थात् यह जान लो कि जो लोग अल्लाह का वादा तोड़ते हैं और उस से दुश्मनी करते हैं उनके साथ वह ऐसा ही करता है।

8 यदि अल्लाह तआला ने उनके लिए यह न लिख दिया होता और उनके बारे में यह निर्णय न कर दिया होता कि यह अपने घरों से निकाल दिए

لَا يَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ  
كَادَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ. وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ  
أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ  
الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي  
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا  
عَنْهُ أُولَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

سُورَةُ الْحَشْرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ  
1 هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ  
لِأَوْلِي الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ  
حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَنَّهُمْ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَدَفَ  
فِي قُلُوبِهِمُ الرَّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ  
فَاعْتَرِبُوا بَيْنَهُمْ فِي الْأَبْصَرِ 2 وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ  
الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ 3

आखिरत में उनके लिए आग का अज़ाब तो है ही।

4 यह इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह तआला और उसके रसूल का विरोध किया और जो भी अल्लाह का विरोध करेगा तो अल्लाह तआला भी कठोर अज़ाब देने वाला है।

5 तुम ने खजूरों के जो पेड़ काट डाले या जिन्हें तुमने उनकी जड़ों पर बाँकी रहने दिया यह सब अल्लाह तआला के आदेश से थे, और इसलिए भी कि कुकर्मियों को अल्लाह तआला अपमानित करे।

जाएंगे तो उन्हें इस तरह अज़ाब देता कि या तो वे कत्ल कर दिए जाते या बन्दी बना दिए जाते, जैसा कि बनु कुरैजा के साथ किया गया कि उनके जवानों को कत्ल कर दिया गया और बाकी को बन्दी बना लिया गया, और उनका माल मुसलमानों के लिए गनीमत बना दिया गया।

9 अर्थात् उनका देश-निकाला इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया और नबी के साथ वादा तोड़ा।

10 बनु नज़ीर की लड़ाई में कुछ मुसलमानों ने उन्हें क्रोधित करने के लिए उनके खजूरों के पेड़ों को काटना शुरू किया तो बनु नज़ीर के लोग जो अहले किताब में से थे कहने लगे कि मुहम्मद! क्या आप यह नहीं कहते थे कि : "आप अल्लाह के नबी हैं, और दंगा के बजाएँ अमन व शान्ति और भलाई चाहते हैं, तो क्या खजूर के पेड़ों को काटना और उन्हें जलाना भलाई है? क्या आप पर जो चीजें उतारी गई हैं उन में यह है कि ज़मीन में फसाद फैलाना जायज़ है?"

11 और इसलिए भी हुदा है कि अल्लाह उन लोगों को जो कुकर्म हैं उन्हें अपमानित करे, और उनके कुछ पेड़ों को काटकर और कुछ को छोड़कर क्रोधित करे, क्योंकि जब वह देखेंगे कि मुसलमान उनके मालों में अपनी मर्जी कर रहे हैं तो यह चीज उन्हें और क्रोधित करेगी और उनकी अपमानिता और बेइज्जती को और बढ़ा देगी।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ. وَمَنْ يُشَاقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ  
 الْعِقَابِ ﴿١﴾ مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَيْسَةٍ أَوْ نَرَكْتُمْ هُوهَا فَأَبِعْتُمْ  
 عَلَىٰ أَسْوَأِهَا فَمَا بَدَّلْهُمُ اللَّهُ وَاللَّيْخِرَىٰ الْفَنَسِيقِينَ ﴿٢﴾ وَمَا آفَاءَ اللَّهِ  
 عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ  
 وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رَسُولَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ  
 قَدِيرٌ ﴿٣﴾ مَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَاللرَّسُولِ  
 وَلِلَّذِي الْقُرَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ  
 دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا آتَاكُمْ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا  
 نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤﴾  
 لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ  
 يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَبْصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ  
 هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿٥﴾ وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ  
 يَحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً  
 مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْتُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ  
 وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٦﴾

और उनका जो माल अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ के हाथ लगाया है जिस पर तुमने अपने घोड़े दौड़ाए हैं और न ऊंट बल्कि अल्लाह तआला अपने रसूल ﷺ को जिस पर चाहे प्रभावशाली करदेता है, और अल्लाह तआला हर चीज पर ताकत रखने वाला है।  
 बस्तियों वालों का जो धन अल्लाह तआला तुम्हारे लड़े भौड़े बिना अपने रसूल के हाथ लगाए वह अल्ला का है और रसूल का, और रिश्तेदारों का, और अनार्थों का,

गरीबों का और यात्रियों का है, ताकि यह धन तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही धूमता न रह जाए, और तुम्हें जो कुछ रसूल दें उसे ले लो, और जिस से रोक दें उससे रुक जाओ। और अल्लाह तआला से डरते रहा करो, अवश्य अल्लाह कठोर यातना वाला है।

(फै का धन) उन मुहाजिर गरीबों के लिए है जो अपने घरों और अपने धनों से निकाल दिए गए हैं, वे अल्लाह के फज़ल और खुशी के इच्छुक हैं, और अल्लाह और उस के रसूल की सहायता करते हैं, यही सच्चे लोग हैं। और उन के लिए जिन्होंने इस घर में (मदीना में) और ईमान में इस से पहले जगह बना ली है। और अपनी तरफ हिज़्रत करके आने वालों से महबूबत करते हैं और मुहाजिर को जो कुछ दे दिया जाए उस से वह अपने दिलों में कोई तंगी नहीं रखते, बल्कि स्वयं अपने ऊपर उनको प्राथमिकता (तर्जीह) देते हैं, चाहे उनको स्वयं उनको कितनी ही अधिक ज़रूरत हो, बात यह है कि जो अपने नपस की कंजूसी से बचाया गया वही कामयाब है। और (उनके लिए) जो उनके बाद आए जो कहेंगे कि

की खातिर उसे खर्च किया जाएगा।

अर्थात् इस से मुराद बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब हैं, अर्थात् उनके मुहाजिर लोगों के लिए है, क्योंकि वह सद्का नहीं खा सकते, तो उसके बदले फय में उनके लिए हिस्सा रखा गया।

अर्थात् उन बालक-बालिकाओं का है जिन के पिता उनके बालिग होने से पहले मर गए।

इस से मुराद गरीब और ज़रूरतमंद लोग हैं।

इस से मुराद वह यात्री हैं जो यात्रा कर रहे हों और यात्रा के समय उनके पैसे खतम हो गए हों।

कि धनो उस पर प्रभावशाली रहे और गरीबों और ज़रूरतमंदों के हाथ न आ सके।

अर्थात् फय के धन में से जो तुम्हें वह दें उसे ले लो और जिसे लेने से वह तुम्हें रोक दें उस से रुक जाओ, उसे मत लो।

इससे मुराद मक्का है, अर्थात् मक्का वालों ने उन्हें मक्का से निकलने पर मजबूर कर दिया जिस के कारण उन्हें मक्का छोड़ देना पड़ा, इसलिए इस फै में उनका भी हिस्सा रखा गया, ताकि यह धन उनके काम आए, और उन्हें बेनियाज़ (निःस्पृह) कर दे।

अर्थात् वह दुनिया में रोज़ी और आखिरत में अल्लाह की खुशनूदी के इच्छुक हैं।

कारिफ़ों से जिहाद करके।

अर्थात् यही सच बोलने और सच्चाई में पुख़्ता और मज़बूत लोग हैं।

इस से मुराद मदीना के अन्सार हैं जो मुहाजिरों के मदीना आने से पहले ही से वहां बसे हुए थे, और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ला चुके थे।

क्योंकि उन्होंने मुहाजिरों से अच्छा बर्ताव किया और अपने धनों और घरों में उन्हें हिस्सा दिया।

अर्थात् मुहाजिरों को फै का धन देने और अन्सार को न देने से अन्सार अपने दिलों में जलन, हसद, डाह, गुस्सा और दुःख नहीं करते, बल्कि उन्हें इस से खुशी होती है, शुरू में मुहाजिरों, अन्सारियों के घरों में ही रह रहे थे, फिर जब नबी को बनू नज़ीर का धन मिला तो आप ने अन्सारियों को बुला कर उनका शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने मुहाजिरों को अपने घरों में बसाया, और उन्हें अपने माल-धन में शामिल किया फिर आप ने फरमाया: यदि तुम चाहो तो अल्लाह ने बनू नज़ीर का जो धन मुझे दिया उसे मैं तुम में और मुहाजिरों में बांट दूँ और मुहाजिरों का हिस्सा तुम्हारे घरों में उसी तरह बाँकी रहे, जैसे अभी है, और यदि चाहो तो मैं यह सब उन्हीं को दे दूँ और वह तुम्हारे घरों को छोड़ दें, तो वह उसे मुहाजिरों ही में बांट देने पर राज़ी हो गए और वह उस पर खुश रहे।

अर्थात् दुनियावी हिस्से में वह अपने आप पर उन्हें प्राथमिकता देते हैं।

'खसासा' का अर्थ अधिक हाज़त और ज़रूरत के हैं।

अर्थात् जिसे उसके नपस के लालच और बख़्शीली से अल्लाह काफी हवा, और शरीरगत ने उसके माल में जो ज़क़ात वाजिब की है उसे उसने उसका हक़ समझ कर अदा किया तो वह कामयाब है, और जिसने बख़्शीली की और अल्लाह का हक़ अदा नहीं किया तो वह नाकाम है।

इससे मुराद कियामत तक आने वाले वह सारे लोग हैं जो इज़लास के साथ उनकी पैरवी करने वाले हैं।

1 ईजाफ़ का अर्थ सवार के घोड़े दौड़ाने के हैं, आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल को बनू नज़ीर के माल में से जो दिया है, उसे लेने के खातिर न तो तुम्हें घोड़ों और ऊंटों पर सवार होकर सफ़र की परेशानी उठानी पड़ी है, और न ही लड़ाई करनी पड़ी है, उनका गाँव मदीना से मात्र दो मील दूर था, इसलिए अल्लाह ने उनके मालों को अपने रसूल के लिए खास कर दिया है; क्योंकि तुम ने सुलह के माध्यम से उसको जीता है, और तुम्हारे लड़े बिना यह माल रसूल के हाथ आए हैं, यही कारण है कि उसे गनीमत के बजाए फय़ कहा गया और उसे गानिमीन में बाँटा नहीं गया।

2 इस आयत में यह स्पष्ट करने के बाद कि यह धन अल्लाह के रसूल के लिए खास है, इसमें गानिमीन का कोई हिस्सा नहीं फय़ के मसारिफ़ को स्पष्ट किया गया है कि किस किस में अल्लाह के रसूल उसे खर्च करें, और यही हर उस बस्ती का हुक्म है जिसे अल्लाह के रसूल और कियामत तक आप के बाद जो मुसलमान भी आने वाले हैं लड़े बिना सुलह सफ़ाई के माध्यम जीत लें, और मुसलमानों को उन पर घोड़े और ऊंट दौड़ाने न पड़ें, और उन्हें यात्रा की दिक्कत न उठानी पड़ें।

3 अर्थात् वह उसमें जैसा चाहे निर्णय करें।

4 अर्थात् उसके मालिक रसूल होंगे फिर आप के बाद मुसलमानों के लाभ

ऐ हमारे रब! हमें बख्श दे और हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं<sup>1</sup>, और ईमानदारों के बारे में हमारे दिल में कपट<sup>2</sup> और दुश्मनी न डाल, हमारे रब! अतृप्य तू प्रेम और मेहबानी करने वाला है।

**11** क्या तूने मुनाफ़िकों को नहीं देखा<sup>3</sup> कि अपने अहले किताब काफ़िर भाइयों से कहते हैं यदि तुम देश से निकाल दिए गए तो हम भी तुम्हारे साथ ज़रूर निकल जाएंगे, और तुम्हारे बारे में हम कभी भी किसी की बात स्वीकार नहीं करेंगे<sup>4</sup>, और यदि तुम से युद्ध किया जाए तो हम तुम्हारी ही सहायता करेंगे<sup>5</sup>, लेकिन अल्लाह तआला गवाही देता है कि यह बिल्कुल झूठे हैं।

**12** यदि देश से निकाले गए तो उनके साथ कभी भी न जाएंगे और यदि उन से युद्ध किया जाए तो यह उनकी सहायता भी न करेंगे<sup>6</sup> और यदि सहायता के लिए आ भी गए तो पीठ फेर कर<sup>7</sup> भाग खड़े होंगे, फिर मवद न किए जाएंगे<sup>8</sup>।

**13** (मुसलमानों विश्वास करो) कि तुम्हारा भय इनके दिलों अक्लाह के भय के मुकाबले बहुत अधिक है<sup>9</sup>, यह इसलिए कि यह नासमझ लोग हैं<sup>10</sup>।

**14** यह सब मिलकर भी तुम से लड़ नहीं सकते, हां यह और बात है कि कित्तों के अन्दर हों या दीवारों की आड़ में हों<sup>11</sup> उनकी लड़ाई तो आपस ही में बहुत कठोर है<sup>12</sup>, यद्यपि (अगरचि) आप इन्हें इकट्ठा समझ रहे हैं, लेकिन इनके दिल आपस में एक दूसरे से अलग हैं<sup>13</sup>, इसलिए कि यह नासमझ लोग हैं<sup>14</sup>।

1 जो इस्लाम में पहल करने वाले मुहाजिरिन और अन्सार से महब्वत करते और उनके लिए बख्शिश को दुआ करते रहते हैं।

2 गिल से मुराद खोट, हसद और जलन है, और (لِلَّذِينَ آمَنُوا) में सब से पहले सहाबा किराम शामिल हैं, क्योंकि ईमान वालों में सबसे अशरफ और अफज़ल यही लोग हैं, और आयत का सियाक भी इन्हीं के बारे में है, तो जो अपने दिल में इनके बारे में कपट और डाह रखे जैसे रवाफ़िज़ रखते हैं तो उसका अर्थ है कि वह शैतान के जाल में फंस चुका है, और उसे उसका अधिक हिस्सा पहुंच चुका है, क्योंकि वह अल्लाह का नाफरमान है और उसके औलिया और उसके नबी की उम्मत के अच्छे और बेहतरीन व्यक्ति से दुश्मनी रखता है, ऐसे लोगों का फैं के माल में कोई हिस्सा नहीं और न ही ऐसे लोगों का है जो उन्हें गालियाँ दें और दुःख पहुंचाएँ और उन्हें बुरा कहें।

3 इससे मुराद अबुल्लाह बिन उबै और उसके साथी हैं जिन्होंने बनू नज़ीर को यह पैगाम भेजा कि तुम लोग जमे रहो और बहादुरी से मुकाबला करो, हम तुम्हें असहाय नहीं छोड़ेंगे, यदि तुम से युद्ध किया गया तो हम भी तुम्हारे साथ मिलकर लड़ाई करेंगे और यदि तुम्हें घरों से निकाला गया तो हम भी अपने घर बार छोड़ कर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे।

4 अर्थात् जो हमें तुम्हारे साथ निकलने से रोकना चाहेंगे हम उनकी बात कभी नहीं मानेंगे चाहे कितना ही लम्बा समया क्यों न बीत जाए।

5 अर्थात् यदि तुम्हें अपने दुश्मनों से लड़ना पड़ा तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे, इसके बाद अल्लाह ने उनको झुटलाया और फरमाया कि यह जो उनके साथ निकल जाने और सहायता करने का वादा कर रहे हैं, उसमें वे झूठे हैं।

6 और ऐसे ही हुवा बनू नज़ीर और उनके साथी यहूदियों को देश से निकाला गया तो मुनाफ़िकों उनके साथ नहीं गए और न उन्होंने बनू कुरैज़ा और खैबर के यहूदियों की मदद की जिन से युद्ध हुवा था।

7 अर्थात् हार कर।

8 अर्थात् उन मुनाफ़िकों की फिर कोई सहायता नहीं करेगा, बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित कर देगा, और उनका निफ़ाक उन्हें कुछ भी काम न देगा।

9 अर्थात् इन मुनाफ़िकों या यहूदियों के दिल में अल्लाह से अधिक तुम्हारा भय है।

10 अर्थात् यदि उनमें समझ होती तो यह अच्छी तरह जान लेते कि उन पर तुम्हें गालिब करने वाला अल्लाह ही है, इसलिए वह ज़्यादा हकदार है कि उससे डरा जाए।

11 वह सब इकट्ठा होकर भी तुम से नहीं लड़ सकते, मगर यह कि वह तहखानों और घरों में छुपकर या दीवारों की आड़ से तुम पर हमले करें, क्योंकि यह अधिक ही डरपोक लोग हैं।

12 अर्थात् वे स्वयं आपस में एक दूसरे के लिए बड़े कठोर और बेरहम हैं।

13 अर्थात् उनकी यह एकता मात्र दिखावे का है वास्तव में वह एक दूसरे

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٠﴾

وَالَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نَضِلَّ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَنْصُرُونَ ﴿١٢﴾

لَأَنْتَ أَشَدُّ رَهَبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يَقْتُلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي فُرَى مُخْتَصِنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾

كَشَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَشَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

15 उन लोगों की जो उनसे कुछ ही पहले बीते हैं<sup>15</sup> जिन्होंने अपने कर्तूत का मजा चख लिया<sup>16</sup>, और जिन के लिए दुखदायी अजाब तैयार हैं।

16 शैतान की<sup>17</sup> तरह कि उसने इन्सान से कहा कुफ़र कर और जब वह कुफ़र कर चुका तो कहने लगा : मैं तुझ से अलग हूँ, मैं तो संसार के रब से डरता हूँ।

17 तो (शैतान) और इस इन्सान) दोनों का परिणाम यह हुवा कि (नरक की) आग में सदा के लिए गए, और ज़ालिमों के लिए यही दण्ड है<sup>18</sup>।

18 ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरते रहो<sup>19</sup>, और सभी के कठोर शत्रु हैं, सब के विचार अलग अलग हैं।

14 अर्थात् उनमें समझ होती तो वह हक़ को ज़रूर जान लेते और सब इकट्ठा होकर उसकी पैरवी करते और उनमें आपस में भिन्नता न होता।

15 अर्थात् मक्का के अधर्मियों की तरह।

16 इस से मुराद उनके कुफ़र का वह बुरा परिणाम है जिससे उन्हें बदर के युद्ध में दोचार होना पड़ा था, और बनू नज़ीर के युद्ध से मात्र 6 महीने पहले हो चुका था।

17 अर्थात् उनका उदाहरण उन्हें अकेले छोड़ देने में और उनकी सहायता न करने में शैतान की तरह है, कि वह इन्सान को कुफ़र करने पर उकसाता है और उसे इस के लिए खूबसूरत बनाकर पेश करता है और उस पर उभारता है, फिर जब वह शैतान की मान कर और उसके बहकाने में आकर उसे कर बैठता है तो वह कहता है कि अब मैं तुझ से अलग थलग हूँ।

18 यह शैतान की बात है जिसे वह इन्सान से अपना नाता तोड़ते हुए कहता है।

19 अर्थात् जिन बातों का वह तुम्हें आदेश दे उन्हें करो, और जिन से रोके उनसे रुक कर उसकी सज़ा से डरते रहो।



فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ  
الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَتَسْتَظِرُّ  
نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾  
وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ سَوَّأَ اللَّهُ فَأَنْسَهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَئِكَ  
هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ  
الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفٰئِزُونَ ﴿٢٠﴾ لَوْ أَنَّا هَذَا  
الْقُرْءَانَ عَلَى جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاهُ خٰشِعًا مُّتَصِدًّا عَايِنَ خٰشِعَةً  
اللَّهِ وَرَيْكَ الْاَمْثَلُ نَصْرِيهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢١﴾  
هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ  
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ  
الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلْمُ الْمَوْمِنُ الْمُهَيَّبُ الْعَزِيزُ  
الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾  
هُوَ اللَّهُ الْخَلِيقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ  
يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾

سُورَةُ الْمُنْتَهِنَةِ  
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ  
١٣  
٢٤

व्यक्ति देख-भाल ले कि कल (प्रलय) के लिए उसने (कर्तव्यों का) क्या भंडार भेजा है? और (सदा) अल्लाह से डरते रहो, अल्लाहों तुम्हारे सारे कर्तव्यों से अवगत है।  
19 और तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह के आदेश को भुला दिया, तो अल्लाह ने भी उन्हें अपने आप से भुला दिया, और ऐसे ही लोग नाफरमान होते हैं।  
20 जहन्नमी (नरकवाले) और जन्नती (स्वर्गवाले) (आपस में) बराबर नहीं, जो जन्नती हैं वही सफल हैं।  
21 यदि हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता के अल्लाह के डर से वह झुक कर टुकड़े टुकड़े हो

जाता, हम इन उदाहरणों को लोगों के सामने बयान करते हैं, ताकि वह सोच-फिक्र करें।  
22 वही अल्लाह जिस के सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं, छिपे और खुले का जाननेवाला, बड़ा मेहबान और बहुत दयालू है।  
23 वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं, राजा, बहुत ही पवित्र, सभी बुराइयों से साफ, शान्ति देने वाला, रक्षक, गालिब, ताकतवर, और बड़ाईवाला है, पाक है उन चीजों से जिन्हें यह उसका साझी बनाते हैं।  
24 वही अल्लाह है पैदा करनेवाला, बनाने वाला, रूप देनेवाला, उसी के लिए बहुत अच्छे नाम हैं, हर चीज चाहे आकाशों में हो या धरती में हो उसकी पाकी बयान करती है, और वही गालिब हिकमत वाला है।

## सूरतुस मुन्तहिना। - 60

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रइम करने वाला है।  
1 ऐ वही लोगों जो ईमान लाए हो! मेरे और स्वयं अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ, तुम तो दोस्ती से उनकी तरफ संदेश भेजते हो, और वह इस हक का जो तुम्हारे पास आचुका है इन्कार करते हैं, रसूल को और स्वयं तुम्हें भी मात्र इस कारण निकालते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान रखते हो, यदि तुम मेरे रास्ते में जिहाद के

से कि वह अल्लाह के कलाम की वह बड़ाई नहीं कर सकेगा जो उसके लिए जरूरी है, फट कर कण-कण हो जाता।

7 उन चीजों में जिन में सोच-वीचार करना जरूरी है, ताकि वह उसके सदुपदेशों से नसीहत हासिल कर सकें, और उसकी फटकार से बच सकें।

8 अर्थात् जो चीज आंखों से देखी जाने के काबिल नहीं हैं।

9 अर्थात् जो चीज आंखों से देखी जाने के काबिल हैं।

10 इसका चर्चा दोबारा मजबूती पैदा करने के लिए किया गया है।

11 कुहूस का अर्थ है जो हर बुराई से पाक, और हर कमी से पवित्र हो, और

12 एक विचार अनुसार कुहूस वह है जिस के अन्याय से सृष्टि सुरक्षित हो।

13 मोमिन जो अपने भक्तों को अन्याय से सुरक्षित रखनेवाला हो, और

14 एक विचार अनुसार मोमिन वह है जो चमत्कार दिखा करके अपने रसूलों की तस्वीक करने वाला हो।

15 अर्थात् जो अपने भक्तों के अमााल का गवाही देनेवाला और उनका रक्षक हो।

16 ऐसा काहिर और विजेता जो कभी पराजित न हो।

17 अल्लाह की जबरूत से मुराद उसकी बड़ाई है। और एक विचार अनुसार : जब्बार वह है जिस के कुहर को सहा न जा सके।

18 अल्लाह के लिए प्रशंसित विशेषता है, जबकि सृष्टि के लिए निंदनीय विशेषताओं में से है।

19 जो हर कमी से उच्चतर और उन सभी चीजों से पाक और बरतर हो जो उसकी शान के लायक नहीं।

20 अपनी मशीअत तथा इरादा के अनुसार चीजों को पैदा करने वाला और उन्हें बनाने वाला।

21 सूरतों को बनाने वाला और उन्हें अनेक रूप देनेवाला।

22 अस्माए हुसना का विवरण सूरतुस आर्राफ आयत न० १८० में बीत चुका है।

23 अर्थात् अपनी स्थिति या अपनी जुबान द्वारा भी।

24 यह आयतें हातिब बिन अबी बल्त्ता के बारे में उस समय उतरीं जब वह एक चिट्ठी द्वारा मक्का के मुशरिकों को यह खबर दे रहे थे कि नबी ﷺ उन पर अक्रमण करने वाले हैं, यह फट्टे मक्का की युद्ध की बात है जो ८ हिजरी में हुई।

25 अर्थात् इस दोस्ती के कारण जो तुम्हारी उन से है नबी ﷺ की बातें तुम उन्हें पहुँचा रहे हो।

26 और हाल यह है कि वे अल्लाह के रसूल के और इस कुरआन और ईश्वरीय संदेश (इलाही हियायत) के इन्कारी हैं जिसे रसूल तुम्हारे पास लेकर आए हैं।

27 रसूल के तुम्हारे पास लाए हुए हक के अपने इसी इन्कार के कारण, उन लोगों ने उन्हें और तुम्हें मक्का से निकाला फिर तुम उनसे क्योंकर दोस्ती करते हो?

28 वह तुम्हें इस कारण निकाल रहे हैं कि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो।

1 अर्थात् वह प्रलय के दिन के लिए कैसे काम कर रहा है।

2 अर्थात् उसके आदेशों को टुकराया और उसकी इत्ताअत की कुछ भी परवाह न की।

3 अर्थात् उसने भी उन्हें भुला दिया, जिसके कारण वह ऐसे काम नहीं कर सके जो उन्हें उसके अज़ाब से बचाता, और एक विचार यह है कि उन्होंने अल्लाह को अपनी खुशहाली (सम्पन्नता) के दिनों में भुला दिया, तो अल्लाह ने उन्हें उनकी परेशानों और दुःख के दिनों में भुला दिया।

4 अल्लाह के आदेशों का पालन नहीं करते हैं।

5 अर्थात् हर उस अच्छी चीज को पाएंगे जिसकी वह इच्छा करेंगे, और हर बुरी चीज से बच निकलेंगे।

6 अर्थात् यह अपनी शान और बड़ाई में, स्पष्टता और बलागत में, और सदुपदेश और नसीहत की ऐसी बातों को समोने में जिन से दिल नरम पड़ जाते हैं इस सीमा को पहुँचा हुआ है कि यदि यह पहाड़ों में से किसी पहाड़ पर उतार दिया जाता, तो तुम इसे देखते कि वह अपनी कठोरता, मजबूती, चौड़ाई, और लम्बाई के बावजूद अल्लाह के भय से, और उसकी पकड़ से बचने के भय से और इस डर

लिए और मेरी खुशी की खोज में निकलते हो (तो उन से दोस्ती न करो) <sup>1</sup> तुम उनके पास प्रेम-संदेश छुपा-छुपा कर भेजते हो <sup>2</sup>, और मैं अच्छी तरह जानता हूँ जो तुमने छुपाया और वह भी जो तुमने जाहिर किया <sup>3</sup>, तुम मैं से जो भी इस <sup>4</sup> यदि वे तुम पर कहीं काबू पालें तो वे तुम्हारे (खुले) दुश्मन हो जाएँ, और बुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने लगें और बुरे शब्द कहने लगें <sup>5</sup> और दिल से चाहने लगें कि तुम भी कुफ़्र करने लग जाओ <sup>6</sup>।

<sup>7</sup> तुम्हारी नातेदारियाँ और औलाद तुम्हें कियामत के दिन काम न आएंगी, अल्लाह तआला तुम्हारे बीच फैसला कर देगा <sup>8</sup>, और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

<sup>9</sup> (मुसलमानो!) तुम्हारे लिए इब्राहीम (عليه السلام) में और उनके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन सभी ने अपनी कौम से खुले शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिवाय पूजा करते हो उन सभी से पूरी तरह से विमुख हैं <sup>10</sup>, हम तुम्हारे अक्दीदे (आस्थाओं) का इन्कार करते हैं <sup>11</sup>, जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ <sup>12</sup> हम में तुम में हमेशा के लिए दुश्मनी और कपट पैदा होगी <sup>13</sup>, लेकिन इब्राहीम (عليه السلام) की इतनी बात अपने पिता से हुई थी <sup>14</sup> कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा याचना (इस्तिफ़ार) जरूर करूँगा, और तुम्हारे लिए मुझे अल्लाह के

1 अर्थात् यदि तुम ऐसे ही हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।

2 अर्थात् अपनी इनसे दोस्ती के कारण तुम चुपके चुपके इन्हें खबरें भेजते हो।

3 अर्थात् मैं हर व्यक्ति के हर उस कर्म को जानता हूँ जिसे वह उन्हें खबरें भेजने के लिए करता है।

4 अर्थात् यदि वे तुम पर काबू पा लें तो अपने दिलों में तुम्हारे विरुद्ध जो दुश्मनी छुपाए हुए हैं उसे जाहिर कर दें।

5 अर्थात् वे तुम्हें मारने पीटने और बुरा भला कहने जैसी बुरी चीजें करने लगें।

6 अर्थात् तुम्हारे इस्लाम से फिर जाने और कुफ़्र की तरफ पलट जाने के इच्छुक हो जाएँ।

7 अर्थात् तुम्हारी औलाद और तुम्हारी नातेदारियाँ जिन के लिए तुम काफ़िरों से दोस्ती का दम भरते हो कियामत के दिन तुम्हारे कुछ भी काम न आ सकें गी, जैसे कि हलतिब बिन अबी बलत्आ के घटना में हुआ, बल्कि काफ़िरों से दुश्मनी रखना, उन से जिहाद करना और उनसे दोस्ती न करना जिसका अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है, यही तुम्हारे काम आएगा।

8 अर्थात् तुम में जुदाई कर देगा: आज्ञाकारियों को जन्नत में और अवज्ञाकारियों को जहन्नम में दाखिल करेगा।

9 अर्थात् प्रशंसा योग्य विशेषता है जिसकी तुम अनुकरण करो, इस आयत में गीयाकि हातिब बिन अबी बलत्आ से कहा जा रहा है कि तुम ने इब्राहीम और उनके साथियों का अनुकरण क्यों न किया, अतः तुम भी अपने बाल-बच्चों से उसी तरह विमुखता बरतते जैसे इब्राहीम ने अपने समुदाय के लोगों से की थी।

10 अर्थात् अल्लाह के साथ तुम्हारे कुफ़्र करने के कारण हम तुम से विमुख हैं, हमारे और तुम्हारे बीच कोई सम्बंध नहीं। وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ से मुराद अस्नाम (बुत) है।

11 अर्थात् हम तुम्हारे धर्म, या तुम्हारे कर्मों का इन्कार करते हैं।

12 अर्थात् जब तक तुम कुफ़्र करना नहीं छोड़ोगे तुम्हारे साथ हमारा यही बर्ताव रहेगा।

13 और जब शिर्क करना छोड़ दोगे तो हमारी दुश्मनी दोस्ती में और कीना और कपट प्यार और महबूबत में बदल जाएगी।

14 अर्थात् इब्राहीम (عليه السلام) की सभी बातें ही ऐसी हैं जिन में तुम्हारे लिए बेहतर नमूना है, सिवाय इस एक बात के जो उन्होंने अपने पिता से कही थी, तुम उसे अपने लिए नमूना न बनाना कि तुम भी मुशरिकों के लिए क्षमा-याचना करने लग जाओ, क्योंकि उन्होंने ऐसा उस वादे के कारण किया था जिसे उन्होंने अपने पिता से किया था, तो जब यह बात खुलकर सामने आई कि उनका पिता अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विमुख होगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تَلْقَوْنَ  
إِلَيْهِم بِالْمُؤَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ  
وَإِيَّاكُمْ أَنْ تَقُولُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ حَرَجْتُمْ جِهَدًا فِي سَبِيلِي  
وَإِنِّي أَخَفِّعُهُ مَرَضًا بَلِ الشِّرْكَ وَالشِّرْكَاءُ بِالْمُؤَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ  
وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝۱  
يَتَّفِقُونَ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَسْطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيهِمْ وَالسِّبْغِمْ  
بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۝۲ لَنْ تَنفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ  
يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَفْصَلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝۳ قَدْ  
كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ  
إِنَّا بَرَاءٌ وَأَنْتُمْ كُفْرَانًا وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كُفْرَانًا يُبَدِّلُنَا  
وَبَيْنَكُمْ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ ۝۴  
قَوْلِ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لِمَ تَسْتَعْفِرُنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ  
رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنبَأْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝۵ رَّبَّنَا لَا جَعَلْنَا  
فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَوَاعِظٌ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝۶

सामने किसी चीज का कुछ भी इख्तियार नहीं <sup>15</sup>, ऐ हमारे रब! तुझ पर हमने भरसा किया है, और तेरी ही तरफ पलटते हैं, और तेरी ही तरफ लौटना है।

<sup>16</sup> ऐ हमारे रब! तू हमें काफ़िरों के इम्तिहान में न डाल, हमारे पालने वाले! हमारी गलतियों को माफ़ कर दे, अवश्य तू ही गालिब और हिक्मत वाला है।

<sup>17</sup> अवश्य तुम्हारे लिए उनमें अच्छा नमूना है, (और अच्छी पैरवी है खास कर) हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह की और कियामत के दिन की मुलाकात की उम्मीद रखता हो <sup>18</sup>, और यदि कोई मुंह मोड़ले <sup>19</sup> तो अल्लाह तआला पूरी तरह से बेनियाज है <sup>20</sup>, और बड़ाई और प्रशंसा के लायक है <sup>21</sup>।

<sup>22</sup> क्या तअज्जुब कि करीब ही अल्लाह तआला तुम में और तुम्हारे दुश्मनों में प्रेम डाल दे <sup>22</sup>, अल्लाह को सभी

15 अर्थात् मैं तुम से अल्लाह का अज़ाब थोड़ा सा भी नहीं डाल सकता।

16 इसकी तपसीर में मुजाहिद कहते हैं कि इसका अर्थ यह है कि हमें इनके हाथों से किसी यातना में न डाल, और न हमें अपनी तरफ से किसी अज़ाब में डाल कि उन्हें यह कहने का अवसर मिल जाए कि यदि यह हक़ पर होते तो इस अज़ाब से क्यों दोचार होते।

17 अर्थात् इब्राहीम (عليه السلام) और उनके साथियों में तुम्हारे लिए अच्छा नमूना है।

18 अर्थात् यह नमूना मात्र उन लोगों के लिए है, जो दुनिया और आख़िरत में अल्लाह से भलाई की उम्मीद रखते हैं।

19 अर्थात् मुँह फेरकर।

20 अपनी मख़लूक से।

21 अर्थात् प्रशंसा के योग्य है, और उसके औलिया भी तारीफ़ के काबिल हैं।

22 अर्थात् तुम्हारे और मक्का के मुशिकों के बीच, और वह इस तरह से कि वे

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ  
 وَمَن يَتَّبِعِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦﴾ عَسَىٰ أَن يَجْعَلَ  
 بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ  
 ﴿٧﴾ لَا يَنْهَىٰ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم  
 مِّن دِينِكُمْ أَن تَرْوَاهُمْ وَتَقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ  
 ﴿٨﴾ إِنَّمَا يَنْهَىٰ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم  
 مِّن دِينِكُمْ وَظَهَرُوا عَلَيْهِمُ الْإِخْرَاجَ أَن تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ ظُفُرًا  
 هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩﴾ يَأْتِيهِمُ الَّذِينَ ءَامَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ  
 مَهْجِرَاتٍ فَاْمَسَّحُوهُنَّ اللَّهُ أَعْلَمَ بِإِيمَانِهِنَّ فَإِن عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ  
 فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَأَهُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَءَأْتُوهُم  
 مَّا أَنفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجْرَهُنَّ  
 وَلَا تَمْسِكُوا بِعِصْمِ الْكُفَّارِ وَسْئَلُوا مَّا أَنفَقْتُمْ وَلَسْتُمْ بِمَسْئَلُوا مَّا أَنفَقُوا  
 ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾ وَإِن فَاتَكُمْ  
 شُرُكٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَلَيْتُمُ فَتَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ  
 أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا وَءَأْتُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

कुदरत हैं<sup>1</sup>, और अल्लाह बड़ा माफ करने वाला और रहम करने वाला (दयालु) है।

जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ अच्छा बर्ताव और न्याय करने से अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता, बल्कि अल्लाह तआला तो न्याय करने वालों से प्रेम करता है।

इस्लाम स्वीकार कर लें तो वे तुम्हारे ही धर्म के मानने वाले हो जाएं, चुनावि उनमें से कुछ लोग फत्हे मक्का के बाद इस्लाम ले आए और अपने इस्लाम में मुख्तलस रहे, और उनसे और पहले इस्लाम लाने वालों से खूब दोस्ती भी होगई, इन लोगों ने उनके साथ मिलकर जिहाद भी किया और नेकी और अल्लाह से कुवत के बहुत से काम किए, यहाँ तक कि नबी ﷺ ने अबू सुफ्यान की बेटी उम्मे हबीबा को अपने निकाह में आने का शफ बख्शा, लेकिन यह महब्वत उनसे उस समय हुई जब वह मक्का फतह होने या उसके बाद इस्लाम ले आए, और अबू सुफ्यान ने अल्लाह के रसूल से दुश्मनी छोड़ दी, अबू हुरैरा से रिवायत है कि उन्होंने ने कहा, अल्लाह के वीन को मजबूत करने के लिए मुर्तद होने वालों से सब से पहले अबू सुफ्यान बिन हवब ने युद्ध किया, और उन्हीं के बारे में यह आयते करीमा उतरी: (عَسَىٰ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً)

<sup>1</sup> अर्थात् वह सारी चीजों पर अपार शक्तिशाली है, दुश्मनों के दिलों को फेर कर उन्हें अपनी माफी और दया के अन्दर ले आने की भी शक्ति रखता है।

<sup>2</sup> अर्थात् तुम्हें उनके साथ नेकी वाले काम करने जैसे नातेदारी जोड़ने, पड़ोसियों को लाभ पहुँचाने और मेहमान नवाजी इत्यादि से नहीं रोकता।

<sup>3</sup> अर्थात् उनके साथ न्याय करने से, जैसे उनके अधिकारों को अदा करना, उनसे किए गए वादों का लिहाज़ रखना, उनकी अमानतों को लौटाना, और उनसे खरीदे गए सामानों का उन्हें पूरा दाम देना इत्यादि।

<sup>4</sup> अर्थात् न्याय पसंद करने वालों से, आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला

अल्लाह तआला तुम्हें मात्र उन लोगों की महब्वत से रोकता है जिन्होंने तुम से धर्म के बारे में युद्ध किए, और तुम्हें तुम्हारे देश से निकाले<sup>5</sup>, और देश से निकालने वालों का सहायता किया<sup>6</sup> जो लोग ऐसे काफिरों से प्रेम करें<sup>7</sup> वही (अवश्य) अत्याचारी हैं<sup>8</sup>।

ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिना औरतें हिज्रत करके आए<sup>9</sup> तो तुम उनका इम्तिहान लो<sup>10</sup>, वास्तव में उनके ईमान को अच्छी तरह जानने वाला तो अल्लाह ही है<sup>11</sup> परन्तु यदि वह तुम्हें ईमानदार लगती हों<sup>12</sup> तो अब तुम उन्हें काफिरों की तरफ वापस न करो<sup>13</sup>, यह उनके लिए हलाल (वैध) नहीं और न ही वह इनके लिए हलाल हैं<sup>14</sup> और जो खर्च उन काफिरों का हुवा हो वह उन्हें दे दो<sup>15</sup>, और उन औरतों को उनका महर देकर उनसे निकाह कर लेने में तुम पर कोई पाप नहीं<sup>16</sup>, और काफिर औरतों के

तुम्हें ऐसे काफिरों से जिन्होंने मुसलमानों से युद्ध न करने, उन के विरुद्ध काफिरों की सहायता न करने का वकन कर रखा है, उनके साथ नेकी करने से नहीं रोकता, और न उनके साथ कोई न्यायिक बर्ताव करने से रोकता है।

<sup>5</sup> इससे मुराद काफिरों के सरदार और उन जैसे लोग हैं, जो काफिर थे और मुसलमानों से भिड़े रहते थे।

<sup>6</sup> अर्थात् जिन लोगों ने तुम से युद्ध किया, और तुम्हें देश से निकालने वालों की मदद की, और इन से मुराद सारे मक्का वाले, और उनके साथी हैं जो उनके साथ मुआहदे (प्रतिज्ञा) में उनके साथी थे।

<sup>7</sup> अर्थात् उन्हें अपना दोस्त बनाएं और उनकी सहायता और मदद का सिलसिला बाकी रखें।

<sup>8</sup> क्योंकि उन्होंने ऐसे लोगों से दोस्ती की है, जो अल्लाह, उसके रसूल, और उसकी किताब से दुश्मनी के कारण, दुश्मनी के लायक हैं।

<sup>9</sup> अर्थात् काफिरों के पास से, दरअसल बात यह है कि जब नबी ﷺ ने हुदैबिया के दिन कुदैश के लोगों से इस बात पर समझौता किया कि काफिरों में से जो मुसलमान होकर उनके पास आएगा वह उसे काफिरों को लौटा देंगे, तो जब कुछ औरतें हिज्रत करके आपके पास आईं तो अल्लाह ने उन्हें मुशिरकों को लौटाने से रोक दिया, और उनके आजमाने और परीक्षा लेने का हुक्म दिया।

<sup>10</sup> अर्थात् उन्हें आजमानाओ ताकि तुम जान लो कि उन्हें इस्लाम से कितना लगाव है, चुनावि कहा गया है कि उनसे कसम लिया जाता था कि वे अपने पतियों से नाराज़ होकर तो नहीं आई हैं, और न ही उन्हें जायदाद (भूसंपत्ति) की तलब है, और न कोई और सांसारिक इच्छा है, बल्कि अल्लाह और उसके रसूल की महब्वत और दीने इस्लाम की रगवत है, तो जब उनसे यह कसम ले लिया जाता तो नबी उनके काफिर पतियों के उनके महर और खर्च दे देते थे, और उन्हें काफिरों को नहीं लौटाते थे।

<sup>11</sup> क्योंकि यह स्पष्ट है कि उनकी वास्तविक हालत को अल्लाह ही बेहतर जानता है, उसने तुम्हें इसकी जिम्मादारी नहीं सौंपी है, बल्कि तुम्हारी जिम्मेदारी मात्र इतनी है कि तुम उन्हें आजमाना लो ताकि तुम पर वह बातें स्पष्ट हो जाएं जो उनके इस दावे की सत्यता की पुष्टि करती हों कि वह वास्तव में इस्लाम से चाहत रखती हैं, और मात्र इस्लाम की खातिर ही हिज्रत करके आई हैं।

<sup>12</sup> अर्थात् आजमाने के बाद जिसका तुम्हें हुक्म दिया गया था, वह जाहिर में तुम्हें मोमिना लगती हों।

<sup>13</sup> तो तुम उन्हें उनके काफिर शौहरों के पास मत लौटाओ।

<sup>14</sup> कोई मोमिना औरत किसी काफिर मर्द के लिए हलाल (वैध) नहीं, औरत के इस्लाम लाने से उसके शौहर से उसकी जुदाई वाजिब होती है, मात्र उसकी हिज्रत से नहीं।

<sup>15</sup> अर्थात् उन हिज्रत करने और इस्लाम स्वीकार करके आने वाली औरतों के शौहरों ने उन्हें जो महर दिया है, तुम उन्हें वापस लौटा दो, इमाम शाफिई कहते हैं कि यदि शौहर के सिवा उसके नातेदारों में से कोई दूसरा बिना किसी बदले के यदि महर मांगे तो वह उसे रोक ले और न दे, क्योंकि महर मात्र शौहर का हुक् है।

<sup>16</sup> अर्थात् इद्दत के पश्चात उनसे निकाह कर लेने में कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि अब वह भी तुम्हारे धर्म में आ गई हैं।

विवाह बन्धन को अपने कब्जे में न रखो <sup>1</sup>, और जो कुछ तुमने खर्च किया हो मांग लो <sup>2</sup>, और जो कुछ उन काफिरों ने खर्च किया हो वह भी मांग लें <sup>3</sup>, यह <sup>4</sup> अल्लाह का फैसला है <sup>5</sup> जो तुम्हारे बीच कर रहा है, अल्लाह तआला बहुत जानने वाला और हिक्मत वाला है।

11 और यदि तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाए <sup>6</sup> और काफिरों के पास चली जाए फिर तुम्हें उसके बदले का समय मिल जाए, तो जिनकी पत्नियाँ चली गई हैं उन्हें उनके खर्च के बराबर दे दो <sup>7</sup>, और उस अल्लाह तआला से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो <sup>8</sup>।

12 हे नबी! जब मुसलमान औरतें आप से इन बातों पर बै'अत करने आएँ <sup>9</sup> कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाएंगी, चोरी नहीं करेंगी, जिनाकारी (व्यभिचार) नहीं करेंगी, न ही अपनी औलाद को मार डालेंगी <sup>11</sup>, और न कोई ऐसा आक्षेप (बुहतान) लगाएंगी जो स्वयं अपने हाथों और पैरों के सामने गढ़ लें <sup>12</sup>, और किसी पुण्य के काम में <sup>13</sup> तेरी

1 अर्थ यह है कि जिस मुसलमान के पास कोई काफिर औरत हो तो वह उसकी पत्नी नहीं रही, क्योंकि धर्म बदलने के कारण उसका निकाह खत्म हो गया। पहले काफिरों और मुसलमानों के बीच शादी विवाह जायज़ था, काफिर मुसलमान औरतों से शादी करते थे और मुसलमान काफिर औरतों से, इस आयत के उतरने के बाद यह हुकम उन काफिर औरतों के बारे में खत्म हो गया जो मुश्रिका हैं, रही काफिर किताबिया औरतें तो वह इस हुकम में दाखिल नहीं, मुसलमान अब भी उन से निकाह कर सकते हैं।

2 अपनी पत्नीयों के महर मांग लो जब वह इस्लाम से फिर कर उनके पास चली गई हों।

3 मुफरिसरीन कहते हैं कि कोई मुसलमान औरत इस्लाम से फिर कर उन काफिरों के पास चली जाती जिनका मुसलमानों से प्रतिज्ञा (संधि) थी तो उन काफिरों से कहा जाता कि तुम इसकी महर वापस कर दो, और यदि कोई काफिर औरत इस्लाम कबूल करके मुसलमानों के पास आ जाती तो मुसलमान उसकी महर उसके काफिर शौहर को वापस लौटा देते।

4 अर्थात् दोनों ओर से महरों की वापसी का यह हुकम।

5 उन मुश्रिकों के साथ जिनसे हूदैबिया में समझौता हुआ, परन्तु उन मुश्रिकों के अतिरिक्त जिन से कोई समझौता नहीं, और एक कौल यह है कि यह हुकम खत्म हो चुका है, कुतुबी कहते हैं कि महरों के लौटाने का यह हुकम उसी ज़माने के साथ खत्म था, परन्तु पति पत्नी में से जब कोई इस्लाम स्वीकार कर ले तो उनके बीच जुदाई का हुकम हमेशा के लिए बाकी है।

6 वह इस तरह से कि इस्लाम से मुंह मोड़कर काफिरों के मुल्क में चली जाए, चाहे वे किताब वाले ही क्यों न हों।

7 अर्थात् उन काफिरों से जिहाद में जो ग़नीमत के माल तुम्हें मिले हों उन्हें बॉटने से पहले उन मुसलमानों को जिनकी पत्नीयाँ काफिर मुल्कों में चली गई हैं और मुश्रिकों ने उनके महर उन्हें नहीं लौटाए हैं तो इस कै और ग़नीमत के माल में से उनके खर्च के बराबर दे दो ताकि उनके नुकसान की भरपाई हो जाए।

8 अर्थात् कोई ऐसा काम न करो जिस से तुम अल्लाह की पकड़ में आजाओ।

9 अर्थात् इस्लाम पर आप से बै'अत करने के इरादे से आएँ।

10 चाहे वह कोई भी हो। और यह फत्हे मक्का के दिन की बात है, क्योंकि मक्का वालों की औरतें आ-आकर आप से बै'अत कर रही थीं, तो अल्लाह तआला ने आपको हुकम दिया कि आप उनसे इस बात पर बै'अत करें कि अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाएंगी।

11 जैसे वह जाहिलियत में करती थीं कि लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करती थीं।

12 अर्थात् अपने शौहर की तरफ उन औलाद की निसबत नहीं करेंगी जो उनसे नहीं हैं, फर्रा कहते हैं : औरत किसी पड़े हुए नौ-मौलुद बच्चे को उठा लेती और अपने शौहर से कहती के यह मेरा बच्चा है जो आपके वीर्य से है। इन्हे अब्बास कहते हैं कि, औरत बच्ची जनती थी तो उसके बदले कोई बच्चा ले लेती थी।

13 अर्थात् किसी भी काम से जिस में अल्लाह का अनुकरण हो, जैसे मुत्क पर विलाप (नौहा) करने, कपड़े फाड़ने, सर के बाल नोचने, गला फाड़ने, चेहरा

يَأْتِيهَا النَّيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ بِبَيْعَتِكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرَكَنَ  
بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يُشْرَفْنَ وَلَا يُزَيْنَنَّ وَلَا يَقْتُلَنَّ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ  
بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ  
فِي مَعْرُوفٍ فَبَايَعْنَهُنَّ وَأَسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنْ اللَّهُ عَفُورٌ رَحِيمٌ  
12 يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَأَنْتَوَلُوا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ  
فَدَيْسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَسِ الْكُفَّارُ مِنَ أَصْحَابِ الْقُبُورِ 13

سُورَةُ الصَّفَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ  
1 يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ 2  
كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ 3 إِنْ  
اللَّهُ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقْتَلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًا كَانَهُمْ  
بُنِينَ مَرْصُوصٌ 4 وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ لِمَ  
تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ 5

नाफरमानी नहीं करेंगी, तो आप उनसे बै'अत कर लिया करें, और उनके लिए अल्लाह से क्षमा-याचना करें <sup>14</sup>, अवश्य अल्लाह तआला माफ करने वाला रहम करने वाला (दयालु) है।  
13 हे मोमिनो! तुम उस कौम से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह का अजाब आचुका है <sup>15</sup>, जो आखिरत से इस तरह निराश हो चुके हैं <sup>16</sup>, जैसे कि मुर्द कब्र वालों से काफिर निराश हैं <sup>17</sup>।

## सूरतु सफ़ - 61

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 आकाशों और धरती की अल्लाह की पवित्रता (पाकी) बयान करती है, और वही ग़ालिब (प्रभावशाली) हिक्मत वाला है।

2 हे ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं <sup>18</sup>?

पीटने, और तबाही और बर्बादी इत्यादि का विलाप करने से रुक जाने में।

14 अर्थात् उनसे यह बै'अत लेने के बाद आप अल्लाह से उनकी माफी और क्षमा की याचना करें।

15 इसमें काफिरों के सभी ग्रुप शामिल हैं, और एक राय यह है कि इससे मात्र यहूदी मुराद है।

16 अर्थात् उन्हें अपने कुफ़ के कारण आखिरत पर यकदम विश्वास नहीं।

17 जैसे मृत्यु पश्चात दोबारा न उठाए जाने पर आस्था रखने के कारण उन्हें अपने मृतकों के दोबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं।

18 इन्हे अब्बास फरमाते हैं कि कुछ मुसलमान जिहाद फ़र्ज़ होने से पहले कहते थे कि हम चाहते हैं कि अगर अल्लाह हमें बता देता उसे सबसे अधिक प्रिय अमल कौनसा है? तो हम उसे करते, तो जब अल्लाह ने उन्हें बता दिया कि सबसे प्रिय अमल जिहाद है तो उनमें से कुछ लोगों ने उसे नापसंद किया, और जिहाद का हुकम उन्हें मुश्किल लगा तो यह आयत उतरी।



وَاذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا  
 لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ فَلَمَّا  
 جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٦﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى  
 عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٧﴾  
 يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ  
 الْكَافِرُونَ ﴿٨﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ  
 عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٩﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا هَلْ أَذْكَرُ  
 عَلَى بَحْرٍ فَوْقَ نَجْدِكَ مِنَ الْعَذَابِ أَلَيْسَ ﴿١٠﴾ تَوَمَّنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمُتَّعِدُونَ  
 فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾  
 يَعْرِفَرُكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيَدْعُكُمْ حَتَّى تَخْرُجُوا مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارَ وَمَسْكِنٌ  
 طَبِيعَةٌ فِي جَنَّتِ عَدْنٍ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾ وَأُخْرَى يُحِبُّونَهَا نَصْرٌ  
 مِنَ اللَّهِ وَفَيْضٌ قَرِيبٌ وَبَشِيرٌ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا كُونُوا  
 أَنْصَارًا لِلَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ  
 قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَمَا نَمَنْتَ طَائِفَةٌ مِنْ بَنَاتِ إِسْرَائِيلَ  
 وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا عَلَى عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿١٤﴾

3 तुम जो करते नहीं उसका कहना अल्लाह को बहुत नापसंद (अप्रिय) है 1।

4 अवश्य अल्लाह तआला उन लोगों से प्रेम करता है जो उसके रास्ते में पंक्तिबद्ध (सफ बस्ता) होकर जिहाद करते हैं 2। जैसे कि वह सीसा पिलाई हुई इमारत है 3।

5 और (याद करो) जबकि मूसा (عليه السلام) ने अपनी कौम से कहा 4 हे मेरे समुदाय के लोगो! तुम मुझे क्यों सता रहे हो 5

जबकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ 6, तो जब वे देहे ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों को (और अधिक) टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह तआला नाफ्रमान कौम को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।

6 और जब मर्यम के पुत्र ईसा ने कहा ऐ (मेरे समुदाय) इस्राइल की औलाद! मैं तुम सबों की ओर अल्लाह का रसूल हूँ, अपने से पहले की किताब तौरात की मैं पुष्टि करने वाला हूँ, और अपने बाद आने वाले एक रसूल की मैं तुम्हें खुशखबरी सुनाने वाला हूँ जिन का नाम अहमद है, फिर जब वह उनके पास स्पष्ट प्रमाण लाए तो यह कहने लगे यह तो खुला जादू है 10।

7 और उस व्यक्ति से अधिक अन्यायी और कौन होगा जो अल्लाह पर झूट गढ़े? जबकि वह इस्लाम की ओर बुलाया जाता है 11, और अल्लाह ऐसे जालिमों को हिदायत नहीं देता 12।

8 वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपनी फूंक से बुझा दें 13, और अल्लाह अपने नूर को परिपूर्ण करने वाला है 14 काफिर बुरा ही क्यों न मानें।

9 यह वही अल्लाह है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म देकर भेजा, ताकि उसे दुश्म सारे धर्मों पर गालिब करदे 15, मुणतपूजक नाखुश ही क्यों न हों 16।

मुहम्मद (ﷺ) की उम्मत आप के साथ वह सब कुछ करने से डरे जो मूसा (ﷺ) और ईसा (ﷺ) की कौम ने उनके साथ किया।

5 उन बातों का विरोध करके जिनका मैं तुम्हें आदेश दे रहा हूँ, उन शरी'अतों में जो अल्लाह ने तुम पर अनिवार्य किया है, या गालियाँ देकर और बुराइयाँ बयान करके मुझे क्यों सता रहे हो? विस्तार से इसका चर्चा सुरतुल अहज़ाब आयत न० ६६ में हो चुका है।

6 अर्थात् तुम मुझे क्योंकर सता रहे हो जबकि तुम्हें इसकी जानकारी है कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, और रसूल का आदर-भाव किया जाता है, और उसका मान-मर्यादा होता है, मेरे रसूल होने में तुम्हें कुछ भी शंका नहीं क्योंकि तुम उन मो'जनों (चमत्कारों) को अपनी आँखों से देख रहे हो, जो मेरी रिसालत स्वीकार करने पर तुम्हें विवश कर रहे हैं, और जो तुम्हें दृढ़ विश्वास का लाभ दे रहे हैं।

7 अर्थात् जब उन लोगों ने सत्य को छोड़ दिया और अपने नबी को सताया तो अल्लाह ने उनके इस पाप के बदले उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और वह सत्यता से विमुख होगए।

8 अर्थात् मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारे पास इन्जील लेकर आया हूँ कोई ऐसी चीज़ लेकर नहीं आया हूँ जो तौरात के प्रतिकूल हो, बल्कि इसमें ऐसी बातें हैं जिनकी मैं तुम्हें खुश-खबरी देने वाला हूँ, फिर क्योंकर तुम मुझ से नफ़रत और घृणा करते हो और मेरा विरोध कर रहे हो।

9 तो जब बात ऐसी है तो कोई कारण नहीं कि तुम मुझे झुठलाओ।

अहमद हमारे नबी ﷺ का नाम है, इसके अर्थ वास्तव में ऐसी व्यक्तित्व के हैं जिसकी गुणों के कारण उसकी इतनी प्रशंसा होती हो कि उतनी किसी और की न की जाती हो।

10 अर्थात् ईसा (ﷺ) जब उनके पास मो'जनों को लेकर आए तो उन्होंने उसे जादू ठाना और कहने लगे : यह जो हमारे पास लेकर आए हैं वह तो खुला जादू है, और एक कौल यह है कि इस से मुराद नबी ﷺ है, जब आप मो'जनों (चमत्कारों) को लेकर आए तो मक्का के काफिर कहने लगे यह तो खुला जादू है।

11 जो सारे धर्मों में उत्तम और सर्व श्रेष्ठ है, तो जब इसका हाल यह है तो वह दूसरों पर झूट बांध ही नहीं सकता तो अपने रब के विरुद्ध झूट क्यों गढ़ेगा।

12 और जिनका ऊपर चर्चा हुवा वे भी उन्हीं अत्याचारियों में से हैं।

13 अर्थात् उनका हाल इस्लाम का अपमान करने और अपनी झूठी बातों के द्वारा लोगों को उसकी हिदायत से रोकने के लिए प्रयास करने में उस व्यक्ति के हाल की तरह है जो महान नूर को अपने मुंह से फूँक कर बुझाना चाहता हो।

14 इस्लाम धर्म को पूरे संसार में गालिब करके और उसे दूसरे धर्मों पर बुलन्द करके।

15 ताकि उसे सारे धर्मों पर गालिब कर दे और उनपर उसे श्रेष्ठता और उत्तमता प्रदान करदे।

16 अर्थात् हर अवस्था में ऐसा होकर रहेगा।

1 अर्थात् अल्लाह तआला ऐसी बातों से अधिक नाराज़ होता है, और एक कौल यह है कि यह ऐसे लोगों के बारे में है जो नबी ﷺ के पास आते तो उनमें से एक कहता कि मैं अपनी तलवार लेकर लड़ा, और मैं ने इतने इतने लोगों को मार गिराया, परन्तु न तो वह लड़ा होता और न किसी को उसने मारा होता।

2 अल्लाह तआला यहाँ उनसे यह बयान कर रहा है कि अल्लाह को अपने बन्दों के आमाल में से सब से अधिक प्रिय अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना है, और हदीस शरीफ में है : "सारी चीज़ों का सार : इस्लाम है, और उसका खम्बा : नमाज़ है, और उसकी चौटी : अल्लाह के रास्ते में जिहाद है।"

3 अर्थात् वह आपस में एक दूसरे से मिल जाते हैं यहाँ तक कि वह एक चीज़ की तरह हो जाते हैं, और ऐसा अल्लाह के दीन पर उनकी मजबूती के कारण होता है, इस सम्बन्ध में वह ज़रा भी लेट नहीं करते, तुलन्त एक जुट हो जाते हैं, दुश्मन उनमें घुस नहीं सकता।

4 जब अल्लाह तआला ने यह बताया कि वह अपने रास्ते में जिहाद करने वालों को पसंद करता है, और उनसे महबूत करता है, तो उसने यह बात भी स्पष्ट करदी कि मूसा (ﷺ) और ईसा (ﷺ) दोनों ने लोगों को तौहीद का आदेश दिया और दोनों ने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और जिन लोगों ने इनका विरोध किया वह अल्लाह की सज़ा के हकदार हुए, ताकि

10 ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बतलाऊं जो तुम्हें दुःखदायक अज़ाब से बचा ले <sup>1</sup>।

11 अल्लाह तआला पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अल्लाह के रास्ते में तन, मन और धन से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर यदि तुम में ज्ञान हो।

12 अल्लाह तआला तुम्हारे पाप माफ करदेगा <sup>2</sup>, और तुम्हें उन जन्नतों में पहुंचाएगा, जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, और साफ सुथरे घरों में जो अदून के जन्नत में होंगे <sup>3</sup>, यह बहुत बड़ी सफलता है <sup>4</sup>।

13 और तुम्हें एक दूसरा उपहार भी देगा जिसे तुम चाहते हो <sup>5</sup>, वह अल्लाह की सहायता और तुरन्त फतह है <sup>6</sup>, ईमानदारों को खुशखबरी देदो <sup>7</sup>।

14 ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के मददगार बन जाओ <sup>8</sup>, जिस तरह मर्यम (عليها السلام) के बेटे ईसा (عليه السلام) ने हवारियों (मित्रों) से कहा : कि कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने <sup>9</sup>? हवारियों ने कहा हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं <sup>10</sup>, तो इस्माइल की औलाद में से एक गुट तो ईमान लाया <sup>11</sup>, और एक गुट ने कुफ्र किया <sup>12</sup> तो हमने मोमिनों को उनके दुश्मनों के विरोध में सहायता की <sup>13</sup> तो वो विजयी होगए <sup>14</sup>।

1 अर्थात अमल को तिजारत की जगह में रखा गया, इसलिए कि इसमें भी उन्हें व्यापार की तरह ही लाभ होगा, और वह लाभ जन्नत में जाना और नरक से बचना है, यही व्यापार है जिसकी व्याख्या अगली दोनों आयतों में आई है, क्योंकि इन दोनों आयतों का अर्थ यह है कि ईमान और जिहाद का मूल्य अल्लाह के यहाँ जन्नत है और यह बहुत लाभदायक बिक्री है।

2 पहले उस सामान का चर्चा हुआ जिस से वह व्यापार कर रहे हैं, और यहाँ उस मूल्य का चर्चा हुआ है जिसका उसने उनसे वादा किया है, अर्थात यदि तुम ईमान लाओगे तो वह तुम्हारे पाप माफ कर देगा।

3 हमेशगी वाले बागों में होंगे, जहाँ न मौत आएगी कि यह उपहार खत्म होजाए और न वहाँ से निकलना ही होगा।

4 अर्थात यह माफ़ी जिसका चर्चा हुआ और जन्नत में जाना इतनी बड़ी सफलता है कि उससे बढ़कर कोई सफलता नहीं, और ऐसी कामयाबी है कि कोई भी कामयाबी उसकी बराबरी नहीं कर सकती।

5 अर्थात वह तुम्हें एक और उपहार भी देगा जो तुम्हें पसन्द है और जिसे तुम चाह रहे हो।

6 और यह अल्लाह की ओर से तुम्हारी मदद और ऐसी जीत है जो बहुत जल्द होने वाली है, वह तुम्हें विजता बनाएगा, अर्थात कुरैश के खिलाफ तुम्हारी सहायता करेगा, और तुम उन को जीत लोगे, अता कहते हैं इससे मुराद फ़ारस और रूम की जीत है।

7 आयत का अर्थ यह है कि ऐ मुहम्मद! आप ईमानवालों को संसार में मदद और जीत और परलोक में जन्नत की खुशखबरी दे दी जिए।

8 अर्थात धर्म की इस सहायता पर जमे रहो जिस पर तुम हो।

9 अर्थात अल्लाह के धर्म की इसी तरह सहायता करो, जिस तरह ईसा (عليه السلام) के हवारियों ने की थी, जब ईसा (عليه السلام) ने उन से कहा था : कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने? तो उन्होंने कहा : हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं।

10 अर्थ यह है कि तुम में से कौन है जो उन चीजों में जो अल्लाह से करीब करने वाली हैं मेरी मदद करे? और यह हवारी ईसा (عليه السلام) के मददगार और उनके मुख़िलस साथी थे जो सब से पहले उन पर ईमान लाए, यह टोटल 92 आदमी थे।

11 एक गुट ईसा (عليه السلام) पर ईमान लाया।

12 और एक गुट ने उनके साथ कुफ्र किया।

13 अर्थात हमने सत्यपथियों को असत्यपथियों पर शक्ति प्रदान की।

14 तो उन्होंने उन पर विजय प्राप्त कर ली, क़तादः ने अल्लाह तआला के क़ौल : **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَصْحَابَ اللَّهِ** से यही हुदा, आप के पास 70 लोग आए और "अक्बा" में आप से बै'अत की और आप को पनाह दिया, और आप की मदद की यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने अपने धर्म को ग़ालिब कर दिया, अल्लाह के रसूल ﷺ ने उन लोगों से जो आप से अक्बा में मिले थे फ़र्माया : तुम अपने में से 92 लोगों को निकालो, जो अपनी क़ौम में मेरे क़फ़ील होंगे जिस तरह हवारी ईसा बिन मर्यम (عليها السلام) के क़फ़ील थे, फिर

سُورَةُ الْحَجَرَاتِ

آياتها 11

ترجمہ 12

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَسْبِغْ لَكُمْ فِي الْمَحَارِبِ حَمِيمًا ۚ وَفِي الْبِلَادِ الْمَأْسُورِ ۖ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ مَا نَبَّغْتُمْ فِي الْأَرْضِ الْمَكْفُورِ ۖ وَمَنْ أَعْتَدَ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۚ وَفِي الْبِلَادِ الْمَأْسُورِ ۖ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ مَا نَبَّغْتُمْ فِي الْأَرْضِ الْمَكْفُورِ ۖ وَمَنْ أَعْتَدَ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۚ وَفِي الْبِلَادِ الْمَأْسُورِ ۖ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ مَا نَبَّغْتُمْ فِي الْأَرْضِ الْمَكْفُورِ ۖ وَمَنْ أَعْتَدَ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۚ

۱ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمَمِينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ ۲ وَأَخْرَجَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ ۳ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۚ ۴ مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۚ ۵ قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ رَعَمْتُمْ أَنْكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوْا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ ۶ وَلَا يَسْمَعُونَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمْت أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۚ ۷ قُلْ إِنْ أَلَمْتُ أَلْمُ الَّذِي فَتَرُونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مَلَكٌ بِكُمْ تُدْرِكُونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيَنْتَقِمُ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ ۸

## सुरतुल जु'आ - 62

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 सारी चीजें जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह की पाकी करती हैं, जो बादशाह, बहुत पाक <sup>15</sup>, ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

2 वही है जिसने अनपढ़ <sup>16</sup> लोगों में से एक रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है <sup>17</sup>, और उनकी पाक करता है <sup>18</sup>, और उन्हें किताब और हिक्मत सिखाता है <sup>19</sup>, अवश्य यह इससे पहले स्पष्ट गु़ामाही में थे <sup>1</sup>।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने उन नुक़्बा से कहा : तुम लोग अपनी क़ौम पर (मेरे) क़फ़ील होगे, जैसे ईसा बिन मर्यम (عليها السلام) के क़फ़ील उनके हवारी थे, और मैं अपनी क़ौम का क़फ़ील हूँ। तो उन लोगों ने कहा : ठीक है।

15 कुहूस वह हस्ती है जो हर ऐब से पवित्र हो।

16 उम्मी'इन से मुराद अरब हैं, जिन में कुछ तो अच्छी तरह लिखना पढ़ना जानते थे और कुछ ऐसे थे जो अच्छी तरह पढ़ नहीं सकते थे, क्योंकि वह अहले किताब नहीं थे, उम्मी वास्तव में ऐसा व्यक्ति है जो न लिख सकता हो, और न लिखी हुई कोई चीज़ पढ़ सकता हो, और अरब लोग आम तौर से ऐसे ही थे।

17 अर्थात कुरआन पढ़ कर सुनाता है, बावजूद इसके कि वह अनपढ़ है, लिख पढ़ नहीं सकता, और न ही उसने लिखना पढ़ना किसी से सीखा है।

18 अर्थात उन्हें कुफ्र, पाप और बुरे अज़्लाक से पवित्र करता है, और एक क़ौल यह है कि ईमान द्वारा उनके दिलों को पवित्र करता है, और उन्हें पाक-दिल बना देता है।

19 किताब से मुराद कुरआन और हिक्मत से मुराद सुन्नत है, और एक क़ौल यह भी है कि किताब से क़लम की लिखावट मुराद है, और सुन्नत से मुराद धर्म की समझ है, जैसा कि मालिक बिन अनस ने कहा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَوَدَّى لِّلصَّلَاةِ مِن يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩﴾ فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِن فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾ وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ مَخْرَجًا فَأَنْفُسُهُمْ إِلَيْهَا وَرَكُوكَ قَائِمًا قُل مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهِو وَمِنَ النَّجْرَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١﴾

### سُورَةُ الْمَائِدَةِ

#### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا أَنشَدْنَاكَ لِرَسُولِ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لِرَسُولِهِ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ ﴿١﴾ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا فطُغِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٣﴾ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسْتَدْرَأٌ يَّحْسَبُونَ كُلَّ صَبِيحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعُدُو فَاخَذَهُمْ قَتْلُهُمْ اللَّهُ أَنَّى يُؤَفِّكُونَ ﴿٤﴾

- 3 और दूसरों के लिए भी उन्हीं में से, जो अब तक उनसे नहीं मिले, और वही गालिब और हिक्मत वाला है 3।  
4 यह अल्लाह की कृपा (फ़ज़ल), जिसे चाहे अपनी कृपा से नवाजे, और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़ल वाला है।  
5 जिन लोगों को तौरात के अनुसार कर्तव्य करने का आदेश दिया गया फिर उन्हीं उसके अनुसार कर्तव्य नहीं किया 5 उनकी मिसाल उस गधे की तरह है जो बहुत सी 6 किताबें

लादे हो, अल्लाह की निशानियों को झुटलाने वाले की बहुत बुरी मिसाल है 8, और अल्लाह ऐसे जालिमों को मार्गदर्शन नहीं देता।  
6 कह दिया कि ऐ यहूदियों! यदि तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के मित्र हो दूश्रे लोगों के सिवाय 9, तो यदि तुम सच्चे हो 10 तो मौत की कामना (तमन्ना) करो 11।  
7 यह कभी मौत की तमन्ना नहीं करेंगे उन अमलों के कारण जो अपने आगे, अपने हाथों भेज रखे हैं 12, और अल्लाह जालिमों का अच्छी तरह जानता है।  
8 कह दिया कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तो तुम्हें पहुँच कर रहेगी 13, फिर तुम सब, छिपे और खुले जानने वाले (अल्लाह) की तरफ लौटाए जाओगे 14, और वह तुम्हें तुम्हारे किए हुए सारे काम बतला देगा 15।  
9 ए वह लोगो जो ईमान लाए हो! जुम्'आ के दिन जब नमाज़ की अज़ान 16 दी जाए, तो तुम अल्लाह के जिक्र की तरफ दौड़ पड़ो 17, और किनना बेचना छोड़ दो 18 यह तुम्हारे हक में बहुत ही बेहतर है 20 यदि तुम जानते हो।  
10 फिर जब नमाज़ होचुके 21 तो धरती में फैल जाओ 22,

- 7 अस्फ़ार सिफ़ की जमुअ (बहुवचन) है, जिसके अर्थ बड़ी किताब के हैं, गथा नहीं जानता कि उसकी पीठ पर किताब है या कूड़ा-ककट।  
8 गधे से तुलना की गई है, और यहूद जो उससे वास्तव में एक-रूपता रखते हैं उनकी तुलना की गई है, यह सब से बुरी मिसाल है जो उन झुटलाने वालों की दी गई है, अर्थ यह है कि मुसलमानों! तुम उनके जैसे न हो जाओ, इस तशबीह का चर्चा पहले इस लिए किया गया है, ताकि उसके द्वारा उन लोगों को डराया जाए जो अल्लाह के रसूल ﷺ को मिम्बर पर खुल्वा देते हुए खड़ा छोड़कर अनाज खरीदने चले गए थे, और उसी जैसे हर वह व्यक्ति भी है जो खुल्वा सुन कर विमुख होजाए, जैसा कि हदीस में आया है : जो जुमुआ के दिन इमाम के खुल्वा देने की अवस्था में बात करे उसकी मिसाल उस गधे की है, जो अपने ऊपर किताबों का बोझ लादे हो, और जो उससे चुप हो जाने के लिए कहे उसका भी जुमुआ नहीं।  
9 यही शब्दों से वह लोग मुराद हैं जो तकररुफ के साथ यहूदी बने हुए थे, और यह इस कारण कि यहूदी लोगों पर अपनी श्रेष्ठता और बर्तरी के दवेदार थे, और कहते थे कि वह अल्लाह के दोस्त, उसके बेटे और चहेते हैं, तो अल्लाह तआला ने अपने रसूल को हुक्म दिया कि जब वह यह बातिल दावे करें तो उन से कहे।  
10 अपने इस गुमान में, क्योंकि जिसे इसकी जानकारी हो कि वह जन्मती है, तो वह जन्म में जल्द पहुँचने की चाहत करता है।  
11 तुम मौत की कामना करो ताकि तुम्हें वह श्रेष्ठता प्राप्त हो जाए।  
12 अर्थात जिस कुफ़्र और पाप के काम को वह करते आए हैं, और अल्लाह की किताब में इन्होंने जो परिवर्तन किए हैं, इनके कारण वह मौत की चाहत और आर्जू कभी नहीं कर सकते।  
13 अर्थात वह तुम पर उसी तरफ से आकर रहेगी जिस तरफ से तुम भाग रहे हो, और जल्द ही वह तुम्हारा सामना करके रहेगी।  
14 और यही कियामत का दिन होगा।

- 1 अर्थात शिर्क कर रहे थे और हक से अनभिग थे।  
2 अर्थात जो उनसे अभी नहीं मिले हैं और तुरन्त उनसे इसके बाद मिलेंगे, अर्थात वह उन अनपढ़ों को पाक करता है, और फिर दूसरे लोगों को भी पाक करता है जो उन्हीं अरब में से हैं, और यह अरब के लोग हैं जो सहाबा ७ के पश्चात प्रलय तक आने वाले हैं, इमाम बुखारी ने अबू हुरैरा से रिवायत की है कि जिस समय सूरतुल जुमा नाज़िल हुई हम लोग नबी ७ के पास बैठे हुए थे, आपने इसकी तिलावत की, जब आप नज़िल हुआ पर पहुँचे तो एक व्यक्ति ने आप से पूछा : अल्लाह के रसूल! यह कौन लोग हैं जो अभी नहीं मिले हैं? तो आप ७ ने अपना हाथ सलमान फारसी पर रखा और फरमाया : कसम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है, यदि ईमान सुरैया पर भी होगा तो उन में से कुछ लोग उसे पा लेंगे।  
3 अर्ज़ाज़ और इकीम दोनों मुबालगा के सेगे हैं, अर्थ यह है कि वह बहुत अधिक गालिब और हिक्मत वाला है।  
4 अर्थात उसके अनुसार अमल करने और जो कुछ भी उसमें है उसे बजा लाने का उन्हें आदेश दिया गया।  
5 अर्थात उसके अनुसार अमल नहीं किए, और उनका अनुकरण नहीं किया जिनका उन्हें आदेश दिया गया था।  
6 यह अल्लाह ने उन यहूदियों की मिसाल बताई है जिन्होंने तौरात के अनुसार अमल करना छोड़ दिया था।

- 15 अर्थात सारे बुरे कामों को बतला देगा, और तुम्हें उनकी सज़ा भी देगा।  
16 इससे मुराद अज़ान है, जो जुमुआ के दिन इमाम के मिम्बर पर बैठने के समय दी जाती है, इसलिए कि नबी दौर में उसके सिवाय कोई और अज़ान नहीं दी जाती थी, रही जुमुआ की पहली अज़ान तो उम्मान ७ ने उसे सहाबा ७ की मौजूदगी में उस समय बढ़ाया जब मदीना फैल गया और उसकी आबादी बढ़ गई।  
17 अर्थात अल्लाह के जिक्र की ओर चल पड़ो, (दौड़ने से मुराद चलना है, क्योंकि नमाज़ के लिए दौड़ कर आने से रोका गया है, इत्मीनान और संजीदगी के साथ आने पर जोर दिया गया है, और जिक्र से मुराद खुल्वा और जामे'अ मस्जिद में नमाज़ अदा करना है) और उसके अस्बाब अर्थात नहाने वजु करने और जुमुआ के प्रबन्ध में लग जाओ।  
18 अर्थात काम-काज रोक दो, इसमें सारी सांसारिक चीज़ें शामिल हैं, इसी लिए जब जुमुआ के दिन मुअज़िन अज़ान शुरू करते तो खरीदना बेचना जायज़ नहीं।  
19 अर्थात अल्लाह के जिक्र की तरफ चल पड़ना और खरीदना बेचना छोड़ देना।  
20 अर्थात खरीदने बेचने में लगे रहने, और अल्लाह के जिक्र की तरफ न जाने से बेहतर है, उस सवाब और बदले के कारण जो उसकी इताअत में है।  
21 अर्थात जब नमाज़ पढ़ चुकी और उसे अदा करके फ़ारिग हो जाओ।  
22 व्यापार के लिए और उन कामों को निपटाने के लिए जिनकी तुम्हें ज़रूरत है।

और अल्लाह का फ़ज़ल (कृपा) खोजो <sup>1</sup>, और अत्यधिक अल्लाह का ज़िक्र किया करो <sup>2</sup>, ताकि तुम सफलता प्राप्त करलो <sup>3</sup>।

11 और जब कोई सौदा बिकता देखे <sup>4</sup> या कोई खेल-तमाशा दिखाई दे, तो उसकी तरफ़ दौड़ जाते हैं <sup>5</sup>, और आप को खड़ा ही <sup>6</sup> छोड़ देते हैं, आप कह दिजिए कि अल्लाह के पास जो है <sup>7</sup>, वह खेल और व्यापार <sup>8</sup> से बेहतर है, और अल्लाह तआला सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।

## सुरतुब मुनाफिकून - 63

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबूब बहुत रहम करने वाला है।

1 तेरे पास जब मुनाफिक आते हैं <sup>9</sup> तो कहते हैं कि हम इस बात के गवाह हैं कि अवश्य आप अल्लाह के रसूल हैं <sup>10</sup> और अल्लाह जानता है कि अवश्य आप उसके रसूल हैं <sup>11</sup>, और अल्लाह गवाही देता है कि यह मुनाफिक झूठे हैं <sup>12</sup>।  
2 उन्होंने अपनी कुस्मों को ढाल बना रखा है <sup>13</sup>, तो उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका <sup>14</sup>, बेशक बुरा है वह काम जिसे यह कर रहे हैं।

3 यह इस कारण है कि यह (दिखाने को) ईमान लाए (दिल में) काफिर ही रहे <sup>15</sup>, तो इनके दिलों पर मोहर कर दी गई <sup>16</sup>

1 फ़ज़ल से मुराद वह रोज़ी है, जिससे अल्लाह अपने बन्दों को नवाज़ता है, अर्थात अपने व्यापार और काम-बंधे का लाभ खोजो।

2 अपने कारोबार और खरीदने बेचने के बीच भी अल्लाह के ज़िक्र को न भूलो, बल्कि अत्यधिक उसका ज़िक्र करते रहो, उस आखिरत और दुनिया की भलाई और अच्छाई पर जिसका उसने तुम्हें मार्गदर्शन किया है, उसका शुक्र करके, इसी तरह ऐसी विरहें और अन्कार करके जिन से अल्लाह को कुर्बत ढालि होती है, जैसे तस्बीह, तक्बीर, हम्द करके और इस्तिगफार इत्यादि द्वारा उसे याद करते रहो।

3 ताकि तुम दुनिया और आखिरत की भलाई और सफलता पा सको।

4 इस आयत का शाने नुज़ूल यह है कि मदीना वाले फ़ाके काट रहे थे, और उन्हें अनाज की सख्त ज़रूरत थी, और इसी बीच कि नबी ﷺ जुमुआ का खुल्वा दे रहे थे कि मुल्के शाम से व्यापारियों का एक दल आ गया, तो आप को खुल्वा देते छोड़कर लोग अनाज लेने चले गए, और मस्जिद में मात्र 92 व्यक्ति बाक़ी रह गए, और एक रिवायत में 9 औरतों का चर्चा है।

5 انفضوا اليها का अर्थ उसकी तरफ़ बाहर जाकर फैल जाने का है।

6 अर्थात मिम्बर पर।

7 "अल्लाह के पास जो है" से मुराद बड़ा सवाब अर्थात जन्मत है।

8 इस तमाशा और व्यापार से जिन की तरफ़ तुम गए, और जिन के कारण तुम मस्जिद में नहीं रहे, और नबी ﷺ का खुल्वा नहीं सुना।

9 अर्थात जब तुम से मिलते और तुम्हारी सभा में होते हैं।

10 अर्थात वह पूरा ज़ोर यह बात बताने पर देते हैं कि वह दिल की गहराई और ख़ालिस अक़ीदे के साथ यह गवाही दे रहे हैं।

11 यह अल्लाह की तरफ़ से मुहम्मद ﷺ की रिसालत की तस्दीक है, जिसका चर्चा उनकी बातों में है, ताकि कोई यह न समझे कि आगे जो झुटलाया गया है उसका सम्बन्ध रिसालत से है।

12 अपने इस दावे में कि नबी ﷺ की रिसालत की जो गवाही दे रहे हैं वह दिल की गहराई और ख़ालिस अक़ीदा के साथ है झूठे हैं, पर उनकी बातें जिस में रिसालत की गवाही है, वह हक़ है।

13 उन लोगों ने अपनी कुस्मों को जो तुम्हारे पास आकर खाते हैं, ढाल बना रखा है, कि उसके द्वारा वह तुम से बचाव करते हैं, और उसे मारे जाने और कैदी बनाए जाने से अपनी सुरक्षा का माध्यम बनाते हैं।

14 अर्थात उन्होंने आप की नुबुव्वत में शुक़ पैदा करके लोगों को ईमान, जिहाद और नेकी और इत्ताअत के कामों से रोका।

15 अर्थात यह इस कारण कि इनका ईमान बाहर ही तक रहा, अन्दर से यह काफिर ही थे, और एक क़ौल यह है कि यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई है जो ईमान लाकर मुत्तद हो गए थे, (इस सूत्रत में तर्जुमा यह होगा : इस सबब से कि यह ईमान लाकर फिर काफिर हो गए।)

16 अर्थात इनके कुफ़्र के कारण इनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, तो इसके बाद इनमें ईमान प्रवेश नहीं कर सकेगा।

وَإِذْ قِيلَ لَمَنْ تَدْعُونَ إِذْ سَأَلْتُمْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوْ آوَأْتُمْ وَسَمِعْتُمْ  
وَأَيَّتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ 5 سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ  
أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ  
اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ 6 هُمْ الَّذِينَ يَقُولُونَ  
لَا نُؤْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا وَيَلَّه  
خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَقْفَهُونَ  
7 يَقُولُونَ لِنَبِيِّنَا إِنَّا كُنَّا عَلَيْهَا تَأْوِيلًا وَإِنَّا لَمُؤْمِنِينَ  
وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ 8 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتْلُوا  
كَلِمَاتِ اللَّهِ فَتُحْسِنُوا وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ وَلَا أَمْوَالَ الْوَالِدِينَ  
وَالْأَقْرَبِينَ بِمَا رَزَقْتُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولُوا  
لَوْ لَا أَنزَلْنَاهُ عَلَىٰ نَبِيِّنَا لَمَا كُنَّا مِنْهُ مُؤْمِنِينَ وَإِن  
يُؤَخَّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذْ جَاءَ أَجَلُهَا وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ 11

अब यह नहीं समझते <sup>17</sup>।

4 और जब आप उन्हें देख लें तो उनके जिस्म आपको खुशनुमा (लुभावना) मालूम हों <sup>18</sup>, यह जब बातें करने लगें तो आप इनकी बातों पर कान लगाएँ <sup>19</sup>, जैसाकि यह लकड़ियाँ हैं दीवार के सहारे लगाई हुई <sup>20</sup>, हर ऊँची आवाज़ को अपने खिलाफ़ समझते हैं <sup>21</sup>, यही वास्तविक (हकीकी) दुश्मन हैं, इन से बचो <sup>22</sup>, अल्लाह इन्हें नाश करे <sup>23</sup>, कहां फिरे जाते हैं <sup>24</sup>।

5 और जब इनसे कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिए

17 उन चीजों को जिनमें इनकी भलाई है।

18 अर्थात इनके रूप अपनी रौनक और सुन्दरता के कारण उस व्यक्ति को अच्छे लगें जो इन्हें देखे।

19 अर्थात इनकी फसाहत और चर्ब-जुबानी के कारण आप इनकी बातों को दुरुस्त और सत्य जानें, मुनाफिकों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबै बहुत फसीह, चर्ब-जुबान, लम्बा और सुन्दर था।

20 अर्थात अल्लाह के रसूल की सभा में उनके टेक लगाकर बैठने को ऐसी लकड़ियों से तस्बीह दी गई है जो दीवारों से टेक लगाकर खड़ी की गई हों, जो लाभदायक समझ से खाली होने के कारण किसी बात को समझती बूझती न हों।

21 कहा जाता है कि मुनाफिकों को हमेशा डर लगा रहता था कि उनके बारे में कोई ऐसी चीज़ नाज़िल न हो जाए जो उन्हें बे-निकाब कर दे, और उनके खून और माल को मुबाह कर दे।

22 अपनी तरफ़ से उन्हें कोई अवसर देने से, या अपनी भेद की बातें उन्हें बताने से, क्योंकि यह तुम्हारे दुश्मनों के जासूस हैं।

23 अल्लाह की इन पर ला'नत हो, यह शाप है, या इसमें ईमान वालों के लिए तालीम है कि वह यह कहें।

24 अर्थात यह कैसे हक़ से फिरे जा रहे हैं, और कुफ़्र की ओर खिंचे जा रहे हैं।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 يَسْبِغُ لَكُمْ فِي الْمَغَارِبِ وَأَمَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَكُمُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ  
 وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ① هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ  
 وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ وَاللَّهُ يَمَّا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ② خَلَقَ السَّمَوَاتِ  
 وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ③  
 يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ وَاللَّهُ  
 عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ④ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ  
 فَذُوقُوا بَأْسَ رَبِّهِمْ وَهُمْ عَدَابٌ أَلِيمٌ ⑤ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ  
 رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَعَالُوا أَبْشَرِيَّةً وَمِنَّا فَكَفَرُوا وَقَوْلُوا وَاسْتَعْنَى  
 اللَّهُ وَاللَّهُ عَنَى حِمِيدٌ ⑥ زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُغَوِّدَ أَقْلَ بِلَى وَرَبِّي  
 لَتُبْعِنُنَّ ثُمَّ لَنُنَبِّئَنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ⑦ فَتَأْمُرُوا بِاللَّهِ  
 وَرَسُولِهِ وَالنُّورَ الَّذِي أَنْزَلْنَا وَاللَّهُ يَمَّا تَعْمَلُونَ حَمِيدٌ ⑧ يَوْمَ  
 يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ الْتَغَابِنِ وَمَنْ يُوْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ  
 صَالِحًا كَفَرَ عَنْهُ سَيَأْتِيهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
 الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑨

अल्लाह के रसूल माफ़ी की दुआ करें तो अपने सर मटकाते हैं 1 और तुम देखोगे कि घमण्ड करते हुए 2 रुक जाते हैं 3।  
 उनके लिए तुम्हारा माफ़ी की दुआ करना और न करना दोनों बराबर है 4, अल्लाह तआला उन्हें कभी माफ़ न करेगा 5, अवश्य अल्लाह तआला ऐसे फासिकों को 6 हिदायत नहीं देता।  
 यही वह है जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर खर्च मत करो, यहां तक कि वह इधर-उधर हो जाए 7 और आकाशों और धरती के सारे खज़ाने अल्लाह तआला की मिलकियत हैं 8, लेकिन यह मुनाफिक नासमझ हैं 9।  
 यह कहते हैं कि यदि हम अब लौट कर मदीना जाएंगे तो

1 अर्थात् ठट्टा करते हुए इस्तिफ़ार से मुंह मोड़ते हुए अपना सर मटकाते हैं।  
 2 अल्लाह के रसूल के पास आने और आप से इस्तिफ़ार की दरखास्त करने से अपने को बड़ समझते हुए, अर्थात् वह अपने आप को इस से बड़ा समझ रहे थे, और ऐसा करने में अपने लिए अपमान समझ रहे थे।  
 3 अर्थात् अल्लाह के रसूल से मुंह फेरते हैं।  
 4 अर्थात् आपका इस्तिफ़ार इनके निफ़ाक और कुफ़्र पर अड़े रहने के कारण इनके कुछ भी काम न आएगा।  
 5 जब तक वह निफ़ाक पर अड़े रहेंगे।  
 6 अर्थात् इत्ता'अत से पूरे तौर पर निकल जाने वालों और अल्लाह की मा'सीयत (पाप) में मग़्फ़ रहने वालों को, और मुनाफिकीन इन में सब से पहले आते हैं।  
 7 यहाँ तक कि बिखर जाएं, इससे वह मुहाजिरीन फ़कीरों को मुराद लेते थे।  
 8 इन मुहाजिरों को भी वही रोज़ी देने वाला है।  
 9 अर्थात् उनकी समझ में यह बात नहीं आती कि रोज़ी के खज़ाने अल्लाह के हाथ में हैं, इसी लिए उन्होंने यह गुमान कर लिया कि अल्लाह मोमिनों पर कुशादगी नहीं करेगा।

इज्जत वाला वहां से ज़लील (अपमानित) लोगों को निकाल देगा 10 सुनो! सम्मान तो मात्र अल्लाह ही के लिए है, और उसके रसूल के लिए और ईमान वालों के लिए है, पर यह मुनाफिकीन जानते नहीं।  
 9 ऐरे मुमिनों तुम्हारे धन और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से गाफिल न करदे 11, और जो ऐसा करे 12 वह बड़े ही घाटा उठाने वाले लोग हैं 13।  
 10 और जो कुछ हमने तुम्हें दे रखा है उसमें से (हमारे रास्ते में) इससे पहले खर्च करो 14 कि तुम में से किसी को मौत आजाए 15 तो कहने लगे कि : ऐ मेरे रब! मुझे तू थोड़ी देर की छूट क्यों नहीं देता 16 कि मैं दान करूं 17 और नेक लोगों में से होजाऊं।  
 11 और जब किसी का निर्धारित समय आजाता है 18 तो फिर उसे अल्लाह तआला कभी मौका नहीं देता, और जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है 19।

## सुरतु त्गाबुन - 64

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।  
 1 (सारी चीज़ें) जो आकाशों और धरती में हैं अल्लाह की पाकी बयान करती हैं, उसी का राज है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है।  
 2 उसी ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कुछ तो काफिर हैं और कुछ मुमिन हैं 20, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह खूब देख रहा है।  
 3 उसीने आकाशों और धरती को हक के साथ पैदा किया, उसीने तुम्हारे रूप बनाए, और बहुत अच्छे बनाए 21, और

10 कहने वाला मुनाफिकों का सरदार अब्दुल्लाह बिन उवै है, अज़ु' से मुराद उसने स्वयं अपने को और अपने साथियों को लिया है, और अल्लाह के रसूल और आप के साथियों को। और लौटने से उसकी मुराद उस युद्ध से उसकी वापसी है।

जैद बिन अक़म से रिवायत है वह कहते हैं कि : मैं नबी के साथ एक गुधे में था, अब्दुल्लाह बिन उवै ने कहा कि यदि हम मदीना वापस लौटे तो उनमें से इज्जत वाला ज़लीलों को निकाल देगा, वह कहते हैं : मैं नबी के पास आया, और उसकी यह बात बताई, वह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उवै ने कसम खा ली कि उसने इस तरह की कोई बात नहीं की है, जैद कहते हैं : मेरी कौम के लोग मुझे कोसने लगे और पूछने लगे इससे तुम्हारा क्या मकसद था? वह कहते हैं कि मैं उदास (दुःखित) होकर सो गया, अल्लाह के नबी ने एक व्यक्ति भेज कर मुझे बुलवाया, और फरमाया : अल्लाह ने तुम्हारा उज़्र नाज़िल किया है, और तुम्हारी तसदीक की है, और यह आयत उतारी है।

11 अल्लाह मोमिनों को उन मुनाफिकों की लतों की खबर दे रहा है, जिन्हें उनके धन और औलाद ने अल्लाह के ज़िक्र, अर्थात् इस्लामी फ़राइज़ से गाफिल कर दिया है, और एक कौल यह है कि ज़िक्र से मुराद तिलावते कुरआन है।

12 अर्थात् दनिया के लिए धर्म से गाफिल होजाए।

13 अर्थात् पूरे तौर पर घाटे में हैं।

14 अर्थात् हम ने तुम्हें जो दिया है उसमें से कुछ भलाई के रास्ते में खर्च करो। एक और कथन यह है कि : खर्च करने से मुराद फ़ज़ ज़क़ात है।

15 अर्थात् उसके पास मौत के असबाब आ जाएं, या वह मौत की निशानियाँ देख ले।

16 क्यों तू मुझे मौका नहीं देता, और मेरी मौत को कुछ समय के लिए टाल नहीं देता।

17 कि मैं अपने माल से सद्का कर लूँ।

18 अर्थात् जब उसकी मौत का समय आ पहुँचता है, और इसकी जीवन की अवधि पूरी हो जाती है।

19 अर्थात् उससे तुम्हारी कोई भी चीज़ छुपी नहीं रहती, जो कुछ तुम कर रहे हो उसके ज्ञान में है, इसका बदला वह तुम्हें जरूर देगा।

20 अल्लाह तआला ने काफिर को पैदा किया और काफिर का कुफ़्र और काफिर का काग उसका कसब (उपाजर्न) है, और मोमिन को पैदा किया, मोमिन का ईमान और उसका काम उसका कसब है, काफिर कुफ़्र करता है और कुफ़्र को पसन्द करता है, और मोमिन ईमान लाता और ईमान को पसन्द करता है, और यह सब अल्लाह के हुकूम से होता है, तुम्हारी चाहत और बस में कुछ नहीं, जब तक कि अल्लाह रब्बुल आलमीन न चाहे।

21 अर्थात् अल्लाह तआला ने तुम्हें पूरा और अच्छे रूप में पैदा किया, और तुम्हारा नाक-नक़शा अच्छा बनाया। अच्छी सूरत और सुडौल शरीर में इन्सान की सुन्दरता कोई

उसी की ओर लौटना है।

4 वह आसमानों और जमीन की सारी चीजों का ज्ञान रखता है, और जो कुछ तुम छुपाओ और जाहिर करो (सब) को जानता है, अल्लाह तो सीनी की बातों तक को जानने वाला है।

5 क्या तुम्हारे पास इससे पहले के काफिरों की खबरों नहीं पहुँची? जिन्होंने अपने अमलों का ववाल चख लिया और जिन के लिए कष्टदायी अज़ाब है।

6 यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट दलीलों (चमत्कारों) को लेकर आए, तो उन्होंने कह दिया कि क्या इन्सान हमारा मार्गदर्शन करेगा? तो इन्कार कर दिया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह ने भी बेनियाजी बुरती, और अल्लाह तो है ही बहुत बेनियाजी सभी सिफतों वाला।

7 उन काफिरों ने भ्रम किया है कि वह दोबारा जिन्दा न किए जाएंगे, आप कह दिजिए कि क्यों नहीं, अल्लाह की कसम तुम जरूर दोबारा जिन्दा किए जाओगे, फिर जो तुमने किया है उसकी खबर दिए जाओगे, और अल्लाह के लिए यह बहुत ही सहज है।

8 सो तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर (ज्याति) पर जिसे हमने उतारा है ईमान लाओ, और अल्लाह को तुम्हारे सभी कामों की खबर है।

9 जिस दिन तुम सभी को उस इकट्ठा होने के दिन इकट्ठा करेगा, वही दिन है हार जीत का, और जो व्यक्ति अल्लाह पर

दकी छुपी बात नहीं, वह बुद्धिमानों के लिए खालिक (सृष्टि) की शक्ति, हिकमत, और महानता की स्पष्ट दलील है, इसी तरह इन्सान का डील-डौल और उसके सोचने समझने की जबर्दस्त योग्यता ऐसे प्रमाण है जो उससे भी बड़ी हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया: **وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِلْمُؤْمِنِينَ (٢٠) وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ**

1 इससे मुराद पिछली कौमों और समुदायों के काफिर हैं, जैसे नूह, और आद व समूद की कौमों इत्यादि, अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम्हारे पास कुरआन में उनके बारे में खबरें आ चुकी हैं कि किस तरह उनके रसूलों ने उन्हें अल्लाह की तौहीद और उसकी इबादत की तरफ बुलाया, और उन चीजों से अलग हो जाने को कहा जिन्हें अल्लाह के सिवाए उन लोगों ने रब बना लिया था, और किस तरह झुठलाने वालों को हलाक किया गया, और रसूलों पर ईमान लाने वालों को बचाया गया।

2 ववाल का अर्थ बोलझ और कठिनाई के हैं, इससे वह सांसारिक अज़ाब मुराद है जिसे यह कौमों भुगतती।

3 इससे मुराद जहन्नम का अज़ाब है।

4 अर्थात् दुनिया और आखिरत का अज़ाब।

5 इस कारण हवा कि उनकी तरफ जो रसूल भेजे गए वे उन्हें स्पष्ट चमत्कार दिखाये।

6 अर्थात् उनमें से हर कौम ने इन्सान ही में से रसूल

होने का इन्कार करते हुए, और उस पर आश्चर्य और हैरत करते हुए अपने रसूलों से यही कहा कि क्या इन्सान हमें मार्गदर्शन करेगा?!!!

7 अर्थात् उन्होंने रसूलों का और रसूलों की लाई हुई बातों का इन्कार किया, और उनसे मुंह मोड़ा, और जो कुछ रसूल लेकर आए उनमें विचार नहीं किया।

8 अर्थात् उनके ईमान और उनकी इबादत से।

9 अर्थात् उसे संसार वालों की इबादत की जरूरत नहीं, उसकी सारी सृष्टि जुबान या हाल से उसकी प्रशंसा में लगी है।

10 अल्लाह तआला ने अपने नबी को हुक्म दिया कि वह उन्हें बता दें कि जब ही अल्लाह उन्हें मरने के बाद जिन्दा करेगा, और उनसे यह कसम खाकर कह दें कि अल्लाह की कसम तुम अपनी कब्रों से जरूर उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने संसार में किया है उसकी तुम्हें खबर दी जाएगी, ताकि तुम पर दलील कायम हो सके, और तुम्हें उसका बदला दिया जा सके।

11 अर्थात् दोबारा जिन्दा करना, और बदला देना।

12 इससे मुराद कुरआन है, क्योंकि यह ऐसा नूर है जिससे जलालत और गुमाही के अंधेरे में हिदायत मिलती है।

13 इकट्ठा होने के दिन से मुराद कियामत (प्रलय) का दिन है, उस दिन सारे महशर के लोग इकट्ठा किए जाएंगे, ताकि वे अपने किए का बदला पाएं, इसमें हर व्यक्ति और उसके अमल को, सारे नबी और उनकी उम्मतियों को, सारे मज्जूम और उन पर अत्याचार करने वालों और सभी पहले और बाद वालों को इकट्ठा किया जाएगा।

14 उस दिन महशर वालों में से कुछ हारेंगे और कुछ जीतेंगे, अर्थात् हक वालों से बातिल वाले हारेंगे, और जन्तियों से जहन्मियों की हार से बड़ी कोई हार

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ

النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَيَسُّ الْمَصِيرُ (١٠) مَا أَصَابَ مِنْ

مُصِيبَةٍ إِلَّا يَذُنُ اللَّهُ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ، وَاللَّهُ بِكُلِّ

شَيْءٍ عَلِيمٌ (١١) وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَاِن

تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَّغُ الْمُبِينُ (١٢) اللَّهُ لَا إِلَهَ

إِلَّا هُوَ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ (١٣) بِتَائِبًا

الَّذِينَ آمَنُوا رَبِّ مِنْ أَرْزُوجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا

لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ وَإِن تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا

فَاِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ (١٤) إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ

فِتْنَةٌ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ (١٥) فَانفِقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ

وَأَسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ وَمَنْ

يُوقِ شَحْمًا نَفْسِهِ فَاُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (١٦) إِن تَقَرَّبُوا

اللَّهَ قَرَابًا حَسَنًا يَضْعَفْ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ شَكُورٌ

حَلِيمٌ (١٧) عَلِيمٌ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (١٨)

سُورَةُ الطَّلَاقِ

ईमान लाकर नेक काम करे, अल्लाह उसके पापों को मिटा देगा

15 और उसे जन्नत में ले जाएगा, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें वह हमेशा हमेशा रहेंगे, यही बहुत बड़ी सफलता है।

10 और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वे सभी जहन्नम में जाने वाले हैं, जिसमें वह हमेशा रहेंगे, और वह बहुत बुरी जगह है।

11 कोई दुःख तकलीफ अल्लाह की अनुमति 16 के बिना नहीं पहुँच सकती, जो अल्लाह पर ईमान लाए अल्लाह उसके दिल को मार्गदर्शन देता है 17, और अल्लाह सारी चीजों का खूब जानकार है 1।

नहीं होगी, गोया कि जहन्मियों ने भलाई को डुराई, नेकी को पाप से, और नेमत को अज़ाब से बदल लिया, और जन्तियों ने उसके उलटा किया। **عَبْتُ فَلَانَا** (मैं ने फूलाने को टग लिया) यह उस समय कहेंगे, जब आपने उससे कोई चीज बेची या खरीदी हो, और उसे घाटा उठाना पड़ा हो, तो "मम्बूत" वह व्यक्ति होगा जो जन्नत में अपने घर वालों और ठिकाने के बारे में घाटे में होगा।

15 अर्थात् जो रसूलों की लाई बातों को सत्य जानेगा, और साथ ही उसके अमल भी नेक होंगे, तो वह इस्कक हकदार होगा कि उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएं।

16 अर्थात् बिना उसकी कज़ा और क़द के नहीं पहुँच सकती, और एक क़ौल यह कि इस आयत के उतरने का अवसर यह है कि काफिर कहते थे: मुसलमान जिस धर्म पर हैं यदि वह सत्य होता तो अल्लाह उन्हें सांसारिक दुःख तकलीफ से सुरक्षित रखता।

17 और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता हो और जानता हो कि उसे मात्र वही मुसीबत पहुँचेगी जिसे अल्लाह तआला ने उसके लिए मुक़दर कर दिया है, तो मुसीबत के समय अल्लाह उसके दिल को हिदायत देता है, और वह यह जान लेता है कि यह अल्लाह की ओर से है, और जो उसे पहुँची उससे चूकने वाली नहीं थी, और जो उससे चूक गई वह उसे पहुँचने वाली नहीं थी, तो वह उसकी कज़ा और क़द को स्वीकार कर लेता है, और **إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ** पढ़ता है, और जब

12 (लोगो!) अल्लाह का कहना मानो, और रसूल का कहना मानो, और यदि तुम मुंह फेरे तो हमारे रसूल के जिम्मे मात्र स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

13 अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं और मुमिनों को मात्र अल्लाह पर ही भरोसा रखना चाहिए।

14 ऐ ईमान वालो! तुम्हारी कुछ पत्नियाँ और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, तो उनसे हेशियार रहना, और यदि तुम माफ़ करदो, छोड़ दो, और क्षमा करदो, तो अल्लाह तआला बख़ाने वाला, मेहबान है।

15 तुम्हारे माल और संतान तो सरार तुम्हारी परीक्षा हैं, और बहुत बड़ा सवाब अल्लाह के पास है।

16 तो जहाँ तक तुम से होसके अल्लाह से डरते रहो, और सुनते और मानते चले जाओ, और अल्लाह के रास्ते में सद्का करते रहो, जो तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो व्यक्ति अपने नपस की लालच से बचा लिया जाए वही सफल है।

17 यदि तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे, तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ाता जाएगा, और तुम्हारे पाप भी माफ़ करदेगा, अल्लाह बड़ा क़दरदान और सहन करने वाला है।

18 वह छिपी और खुली का जानने वाला है जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

वह किसी इम्तिहान में पड़ता है तो सब्र करता है, और जब उस पर नेमतें निखर होती हैं तो शुक्रिया अदा करता है।

1 अर्थात् वह इतना बड़ा ज्ञानी है कि उससे कोई चीज़ छुपी नहीं रहती।

2 अर्थात् अल्लाह और उसके रसूल के अनुकरण ही में लगे रहो।

3 यदि तुम इताअत से मुंह फेरेगें, तो तुम्हारे इस विमुखता का पाप तुम्हें ही होगा, रसूल का कुछ नहीं बिगड़ेगा, अल्लाह का संदेश पहुँचा देने के सिवाय उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं, और वह तुम्हें पहुँचा कर अपना फज़्र पूरा कर चुके हैं।

4 अर्थात् वह तुम्हें भलाई के कामों से रोक देते हैं, इस आयत के उतरने की वजह यह है कि मक्का के कुछ लोगों ने इस्लाम स्वीकार किया, और हिजरत करने की इच्छा की तो उनकी पत्नीयों और बच्चों ने उन्हें हिजरत से रोक दिया।

मुजाहिद कहते हैं : अल्लाह की कसम उन्होंने दुनिया में उन से दुश्मनी नहीं की किन्तु उनकी महब्वत ने उन्हें इस बात पर उभारा कि उन्होंने हारम तरीके से जीविका कमाकर उन्हें प्रदान किया।

5 कि तुम उनसे अपनी महब्वत और अपनी मेहरबानी को अल्लाह की इताअत पर तर्ज़ीह (प्रधानता) दो, और उनके लिए भलाई की चाहत तुम्हें इस बात पर न उकसाए कि तुम अल्लाह की नाफ़रमानी करके उनके लिए रोज़ी कमाओ।

6 अर्थात् उनसे जो गलतियाँ (त्रुटियाँ) हुई हैं उन्हें तुम माफ़ कर दो, और उन पर उनकी पकड़ न करो, और उन पर पर्या करो।

7 तुम्हें और उन्हें दोनों को, और एक कौल यह है कि जिस की पत्नीयों और बच्चों उसे हिजरत से रोकने का कारण बने थे, जब उसने लोगों को देखा कि वह हिजरत में आगे बढ़ गए, और धर्म के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करली, तो उसने अपनी पत्नीयों और बच्चों को उसकी सज़ा देने की इच्छा की तो उस पर उसे यह हुक्म हुआ कि तुम उन्हें माफ़ कर दो।

8 अर्थात् तुम्हारे लिए मुसीबत, इम्तिहान और परीक्षा हैं, वह तुम्हें हारम कमाने और अल्लाह का हक़ अदा न करने पर उकसाते हैं।

9 उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह की फ़र्माबदारी को, और माल और बच्चे की महब्वत में उसकी नाफ़रमानी से बचने को फ़ौक़ियत (प्रधानता) दे।

10 अर्थात् जितनी तुम में शक्ति हो और जहाँ तक तुम्हारे बस में हो।

11 अर्थात् अल्लाह और उसके रसूल के आदेश ध्यान से सुनो और उन्हें बजा लाओ।

12 अपने उन धन से जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, नेकी के कामों में खर्च करो, और उसमें कन्जूसी न करो, और सद्का करके अपने लिए भलाई आगे भेजते रहो।

13 अर्थात् जिन्हें अल्लाह ने कन्जूसी के रोग से बचा लिया, और उन्हें अपने रास्ते में और भलाई के कामों में खर्च करने की तौफ़ीक़ दी तो यही लोग, हर तरह की भलाई पाए और अपने सभी उद्देश्यों में सफल हैं।

14 अर्थात् अपने धनों को भलाई के कामों में खालिस नियत तथा प्रफ़ुल्लता के साथ खर्च करोगे।

15 तो वह उस नेकी को 90 गुना से लेकर 700 गुना तक बढ़ा देगा।

16 और इस बढ़ावतीरी में गुनाहों की माफ़ी को भी सम्मिलित कर देगा।

17 अर्थात् फ़र्माबदारी को कई गुना सवाब देता है, और नाफ़रमानी की पकड़ तुरन्त नहीं करता, उन्हें दील और मुह्लत देता है।

शुरू करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 ऐ नबी! (अपनी उम्मत से कहो कि) जब तुम अपनी पत्नीयों को तलाक़ देना चाहो तो उनकी इद्दत (के दिनों के आरम्भ) में उन्हें तलाक़ दो, और इद्दत का हिसाब रखो, और अल्लाह से जो तुम्हारा रब है डरते रहो, न तुम उन्हें उनके घरों से निकालो, और न वह स्वयं निकले, हां यह और बात है कि वह खुली बुराई कर बैठें, यह अल्लाह की ओर से नियुक्त सीमाएँ हैं, जो व्यक्ति अल्लाह की ओर से नियुक्त सीमाओं से आगे बढ़ जाए, उसने अवश्य अपने ऊपर अपराध किया, तुम नहीं जानते शायद उसके बाद अल्लाह तआला कोई नई बात पैदा करदे।

2 तो जब यह औरतें अपनी इद्दत पूरी करने के करीब पहुँच जायें तो उन्हें या तो बाक़ाएदा अपने निकाह में रहने दो, या बाक़ाएदा उन्हें अलग करदो, और आपस में से दो मुन्सिफ़ व्यक्ति को गवाह

18 अल्लाह तआला ने पहले नबी को पूकारा, यह पूकार आप की प्रतिष्ठा और पद ज़ाहिर करने के लिए है, फिर आप से आपकी उम्मत समेत मुख़िबत हुवा, आयत का अर्थ यह है कि : जब तुम अपनी पत्नीयों को तलाक़ देना चाहो और पुख़्ता इरादा कर लो तो उन्हें उनकी इद्दत के आरम्भ में तलाक़ दो, मुराद यह है कि उन्हें ऐसी पाकी में तलाक़ दो, जिसमें तुमने सुहबत न की हो, फिर वह छोड़ दी जायें यहाँ तक कि उनकी इद्दत पूरी होजाए, तो जब तुमने उन्हें इस तरह तलाक़ दी तो उन्हें उनकी इद्दत में तलाक़ दी। इबने उमर से रिवायत है कि : उन्होंने अपनी बीवी को माहवारी के दिनों में तलाक़ दी, तो उनके वालिद उमर ने इसका चर्चा अल्लाह के रसूल से किया, तो आप गुस्सा हुए, और फरमाया : "वह उसे लौटा ले, फिर उसे रोके रखे, यहाँ तक कि वह पाक होजाए, फिर उसे माहवारी आए और वह उससे पाक होजाए, तो यदि वह उसे तलाक़ देना चाहे तो उसे पाकी की स्थिति में सुहबत करने से पहले तलाक़ दे दे, यही वह इद्दत है जिसका औरतों को तलाक़ देते समय अल्लाह ने हुक्म दिया है"

19 अर्थात् इद्दत को याद रखो, और उस समय को याद रखो, जिसमें तलाक़ हुई है, यहाँ तक कि इद्दत पूरी हो जाए, और यह तीन कुरुअ (पाकी) है, और आयत में शीहरों को ख़िताब है।

20 अर्थात् जिन बातों का वह तुम्हें हुक्म दे उसमें उसकी नाफ़रमानी न करो, और औरतों को तक्लीफ़ न दो।

21 अर्थात् उन घरों से जिन में वह तलाक़ के समय थी, जब तक कि वह इद्दत में हों, घरों की निस्वत उनकी तरफ़ की यह बताने के लिए कि इद्दत के बीच वे उनमें रिहाइश का पूरा हक़ रखती हैं, और बीवियों को भी वहाँ से निकलने से रोकना।

22 अर्थात् वे स्वयं भी उन घरों से न निकलें जब तक कि वे इद्दत में हों, सिवाए किसी ऐसे ज़रूरी काम के जिसके बिना चरना नहीं है।

23 अर्थात् तुम उन्हें उनके घरों से न निकालो मगर यह कि वह खुली बद्-कारी कर बैठें, और एक कौल यह है कि इससे मुराद गाली गुलुच, और जुबान लड़ाना है, जो घर में रहने वाले दूसरे लोगों के साथ यह करती है।

24 अर्थ यह है कि यह आदेश जिन्हें अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए बयान किए हैं, उसकी वह सीमाएँ हैं जो उसने उनके लिए नियुक्त किए हैं, तो उनके लिए जायज़ नहीं कि वह उनका उल्लंघन करें।

25 अपने नपस को हलाक़त की जगह में डालकर।

26 अर्थात् हो सकता है कि वह अपने घर में रहे तो अल्लाह उन दोनों के दिलों में प्रेम डाल दे, और वह दोनों लौट जाएं।

27 अर्थात् जब उनकी इद्दत ख़त्म होने के करीब होजाए।

28 अर्थात् उन्हें वापस लौटा लो, और यह लौटाना उनमें खादिश रखते हुए उनके साथ अच्छी तरह गुज़र बसर के इरादे से हो, न कि उन्हें घाट पहुँचाने के इरादे से।

29 अर्थात् उन्हें छोड़े रखो यहाँ तक कि उनकी इद्दत पूरी हो जाए, और वह स्वयं अपने नपसों की मालिक हो जाएँ, साथ ही जो हक़ उनके तुम्हारे ऊपर हों, उनको उन्हें पूरे दे दो, और उन्हें कोई नुक़सान न पहुँचाओ, अर्थात् इद्दत पूरी हो जाने पर तुम्हारे लिए दो ही चीज़ें हैं या तो भलाई के साथ उन्हें रोक लो, या भलाई के साथ छोड़ दो, रहा घाट पहुँचाने के लिए रोकना, या दुःख पहुँचा कर और उनके हक़ उन्हें न देकर अलग करना, तो यह तुम्हारे लिए जायज़ नहीं।

बनालो <sup>1</sup>, और अल्लाह की खूबी के लिए ठीक ठीक गावाही दो <sup>2</sup>, यही है वह जिसकी नसीहत उसे की जाती है जो अल्लाह पर औ धक्यामत के दिन पर ईमान खता हो <sup>3</sup>। और जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है <sup>4</sup>, अल्लाह उसके निकलने का रास्ता बना देता है <sup>5</sup>।

और उसे ऐसी जगह से <sup>6</sup> रोज़ी देता है जिसका उसे गुमान भी न हो, और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उसे काफ़ी होगा <sup>7</sup>। अल्लाह तआला अपना काम पूरा करके ही रहेगा <sup>8</sup>, अल्लाह तआला ने हर चीज़ का एक अल्दाज़ा निर्धारित कर रखा है <sup>9</sup>।

तुम्हारी औरतों में से जो महिनवारी से निराश होगई हूँ, यदि तुम्हें शक हो <sup>11</sup> तो उनकी इद्दत तीन महीने है, और उन की भी जिन्हें महिनवारी आना शुरू ही न हुआ हो <sup>12</sup> और गर्भवती (हामिला) औरतों की इद्दत उनका बच्चे को जनम देना है <sup>13</sup> और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके हर काम में आसानी कर देगा <sup>14</sup>।

यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह मिटा देगा, और उसे बहुत भारी बदला देगा <sup>15</sup>।

तुम अपनी शक्ति के अनुसार <sup>16</sup> जहाँ तुम रहते वहाँ उन (तलाक वाली) औरतों को रखो <sup>17</sup> और उन्हें तंग करने के कष्ट न दो <sup>18</sup>, और यदि वह गर्भवती हों तो जब तक बच्चा जन्म ले ले, उन्हें खर्च देते रहा करो <sup>19</sup>, फिर यदि

1 अर्थात यदि तुम लौटा रहे हो तो लौटाने पर और यदि अलग कर रहे हो तो अलग करने पर, ताकि लड़ाई झगड़े का पूरे तौर से सफ़ाया होजाए।

2 यह आदेश गवाहों को है कि वह अल्लाह से कुर्बत और नज़दीकी चाहने के लिए ठीक ठीक गावाही दें।

3 ईमान वालों को खास इसलिये किया गया है कि वास्तव में यही लोग लाभ उठाने वाले हैं, दूसरा कोई नहीं।

4 अर्थात जो सीमाएं अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए नियुक्त कर दी हैं उनका उल्लंघन न करके अल्लाह से डरता है।

5 उन चीज़ों से जिसमें वह फंसा है।

6 अर्थात ऐसे तरीके से जो उसके गुमान में भी नहीं होते, तो जिसने तलाक़ दी फिर इद्दत खतम होने पर अलग होने पर, या लौटाने पर गवाह बना लिया, तो अल्लाह उसके निकलने और छुटकारा पाने का रास्ता बना देगा, तंगी तो मात्र उसे होगी जो तलाक़ या लौटाने के बारे में अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन करे।

7 अर्थात अपने आने वाले समस्याओं में जो अल्लाह पर भरोसा रखेगा, तो अल्लाह उसे काफ़ी होगा।

8 अर्थात उससे कोई चीज़ छूट नहीं सकती और न ही किसी चीज़ की तलाब उसे बेवस करती है।

9 अर्थात तंगी के लिए उसने एक समय निर्धारित कर दिया है, और आसानी के लिए भी, यह दोनों अपने अपने समय पर पहुँच कर खतम हो जाते हैं, और सुधी कहते हैं कि : इससे मुराद माहवारी और इद्दत की मुद्दत (अवधि) है।

10 इससे मुराद बूढ़ी औरतें हैं, जिन्हें माहवारी आना बन्द होगया हो, और वह इससे निराश हो चुकी हों।

11 यदि तुम्हें शक हो और इसकी जानकारी न हो कि उनकी इद्दत कितनी होगी।

12 उनकी कम उम्र और माहवारी की उम्र को न पहुँचने के कारण, अर्थात नाबालिग लड़कियों की भी इद्दत तीन महीने है।

13 अर्थात उनकी इद्दत उस समय पूरी होगी जब वह अपने गर्भ को जनम दे देंगी।

14 ज़ह्राक कहते हैं : जो अल्लाह से डरेगा और सुन्नत के अनुसार तलाक़ देगा, तो अल्लाह लौटाने के समस्या को आसान करदेगा।

15 अर्थात उसे आख़िरत में बहुत भारी बदला देगा, और वह जन्नत है।

16 इस आयत में रिहाइश का बयान है, जो मुतल्लका रज़्या (ऐसी औरतें जिन्हें मात्र 9 या 2 तलाक़ हुईं हो) के लिए बाजिब है।

17 अर्थात अपनी आसानी के अनुसार तुम उन्हें उन्ही जगहों में से किसी में रखो जहाँ हमने उन्हें रखा है, यह आदेश मुतल्लका रज़्या के बारे में है, रहीं वह औरतें जिन्हें तीन तलाक़ें दी जा चुकी हों तो उनके लिए नफ़का और सुनना (खर्च और रिहाइश) है ही नहीं।

18 रिहाइश और खर्च के बारे में।

19 मुतल्लका औरत यदि गर्भवती हो तो उसके खर्च और रिहाइश के

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَأْتِيهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا

الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تَخْرُجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ

وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ يَفْجَحَةً مَبِينَةً وَتَلَكَ حُدُودُ

اللَّهِ وَمَنْ تَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ

اللَّهُ يُخَذِّبُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ﴿١﴾ فَإِذَا بَلَغَنَّ أَجَلَهُنَّ فَامْسِكُوهُنَّ

بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِّنكُمْ

وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ

بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَيَرْزُقْهُ

مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ

بَلِّغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾ وَالَّتِي يَبِيسَنَّ

مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ رَزَقْتُمُوهُنَّ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ

وَالَّتِي لَمْ يَحِيضْ وَأَوْلَتْ الْأَحْمَالَ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ

وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤﴾ ذَٰلِكُمْ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ

إِلَيْكُمْ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفِرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ﴿٥﴾

तुम्हारे कहने से वही दूध पिलाएँ तो तुम उन्हें उन्की उज्रत दे दो <sup>20</sup> और आपस में अच्छी तरह राय-मशवरा कर लिया करो <sup>21</sup>, और यदि तुम आपस में तनाव रखो तो उसके कहने से कोई और दूध पिलाएगी <sup>22</sup>।

धनी व्यक्ति को अपने धन अनुसार खर्च करना चाहिए <sup>23</sup> और जिस पर उसकी रोज़ी तंग की गई हो उसे चाहिए कि जो कुछ अल्लाह तआला ने उसे दे रखा है उसी में से अपनी शक्ति अनुसार दे <sup>24</sup>, किसी व्यक्ति पर अल्लाह बोझ नहीं डालता मगर

वाजिब होने के बारे में उलमा के बीच इतिफाक है।

20 अर्थात बच्चा जनने के बाद यदि तुम्हारे कहने से तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाएँ, तो तुम उन्हें उनके दूध पिलाने की उज्रत दो।

21 यह फरमान उन पतियों और पत्नीयों दोनों के लिए है, जो तलाक़ के कारण एक दूसरे से अलग हो चुके हैं, अर्थ यह है कि तुम दोनों अपने राय-मशवरे से तय कर लो, और तुम में से हर एक वह चीज़ स्वीकार कर ले जो बेहतर हो और जिसमें बच्चे के लिए भलाई हो, यह वही बात है जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने, सरतुलु बक्रा आयत न० २२२ में किया है : **فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا**

22 और यदि दूध पिलाने की उज्रत (पारिश्रमिक) में तुम आपस में विरोध कर बैठो, और शौहर बच्चे की माँ को वह उज्रत न देना चाहे जो वह चाहती हो, और माँ बिना उस उज्रत के जिसे वह चाहती हो दूध पिलाने पर राजी न हो, तो वह उज्रत पर कोई और दया रख ले जो उसके बच्चे को दूध पिलाए।

23 इसमें धनवानों को यह आदेश है कि उनकी पत्नीयों में से जो उनके बच्चों को दूध पिला रही हों उनपर अपनी हैसियत अनुसार खर्च करें।

24 अर्थात जिनकी धन-सम्पत्ती कम हो, और वह परेशानी और तंगी में हों तो अल्लाह ने उन्हें जो जीविका दे रखी है उसी में से अपनी शक्ति के अनुसार उन्हें दें, उन पर मात्र उतना ही है जिसकी वह शक्ति रखते हैं।





أَسْكِنُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وَّجَدِكُمْ وَلَا تَضَارُّوهُمْ لِنَصْفِقُوا عَلَيْهِمْ وَإِنْ كُنْ أَوْلَاتٍ حَمَلٍ فَانْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ وَأَتَمُّوا بِبَيْنِكُمْ مَعْرُوفًا وَإِنْ نَعَسْتُمْ فَسَرِّضُوا لَهُنَّ آخَرَىٰ ۖ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهِ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۗ وَكَانَ مِّنْ قَرَابَةِ عَدَّتْ عَن أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ ۚ فَمَا سَابَقَتْهَا جَسَابًا شَدِيدًا وَعَدَّتْهَا عَدَابًا نَّكَرًا ۗ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۙ

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ الَّذِينَ ءَامَنُوا قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۙ رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْكُمْ ءَايَاتِ اللَّهِ مَبِينَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَمَنْ يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۗ

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَنْزِلُ الْأَمْثَرَ مِنْهُنَّ لِيُعْلَمَ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ

उतनी ही जितनी शक्ति उसे दे रखी है <sup>1</sup>, अल्लाह तंगी के बाद आसानी भी कर देगा <sup>2</sup>।

<sup>3</sup> और बहुत सी बस्तियों वालों ने अपने रब के हुक्म का और उसके रसूलों की नाफरमानी की तो हमने उन से भी कड़ा हिमाब लिया और उन्हें बहुत ही कठोर अज़ाब दिया।

<sup>4</sup> तो उन्होंने अपने कर्तूत का मज़ा चख लिया, और परिणाम स्वरूप (नतीजतन) उनका घाटा ही हुआ।

<sup>5</sup> उनके लिए अल्लाह तआला ने कठोर अज़ाब कर रखा है, तो अल्लाह तआला से डरो हे अकल्मन्द <sup>6</sup> इमान <sup>7</sup> वालो! <sup>8</sup> अवश्य अल्लाह तआला ने तुम्हारी तरफ ज़िक्र

उतार दिया है।

<sup>9</sup> और रसूल जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट आदेशों को पढ़कर सुनाता है <sup>10</sup>, ताकि उन लोगों के जो ईमान लाएं और नेक कर्म किए अन्धेरो से रौशनी की ओर ले आए <sup>11</sup>, और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे अल्लाह उसे ऐसी जन्नतों में प्रवेश देगा जिसके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें यह हमेशा-हमेश रहेंगे, अवश्य अल्लाह ने उसे बेहतरीन रोज़ी दे रखी है।

<sup>12</sup> अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाए, और उसी के बराबर धरती <sup>12</sup> भी, उसका हुक्म उनके बीच उतरता है <sup>13</sup>, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है, और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को अपने इल्म के इहाते में घेर रखा है।

## सुरतु तहरीम - 66

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

<sup>1</sup> हे नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हलाल कर दिया है उसे आप क्यों हुराम करते <sup>14</sup> हैं? क्या आप अपनी पत्नियों की खुशी प्राप्त करना चाहते हैं <sup>15</sup>, और अल्लाह माफ करने वाला <sup>16</sup>, बड़ा दयालु है।

<sup>2</sup> हे नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिए हलाल कर दिया है उसे आप क्यों हुराम करते <sup>17</sup> हैं? क्या आप

उन्से कठोर हिसाब लिया गया, और अज़ाब से दोचार हुए।

<sup>9</sup> ज़िक्र से मुराद कुरआन अज़ीम है, और एक कौल यह है कि यहाँ ज़िक्र से मुराद स्वयं अल्लाह के रसूल ﷺ ही हैं, इसी कारण फरमाया : **رَسُولًا** अर्थात् तुम्हारी तरफ कुरआन उतारा, और उस कुरआन के साथ एक रसूल भेजा।

<sup>10</sup> जो लोगों के लिए उन आदेशों को जिनकी उन्हें ज़रूरत है, खोल-खोल कर बयान करता है।

<sup>11</sup> ताकि अल्लाह उन आयतों के द्वारा उन लोगों को जो ईमान लाए हैं और नेक कर्म किया है, गुम्राही के अन्धेरो से निकाल कर हिदायत की रौशनी की ओर और कुफ्र के अन्धेरो से नूरे ईमान की ओर ले आए।

<sup>12</sup> अर्थात् सात आकाशों की तरह उसने सात धरतियाँ भी पैदा की हैं, एक मर्फूअ सहीह हदीस से इसकी ताईद भी होती है, (सहीह बुखारी और मुस्लिम ने नबी ﷺ का फरमान है : **مَنْ ظَلَمَ شِبْرًا مِنَ الْأَرْضِ طَوَّفَهُ مِنْ سَبْعِ أَرْضِينَ** "जिसने किसी का एक बीता ज़मीन भी हथियाया तो किआमत के दिन उस ज़मीन का उतना हिस्सा सातों ज़मीनों से तौफ बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा।"

<sup>13</sup> अर्थात् सातों आकाशों से उसका हुक्म सातों धरतियों पर उतरता है तो पानी बरसता है, और पेड़-पौदे निकलते हैं, और रात और दिन और गर्मी और जाड़ा आता है।

<sup>14</sup> नबी ﷺ ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हुराम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नबी ﷺ ज़ैनुब बिन्ते जहश رضي الله عنها के पास शहद (मधु) पीते थे, तो आइशा और इम्सरा رضي الله عنها को ज़ैनुब के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक स्कीम बनाई कि जब आप उनके पास आएँ तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मुंह से (मगाफ़ीर जो कि एक फूल है जिससे बास आती है) की बास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही किया, जिस पर आप ने फर्माया : मैं ने तो ज़ैनुब के घर में मात्र शहद पिया है, अब मैं कसम खाता हूँ कि यह नहीं पिऊँगा, और आप ने अपने ऊपर इसे हुराम कर लिया।

<sup>15</sup> इस तरह कि आप ने अपने ऊपर यह चीज़ हुराम कर ली जिसे अल्लाह ने आप के लिए हलाल किया था।

<sup>16</sup> इस कोताही को जो अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ को अपने लिए हुराम करके आप से हुई है, कहा गया है कि यह एक छोटा पाप था, इसी कारण अल्लाह ने इस पर आप को ख़बरदार किया।

<sup>17</sup> नबी ﷺ ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हुराम कर लिया था, उसके बारे में कहा गया है कि : नबी ﷺ ज़ैनुब बिन्ते जहश رضي الله عنها के पास शहद (मधु) पीते थे, तो आइशा और इम्सरा رضي الله عنها को ज़ैनुब के पास समय से अधिक ठहरना नहीं भाया, और उन दोनों ने आप को इससे रोकने के लिए एक स्कीम बनाई कि जब आप उनके पास आएँ तो यह दोनों आप से यह कहें कि हमें आप के मुंह से (मगाफ़ीर जो कि एक फूल है जिससे बास आती है) की बास आ रही है, तो उन दोनों ने ऐसा ही किया, जिस पर आप ने फर्माया : मैं ने तो ज़ैनुब के घर में मात्र शहद पिया है, अब मैं कसम खाता

<sup>1</sup> अर्थात् जितनी जीविका उसे दे रखी है, तो वह फ़कीर व्यक्ति पर उतना खर्च करने का बोझ नहीं डालता जिसकी उसे शक्ति न हो, जैसा कि धनवान खर्च करते हैं।

<sup>2</sup> अर्थात् तंगी और सख्ती के बाद मालदार बना देगा। अर्थात् बहुत सी बस्तियों वालों ने अल्लाह और उसके रसूल की ना-फरमानी की और मुंह फेरा।

<sup>3</sup> अर्थात् अल्लाह ने उन कर्मों का जो उन्होंने किए कठोर हिसाब लिया, और आखिरत में उन्हें कठोर अज़ाब में डाला, और संसार में उन्हें, भूक, अकाल, से दोचार किया, और उन्हें बंसाया और उनके चेहरों को बदल दिया।

<sup>4</sup> अर्थात् उस भारी अज़ाब का मज़ा जो उनके कुफ्र के कारण है।

<sup>5</sup> अर्थात् परिणाम यह निकला कि वे संसार में हलाक और बर्बाद कर दिए गए, और आखिरत में कठोर अज़ाब से दोचार होंगे, तो वे अपने धन, अपनी सन्तान और अपनी जान के अन्दर घाटे में रहे।

<sup>6</sup> अर्थात् नरक का अज़ाब।

<sup>7</sup> हे ठीक-ठाक अकूल रखने वालो! इससे मुराद नबी ﷺ के उम्मीती हैं।

<sup>8</sup> अर्थात् जिन्होंने अल्लाह के सामने अपने सर झुका रखे हैं, और जो मुहम्मद ﷺ के फर्मावदार हैं, तो तुम अपने ईमान में सच्चे बनो, और अपने से पहले की उम्मतों की तरह न हो जाओ, जो अवज्ञाकारी (बागी) होगए, तो

अपनी पत्नियों की खुशी प्राप्त करना चाहते हैं <sup>1</sup>, और अल्लाह माफ करने वाला <sup>2</sup>, बड़ा दयालु है।

<sup>2</sup> बेशक अल्लाह ने आप के लिए कस्मों से निकलने का रास्ता नियुक्त कर दिया है <sup>3</sup>, और अल्लाह आप का कार्यक्षम (कारसाज़) है और वही (पूरी) तरह से जानने वाला <sup>4</sup> हिक्मत वाला है <sup>5</sup>।

<sup>3</sup> और यदि आपको जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों <sup>7</sup> से एक बात चुपके से <sup>8</sup> कही, तो जब अल्लाह ने इस बात की खबर कर दी <sup>9</sup>, और अल्लाह ने अपने नबी को उस पर अवगत (आगाह) कर दिया <sup>10</sup>, तो नबी ने थोड़ी सी बात तो बता दी, और थोड़ी सी टाल गए <sup>11</sup>, फिर जब नबी ने अपनी इस पत्नी को यह बात बताई <sup>12</sup> तो वह पूछने लगी: इसकी खबर आप को किसने दी? कहा: सब जानने वाले पूरी खबर रखने वाले अल्लाह ने मुझे यह बतलाया है <sup>13</sup>।

<sup>4</sup> (ऐ नबी की दोनों पत्नियों!) यदि तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा कर लो, (तो बहुत बेहतर है) अवश्य तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं <sup>14</sup> और यदि तुम नबी के विरुद्ध एक दूश्मे की मदद करोगी <sup>15</sup>, तो अवश्य उसका कारसाज़ अल्लाह है, और

हूँ कि यह नहीं पिऊँगा, और आप ने अपने ऊपर इसे हुराम कर लिया।

<sup>1</sup> इस तरह कि आप ने अपने ऊपर वह चीज़ हुराम कर ली जिसे अल्लाह ने आप के लिए हलाल किया था।

<sup>2</sup> इस कोताही को जो अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ को अपने लिए हुराम करके आप से हुई है, कहा गया है कि यह एक छोटा पाप था, इसी कारण अल्लाह ने इस पर आप को खबरदार किया।

<sup>3</sup> अर्थात् तुम्हारे लिए जायज़ किया कि कफ़रा अदा करके अपनी कस्मों को हलाल कर लो, जैसा कि सूरतुल माइदा आयत न० ८९ में है, और तुम्हें उसका तरीका बता दिया, और किसी के लिए जायज़ नहीं कि जो चीज़ें अल्लाह ने हलाल की हों उन्हें हुराम कर ले, यदि किसी ने ऐसा किया तो यह स्वीकार नहीं होगा, और ऐसा करने वाले पर यह लाज़िम नहीं होगा, क्योंकि हलाल और हुराम करने का अधिकार मात्र अल्लाह तआला को है, लेकिन यदि किसी ने ऐसा कर लिया तो कुछ फुकहा इस बात की तरफ़ गए हैं कि यदि उसने अपने ऊपर कोई कपड़ा या पोशाक, या खाने पीने की कोई चीज़, या कोई ऐसी चीज़ हुराम की जिसे अल्लाह ने उसके लिए हलाल की है तो यह कसम के दर्जे में होगा, यदि उस काम को जिसे उसने अपने ऊपर हुराम कर लिया है फिर करना चाहे तो उसे कसम का कफ़रा देना होगा, यदि उसने कसम का कफ़रा दे दिया तो वह चीज़ जायज़ होजाएगी, और यही हुक्म सारी चीज़ों का है यहाँ तक कि पत्नी का भी यदि उसे अपने ऊपर हुराम कर ले तो, और कुछ लोगों ने कहा है कि यदि उसने पत्नी को हुराम कर लिया और हुराम करने से उसने तलाक़ की नियत की हो तो तलाक़ पड़ जाएगी। वल्लाहु आ'लम।

<sup>4</sup> अर्थात् तुम्हारा कारसाज़, नासिर और मददगार है।

<sup>5</sup> उन चीज़ों को जिसमें तुम्हारी भलाई और सफलता है।

<sup>6</sup> अपनी बातों और अपने कामों में।

<sup>7</sup> इससे मुराद हफ़सा رضي الله عنها हैं जैसा कि पीछे गुज़रा।

<sup>8</sup> चुपके से कही जाने वाली बात से मुराद शहद हुराम कर लेना है, और कलबी कहते हैं कि: आप ﷺ ने चुपके चुपके उनसे यह कहा था कि तुम्हारे और आइशा के पिता رضي الله عنه यह दोनों मेरे बाद मेरी उम्मत में मेरे खलीफ़ा होंगे।

<sup>9</sup> उसने उसे दूसरी की अर्थात् आइशा رضي الله عنها को भी बता दिया।

<sup>10</sup> अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को इसकी खबर दे दी, कि हफ़सा ने आइशा رضي الله عنها को इसकी खबर कर दी है।

<sup>11</sup> अर्थात् आप ने हफ़सा को थोड़ी सी वह बात बता दी जिसकी उन्होंने आइशा को खबर दे दी थी, और कुछ बताए बिना टाल गए।

<sup>12</sup> तो जब आप ने हफ़सा को वह बात बताई जो वह बता चुकी थी।

<sup>13</sup> अर्थात् मुझे उरा अल्लाह ने इरा की खबर दी है जिरा पर कोई चीज़ भी नहीं छुपती।

<sup>14</sup> ख़िताब आइशा और हफ़सा رضي الله عنها को है, अर्थात् यदि तुम दोनों तौबा कर लो तो बेहतर है, तुम दोनों के दिल नबी ﷺ के विरुद्ध एक दूसरे की मदद करने से तौबा करने की ओर झुक ही चुके हैं।

<sup>15</sup> अर्थात् यदि तुम दोनों ने उनके विरुद्ध अपनी गैरत में और उनके भेद को बताने में एक दूसरे की मदद की और एक दूसरे का साथ दिया।

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تَحْرِمُ مَا اَمَلَ اللّٰهُ لَكَ تَبٰنِیْ مَرَضَاتِ اَزْوَاجِكَ وَاللّٰهُ عَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝۱ تَدْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ نَحْلَةً اٰیْمِنِكُمْ وَاللّٰهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ۝۲ وَاِذْ اَسْرَ النَّبِیُّ اِلٰی بَعْضِ اَزْوَاجِهِ حٰدِیْثًا فَلَمَّا بَنٰتٌ بِهٖ وَاظْهَرَ اللّٰهُ عَلَیْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَاَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا بَنٰهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْبَاكَ هٰذَا قَالَ نَبِیُّ الْعَلِیْمِ الْحَخِیْرِ ۝۳ اِنْ نُوْبَا اِلٰی اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمْ وَاِنْ تَظْهَرَا عَلَیْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِیْلُ وَصَلِیْحُ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظٰهِرٌ ۝۴ عَسٰی رَبُّهٗ اِنْ طَلَّقَكَ اَنْ یُّبَدِلَهٗ اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكَ مُسَلِّمًا تَوْمِنًا فَاِنَّكَ فَاِنَّكَ تَبٰنِیْ عَدِیْبَتٍ سَبِیْحَتٍ تَبٰنِیْ وَاَنْكَرًا ۝۵ یٰۤاَيُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِیْكُمْ نَارًا وَاَوْقُوْدهَا النَّاسُ وَاَلْحٰجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غٰلِظٌ شِدَادٌ لَا یَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَا اَمَرَهُمْ وَیَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ۝۶ یٰۤاَيُّهَا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَعٰزِدُوْا الْیَوْمَ اِنَّمَا تَجْرُوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۷

जिब्रईल हैं, और नेक इमानदार <sup>16</sup>, और उसके बाद <sup>17</sup> फ़रिश्ते भी मदद करने वाले हैं <sup>18</sup>।

<sup>3</sup> यदि वह (पैगम्बर) तुम्हें तलाक़ दे दें तो बहुत जल्द उन्हें उन्का रब तुम्हारे बदले तुम से अच्छी पत्नियाँ इनायत फ़र्मावेगा <sup>19</sup>, जो इस्लाम वालियाँ <sup>20</sup>, इमान वालियाँ <sup>21</sup> अल्लाह के सामने झुकने वालियाँ <sup>22</sup>, तौबा करने वालियाँ <sup>23</sup> इबादत करने वालियाँ <sup>24</sup>, रोजे रखने वालियाँ होंगी विधवाएँ <sup>25</sup> और कुवारियाँ <sup>1</sup>।

<sup>16</sup> तो अल्लाह उसकी मदद फ़र्माएगा, इसी तरह जिब्रईल और उसके नेक मोमिन बन्दे, जैसे अबू बक्र और उमर भी उसकी मदद करेंगे, ऐसा नहीं होगा कि उसका कोई मदद करने वाला न होगा।

<sup>17</sup> अर्थात् अल्लाह, जिब्रईल और नेक मोमिन बन्दों की मदद के बाद।

<sup>18</sup> उसके मददगार हैं जो उसकी मदद करेंगे, और एक कौल यह है कि आइशा और हफ़सा رضي الله عنها के बीच यह आपसी मदद नबी ﷺ से नफ़का तलब करने के बारे में था।

<sup>19</sup> अल्लाह तआला ने अपने नबी की पत्नियों को डराने के लिए खबर दी है, कि अल्लाह के पास यह शक्ति है कि यदि वह उन्हें तलाक़ दे दें तो वह उन्हें उन से अच्छी पत्नियाँ इनायत फ़र्मा दे।

<sup>20</sup> इस्लाम के फ़रीजों पर अमल करने वालियाँ।

<sup>21</sup> अल्लाह और उसके फ़रिश्तों, उराकी किताबों और उराके रसूलों की पुष्टि करने वालियाँ।

<sup>22</sup> अर्थात् अल्लाह और उसके रसूल की फ़र्माबंदारी करने वालियाँ।

<sup>23</sup> अर्थात् गुनाहों से।

<sup>24</sup> अल्लाह की इबादत करने वालियाँ और उससे गिड़गिड़ाने वालियाँ।

<sup>25</sup> "सैद्बा": शादी शुदा औरत जिसके पति ने उसे तलाक़ दे दी हो या उसकी मौत होगई हो।

يَتَأْتِيهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ  
 أَن يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرِي  
 مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا  
 مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا  
 أَنْتُمْ لَنَا نُورٌ وَرَحْمَةٌ وَأَنْفَعْنَا لِنَا عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾  
 يَتَأْتِيهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفْرَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ  
 وَمَا وَنَهُمْ جَهَنَّمَ وَيَسَّ الْمَصِيدُ ﴿٩﴾ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا  
 لِلَّذِينَ كَفَرُوا أَمْرَاتٍ نُّوحٍ وَأَمْرَاتٍ لُّوطٍ كَأَنَّاتَ حَمَلَت  
 عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ فَخَانَتْهُمَا فَلَمَّ غُفَيْنَا عَنْهُمَا  
 مِنَ اللَّهِ سِتْنًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ﴿١٠﴾  
 وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ ءَامَنُوا أَمْرَاتٍ فِرْعَوْنَ إِذْ  
 قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَبِخِي مِنْ فِرْعَوْنَ  
 وَعَمَلِهِ وَبِخِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾ وَزَمْرِمُ ابْنَتِ  
 عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رَوْحِنَا  
 وَصَدَقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ عَلَيْهَا إِتْقَانُ الْإِسْلَامِ وَنَذِيرُ  
 مِنَ النَّارِ ﴿١٢﴾

6) हे मुमिनो! तुम खुद अपने आप को <sup>2</sup>, और अपने घर वालों को <sup>3</sup>, उस आग से बचाओ <sup>4</sup>, जिसका इन्धन इन्सान और पत्थर हैं, जिस पर कठोर दिल वाले मज्बूत फ़रिश्ते तैनात हैं <sup>5</sup>, जिन्हें जो हुक्म अल्लाह तआला देता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते <sup>6</sup>, बल्कि जो हुक्म दिया जाए उसका पालन करते हैं <sup>7</sup>।  
 7) हे काफ़िरो! आज तुम बहाना मत करो (मज्बुरी मत बताओ) तुम्हें मात्र तुम्हारे करतूतों का बदला <sup>9</sup> दिया जा रहा है।

8) हे ईमान वालो! तुम अल्लाह के सामने सच्ची खालिस तौबा करो, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप मिटादे, और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करे जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस दिन अल्लाह तआला नबी को और ईमानदारों को जो उनके साथ हैं रुखा (अपमानित) न करेगा, उनका नूर उनके सामने और उनके आगे दौड़ रहा होगा <sup>11</sup>, वह यह दुआएं करते होंगे : हे हमारे रब! हमें कामिल नूर अता फ़र्मा, और हमें बख़्श दे अवश्य तू हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

9) हे नबी! काफ़िरो और मुनाफ़िकों से जिहाद करे <sup>12</sup>, और उन पर कड़ाई करे, और उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरी जगह है।

10) अल्लाह तआला ने काफ़िरो के लिए नूह की और लूत की पत्नियों का उदाहरण दिया, यह दोनों औरतें हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के घर में थीं, फिर उन्की उन्हीं ने खयानत की (विश्वासघत किया) <sup>13</sup> तो वह दोनों नेक बन्दे उनसे अल्लाह के किसी अज़ाब को न रोक सके <sup>14</sup>, और आदेश हुवा (हे औरतों) नरक में जाने वालों के साथ <sup>15</sup> तुम दोनों भी चली जाओ।

11) और अल्लाह तआला ने ईमान वालों के लिए फ़िर्औन की पत्नी का उदाहरण दिया <sup>16</sup>, जबकि उसने दुआ की कि हे मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना <sup>17</sup>, और मुझे फ़िर्औन से और उसके कुकर्म से बचा <sup>18</sup>, और मुझे अन्याचारियों से <sup>19</sup> छुटकारा दे।

12) और उदाहरण दिया मर्यम बित्ते इम्रान <sup>20</sup> का जिसने अपनी सतीत्व (इस्मत) की हिफ़ाज़त की <sup>21</sup>, फिर हमने अपनी ओर से उसमें जान फूँक दी <sup>22</sup>, और मर्यम ने अपने रब की बातों <sup>23</sup> और उसकी किताबों की पुष्टि की, और वह इबादत

यक़दम निराश होजाएँ, और उनकी रही सही सभी आशाएँ ख़तम होजाएँ।

9 अर्थात तुम्हारे उन कुकर्मों का जो तुमने संसार में किए हैं।

10 सच्ची खालिस तौबा यह है कि व्यक्ति अपने किए हुए पाप पर दिल से लज्जित (शर्मिन्दा) हो, और जुबान से माफ़ी चाहे, और अपने अंगो से उसे करने से रुक जाए, और भविष्य में उसके दोबारा न करने का पक्का इरादा करे।

11 अर्थात यह नूर उनके साथ उस समय होगा जब वह पुन-सिरात पार कर रहे होंगे।

12 अर्थात काफ़िरो से युद्ध करके, और मुनाफ़िकों से उन्हें बंद दे कर, क्योंकि वे ऐसे कुकर्म कर रहे थे जिनके कारण उन पर हद वाजिब हो रहा था, अर्थात इन दोनों ग़िरोहों के साथ कठोर रवैया अपनाएँ, ताकि उन पर तुम्हारा डर बैठ जाए।

13 अर्थात उन दोनों ने उनके साथ विश्वासघात किया, कहा गया है नूह عليه السلام की पत्नी उनके बारे में लोगों से कहती कि उन की बात न मानो, यह पागल और मज्जून हैं, और लूत عليه السلام की पत्नी अपनी कौम को घर में आने वाले मेहमानों के बारे में बताती थी।

14 तो नूह और लूत उन दोनों औरतों को अपनी बीवियों होने के बावजूद किसी तरह का कोई लाभ नहीं पहुँचा सके और अल्लाह के यहाँ प्रतिष्ठित और सम्मानित होने होने के बावजूद उनसे कुछ भी अल्लाह का अज़ाब टाल नहीं सके।

15 काफ़िरो और पापियों में नरक में जाने वालों के साथ।

16 अर्थात कुफ़ का दबदबा उन्हें घाटा न पहुँचा सकेगा, जैसे फ़िर्औन की पत्नी को घाटा न पहुँचा सका, जबकि वह सब से बड़े काफ़िर के निकाह में थी, इसके बावजूद वह अपने ईमान के कारण उपहारों वाली जन्नतों का हक़दार हुई।

17 और मेरे लिए ऐसा घर बना जो तेरे दया से क़रीब, तेरे नेक और मुक़र्रब बन्दों के दरजों में हो।

18 अर्थात स्वयं फ़िर्औन से और उसके कुकर्मों से जिन्हें वह कर रहा है।

19 इससे मुराद किन्वी वंश के काफ़िर लोग हैं।

20 अर्थात मर्यम को अल्लाह ने एक साथ दुनिया और आख़िरत का सम्मान दिया, और सारे ज़हान की औरतों से उन्हें चुना, जबकि उनका सम्बन्ध कुकर्मों वंश से था।

21 बदकारी से।

22 यह इस तरह से कि जिब्रईल عليه السلام ने उनके कूर्ते के गरीबान में फूँक मारी तो वह गर्भवती होगई, और उनके पेट में ईसा عليه السلام को परवरिश होने लगी।

23 अर्थात उन आदेशों का जिन्हें अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए निर्धारित किया है,

1 "बिक्र" का अर्थ अज़ाब अर्थात कुंवारी है।

2 अर्थात अपने आप को बचाओ, उन चीज़ों को करके जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया, और उन चीज़ों से बच कर जिन से उसने तुम्हें रोका है।

3 उन्हें अल्लाह की फ़र्माबदारी का हुक्म देकर और उसकी नाफ़रमानी से रोक कर।

4 अर्थात ऐसी बड़ी आग से कि जिसका इँधन लोग और पत्थर होंगे, जैसे संसार की आग का इँधन लकड़ी है।

5 इब्ने जरीर कहते हैं कि इस आयत की रौशनी में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम अपने बाल-बच्चों को धर्म, भलाई, और उन स्वभावों की शिक्षा दें, जिसके बिना चारा नहीं।

6 जहन्नम पर दारोगा, और जहन्नम के कारमों और जहन्नमियों को अज़ाब देने वाली चीज़ों के निगरानों फ़रिश्ते होंगे, जो जहन्नमियों पर ऐसे बे-रहम और कठोर दिल होंगे, कि वे उनसे रद्दम चाहेंगे तो कुछ भी दया न करेंगे, वह अज़ाब के लिए पैदा ही किए गए हैं।

7 अर्थात वे अज़ाब के बारे में उसका विरोध नहीं कर सकते।

8 वे उसे देरी किए बिना तुरन्त करते हैं, उसमें थोड़ी भी देर नहीं लगाते, और वे उस पर अच्छी तरह शक्ति रखते हैं, इससे उन्हें कोई चीज़ वह चाहे जैसी ही क्यों न हो बेबस नहीं कर सकती।

9 यह बात उनसे उनके जहन्नम में पुसते समय कही जाएगी, ताकि वह

करने वालियों में से थी <sup>1</sup>

## सूरतुल मुल्क - 67

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 बहुत बर्कत-वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य है और जो प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखने वाला है।
- 2 जिसने ज़िन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया है कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से अच्छे कर्म कौन करता है, और वह गालिब (प्रभावशाली) और बख़्शने वाला है।
- 3 जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किए (तो हे देखने वाले! अल्लाह) रहमान की पैदाइश में कोई बेजाबतगी (असंगति) न देखेगा, दोबारा पलट कर देख ले कि क्या कोई चीज़ भी दिखाई दे रही है।
- 4 फिर दोहरा कर दो-दो बार देख ले, तेरी निगाह तेरी और हीन (और विवश) हो कर थकी हुई लौट आएगी।
- 5 और निःसंदेह हम ने संसारीय आकाश को दीपों (तारों) से संवारा और उन्हें शैतानों के मारने का साधन बना दिया और शैतानों के लिए हमने (नरक का जलाने वाला) अज़ाब तैयार कर दिया।
- 6 और अपने और के साथ कुफ़र करने वालों के लिए नरक का अज़ाब है, और वह क्या ही बुरा स्थान है।
- 7 जब उसमें ए डाले जाएंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वह उबाल खा रहा होगा।

और जिनके साथ फ़रिश्ता उनसे बात किया, और यह जिब्रईल का उनसे कहना है कि मैं आप के रब का रसूल हूँ, और इसी तरह उन्हें ईसा के पैदा होने और उनके मुक़रब रसूल बनाए जाने की ख़ुश-ख़बरी देना। (शुबह सुरतु आले इम्रान 82-84)

- 1 अर्थात् वह अपने रब की फ़र्मावदारी और इबादत करने वाले लोगों में से थीं, और उनका घराना नेकी और इताअत का घराना था।
- 2 तबाराक का अर्थ है : बहुत अधिक ख़ैर और बर्कत वाला। और बादशाहत का अर्थ संसार और आख़िरत में आकाश और धरती की बादशाहत है।
- 3 मौत : शरीर से रूह का सम्पर्क ख़तम होजाने का नाम मौत है, और शरीर से रूह का सम्पर्क बाकी रहने का नाम : जीवन है। तो जीवन का अर्थ इन्सान को पैदा करना और उसमें रूह डालना है। अर्थात् तुम पर अपनी शरीरअत का बोझ डाल कर तुम्हें आजमाए, फिर तुम्हें उसका बदला दे, और आजमाइश का उद्देश्य नेक लोगों की नेकी और पैरवी करने वालों की पैरवी के क़माल का स्पष्ट होना है।
- 4 अर्थात् : एक के नीचे एक, कुछ को कुछ के ऊपर। अर्थात् : उनमें कोई इख़्तिलाफ़, जुदाई, टेढ़ापन, और मुख़लाफ़त नहीं पाओगे, बल्कि यह बराबर और सीधे हैं जो अपने पैदा करने वाले पर दलील (प्रमाण) हैं।

अर्थात् : तुम अपनी नज़र दोबारा आकाश पर डालो, और फिर से ध्यान देकर देखो क्या तुम्हें उसकी बड़ाई और चौड़ाई के बावजूद तुम्हें उसमें कोई फ़टन और दर्राइ दिखाई दे रहा है।

5 अर्थात् : बार-बार नज़र डालो, जितना अधिक नज़र डाल सको, यह बहुत ऊँची चीज़ है दलील कायम करने और बहाने को नष्ट करने के लिहाज़ से।

अर्थात् : आकाश की पैदाइश में कोई कमी देखने से अपमानित और नीची होकर लौट आएगी। अर्थात् : और वह थकी हारी होगी।

6 अर्थात् : यह तारे आकाशों के लिए शोभा होने के साथ-साथ शैतानों को मारने का माध्यम भी हैं जो उन पर आग बन कर गिरते हैं। क़तादा कहते हैं कि अल्लाह तआला ने तीन मक़सद के लिए तारे पैदा किए : आसमानों की शोभा के लिए, शैतानों को मारने के लिए, और जल-थल में रास्ते के निशान बताने के लिए।

अर्थात् : संसार में उन्हें शिद्दाबे साकिब से जलाने के बाद हमने आख़िरत में उन शैतानों के लिए नरक का अज़ाब तैयार कर रखा है।

7 अर्थात् : वे नरक में फेंके जाएंगे जिस तरह कि लकड़ी आग में फेंकी जाती है। तो वे जहन्नम की ऐसी आवाज़ सुनेंगे जिस तरह कि गधा पहली बार अपनी बुरी आवाज़ निकालता है। और यह जहन्नम उनके साथ हांडी के

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَرَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝۱ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَفُورُ ۝۲ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَّا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۝۳ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ حَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝۴ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ۝۵ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لِرَبِّهِمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَيَسُومُونَ الصُّعُورَ إِذَا الْقُرُوفُ بِهَا سَعُومًا هَلْهَا شِبَعًا وَهِيَ تُفُورُ ۝۶ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أَلْفِيَٰ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلْتَهُم خَرْنَبَآ أَلَّذِيَاتُ كُنَّ يُذِيرُ ۝۸ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنشَأْ إِيَّاهِ صَلَاتٍ لِّكَبِيرٍ ۝۹ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝۱۰ فَأَعْرِضُوا بِذُنُوبِهِمْ فَسَحَقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝۱۱ إِنْ الَّذِينَ يَحْسَبُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝۱۲

- 8 क़रीब है कि (अभी) क्रोध के मारे फट पड़े, जब कभी उसमें कोई ग़िरोह डाला जाएगा उससे नरक के दारोगा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था?
- 9 वे जवाब देंगे कि बे-शक आया तो था, परन्तु हम ने उसे झूठलाया और कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी नहीं उतारा, तुम भयंकर गुम्राही में ही हो।
- 10 और कहेंगे कि यदि हम सुनते होते या समझते होते तो जहन्नमियों (नरकवासियों) में (साम्मलित) न होते।

खीलने की तरह खील रही होगी।

8 अर्थात् : जहन्नम काफ़िरों पर अपने कठोर गुस्सा के कारण क़रीब है कि वह फट कर एक दूसरे से अलग-अलग होजाए।

लोगों का एक ग़िरोह।

यह दारोगे फ़रिश्तों में से होंगे, जो उनसे डांट के तौर पर पूछेंगे।

संसार में। जो तुम्हें इस दिन से डरता।

9 अल्लाह के पास से जो हमारा रब है, डराने वाला रसूल आया था, जिसने हमें डराया, और इस दिन के बारे में जानकारी दी।

तो हमने उस डराने वाले को नकार दिया।

और हमने कहा अल्लाह ने तुम्हारी जुबानों पर ग़ैब की बातें, आख़िरत की ख़बरें और शरीरअत की कोई ऐसी चीज़ नही उतारी है जो वह हमसे चाहता हो। हम ने उन रसूलों को कहा कि तुम इन बातों को बताने में झूठे और सत्य से बहुत दूर हो।

10 अर्थात् यदि हम उस व्यक्ति की तरह सुने होते जो सुन कर याद रखता है, और उस व्यक्ति की तरह समझे होते जो सत्य और असत्य में फर्क करता है और उनमें ध्यान देता है, तो हम जहन्नमियों में से न होते, बल्कि हम उन चीज़ों पर ईमान ले आए होते जो अल्लाह ने उतारी है,

وَأَسْرُوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾  
 يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ  
 الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامشَوْا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ ۗ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾  
 ءَأَمِنْتُمْ مِّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ  
 تَمُورُ ﴿١٦﴾ أَمْ أَمِنْتُمْ مِّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا  
 فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ  
 كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفَيْتَ وَيَقْبِضْنَ مَا  
 يُمَسِّكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمْ هَذَا الَّذِي  
 هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّن دُونِ الرَّحْمَنِ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ  
 ﴿٢٠﴾ أَمْ هَذَا الَّذِي يَرْتَفِكُونَ أَمْ سَكَبْنَا عَلَى آبَائِهِمْ لَوْ أَن لَّعَنُوا فِي عَتُوِّ  
 وَفُجُورٍ ﴿٢١﴾ أَمْ نَيَّمْنَا مِكَبًا عَلَىٰ وَجْهِهِمْ ۗ أَهَدَىٰ أَمْ نَيَّمْنَا سَوِيًّا  
 عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ  
 وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ  
 فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ  
 صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾

11 तो उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार लिया, अब ए नरक-वासी हट जाएं (दूर हों)।<sup>1</sup>

12 बेशक जो लोग अपने रब से बिना देखे ही डरते रहते हैं, उनके लिए बख्शिश है और बड़ा सवाब है।<sup>2</sup>

13 और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज़ में, वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी अच्छि तरह जानता है।<sup>3</sup>

14 क्या वही न जाने जिसने पैदा किया फिर वह बारीक-बीन (सूक्ष्मदर्शी) और जानने वाला भी हो।<sup>4</sup>

और हमने रसूल की पैरवी की होती।

1 कृष्ण करने और नबियों के झुठलाने के गुनाहों को स्वीकार कर लिया जिसके कारण वे जहन्नम के अज़ाब के इकदार हुए।

तो उनके लिए अल्लाह और उसकी रहमत से दूरी हो, और जब उन्होंने अपने गुनाहों को स्वीकार लिया तो अल्लाह तआला ने उन पर अज़ाब लाजिम कर दिया; क्योंकि इस स्वीकृति के कारण उन पर दलील कायम हो गई, और उनके लिए अब कोई बहाना न बचा।

2 सारी बातों को अल्लाह तआला जानता है, उस से कोई चीज़ छुपी नहीं रहती, वह तो दिलों के भेद का जानने वाला है।

3 क्या जिस हस्ती ने उसे पैदा किया, और उसे वुजूद (अस्तित्व) में लाया वही उसके भेद और दिलों में छुपी हुई बात नहीं जानेगा? जबकि उसने उसे अपने हाथ से पैदा किया, और जो किसी चीज़ का बनाने वाला हो, वह उसके बारे में अधिक जानता है।

4 अर्थात् उसका ज्ञान इतना लतीफ़ है कि वह दिलों में उठने वाली बातों को भी जानता है।

और वह खबर-दार है उन बातों से जो तुम छुपाते और दिल में रखते हो,

15 वह वही हस्ती है जिसने तुम्हारे लिए धरती को अधीन (और परत) बनाया ताकि तुम उसके रास्तों पर चलते-फिरते रहो और उसकी दी हुई रोज़ी को खाओ पिओ, उसी की ओर (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है।

16 क्या तुम इस बात से बे-ख़ौफ़ (निर्भय) हो गए हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे और अचानक धरती कापकपा उठे।

17 या क्या तुम इस बात से निडर हो गए हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे? फिर तो तुम्हें जानकारी हो ही जाएगी कि मेरा डराना कैसा था।

18 और उनसे पहले के लोगों ने भी झुठलाया था, (तो देखो) उन पर मेरा अज़ाब कैसा कुछ हुआ?

19 क्या यह अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए और (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पंखियों को नहीं देखते, उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (हवा और फिज़ा में) थामे हुए है। निःसंदेह प्रत्येक वस्तु उसकी निगाह में है।

20 अल्लाह के सिवाय तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी सहायता कर सके काफ़िर तो सरासर थोके ही में हैं।<sup>10</sup>

21 यदि अल्लाह (तआला) अपनी रोज़ी रोक ले, तो (बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी जिविका चलाएगा? बल्कि (काफ़िर) तो उदण्डता एवं विमुख होने पर अड़ गए हैं।<sup>11</sup>

उससे कोई भेद में रहने वाली चीज़ भेद में नहीं रह सकती।

5 समतल और नर्म बनाया, ताकि तुम उस पर आबाद हो सको, और उस पर चल सको, इतना कठोर नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर रहना और चलना फिरना कठिन हो जाए।

अर्थात् उसके रास्तों और किनारों में चलो फिरो।

जो उसने तुम्हें दी है, और तुम्हारे लिए धरती में पैदा की हैं।

अल्लाह तआला आदम की सन्तान पर अपने एहसानों को जता रहा है, कि उसने उन्हें इस धरती पर शक्ति दी, और उन्हें ऐसी योग्यताएं दी जिन्हें कार्य में लाकर वे इसके फायदे को प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन उनके लिए यह भी जानना ज़रूरी है कि उन्हें उसकी तरफ़ लौट कर जाना है, इसी लिए फरमाया : अपनी कन्नौ से उठ कर उन्हें उसी की ओर जाना है, किसी और की ओर नहीं।

6 अर्थात् : अल्लाह तआला।

अर्थात् तुम्हें इस में धंसादे, इसके बाद कि उसने तुम्हारे लिए इसे नर्म और समतल बनाया, कि तुम इसके रास्तों और किनारों में चल सको, जैसे कि कारून के साथ उसने किया।

इस नरमी और ठहराव के प्रतिकुल जिस पर अभी वह है हिलने और लरजने लग जाए।

7 जैसे उसने लूत की कौम और अरझाबुल फील (हाथियों वाले अब्रहा और उसकी फौज) पर बरसाए, और एक कौल यह है कि इसका अर्थ ऐसी हवा है जिसमें कंकरियां हों।

अर्थात् : जब तुम यह अज़ाब देख लोगे तो तुम जान लोगे कि मेरा डराना कैसा था, लेकिन इस जानने से तुम्हें कोई लाभ न होगा।

8 अर्थात् : मेरा इन्कार करना उन पर कैसा रहा उस अपमानित करने वाले अज़ाब के कारण जिसमें मैंने उन्हें डाला।

9 उड़ने के समय फ़ज़ा में अपने पंखों को खोले और सिमटाए हुए।

और अपने पंखों को समेटे हुए है।

फ़ज़ा में उड़ने समेटने और फैलाने के समय।

जो हर चीज़ पर शक्ति रखता है।

अर्थात् : उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है।

10 अर्थ यह है कि कोई फ़ौज ऐसी नहीं जो तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से रोक सके, और तुम्हारी सहायता पर शक्ति रख सके, यदि अल्लाह अपनी दया और सहायता द्वारा तुम्हारी मदद न करे।

शैतान की ओर से बड़े थोके में हैं, वह उसके द्वारा उन्हें थोके देता है।

11 अर्थात् कौन है जो तुम पर वर्षा द्वारा जीविका बरसाए गा, यदि अल्लाह वर्षा को तुम से रोक ले।

सरकशी और इक़ से विमुखता में वह बढ़ते ही चले जा रहे हैं, न तो दूसरी समुदायों और उम्मतों से उन्होंने कोई नसीहत पकड़ी और न ही ध्यान से काम लिया।

22 अच्छा वह व्यक्ति अधिक हिदायत (मार्गदर्शन) पर है जो अपने मुख के बल औंधा होकर चले या वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे रास्ते पर चल रहा हो।

23 कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाए। तुम बहुत ही कम शक्र-गुजारी (कृतज्ञता व्यक्त) करते हो।

24 कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें धरती पर फैला दिया और उसकी ओर तुम इकट्ठे किए जाओगे।

25 और (काफिर) पूछते हैं कि वह वायदा कब प्रकट होगा यदि तुम सच्चे हो (तो बताओ)?।

26 (आप) कह दीजिए इसकी जानकारी तो अल्लाह ही को है मैं तो स्पष्ट रूप से आगाह (सावधान) कर देने वाला हूँ।

27 जब ए लोग उस (वायदे) को क़रीब-तर (निकटतम) पा लेंगे, उस समय इन काफिरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे और कह दिया जाएगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।

28 (आप) कह दीजिए! कि ठीक है यदि मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह (तआला) नष्ट कर दे या हम पर दया करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफिरों को दर्द-नाक अज़ाब (कष्टदायी यातना) से कौन बचाएगा?

29 (आप) कह दीजिए कि वही रहमान है, हम तो उस पर ईमान ला चुके और उसी पर हमने भरोसा किया। तुम्हें जल्द ही जानकारों हो जाएगी कि स्पष्ट भटकावे में कौन है?

30 (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि यदि तुम्हारा (पीने का) पानी धरती चूस जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए निथरा हुआ पानी लाए?

1 मुंह के बल औंधा चलने वाले से मुराद काफिर है, जो दुनिया में औंधे मुंह पाप में डूबा रहता है, तो अल्लाह क़ियामत के दिन उसे उसके चेहरे के बल ही उठाएगा। सीधा जो अपने आगे देख रहा हो।

2 बराबर और समतल रास्ते पर जिसमें टेढ़ापन न हो, इससे मुराद मोमिन है, जो दुनिया में अल्लाह के बनाए हुए क़ानून पर हिदायत और बसीरत के साथ चलता है, तो अल्लाह उसे आखिरत में सिराते मुस्तक़ीम पर सीधा उठाएगा, जो उसे सीधा जन्नत में पहुँचा देगा।

3 उन्हें धरती में पैदा किया गया, और उसकी पीठ पर उन्हें फैला दिया।

4 अर्थात् क़ियामत कब क़ायम होगी इसकी जानकारी मात्र अल्लाह को है, दूसरा कोई भी इसके बारे में नहीं जानता। मैं तुम्हें इससे डरा रहा हूँ, और तुम्हें क़क्र के परिणाम से डरा रहा हूँ, और तुम्हें केवल वही चीज़ बता रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है, उसने मुझ से यह नहीं कहा है कि मैं तुम्हें यह बताऊँ कि क़ियामत कब क़ायम होगी।

5 अर्थात् अज़ाब को क़रीब देख लेंगे। काले होजायेंगे, उन पर हवाइयाँ उड़ने लगेंगी, और ज़िल्लत छा जाएगी।

अर्थात् संसार में मज़ाक़ के तौर पर तलब कर रहे थे, और जिसकी जल्दी मचा रहे थे।

6 मौत देकर या क़तल करके, जैसाकि तुम मेरे लिए उसकी तमन्ना और चाहत करते हो, और मेरी मुसीबतों और हलाकत के इन्तिज़ार में रहते हो। ईमान वालों में से मेरे साथियों को।

कुछ समय के लिए अज़ाब को रोक करके, तो यदि मान लिया जाए कि हमारे साथ ऐसा हो गया।

यह पूछना उन पर रद्द करने के लिए है, अर्थात् उन्हें उससे कोई नहीं बचा सकता, तो बात बराबर है चाहे अल्लाह अपने रसूल और जो सहाबा उनके साथ हैं हलाक करदे, जैसा कि काफिर चाहते हैं, या उन्हें मोहलत दे दे।

7 मुझे बताओ यदि सोलें, कुँवों, और नदियों-नहरों का तुम्हारा वह पानी जिसके द्वारा अल्लाह ने तुम पर एहसान किया है, धरती की तह में इस तरह चला जाए कि बिल्कुल उसका वुजूद ही न रहे, या धरती के इतना भीतर चला जाए के तुम उसे डोलों और हैन्ड पाइपों से निकाल ही न सको। तो कौन इतना अधिक बहता पानी लाएगा जो ख़तम न हो, अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवाए कोई ऐसा नहीं जो उसे तुम्हारे पास वर्षा और नहर द्वारा ला सके, ताकि तुम उससे लाभ उठा सको।

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّتَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدْعُونَ ﴿٢٧﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي أَلَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ

الرَّحْمَنُ أَمَّنَابِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسْتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

﴿٢٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ﴿٣٠﴾

﴿٣١﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ﴿٣٠﴾

سُورَةُ الْقَلَمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ت وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿١﴾ مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ﴿٢﴾

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا عَرِ مُمْنُونٍ ﴿٣﴾ وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ ﴿٤﴾

فَسْتَجِبْ وَبَصِّرْ وَبِصُرُونَ ﴿٥﴾ يَا أَيُّكُمْ الْمَقْتُولُ ﴿٦﴾ إِنْ رَبُّكَ هُوَ

أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾ فَلَا تَطَّعِ

الْمُكَدِّبِينَ ﴿٨﴾ وَدَّوًّا لَوْ تَدَّهَنُ فَيْدُهُنَّ ﴿٩﴾ وَلَا تَطَّعِ كُلَّ

حَلَّافٍ مَهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾ مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ

أَسِيمٍ ﴿١٢﴾ عَتَلٍ بَعْدَ ذَلِكَ رَنِيمٍ ﴿١٣﴾ أَنْ كَانُوا ذَا مَالٍ وَبَنِينَ

﴿١٤﴾ إِذَا تَتَلَّى عَلَيْهِ ءَايَاتُنَا قَالِ كَسَطَطْنَا الْأُولَىٰ ﴿١٥﴾

﴿١٦﴾

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

नून, क़सम (सौगन्ध) है क़लम की और उसकी जो कुछ कि, वे (फ़रिश्ते) लिखते हैं।

आप अपने रब के फ़ज़ल (कृपा) से पागल नहीं है।

और निःसंदेह आपके लिए अनन्त बदला है।

और निःसंदेह आप बड़े उद्वेग (अति उत्तम) स्वभाव पर हैं।

तो अब आप भी देख लेंगे और यह भी देख लेंगे।

8 अक्षरों में से एक अक्षर है, जिस तरह से कि सूरतों के आरम्भ में दूसरे अक्षर आए हैं जिन से सूरतों का आरम्भ हुआ है।

अल्लाह तआला ने क़लम की क़सम खाई है; क्योंकि स्पष्टता इसी के द्वारा होती है, और क़लम आम है, हर उस क़लम को शामिल है जिससे लिखा जाए।

अर्थात् उन ज्ञानों की जिन्हें लोग क़लम द्वारा लिखते हैं।

9 अर्थात् ऐ मुहम्मद! अल्लाह ने तुम्हें नुबुव्वत और आम सरदारी की जो नेमत दी उसके कारण तुम जुनून, पागलपन और दीवानगी से पवित्र हो।

10 नुबुव्वत का बोझ उठाने में जो परेशानियाँ आप ने झेली हैं, और विभिन्न तरह की जो कठिनाइयाँ बरदाश्त की हैं, उस पर आप के लिए असंख्य सवाब है।

अर्थात् अत्यधिक सवाब है जो कभी ख़तम न होगा, या इस एहसान का बदला लोग चुका ही नहीं सकेंगे।

11 अर्थात् आप उस अख़्लाक पर हैं, जिसका हुक्म अल्लाह ने आप को क़ुरआन में दिया है, सहीह (मुरितम) में उम्मुल् मोमिनीन आइशा رضي الله عنها से रिवायत है कि उन से नबी के अख़्लाक के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा : आप के अख़्लाक सरापा क़ुरआन के नमूना थे।

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرطومِ ۱۱) وَإِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا  
بِصِرْمَتِهَا مُصْبِحِينَ ۱۷) وَلَا يَسْتَوُونَ ۱۸) فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ  
وَهُمْ نَائِمُونَ ۱۹) فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۲۰) فَفَنَادُوا وَامُصْبِحِينَ ۲۱) أَنِ  
أَعَدُّوا عَلَيْنَا يَوْمَ الْحَرْبِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۲۲) فَأَنْطَلَقُوا وَهُمْ يَخْفَوْنَ ۲۳)  
أَن لَّا يَدْخُلْنَا إِلَيْهِمْ يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۲۴) وَعَدُوا عَلَيْنَا حَرِدٌ قَادِرِينَ ۲۵) فَلَمَّا  
رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَصَّالُونَ ۲۶) بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۲۷) قَالُوا وَسَطَهُمُ الْأَقْبَلُ  
لَكُنزُوا لَأَسْتَبِيحُوا ۲۸) قَالُوا لَسُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۲۹) فَأَقْبَلَ  
بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَلَمَّضُونَ ۳۰) قَالُوا لَوْلَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۳۱) عَسَى  
رَبِّنَا أَن يَسُدَّ لَنَا خَيْرًا مِّمَّا إِنَّا لِنَبْتَغِي ۳۲) كَذَلِكَ الْعَذَابُ وَالْعَذَابُ  
الْآخِرَةُ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۳۳) إِنَّا لِلْمُؤْمِنِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ  
۳۴) أَفَنَجْعَلُ لِلْمُؤْمِنِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۳۵) مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۳۶) أَمْ  
لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۳۷) إِن لَّكُمْ فِيهِ لَمَّا تَخَيَّرُونَ ۳۸) أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ  
عَلَيْنَا بَلِغَةٌ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِن لَّكُنَّا نَحْكُمُونَ ۳۹) سَلِّمُوا إِلَيْهِمْ  
بِذَلِكَ زَعِيمٌ ۴۰) أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ۴۱)  
يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۴۲)

कि तुम में भ्रष्ट कौन है।

निःसंदेह तेरा रब अपने रास्ते से भटकने वालों को अच्छी तरह जानता है, और वह रास्ता पाए लोगों को भी भली-भाँति जानता है।

तो आप झूटलाने वालों की (बात) स्वीकार न करें।

वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो यह भी ढीले पड़ जाएं।

और आप किसी ऐसे व्यक्ति की भी कहना न मानें जो अधिक कस्में खाने वाला हो।

1 अर्थात् ऐ मुहम्मद बहुत जल्द आप भी देख लेंगे, और यह काफिर भी देख लेंगे कि दोनों गिरोहों में कौन पागल है, और यह कियामत के दिन होगा, जब हक स्पष्ट हो जाएगा, और आँखों पर पड़े परदे उठ जाएंगे, यह उनके उस गुमान का खंडन है कि मुहम्मद ﷺ पागल और सीधे रास्ते से भटके हुए हैं, इसी लिए फरमाया :

2 कि वास्तव में सीधे रास्ते से भटका हुआ कौन है, स्वयं तुम हो या वह जिस पर तुम सीधे रास्ते से भटकने का आरोप लगा रहे हो, अर्थ यह है कि वे स्वयं ही सीधे रास्ते से भटके हुए हैं, क्योंकि वे ऐसी चीजों का विरोध करते हैं जिनमें उनके लिए दुनिया और आखिरत दोनों में लाभ है, और ऐसी चीजों को चाहते हैं जिनमें उनके लिए दुनिया और आखिरत दोनों में घाटा है।

3 जो ऐसे रास्ते पर हैं जो उन्हें दोनों जहान की खुशियाँ दिलाने वाला है।

3 अर्थ यह है कि काफिर चाहते हैं कि तुम उनके साथ नरम व्यवहार करो, तो वे भी तुम्हारे साथ नरम व्यवहार करें, और एक कौल यह है कि इसका अर्थ यह है कि यदि तुम सत्य-दर्शन छोड़कर उन की ओर झुक जाओ, तो वे भी तुम्हारी ओर झुक जाएं, और तुम से नरम व्यवहार करने लग जाएं, ताकि तुम उनकी ओर झुक सको।

4 سَلَافٍ: जो अधिक बातिल कस्में खाता हो। مَوْحِينَ: तुच्छ, इक्रीर, अपमानित।

11 बे-वकार, कमीना (दुष्ट, दुराचारी) और चुगली करने वाला हो।

12 भलाई से रोकने वाला, सीमा उल्लंघन करने वाला पापी हो।

13 घमंडी फिर साथ ही बे-नसब (कुवंश) हो।

14 (उसकी उदुपडता) केवल इसलिए है कि वह धनवान और पुत्रों वाला है।

15 जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ए तो पूर्व के लोगों की कथाएं हैं।

16 हम भी उसकी सूँड़ (नाक) पर दाग देंगे।

17 बे-शक हमने उनकी उसी प्रकार परीक्षा ली, जिस प्रकार हमने बाग वालों की परीक्षा ली थी। जबकि उन्होंने कस्में खायीं कि सवेरे होते ही उस (बाग) के फल तोड़ लेंगे।

18 और इंशा-अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) न कहा।

19 तो उस पर तेरे रब की ओर से एक बला चारों ओर से घूम गयी और वे सो ही रहे थे।

20 तो वह (बाग) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।

21 अब सवेरे होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाजें दीं।

22 कि यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही चल पड़ो।

23 फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले।

24 कि आज के दिन कोई निर्धन तुम्हारे पास न आया।

5 هَازٍ : जो लोगों का चर्चा उनके सामने बुराई से करता हो।

और उनको बीच झगड़ा बढ़ाता है।

عَتَلٌ : उखड़, घमंडी, बुरे स्वभाव का। जज्जाज कहते हैं कि कुवंश का अर्थ : कठोर और बुरे स्वभाव के हैं।

इन बुराईयों के साथ-साथ वह कुवंश (कुवंश, जिसकी नसब में सन्देह हो, किसी वंश से मिला दिया गया हो, हालांकि वह उसमें से न हो) भी है।

7 तुम इसकी बात इस कारण से न मानो कि वह धनी और सन्तान वाला है, और एक कौल यह है कि इससे मुराद डांट फटकार है, इस तरह से कि अल्लाह ने धन और सन्तान के रूप में जो नेमतें दी हैं, उसका बदला वह यह दे रहा है कि वह अल्लाह, उसके रसूल और उसकी निशानियों का इन्कार कर रहा है।

8 अर्थात् हम उसकी नाक पर कालक लगा देंगे, जिसके कारण उसका चेहरा जहन्नम में डाले जाने से पहले काला होजाएगा, और उसकी यह नाक उसके जहन्नमी होने की निशानी होगी, फिर हम उस पर बदनमाई थोप देंगे जो उससे हटेगी नहीं, उसी से वह पहचान लिया जाएगा।

9 अर्थात् अल्लाह तआला ने नबी के शराप के कारण मक्का के काफिरों को भूक और काल में ग्रस्त किया।

जिनकी घटना कुरैश में प्रसिद्ध थी, कहा जाता है कि यमन में सन्आ शहर से 6 मील की दूरी पर एक व्यक्ति का बागीचा था, वह उसमें से अल्लाह का हक अदा करता था, जब वह मर गया और फुलवारी उसके सन्तान के कब्जे में आ गई तो उन लोगों ने उस फुलवारी के लाभ लोगों से रोक लिए, और उसमें जो अल्लाह का हक था उसके साथ कंजूसी की, और कहने लगे कि : धन थोड़ा है, और सन्तान अधिक हैं, हमारे लिए इन चीजों के करने की गुन्जाइश नहीं जो हमारे पिता किया करते थे, उन लोगों ने गरीबों को उस फुलवारी के लाभ से महसूम कर देने का इच्छा कर लिया तो उनका परिणाम वही हुआ जिसका चर्चा अल्लाह ने अपनी किताब में किया।

अर्थात् जब उन लोगों ने कस्म खायी कि वे उसके फल तड़के सवेरे ही तोड़ लेंगे।

10 अर्थात् इन-शा-अल्लाह नहीं कह रहे थे, और एक कौल यह है कि उसमें से गरीबों के लिए उस मात्रा को अलग नहीं किया जिसे उनका बाप उन्हें देता था।

11 अर्थात् अल्लाह की ओर से एक आग उस पर घूम गई जिसने उसे जलाकर राख कर दिया।

12 ऐसे बाग की तरह जिसके फल तोड़ लिए गए हों, और उसमें उसके फलों में से कुछ भी बाकी न रहा हो।

13 अर्थात् एक-दूसरे से कहने लगे कि तड़के सवेरे ही निकल पड़ो, और फकीरों के आने से पहले ही वहाँ पहुँच जाओ।

14 अर्थात् यह बात एक-दूसरे से चुपके चुपके कह रहे थे, और उनका यही कहना था कि इस बाग में आज कोई फकीर आने न पाए ताकि वह तुम से मांग सके और कह सके कि : तुम लोग भी उसे वह दो जो तुम्हारे बाप देते थे।

25 और लपके हुए सुबह-सवरे गए, (समझ रहे थे) कि हम काबू पा गए।

26 फिर जब उन्होंने बाग देखा तो कहने लगे कि बे-शक हम रास्ता भूल गए हैं।

27 नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिए गए।

28 उन सबमें जो उत्तम था उसने कहा कि: मैं तुम सबसे कहता न था कि तुम (अल्लाह की) पाकी क्यों नहीं बयान करते?

29 (तो) सब कहने लगे कि हमारा रब पवित्र है, बे-शक हम ही अत्याचारी थे।

30 फिर वे एक-दूसरे की ओर मुख करके बुरा भला कहने लगे। कहने लगे हाय अफसोस! बे-शक हम उदृष्ट थे।

31 क्या अजब (विचित्र) है कि हमारा रब हमें इससे उत्तम बदला दे दे, हम तो अब अपने प्रभु से ही आशा रखते हैं।

32 इसी प्रकार प्रकोप (अज़ाब) आता है, और आखिरत (पुरलोक) का अज़ाब बहुत बड़ा है। काश! उन्हें बुद्धि होती।

33 बे-शक परहेजगारों (सदाचारियों) के लिए उनके रब के पास उपहारों वाले स्वर्ग (जन्नत) हैं।

34 क्या हम मुसलमानों को पापियों के बराबर कर देंगे?

35 तुम्हें क्या हो गया है, कैसे निर्णय कर रहे हो?

36 क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो?

37 कि उसमें तुम्हारी मनमानी बातें हों।

38 या हमसे तुमने कुछ ऐसी कस्में ली हैं जो कियामत (प्रलय के दिन) तक बाकी रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम अपनी ओर से मुकर्रर (निर्धारित) कर लो?

1 अर्थात् अपने वंश के लोगों से बिना मिले और बिना उन्हें साथ लिए अकेले चल पड़े, यह भ्रम करते हुए कि वे अपने बाग पर बिना किसी मदद के स्वयं शक्ति रखते हैं।

2 अर्थात् वे आपस में एक-दूसरे से कहने लगे : कहीं हम अपने बाग का रास्ता तो नहीं भूल गए हैं, यह तो नहीं हो सकता, फिर जब उन लोगों ने ध्यान से देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि यही उनका बाग है, और अल्लाह तआला ने इस फूलवारी के फल को नष्ट करके उन्हें सज़ा दी है, तो कहने लगे : अल्लाह ने हमें हमारे बाग के फल से महरूम कर दिया; क्योंकि हमने फकीरों से इसके लाभ को रोक लेने का इच्छा कर लिया था।

3 जो उनमें बेहतर, बुद्धिमान और नेकी वाला था।

क्या मैंने तुम से कहा नहीं था कि गरीबों को उन के हक से महरूम कर देने की तुम्हारी यह कार्रवाई सरासर अत्याचार और अन्याय का काम है, तुम क्यों नहीं उसकी पवित्रता करते जबकि तुम्हें यह विश्वास हो चुका है कि वह अत्याचारियों की ताक में रहता है।

4 अर्थात् हमारे बाग के साथ जो कुछ उसने किया उस में वह अत्याचारी नहीं; क्योंकि यह हमारे पाप के कारण हुआ, जो पाप हमने फकीरों के साथ उसके लाभ को रोक कर किया है।

5 अर्थात् माफी की आशा रखते हुए उससे भलाई चाहने वाले हैं।

6 अर्थात् इसी अज़ाब की तरह जिससे हमने इन्हें आजमाया हम काफ़िरों को भी संसार में आजमाएंगे। लेकिन उन्हें समझ-बूझ नहीं।

7 कुरैश वंश के काफ़िर सरदार कहा करते थे कि मुहम्मद (ﷺ) जो मुमान कर रहे हैं यदि सहीह हुआ तो हमारा और मुसलमानों का हाल वैसे ही होगा जैसे संसार में है, आखिरत में हमें भी वे सारी नेमतें प्राप्त होंगी जो उन्हें प्राप्त होंगी, तो अल्लाह तआला उन्हें ख़बर-दार कर रहा है कि यह न्याय नहीं है कि जो अल्लाह की पैरवी पाबन्दी के साथ करता हो, और जो पापी अत्याचारी हो अल्लाह के आदेशों की परवाह न करता हो, दोनों में फ़र्क न किया जाए और दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार हो।

8 इस तरह का टेढ़ा न्याय। गोया कि बदला देने की बात तुम्हारे ही जिम्मे हो।

9 जिसमें तुम पढ़ रहे हो कि अज्ञाकारी, अज्ञाकारी (फर्माबदार नाफ़र्मान) की तरह है।

10 अर्थात् क्या उस किताब में यह भी है कि आखिरत में तुम्हारे लिए वही सारी चीज़ें होंगी जो तुम चाहोगे।

11 तुम्हारा अल्लाह से कोई वादा है जिसे तुमने उससे कस्में लेकर पुख्ता और मज़बूत कर लिया है कि वह तुम्हें जन्नत में लेजाएगा, और यह वादा कियामत तक के लिए निर्धारित हो जिस से वह उस समय तक न निकल

خَشِيَعَةً أَبْصَرْتُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلَامُونَ ﴿٢٦﴾ فَذَرْنِي وَمَنْ يَكْذِبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿٢٨﴾ أَمْ تَسْتَأْجِرُهُمْ مِّنْ مَّعْرُومٍ مُّقْتُلُونَ ﴿٢٩﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْعَذَابُ فَنُكَبْتُمْ بَيْنَ يَدَيْهِمْ فَاصْبِرُوا لِحُكْمِ رَبِّكُمْ وَلَا تُكِنُّ وُجُوهَكُمْ لِصَاحِبِ الْمَوْلَاتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٣٠﴾ وَلَا

أَنْ تَذَرْتُمْ ذِكْرَ رَبِّكُمْ مِنْ رَبِّهِمْ لِنَيْدِ الْبَاعِرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٣١﴾ فَاجْتَبِهْ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٢﴾ وَإِنْ كَادَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالَّذِينَ لَقُوا أَنْ يَبْصُرَهُمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَنْجُونٌ ﴿٣٣﴾ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٣٤﴾

سُورَةُ الْحَاقَّةِ ﴿١﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَذْرَبَكُمْ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأَهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَأَمَّا

عَادٌ فَأَهْلِكُوا بِرِيحِ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَتَمَنَّى أَنِ بِآيٍ آتِيَةٍ حُسُومًا فَفَرَى الْقَوْمُ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سُورَةُ الْحَاقَّةِ ﴿١﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَذْرَبَكُمْ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأَهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَأَمَّا

عَادٌ فَأَهْلِكُوا بِرِيحِ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَتَمَنَّى أَنِ بِآيٍ آتِيَةٍ حُسُومًا فَفَرَى الْقَوْمُ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

40 उनसे पूछो कि उनमें से कौन इस बात का जिम्मेदार (और दावेदार) है? 12

41 क्या उनके कुछ साझीदार हैं? तो चाहिए कि अपने-अपने साझीदारों को ले आएँ यदि ए सच्चे हैं। 13

42 जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और सज्जा करने के लिए बुलाए जाएंगे तो (सज्जा) न कर सकेंगे। 14

43 उनकी आँखें नीची होंगी और उन पर अपमान (और ज़िल्लत) छा रही होगी, हालाँकि ए सज्जे के लिए, (उस समय

सकता हो जब तक कि वह उस दिन तुम्हारे लिए इसका निर्णय न करदे।

12 ऐ मुहम्मद! आप डॉट और फटकार के तौर पर इन काफ़िरों से पूछिए कि इनमें कौन इस बात का जिम्मेदार है?

13 क्या उनके भ्रम अनुसार अल्लाह के कुछ साझी हैं जो इस बात की शक्ति रखते हैं कि वे उन्हें आखिरत में मुसलमानों की तरह करदें?

14 जिस दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोल देगा जो घटना की कठोरता का प्रमाण होगा। इमाम बुखारी इत्यादि ने अबू सईद खुदी رضي الله عنه से रिवायत किया है उन्होंने ने कहा कि मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को फर्माते हुए सुना कि : "हमारा रब पिंडली खोलेगा (जिस तरह कि उसकी शान के लायक है) तो हर मोमिन मर्द और औरत उसके सामने सच्चे में गिर जाएंगे, परन्तु वे लोग बाकी रहेंगे जो बिखलावे के लिए सच्चे किया करते थे, वे सज्जा करना चाहेंगे लेकिन उनकी रीढ़ की हड्डी तख्ते की तरह एक होजाएगी, जिसके कारण उनके लिए झुकना सम्भव न हो सकेगा।

अर्थात् सारी सृष्टि अल्लाह का सज्जा करेगी, काफ़िर और मुनाफ़िक भी सज्जा करना चाहेंगे लेकिन उनकी रीढ़ की हड्डी सख्त होजाएगी और सच्चे के लिए झुक न सकेगी; क्योंकि वे संसार में ईमान नहीं लाए थे, और न ही अल्लाह का सज्जा किया था।





भी बुलाए जाते थे जब भले-चंगे थे।<sup>1</sup>

44 तो मुझे और इस बात को झुठलाने वाले को छोड़ दें, हम उन्हें इस प्रकार धीरे धीरे खींचेंगे कि उन्हें जानकारी भी न होगी।<sup>2</sup>

45 और मैं उन्हें ढील दूंगा बे-शक मेरी तद्बीर (योजना) बड़ा मजबूत है।

46 क्या तु उनसे कोई बदला चाहता है, जिसके भार से ए दब जाते हों?<sup>3</sup>

47 या क्या उनके पास ग़ैब का इल्म (परोक्ष का ज्ञान) है जिस वे लिखते हों?<sup>4</sup>

48 तो तू अपने रब के आदेश का सब्र (धैर्य) से (इन्तिज़ार कर) और मछली वाले की तरह न हो जा, जबकि उसने दुःख की अवस्था में पुकारा।

49 यदि उसे उसके रब की ने'मत (कृपा) न पालेती तो बे-शक वह बुरी अवस्था में चटयल मैदान (ऊसर धरती) पर डाल दिया जाता।

50 तो उसे उसके रब ने फिर नवाज़ा (निर्वाचित किया) और उसको नेक लोगों में कर दिया।<sup>5</sup>

<sup>1</sup> उन पर बहुत अधिक ज़िल्लत, और रुसवाई छाई हुई होगी।

अर्थात् संसार में। अर्थात् निरोग थे, और सच्चा करने की शक्ति थी, फिर भी यह नहीं करते थे। इब्राहीम तैमी कहते हैं कि : अज़ान और इकामत द्वारा बुलाये जाते थे लेकिन इन्कार कर देते थे।

<sup>2</sup> अर्थात् उनका मुआमला आप मेरे ज़िम्मे कर दें, अपने को तबाही में न डालें, मैं अकेले ही उनके लिए काफ़ी हूँ, और **بِعَذَابِ الْمَوْتِ** से मुराद कुरआन मजिद है। हम उन्हें धीरे-धीरे अज़ाब की ओर ले चल रहे हैं, यहाँ तक कि हम उसमें उन्हें इस तरह फँसा देंगे कि वे जान ही न सकेंगे कि यह ढील है; क्योंकि वे उसे दया समझ रहे थे और उसका परिणाम नहीं सोच पा रहे थे, और न वे यूही समझ पा रहे थे कि जल्द ही वे इसमें फँसने वाले हैं।

अर्थात् मैं उन्हें समय दूंगा कि वे पाप पर पाप करते चले जाएं।

अर्थात् उन्हें इस अज़ाब की पकड़ में लेने की मेरी योजना बहुत मजबूत है, वे इस से बच कर निकल नहीं पाएंगे।

<sup>4</sup> क्या जो आप इन लोगों को ईमान की दावत देते हैं उस पर इन से कोई बदला मांगते हैं, जो उस बदले के तवान का बोझ उठाए हुए हो। अर्थात् कज़ूसी के कारण उसका बोझ उठाना उन पर भारी पड़ रहा हो, तो क्या आपने उनसे कोई बदला मांगा है जिसके कारण वे इसे स्वीकार करने से मुंह मोड़ रहे हों।

<sup>5</sup> या उनके पास ग़ैब का इल्म (परोक्ष का ज्ञान) है, जिससे जो दलीलें वे चाहते हों अपने भ्रम अनुसार लिख लेते हों, और उनके द्वारा वे आप से लड़ाई कर रहे हों।

<sup>6</sup> मछली वाले से मुराद यूनुस हैं, अर्थात् आप गुस्से और उकताहट में उनकी तरह न हो जाएं।

अल्लाह अपने नबी को तसल्ली दे रहा है, और उन्हें सब्र से काम लेने का आदेश दे रहा है, और यह कि उतावलेपन से काम न लें, जैसे कि मछली वाले ने जल्दबाजी की, उनका किस्सा सूरतुल अम्बियाँ, यूनुस और साफ़ात में बीत चुका है, और उनकी यह दुआ इनु शब्दों द्वारा थी: **لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ** अर्थात् इस अवस्था में कि वह दुःख और तकलीफ़ से भरे हुए थे, और यह भी सम्भव है कि इस से मुराद उनका मछली के पेट में बन्द होना हो।

<sup>7</sup> इससे मुराद उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ मिलनी है कि उन्होंने अल्लाह से तौबा की, और अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार कर ली। यदि उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ न मिली होती तो वह मछली के पेट से एक चटयल और खाली मैदान में डाल दिए जाते।

जो पाप उन्होंने किया था उसके कारण वह बुराई और मलामत किए जाने के हक़दार होते और अल्लाह के दया से धुत्कार दिए जाते।

<sup>8</sup> अर्थात् उन्हें नुबुवत के कारण अपना मुख़्तस, चुना हुवा और प्रिय भक्त बना लिया।

अर्थात् नेकी और पुण्य में कामिल कर दिया। और एक कौल यह है कि उनकी ओर नुबुवत लौटा दी, और उनकी सिफ़ारिश स्वयं उनके और उनके वंश के बारे में स्वीकार की, और उन्हें रसूल बनाया और एक लाख या इससे अधिक लोगों की ओर उन्हें भेजा, तो वे सब ईमान लाए।

51 और करीब है कि (यह) काफ़िर अपनी तेज़ निगाहों (तीव्र दृष्टि) से आपको फिसला दें, जब कभी कुरआन सुनते हैं, और कह देते हैं कि यह तो निश्चित रूप से दीवाना है।<sup>9</sup>

52 और वास्तव में यह (कुरआन) तो पूरी जगत वालों के लिए सरासर शिक्षा ही है।

## सूरतुल हाक्फ़: - 69

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 साबित (सिद्ध) होने वाली।<sup>10</sup>

2 क्या है साबित (सिद्ध) होने वाली?

3 और तुझे क्या पता है कि वह साबित होने वाली क्या है?

4 उस खड़का देने वाली को समूदियों और आदियों ने झूठलाया था।

5 (जिसके परिणाम स्वरूप) समूद तो बहुत ही भयंकर (और ऊँची) आवाज़ से नष्ट कर दिए गए।<sup>11</sup>

6 और आद अत्यन्त तीव्रगति की पाले वाली (तेज़ो तुन्द) आँधी से नष्ट कर दिए गए।<sup>12</sup>

7 जिसे उन पर लगाता सात रात और आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाए रखा तो तुम देखते कि ए लोग धरती पर इस प्रकार पछाड़े गए हैं जैसे खजूर के खोखले तनों हों।<sup>13</sup>

8 तो क्या उनमें से कोई भी तुझे बाकी दिखाई दे रहा है?<sup>14</sup>

9 फिर औन और उससे पूर्व के लोग और जिनकी बस्तियाँ उलट दी गयीं, उन्होंने भी त्रुटियाँ (गलतियाँ) कीं।<sup>15</sup>

10 और अपने रब के रसूल (संदिष्ट) की नाफ़रानी की, (अन्ततः) अल्लाह ने उन्हें (भी) कठोर पकड़ में ले लिया।<sup>16</sup>

11 जब पानी में बाढ़ आ गयी तो उस समय हमने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया।<sup>17</sup>

12 ताकि उसे तुम्हारे लिए नसीहत (और यादगार) बना दें

<sup>9</sup> अर्थात् जब आप कुरआन पढ़ते हैं तो दुश्मनी और शत्रुता के कारण वे आप को तो अपनी तेज़ निगाहों से घूर रहे होते हैं, जैसे कि वे आप को अपनी जगह से फिसला देंगे, अर्थ यह है कि वे आप को बड़े ही गुस्से से भरी निगाह से देखते हैं।

<sup>10</sup> **لَمَّا قَا** "साबित होने वाली" इससे मुराद कियामत है, इसे "साबित होने वाली" इसलिए कहा गया है कि उस दिन हक़ीक़तें साबित और स्पष्ट हो जाएंगी।

<sup>11</sup> **بِالْفَارَعَةِ** "खड़का देने वाली" अर्थात् कियामत को इसे "खड़का देने वाली" इसलिए कहा गया है कि यह अपने डरावनेपन और भयानकपन से लोगों को खड़का देगी।

<sup>12</sup> **سَمُودُ** समूद से मुराद सालिह **الْحَافِظِ** की कौम है, और **بِالْفَارَعَةِ** तागिया से मुराद ऐसी चीख़ जो सीमा पार कर जाए, अर्थात् बहुत ही भयंकर चीख़।

<sup>13</sup> **عَادُ** आद हूद **الْحَافِظِ** की कौम है, और **بِالْفَارَعَةِ** पाले वाली हवा, सरकश, किसी के वश में न आने वाली बहुत भयंकर आँधी।

<sup>14</sup> अर्थात् उन पर सात रात और आठ दिनों तक छोड़े रखा जो लगातार चली जा रही थी, न वह रुक रही थी और न ही उसकी तेज़ी में कोई कमी आ रही थी, और उन्हें कंकरियों से मार रही थी। अर्थात् उन्हें पूरे तौर पर ख़तम कर देने वाली और मिटा देने वाली थी। अर्थात् अपने घरों में। धरती पर मरे हुए पड़े थे।

<sup>15</sup> अर्थात् कोई दल जो उनमें से बाकी बचा हो, या कोई व्यक्ति जो उनमें से जीवित रह गया हो तुम्हें दिखाई दिया है? (पूछना इनकार करने के लिए है) अर्थात् उनमें से कोई जीवित नहीं रहा।

<sup>16</sup> काफ़िर वंशों और उम्मतों में से। **وَالْمُؤْتَفِكَةُ** से मुराद लूट **الْحَافِظِ** के वंश के गाँव हैं। ग़लत कर्म किए अर्थात् शिर्क और पाप किए।

<sup>17</sup> उनकी ऐसी पकड़ की जो दूसरी कौमों की पकड़ से बढ़कर थी, अर्थात् सबों से अधिक सख़्त थी, और यह यह थी कि उन्हें उनके घरों समेत पलट दिया और उन पर पत्थरों की वर्षा की।

<sup>18</sup> अर्थात् पानी ऊँचाई में सीमा पार कर गया।

**حَمَلِكُ** में **ك** के मुखातब नबवी ज़माने के लोग हैं, अर्थ यह है कि तुम अगरचे नाव में नहीं थे, परन्तु अपने उन पुख़ों के पीठों में थे जिन्हें हमने नाव में बैठाया था, **بِالْمَوْتِ** से मुराद नूह **الْحَافِظِ** की नाव है, क्योंकि वह उन्हे बाढ़ के पानी में लेकर चल रही थी।

- और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें।<sup>1</sup>
- 13 तो जब सूर (नरसिंघा) में एक फूक फूकी जाएगी।
- 14 और धरती और पर्वत उठा लिए जाएंगे, और एक ही चोट में कण-कण कर दिए जाएंगे।
- 15 उस दिन हो पड़ने वाली घटना (प्रलय) हो पड़ेगी।<sup>3</sup>
- 16 और आकाश फट जाएगा तो उस दिन अत्यन्त क्षीण (बोदा) हो जाएगा।<sup>4</sup>
- 17 और उसके किनारों पर फरिश्ते होंगे और तेरे रब का अर्श (आसन) उस दिन आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए हुए होंगे।<sup>5</sup>
- 18 उस दिन तुम सब सामने प्रस्तुत (पेश) किए जाओगे, तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा।
- 19 तो जिसका कर्मपत्र (नाम-आ'माल) उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।<sup>7</sup>
- 20 मुझे तो पूरा विश्वास था कि मैं अपना हिसाब पाने वाला हूँ।<sup>8</sup>
- 21 तो वह एक सुखद (दिल-पसन्द) जीवन में होगा।<sup>9</sup>
- 22 उच्च (बुलन्द व बाला) जन्नत में।<sup>10</sup>
- 23 जिसके फल झुके पड़े होंगे।
- 24 (उससे कहा जाएगा) कि आनन्द से खाओ, पिओ अपने उन कर्मों के बदले जो तुमने पहले किए।<sup>11</sup>
- 25 परन्तु जिसे उसका नाम-आ'माल (कर्मपत्र) बाएं हाथ में दिया जाएगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा नाम-आ'माल दिया ही न जाता।
- 26 और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।<sup>12</sup>
- 27 काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती।<sup>13</sup>

1 अर्थात् नूह عليه السلام की कौम की बर्बादी के घटना को तुम्हारे लिए ऐ उम्मेते मुहम्मद ﷺ !

अर्थात् इब्रत और नसीहत बनादें ताकि तुम उसके द्वारा अल्लाह के शक्तिमान और उसके बदले की कठोरता पर दलील पकड़ सको।

याद रखने वाले लोग जो कुछ सुनें उसे सुन कर याद रख सकें।

2 अर्थात् वे दोनों एक ही चोट में कण-कण (जरी-जरी) कर दिए जाएंगे, अधिक चोट की जरूरत नहीं पड़ेगी, और एक कौल यह है कि वे दोनों एक क्षण में बिछा दिए जाएंगे, और चटल्य मैदान बना दिए जाएंगे।

3 अर्थात् कियामत कायम होजाएगी।

4 अर्थात् आकाश में जो फरिश्तें हैं उनके उतरने के कारण आकाश फट जाएगा, और वह उस दिन कम्ज़ोर और ढीला-ढाला होजाएगा।

5 अर्थात् फरिश्ते आकाश के किनारों पर होंगे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला उन्हें धरती पर उतरने का आदेश देगा तो वे धरती पर उतर जाएंगे, और धरती को और धरती की सारी चीजों को घेर लेंगे।

अर्थात् आठ निकटस्थ (मुकर्रब) फरिश्ते।

6 अर्थात् अल्लाह के सामने हिसाब-किताब के लिए तुम्हारी पेशी होगी।

अर्थात् अल्लाह तआला से न तो स्वयं तुम छुपे रहोगे, और न ही तुम्हारे कथन और कर्म छुपे होंगे, कोई भी चीज़ उससे छुपी नहीं रहेगी।

7 **هَازُوْ** का अर्थ है : लो।

ऐसा वह प्रसन्न और खुश होकर कहेगा, उन अक़ीदों और सुकर्मों के कारण जिन्हें वह अपने नाम-आ'माल (कर्मों के रजिस्टर) में लिखा हुआ देखेगा।

8 मुझे संसार में इस चीज़ की अच्छी तरह जानकारी थी, और मुझे इस पर पूरा विश्वास था कि आखिरत में मेरा हिसाब होगा।

9 जहाँ मात्र मन-पसंद चीज़ें ही होंगी, कोई घृणित चीज़ नहीं होगी।

10 ऊँचा इसलिए कहा है; क्योंकि वह जन्नत आकाश में होगी, या पदों और दर्जों में ऊँची होगी।

11 अर्थात् उसके फल बहुत ही क़रीब होंगे हर व्यक्ति आसानी से तोड़ सकेगा, चाहे वह खड़ा हो, या बैठा या लेटा।

अपने उन कर्मों के बदले जो तुम ने संसार में करके प्रलय के दिन के लिए भेजे थे।

12 मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसके विपरीत होगा।

13 काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए मौत और दोबारा न उठाए जाने की आर्जू वह अपने कुकर्मों के कारण और उस अज़ाब को देख कर करेगा

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ بِالْخَاطِئَةِ ۖ فَعَصَا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَابِيَةً ۚ إِنَّا لَمَلَأْنَا طَغَاةَ الْمَاءِ حَمَلَتُكُوْا فِي الْجَارِيَةِ ۚ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكُرَةً وَتَعِيْبًا أُنْذِرَ بِهِ ۚ فَإِذَا نْفَخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةً وَاحِدَةً ۚ وَجَمَلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتْ دَكَّةً وَاحِدَةً ۚ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۚ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۚ وَالْمَلِكُ عَلَى أَزْجَابِهَا يُحِجُّ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ مُّغْنِيَةٌ ۚ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۚ فَأَمَّا مَنْ أُوْفِيَ كِتَابَهُ بِسَمِيْنَةٍ ۖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمْ أَقْرَبُ وَأَكْتَبِيَّةٌ ۚ إِنَّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْتَقٍ حِسَابِيَّةٌ ۚ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۚ فِي حَسْبِهِ عَالِيَةٌ ۚ فُطُوْهَا دَانِيَةٌ ۚ كُوْا وَأَشْرَبُوْا هَنِيْئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۚ وَأَمَّا مَنْ أُوْفِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالَةٍ ۖ فَيَقُوْلُ يَلْبِثُنِيْ لَزَأْتُ كِتَابِيَّةٍ ۚ وَلَزَأْتُرٌ مَا حِسَابِيَّةٌ ۚ يَلْبِثُهَا كَانَتْ الْفَاضِيَّةُ ۚ مَا أَعْنَى عَنِّي مَالِيَةٌ ۚ هَلِكْ عَنِّي سَاطِنِيَّةٌ ۚ خَذُوْهُ فَعَلُوْهُ ۚ تَرَاهُمْ فِي سَعُوْهُ ۚ تُرْفَى سَيْسِيْلَةٌ دَرَعَهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيْمِ ۚ وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِيْنِ ۚ

28 मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया।<sup>14</sup>

29 और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।<sup>15</sup>

30 काश! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती।<sup>16</sup>

31 मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया।<sup>17</sup>

32 मेरा ग़ल्बा भी मुझसे जाता रहा।<sup>18</sup>

33 (हुकम होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक पहना दो।

34 फिर उसे जहन्नम में डाल दो।<sup>19</sup>

35 फिर उसे ऐसी जंजीर में जिसकी नाक सत्तर हाथ की है, जकड़ दो।<sup>20</sup>

जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।

14 अर्थात् जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।

15 मुझे जानकारी न होती कि मेरा हिसाब क्या है, क्योंकि पूरा हिसाब उसके विपरीत होगा।

16 काश मुझे जो मृत्यु आई थी वही मेरी अन्त होती, और मैं उसके बाद जीवित न किया जाता, सदा के लिए मौत और दोबारा न उठाए जाने की आर्जू वह अपने कुकर्मों के कारण और उस अज़ाब को देख कर करेगा जिसमें वह तुरंत ही जाने वाला होगा।

17 अर्थात् जो धन मैंने कमाया था वह मुझ से अल्लाह के अज़ाब को कुछ भी न रोक सका।

18 और मेरी कोई दलील मेरे काम न आसकी, सभी बर्बाद और अकारत गई, और एक कौल यह है कि सुल्तान से मुराद मर्यादा और मर्तबा, शासन और सिंघासन है, और उस समय अल्लाह तआला फरमाएगा :

19 **تَرَاهُمْ فِي سَعُوْهُ** बेड़ियों में उसका हाथ उसके गर्दन से जकड़ दो। फिर उसे नरक में ले जाकर डाल दो ताकि वह उसकी आग में जलता रहे।

20 **سَيْسِيْلَةٌ** का अर्थ है : जंजीर और **دَرَعَهَا** का अर्थ है : उसकी लम्बाई, सुफ़यान कहते हैं : हमें यह बात पहुँची है कि वह जंजीर उसके



فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَاهَا مَحِمْ ۖ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَشَلِينَ ﴿٣٦﴾ لَا يَأْكُلُهُ  
 إِلَّا الْخَاطِطُونَ ﴿٣٧﴾ فَلَا أَقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تَبْصُرُونَ ﴿٣٩﴾  
 إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿٤٠﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تَأْتُوا مَثُورًا ﴿٤١﴾  
 وَلَا يَقُولُ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾ نَزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ  
 نَفَقْنَا عَلَيْهِنَا بَعْضَ الْأَقْوَابِ ﴿٤٤﴾ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا  
 مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾ فَمَا يَنْكُرُ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِنَّهُ لَلَّذِكْرُ  
 لِلْمُنْقِبِينَ ﴿٤٨﴾ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى  
 الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

### سُورَةُ الْمَعَارِجِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾ لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِنَ  
 اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرَجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي  
 يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾  
 إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾ وَرَأَيْنَاهُ قَرِيبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْهَيْلِ  
 ﴿٨﴾ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْتَلُّ حِمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾

- 33 बे-शक यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था।  
 34 और निर्धन को खिलाने पर नहीं उभरता था।  
 35 तो आज यहाँ उसका न कोई मित्र है,  
 36 और न पीप के सिवाय उसका कोई खाना है।  
 37 जिसे पापियों के सिवाय कोई नहीं खाएगा।  
 38 तो मुझे कसम है उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो।  
 39 और उन चीजों कि जिन्हें तुम नहीं देखते।  
 40 कि बे-शक यह (कुरआन) मुअज़्ज़ज़ रसूल (प्रतिष्ठित संदेष्टा) का कौल (कथन) है।  
 41 यह किसी कवि (शाएर) का कथन नहीं, (अफसोस) तुम बहुत कम विश्वास रखते हो।

- 42 और न किसी ज्योतिषी का कथन है, (अफसोस) तुम बहुत कम नसीहत ले रहे हो।  
 43 (यह तो) सारे जहाँ के रब का उतारा हुआ है।  
 44 और यदि यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।  
 45 तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते।  
 46 फिर उसके दिल की नस काट देते।  
 47 फिर तुममें से कोई भी (मुझे) उससे रोकने वाला न होता।  
 48 अवश्य यह (कुरआन) परहेजगारों के लिए नसीहत है।  
 49 और हमें पूरी जानकारी है कि तुम में से कुछ उसके झुटलाने वाले हैं।  
 50 निःसंदेह (यह झुटलाना) काफिरों के लिए पछतावा है।  
 51 और निःसंदेह यह यकीनी (विश्वसनीय) सत्य है।  
 52 तो तू अपने अजीम रब (महिमावान प्रभु) की पाकी बयान कर।

### सूरतुल् मआरिज़ - 70

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रइम करने वाला है।  
 1 एक माँग करने वाले ने उस अज़ाब (प्रकोप) की माँग की जो (स्पष्टतः) होने वाला है।  
 2 काफिरों पर जिसे कोई हटाने वाली नहीं।  
 3 उस अल्लाह की ओर से जो सीढ़ियों वाला है।  
 4 जिसकी ओर फरिश्ते और रूह चढ़ते हैं एक दिन में जिसकी अवधि (मिकदार) पचास हजार वर्ष की है।  
 5 तो तू अच्छी तरह से धैर्य रख (सब्र कर)।  
 6 बे-शक यह उस (अज़ाब) को दूर समझ रहे हैं।  
 7 और हम उसे करीब ही देखते हैं।  
 8 जिस दिन आकाश तेल की तलछट जैसे हो जाएगा।  
 9 और पर्वत रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।  
 10 और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा।  
 11 (हालांकि) एक-दूसरे को दिखा दिए जाएंगे, पापी उस दिन के अज़ाब के बदले प्रतिदान (फिद्ए) में अपने बेटों को देना चाहेगा।  
 12 अपनी पत्नी को और अपने भाई को।  
 13 और अपने परिवार को जो उसे शरण देता था।  
 14 और धरती के सभी लोगों को देना चाहेगा, ताकि यह उसे मुक्ति दिला दे।  
 15 (मगर) कभी भी यह न होगा। बे-शक वह शोले (ज्वाला) वाली (आग) है।  
 16 जो मुख और सिर की खाल खींच लेने वाली है।

- 7 जैसा कि तुम समझ रहे हो; क्योंकि कहानत (शकूनी-कर्म) दूसरी चीज़ है, इसमें और कहानत में कोई चीज़ मेल नहीं खाती है। फ़िला अर्थ : थोड़ा, (यह देनें जगहों पर इन्कार के अर्थ में है) अर्थात : न तो तुम कुरआन पर ईमान ही रखते हो, और न ही उससे कुछ नसीहत (उपदेश) पकड़ते हो।  
 8 अर्थात : प्रतिष्ठित रसूल की जुबान से निकलने वाला यह कलाम (कथन) रब्बुलआलमीन का उतारा हुआ कलाम है।  
 9 यदि यह रसूल मुहम्मद या जिब्रईल जैसा कि ऊपर चर्चा हुआ, स्वयं अपनी ओर से कुछ गढ़ने की प्रयास करते और उसका सम्बन्ध अल्लाह से करते।  
 10 तो हम अपने दाएँ हाथ से उसकी पकड़ करते।  
 11 गर्दन की वह नस जो दिल से मिलती है, और जिसके कटने से आदमी तुरन्त मर जाता है, यह तसवीर है उसके बुरी तरह हलाक कर दिए जाने की, जैसे राजा लोग ऐसे व्यक्ति के साथ करते हैं जिन से वे क्रोधित हों।  
 12 तुम में से कोई ऐसा नहीं जो हमें उस से रोक सके, या उसको हम से बचा सके, तो भला फिर वह तुम्हारे कारण हम पर झूठ क्यों बोलेगा।  
 13 क्योंकि इससे लाभ उठाने वाले वास्तविक रूप से यही लोग हैं।  
 14 तुम में से कुछ लोग कुरआन को झुटला रहे हैं, हम उन्हें उसकी दंड देकर रहेंगे।  
 15 यह कुरआन का झुटलाना कियामत के दिन काफिरों के लिए अफसोस और पछतावा होगा।  
 16 क्योंकि यह अल्लाह की ओर से है, इसमें कण बराबर भी शंका की गुन्गाइश नहीं।

चूतड़ में घुसा करके मुँह के रास्ते से निकाल ली जाएगी।

- 1 अर्थात प्रलय के दिन आखिरत में उसका कोई करीबी नहीं होगा, जो उसके कुछ भी काम आसके, या उसकी सिफारिश कर सके, इसलिए कि यह ऐसा दिन होगा कि इसमें करीबी अपने करीबी से और मित्र अपने मित्र से भागेगा।  
 2 अर्थात उस बदबूदार (दुर्गन्धयुक्त) धोवन को कहते हैं जो शरीर से खून और पीप धोते समय गिरता है।  
 3 इससे मुराद खताकार और पापी हैं जो संसार में कुफ़ और शिर्क किया करते थे।  
 4 अर्थात मैं उन सारी चीजों की कसम खा रहा हूँ चाहे वे दिखाई देती हों या न दिखाई देती हों।  
 5 अर्थात कौल से मुराद तिलावत है, अर्थात यह कुरआन प्रतिष्ठित रसूल की तिलावत है, और रसूल क़रिब से मुराद : मुहम्मद ﷺ हैं। या अर्थ यह है कि यह एक ऐसा कौल है जिसे एक प्रतिष्ठित रसूल तुम्हें पहुँचा रहा है, इस स्थिति में रसूल क़रिब से मुराद जिब्रईल عليه السلام होंगे।  
 6 जैसा कि तुम समझते हो क्योंकि यह कविता नहीं है।

17 वह प्रत्येक उस व्यक्ति को पुकारेगी जो पीछे हटता और मुख मोड़ता है।

18 और इकट्ठा करके संभाल रखता है।

19 बे-शक इन्सान अत्यन्त कच्चे दिल वाला बनाया गया है।

20 जब उसे कष्ट पहुँचता है तो हड़बड़ा जाता है।

21 और जब सुख मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।

22 मगर वह नमाज़ी।

23 जो अपनी नमाज़ पर पाबंदी रखने वाले हैं।

24 और जिनके धन में निर्धारित (मुकररः) भाग है।

25 माँगनेवालों का भी और प्रश्न करने से बचने वालों का भी।

26 और जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं।

27 और जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं।

28 बे-शक उनके रब का अज़ाब निर्भय होने की चीज़ नहीं।

29 और जो लोग अपने गुप्तानों (शरमगाहों) की (हराम से) रक्षा करते हैं।

30 हाँ उनकी पत्नियों और लौन्डियों के बारे में जिनके वे मालिक हैं, वे निन्दित नहीं।

31 अब जो कोई इसके सिवाय (मार्ग) ढूँढेगा तो ऐसे लोग सीमा उल्लंघन करने वाले होंगे।

32 और जो अपनी अमानतों का और अपने वचन का ध्यान रखते हैं।

33 और जो अपनी गवाहियों पर सीधे (और डटे) रहते हैं।

34 और जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं।

35 यही लोग जन्नतों में आदर (और इज्जत) वाले होंगे।

36 तो काफ़िरों को क्या हो गया है कि वह तेरी ओर दौड़ते आते हैं?

37 दाएं और बाएं से गुट के गुट।

38 क्या उनमें से प्रत्येक की इच्छा यह है कि वे सुख-सुविधा वाले जन्नत में ले जाया जाएँगा?

39 (ऐसा) कभी भी न होगा, हमने उन्हें उस (वस्तु) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।

40 तो मुझे कसम है पूर्वो और पश्चिमों के रब की, (कि) हम यकीनन कूदत रखने वाले हैं।

41 इस पर कि उनके बदले में उनसे अच्छे लोग ले आएँ, और हम विवश नहीं हैं।

42 तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें, यहाँ तक कि ए अपने उस दिन से जा मिलें, जिसका उनसे वादा किया जाता है।

43 जिस दिन क़ब्रों से ए दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह किसी स्थान की ओर तेज़ी से जा रहे हैं।

44 उनकी आँखें झुकी हुई होंगी, उन पर अपमान (ज़िल्लत) छा रहा होगा, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था।

## सूरतु नूह - 71

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 बे-शक हम ने नूह (عليه السلام) को उनके समुदाय (कौम) की ओर भेजा कि अपनी कौम को डरा दो (और सचेत कर दो) इससे पहले कि उनके पास कष्टदायी यातना (दर्द-नाक अज़ाब) आजाए।<sup>1</sup>

2 (नूह عليه السلام) ने कहा कि हे मेरी कौम के लोगो! मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ।

3 कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो

<sup>1</sup> पहले इसका चर्चा हो चुका है कि नूह عليه السلام सब से पहले रसूल हैं, जिन्हें अल्लाह ने अपना रसूल बनाकर भेजा, और सूरतुल-अनकबूत में इसका भी चर्चा हो चुका है कि वह अपनी कौम में कितनी अवधि तक रहे। अर्थात् हमने उनसे कहा कि तुम अपने समुदाय के व्यक्तियों को डराओ। अर्थात् नरक का अज़ाब, या इससे मुराद वह बाढ़ है जो नूह عليه السلام के समुदाय पर आई थी।

بَصْرُوهُمْ يَوْمَ الْمَجْرِمِ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ بَيْنِيهِ  
وَصَجِيئَتِهِ وَأَخِيهِ ۝۱۲ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤَيَّبُ ۝۱۳ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ  
جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝۱۴ كَلَّا إِنَّمَا لَطْفٌ ۝۱۵ نَزَاعَةٌ لِلشَّوْىِ ۝۱۶ تَدْعُوا  
مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝۱۷ وَجَمْعٌ فَأَوْعَى ۝۱۸ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا  
۝۱۹ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جُرُوعًا ۝۲۰ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝۲۱ إِلَّا  
الْمُصْلِينَ ۝۲۲ الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝۲۳ وَالَّذِينَ فِي  
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَعْلُومٌ ۝۲۴ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝۲۵ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ  
بِيَوْمِ الدِّينِ ۝۲۶ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۝۲۷ إِنَّ عَذَابَ  
رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۝۲۸ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝۲۹ إِلَّا عَلَى  
أَرْوَجِهِمْ وَأَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝۳۰ فَمَنْ ابْتغَى وَرَاءَهُ  
ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝۳۱ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ  
۝۳۲ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ۝۳۳ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ  
۝۳۴ أُولَئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُكْرَمُونَ ۝۳۵ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لَمَّا كَانَتْ هُمْ مَهْطِئِينَ  
۝۳۶ عَنِ السَّمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۝۳۷ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ  
أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةً نَعِيمٍ ۝۳۸ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝۳۹

और मेरा कहना मानो।

4 तो वह तुम्हारे पाप माफ़ कर देगा और तुम्हें एक निर्धारित समय तक छोड़ देगा। बे-शक अल्लाह का वायदा जब आ जाता है तो रूकता नहीं। काश (यदि) तुम्हें जानकारी होती।<sup>2</sup>

5 (नूह ने) कहा कि हे मेरे रब! मैंने अपनी कौम को रात-दिन तेरी ओर बुलाया।

6 मगर मेरे बुलाने से ए लोग और अधिक भागने लगे।<sup>3</sup>

7 और मैंने जब कभी उन्हें तेरी बख्शिश (क्षमादान) के लिए बुलाया उन्होंने अपनी ऊंगलियों अपने-अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया और अड़ गए और बड़ा घमंड किया।<sup>4</sup>

<sup>2</sup> अर्थात् तुम्हारे पिछले पाप जो रसूल की अनुकरण और उनकी दावत स्वीकार करने से पहले तुम से हुए हैं। अर्थात् तुम्हारी मृत्यु को उस अन्तिम सीमा तक टाल देगा जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्धारित की है, मुराद यह है कि तुम्हारी उम्मत (अनुयायी) की अवधि बढ़ादेगा और उसे अधिक समय तक धरती पर बसाए रखेगा जब तक वह अनुकरण करेगी।

अर्थात् अज़ाब जिसे उसने तुम्हारे लिए नियुक्त कर रखा है, जब वह आजाएगा और तुम कुफ़र पर अड़े रहोगे तो वह टाला नहीं जा सकेगा, वह हर हाल में आकर ही रहेगा, इसलिए तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम आगे बढ़कर ईमान और इताअत का रास्ता अपना लो।

अर्थात् यदि तुम्हें समझ होती तो तुम यह जान लेते कि अल्लाह की ओर से निश्चित समय जब आ जाता है तो वह टाला नहीं जा सकता।

<sup>3</sup> अर्थात् जिस बात की ओर मैं उन्हें बुलाता था वे उससे बराबर भागते और अधिक दूर होते चले गए।

<sup>4</sup> अर्थात् जब कभी मैंने उन्हें ईमान और अनुकरण के रास्ते की ओर



فَلَا أَقِيمُ رَبِّي الْمَسْرُقَ وَالْمَعْرِبَ إِنَّا لَقَدِرُونَ ﴿٤٠﴾ عَلَيَّ أَنْ تُبَدِّلَ خَيْرًا مِنِّي  
وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٤١﴾ فَذَرَهُمْ مَوْضُوعًا وَيَلْبِسُوا حَقِّي لِقَوْلِهِمْ الَّذِي  
يُوعَدُونَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ نَخْرُجُ مِنْ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِصُونَ  
﴿٤٣﴾ خَشِيعَةً أَنْصُرُهُمْ زَرْهَهُمْ ذَلِكِ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٤٤﴾

### سُورَةُ نُوحٍ

آياتها  
٢٨

آياتها  
٧١

### بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ  
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١﴾ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾ أِنِ اعْبُدُوا  
اللَّهَ وَأَتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا ﴿٣﴾ يَعْفِرْ لَكُمْ مِن ذُنُوبِكُمْ وَيُوَخِّرَكُمْ  
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى إِنِ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ  
﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَايَ إِلَّا  
فِرَارًا ﴿٦﴾ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصْوَعًا  
فِي عَادَاتِهِمْ وَاسْتَعْصَمُوا بِشَابِهِمْ وَاسْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا  
﴿٧﴾ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ إِنِّي أَطَلْتُ لَهُمْ وَاسْرَرْتُ  
لَهُمْ إِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾

- 8 फिर मैंने उन्हें उच्च आवाज़ से बुलाया।  
9 और बे-शक मैंने उनसे खुल कर भी कहा और चपक-चपके भी।  
10 और मैंने कहा कि अपने रब से अपने पापों को माफ़ करवा लो (और माफी मांगो) बे-शक वह बड़ा बख़्शनेवाला (क्षमाशील) है।  
11 वह तुम पर आकाश को ख़ुब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा।  
12 और तुम्हें ख़ूब माल और सन्तान में बढ़ा देगा और तुम्हें बाग़ देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।  
13 तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की बर्तरी (सवीच्यता) पर विश्वास नहीं करते?  
14 हालांकि उसने तुम्हें विभिन्न प्रकार से पैदा किया है। 4

- 15 क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ने किस तरह ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिया है?  
16 और उनमें चाँद को ख़ूब जगमगाता बनाया है और सूरज को रौशन चिराग़ बनाया है?  
17 और तुमको धरती से (एक विशेष विधि से) उगाया है (और पैदा किया है)।  
18 फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जाएगा और (एक विशेष विधि से) फिर तुम्हें निकालेगा।  
19 और तुम्हारे लिए धरती को अल्लाह (तआला) फ़र्श बनाया है।  
20 ताकि तुम उसके चौड़े रास्तों में चलो फिर।  
21 नूह अलैहिस्सलाम ने कहा कि हे मेरे रब! उन लोगों ने मेरी ना-फ़रमानी की और ऐसों का फ़र्माबदारी की जिनके माल और संतान ने उनकी (निःसंदेह) हानि ही में बढ़ाया।  
22 और उन लोगों ने बहुत बढ़ा धोखा किया।  
23 और उन्होंने कहा कि कभी भी अपने देवताओं को न छोड़ना और न वद, सुवाअ, यगूस, यऊक़ और नन्न को (छोड़ना)।  
24 और उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया (हे रब) तू उन अत्याचारियों के भटकावे को और बढ़ा दे।  
25 ए लोग अपने पापों के कारण (पानी में) डुबो दिए गए और नरक में पहुँचा दिए गए और अल्लाह के सिवाय उन्होंने अपना कोई सहायता करने वाला न पाया। 13

- हो जिसने तुम्हें पैदा किया और इन विभिन्न तरहों से गुज़ारा।  
5 अर्थात् सारे आकाशों में जबकि वह उन सातों आकाशों में से संसार वाले आकाश में है। जिससे धरती जगमगाती रहती है, और उसमें कोई गर्मी नहीं होती है। (तो गोया वह आकाश के माथे का झूमर है)।  
धरती पर बसने वालों के लिए एक रौशन चिराग़ बनाया, (ताकि उसकी रौशनी में वह जीविका प्राप्त करने के लिए प्रयास कर सकें।)  
6 अर्थात् तुम्हारे पिता आदम عليه السلام को जिन्हें अल्लाह ने मिट्टी से बनाया, फिर उनके संतान बनाए जो धरती के उन हिस्सों को जो फलों और अनाजों और जानवरों में परिवर्तित हो गए हैं, खाकर बड़े होते हैं।  
7 अर्थात् धरती ही में, इस तरह कि तुम मरकर उसी में दफन होगे, फिर तुम्हारे अंग गल कर मिट्टी होजाएंगे और धरती में मिल जाएंगे।  
अर्थात् क्रियामत के दिन उसी से निकाल कर तुम्हें यकायक खड़ा कर देगा, पहले की तरह धीरे-धीरे नहीं।  
8 (अर्थात्) ताकि इन्सान आसानी से एक शहर से दूसरे शहर में या एक मुल्क से दूसरे मुल्क में आ-जा सके।  
9 अर्थात् उनके छोटे व्यक्तियों ने अपने सरदारों और धनवानों का अनुकरण किया जिनके धन और संतान की बढ़ौतरी ने दुनिया और आखिरत के घाटे ही में उन्हें बढ़ाया है।  
10 उनका अपने बेवकूफ़ों को नूह अलैहिस्सलाम की हत्या पर उभारना था।  
11 अर्थात् उन सरदारों ने अपने अनुपालन करने वालों को नूह की अवज्ञाक़री पर उभारते हुए उनसे कहा : तुम अपने उपास्यों की पूजा को न छोड़ना।  
यह बुत उनकी कौम के बुजुर्गों की मूर्तियाँ थीं जो उन्होंने बना रखे थे जिन्हें बाद में अरब-वासी भी पूजने लगे थे।  
अर्थात् इन मूर्तियों की पूजा न छोड़ना, वद, सुवा'अ, यगूस, यऊक़ और नन्न इनकी कौम के नैक और बुजुग़ व्यक्तियों के नाम हैं, जो आदम और नूह عليهما السلام के बँच गुजरे थे, उन लोगों ने उनके फोटो और उनकी मूर्तियाँ बनाकर अपनी इबादत की जगहों में रख ली थीं, फिर उनके बाद जिन लोगों का जनम हुआ उनसे इब्लौस ने आकर कहा कि : तुम से पहले जो लोग गुज़र चुके हैं वे इनकी पूजा करते थे, इसलिए तुम भी इनकी पूजा किया करो, और इस तरह उन लोगों ने इनकी इबादत शुरू करदी, इस तरह मूर्त-पूजा आरम्भ हुआ, फिर यह मूर्तियाँ अरब महा द्वीप में पहुँच गए और यहाँ भी कुछ वंशों ने इनकी पूजा शुरू करदी।  
12 अर्थात् उनके बड़ों और सरदारों ने बहुत से लोगों को भटकाया, और एक कौल यह है कि उन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को भटकाया, और उन्हें घाटे और नुक़सान में अधिक बढ़ाया।  
13 (यहाँ) मैंने माँ जाइदा है) अर्थात् वह अपने कुकर्मों के कारण भीषण बाढ़ में डुबा

- बुलाया जिसके द्वारा तू क्षमा प्रदान करता है। ताकि वह मेरी आवाज़ न सुन सकें। अर्थात् अपने कपड़ों से उन्होंने अपने चेहरे ढाँक लिए, ताकि वे मुझे देख न सकें, और मेरी बात सुन न सकें। अर्थात् कुफ़्र पर डटे रहे।  
1 अर्थात् खुल्लम-खुल्ला और उदघोषित-रूप से सभाओं और मण्डलियों में उन्हें दावत दी।  
अकेले-अकेले भी बुलाता रहा, अर्थ यह है कि विभिन्न तरीकों से मैंने उन्हें दावत दी, और एक कौल यह है कि سَرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا का अर्थ है : उनके घरों में जा-जाकर मैंने उन्हें दावत दी।  
2 سُرَّارًا ख़ूब वर्षा होता हुआ, इसमें इस बात की दलील है कि अल्लाह से माफ़ी मांगना वर्षा और जीविका की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा माध्यम है।  
3 अर्थात् उसकी बरतरी और बढ़ाई से नहीं डरते।  
4 वीर्य, फिर जमा हुआ खून, फिर गोशत के टुकड़े से लेकर पूरी पैदाइश तक, जैसा कि उसका विवरण सुरतल-मोमिनून में बात चुका है, फिर माँ के पेट से एक बालक के रूप में तुम निकलते हो, फिर जवान होते हो, फिर बूढ़े हो जाते हो, फिर क्योंकि उस हस्ती की बड़ाई और प्रतिष्ठा में तुम कोताही करते

26 और नूह (عليه السلام) ने कहा कि हे मेरे रब! तू धरती पर किसी काफिर को रहने-सहने वाला न छोड़! 1

27 यदि उन्हें छोड़ देगा तो निःसंदेह ए तेरे दूसरे बन्दों को भी भटक देंगे और ए कुकर्म काफिरों ही को जन्म देंगे। 2

28 हे मेरे रब! तू मुझे और मेरे माँ-बाप और जो ईमान लाकर मेरे घर में आए और सारे ईमानवाले पुरुषों और सारी ईमानवाली महिलाओं को माफ़ कर दे और काफिरों को विनाश (बर्बादी) के सिवाय अन्य किसी बात में न बढ़ा। 3

## सुरतुब जिन्न - 72

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 (हे मुहम्मद ﷺ) आप कह दें कि मुझे वय्य (प्रकाशना) की गयी है 4 कि जिन्नो के एक गिरोह ने (कुरआन) सुना तथा कहा कि हम ने अजीब कुरआन सुना है।

2 जो सत्य रास्ते की ओर मार्गदर्शन देता है, हम तो उस पर ईमान ला चुके, (अब) हम कभी अपने रब का किसी दूसरे को साझीदार न बनाएंगे।

3 तथा अवश्य हमारे रब की शान महान है 6, न उसने किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है और न सन्तान।

4 और अवश्य हम में का मूर्ख अल्लाह के बारे में झूठी बात कहा करता था।

5 और हम तो यही समझते रहे कि असंभव है कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लाएँ 8।

6 वास्तविकता यह है कि कुछ इन्सान कुछ जिन्नो से पनाह (शरण) मांगते थे 9, जिससे जिन्नात अपनी उद्वेगता में और बढ़ गए 10।

दिए गए, फिर उसके बाद आग में घुसा दिए गए, आग से मुराद आखिरत में नरक की आग है, और एक कौल यह है कि इससे मुराद कब्र का अज़ाब है।

1 जब नूह (عليه السلام) उनके ईमान से निराश होगए, तो अल्लाह तआला की इस वय्य (प्रकाशना) के सिवाय अब अधिक कोई ईमान नहीं लाएगा) के बाद उन्होंने उन्हें शराप, और अल्लाह ने उनकी इस शराप को खीकार किया, और डुबा दिया, (وَيَا قَوْمِ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الْمُنذِرِينَ) है, वाव को या से बदल कर इद्गाम कर दिया गया है) जिस के माने है : जो बर्ती में रहता बसता हो, मतलब यह है कि उन काफिरों में से किसी को भी बाकी न छोड़।

2 सीधे रास्ते से। जो तेरी अनुकरण करने वाले नहीं। जो तेरी नेमतों की नाशुक्रि (कृतघ्नता) में सीमा छलांगे हुए हैं।

3 हलाकत और घाटे के।

नूह (عليه السلام) की यह शराप कियामत तक आने वाले सारे अपराधियों के लिए है।

4 हे मुहम्मद ﷺ आप अपनी उम्मत को कह दीजिए कि अल्लाह ने जिब्रईल (عليه السلام) द्वारा मुझ पर वय्य की कि जिन्नो में से कुछ ने मुझे कुरआन पढ़ते सुना, और जो सूरत उस समय आप पढ़ रहे थे वह (أَفْرَأَى بِأَسْمَارِكُمُ الَّذِينَ خَلَقُوا وَإِنَّا لَهُمْ رُسُودًا مِثْلَ رُسُودِكُمْ) थी, और अल्लाह ने जिन्नो में से कोई रसूल नहीं भेजा बल्कि सभी रसूल आदम (عليه السلام) की संतान इन्सानों में से ही हुए।

5 जब वे अपनी कौम में वापस लौटे तो उन्होंने उनसे कहा कि : हमने एक पढ़ा जाने वाला कलाम सुना है, जो अपनी फसाहत और बलागत, स्पष्टता और साहिय में बड़ा अनोखा और निराला है, और एक कथन यह है कि अपनी नसीहत के लिहाज से अधिक अचंभे वाला है, और एक कथन यह है कि बर्कत के लिहाज से बहुत आश्चर्य-जनक है।

6 अर्थात हमारे रब की बड़ाई और शान, और उसका जलाल इससे बहुत अधिक ऊँचा और बुलन्द है कि उसकी पत्नी या सन्तान हो। और एक कथन यह है कि (جِدُّكَ) से मुराद शक्ति है।

7 जिन्नात अपने मुशिरक और मूर्ख जिन्नो के इस झूठे दावों का कि अल्लाह की पत्नी और उसके संतान है खंडन कर रहे हैं। (سُحُطًا) के मायने है : कुफ़ में बढ़ना, सीधे रास्ते से दूर होना, और सीमा उल्लंघन करना।

8 हमने तो यह झम कर रखा था कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह के बारे में झूठ बोल ही नहीं सकते, इसी लिए उन्होंने ने जब यह कहा कि अल्लाह के साझी हैं और वह पत्नी और संतान वाला है तो हम ने उनकी यह बात मान ली।

9 अज्ञानकाल (जाहिलियत) में अरबों में रिवाज था कि जब कोई व्यक्ति किसी घाटी में पड़ाव डालता तो वह जिन्नो के सरदार से शरण मांगते हुए

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا 11 وَيُمِدُّكُمْ بِأَمْوَالٍ وَيَنِينَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلُ لَكُمْ أَنْهَارًا 12 مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا 13

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا 14 أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَمَوَاتٍ

طَبَاقًا 15 وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا 16

وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا 17 ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ

إِخْرَاجًا 18 وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ بِسَاطًا 19 لَتَسْكُنُوا مِنْهَا

سُبُلًا 20 قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنِّهْمْ عَصَوْنِي وَأَنْبَعُوا مِن لَّدُنِّي

مَالَهُ وَوَلَدَهُ 21 لَا إِخْسَارًا 22 وَمَكْرُومًا كَبَّارًا 23 وَقَالُوا

لَا تَنْذَرُنَا 24 وَالصَّخْرَ لَا تَنْذَرُنَا وَلَا سَوَاعًا وَلَا يَعْوَتُ وَيَعُوقُ

وَسَرًّا 25 وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا 26

إِنَّمَا خَطِيعَتُهُمْ أَعْرَفُوا فَأَدْخَلُوا نَارًا فَالْمُجِدُّوا لَهُمْ مِن دُونِ

اللَّهِ أَنْصَارًا 27 وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَنْذِرْ عَلَيَّ الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِينَ

دِيَارًا 28 إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يَبْغُوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا

كَفَّارًا 29 رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِي

مُؤْمِنًا وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا نَبَارًا 30

31 और (इन्सानों) ने भी जिन्नो की तरह ए समझ लिया था कि अल्लाह कभी किसी को नहीं भजेगा। (अथवा किसी को पुनः जीवित न करेगा)।

32 और हमने आकाश को टटोल कर देखा 11 तो उसको अत्यन्त चौकस सुरक्षाकर्मियों 12 और तीव्र शौलों (ज्वालाओं) 13 से पूर्ण पाया।

33 और इस से पहले हम बातें सुनने के लिए आकाश में जगह-जगह पर बैठ जाया करते थे 14। अब जो भी कान लगाता है वह एक शौले को अपनी ताक (घात) में पाता है 15।

34 और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी

कहता : اعوذ بسيد هذا الوادي من شر سفهاء قومه " मैं इस घाटी के सरदार की पनाह चाहता हूँ उसके वंश के मूर्खों से" इस तरह वह जिन्नो के सरदार की पनाह में रात बिताता यहाँ तक कि सेवरा होजाता।

10 अर्थात जब जिन्नो ने यह देखा कि इन्सान हमसे डरते हैं और हमारी पनाह चाहते हैं, तो उन्होंने ने उनकी उद्वेगता और मूर्खता को और बढ़ावा दिया, और उन्होंने इन्सानों पर अधिक अत्याचार किया। या इन्सानों के दुःख, कमजोरी और डर-भय को अधिक बढ़ा दिया।

11 अर्थात अपने स्वभाव अनुसार हमने खोज शुरू करदी कि आकाश में क्या घटना घटी है।

12 यह सुरक्षाकर्मियों फरिश्तों में से थे, जो उसकी सुरक्षा कर रहे थे कि कोई आकाश की बात चोरी-छुपे न सुन ले। जो कि (شديدًا) ताकतवर है।

13 (سُبُلًا) यह तारों के ज्वालें हैं। यह सुरक्षा नबी (ﷺ) की बेसत के बाद शुरू हुई थी, अल्लाह तआला ने इन आकाशों की सुरक्षा जलादेने वाले तीव्र ज्वालों से किया।

14 ताकि वह आकाश की खूबे फरिश्तों से सुन कर ज्योतिषियों को बताएँ।

15 उस सुनने वाले जिन्नात की ताक में रहते हैं ताकि आकाश की बात सुनने से रोकने के लिए उसे इससे मारा जाए।

## سُورَةُ الْجِنِّ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَوْحَىٰ إِلَىٰ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْءَانًا  
عَجَبًا ۝١ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَمْ نُشْرِكْ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝٢  
وَأَنَّهُ تَعَلَّىٰ جَدًّا رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝٣ وَأَنَّهُ كَانَ  
يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝٤ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نَقُولَ الْإِنسَ  
وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝٥ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالِ  
مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝٦ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّنْ يَبْعَثَ  
اللَّهُ أَحَدًا ۝٧ وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا ثَمَرًا مِّمَّا تَلْمِزُكَ حَرَسًا  
شَدِيدًا وَشُهَبًا ۝٨ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقْعِدًا لِّلسَّمْعِ فَمَن  
يَسْمِعُ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شُهَابًا رَّصَدًا ۝٩ وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ  
بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝١٠ وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ  
وَمِنَّا ذُونَ ذَلِكَ كَمَا طَرِيقٌ قَدَدًا ۝١١ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نَعْجِزَ  
اللَّهُ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ نَعْجِزَهُ هَرَبًا ۝١٢ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا تُهْدَى  
ءَامِنًا بِهِ فَمَن يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَحَافُ بِحَسَا وَلَا رَهَقًا ۝١٣

बुराई का विचार किया गया है <sup>1</sup> या उनके रब का विचार उनके साथ भलाई का है।

<sup>11</sup> और यह कि (यकीनन) कुछ तो हममें से सच्चे हैं तथा कुछ विपरीत भी हैं <sup>2</sup>। हम विभिन्न तरह से बटे हुए हैं।

<sup>12</sup> तथा हमें पूरा यकीन हो गया कि हम अल्लाह तआला को धरती में कभी बेबस नहीं कर सकते <sup>3</sup> और न हम भागकर उसे हरा सकते हैं <sup>4</sup>।

<sup>13</sup> और हम हिदायत की बात सुनते ही उस पर ईमान ला चुके, और जो भी अपने प्रभु पर ईमान लाएगा उसे न किसी हानि का डर है न अत्याचार (और दुःख) का <sup>5</sup>।

<sup>14</sup> और, हम में से कुछ तो मुसलमान हैं तथा कुछ अन्यायी हैं <sup>6</sup>। तो जो मुसलमान हो गए उन्होंने सीधे रास्ते की खोज कर ली <sup>7</sup>।

<sup>15</sup> और जो अत्याचारी हैं वे नरक का ईंधन बन गए <sup>8</sup>।

<sup>16</sup> (और हे नबी ﷺ यह भी कहदो :) कि यदि ए लोग सीधे रास्ते पर जमे रहते तो जरूर हम उन्हें बहुत अधिक पानी पिलाते <sup>9</sup>।

<sup>17</sup> ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा तो लें <sup>10</sup> और जो व्यक्ति अपने रब के जिक्र से मुंह मोड़ लेगा तो अल्लाह (तआला) उसे कठोर अजाब में डाल देगा <sup>11</sup>।

<sup>18</sup> और यह कि मस्जिदें मात्र अल्लाह ही के लिए (विशेष) हैं <sup>12</sup>, तो अल्लाह के साथ किसी अन्य को न पुकारो।

<sup>19</sup> और जब अल्लाह का बंदा (भक्त) <sup>13</sup> उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ <sup>14</sup> तो करीब था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर उस पर पिल पड़ें <sup>15</sup>।

<sup>20</sup> आप कह दीजिए कि मैं तो मात्र अपने रब को ही पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता।

<sup>21</sup> कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी लाभ-हानि का अधिकार नहीं <sup>16</sup>।

<sup>22</sup> कह दीजिए कि मुझे हरगिज़ कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता तथा मैं कभी उसके सिवाय पनाह की जगह भी नहीं पा सकता।

<sup>23</sup> परन्तु (मेरा काम) तो मात्र अल्लाह की बात और उसका संदेश (लोगों को) पहुँचा देना है <sup>18</sup>, (अब) जो भी अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा उसके लिए नरक की आग है जिसमें ऐसे लोग हमेशा रहेंगे।

<sup>24</sup> यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उनको वचन दिया जाता है, तो जल्द भविष्य में जान लेंगे कि किस का मददगार (सहायक) कम्ज़ोर <sup>19</sup> और किसका गिरोह कम है <sup>20</sup>।

<sup>25</sup> (आप) कह दीजिए कि मुझे ज्ञान नहीं कि जिसका वादा तुमसे किया जाता है वह निकट है अथवा मेरा प्रभु उसके

<sup>6</sup> अत्याचारी हैं जो सीधे रास्ते से भटके हुए हैं।

<sup>7</sup> उन्होंने सीधे रास्ते का इच्छा किया, और उसकी खोज के लिए प्रयास किया, तो उन्हें उसकी तौफ़ीक मिल गई।

<sup>8</sup> नरक की आग का ईंधन होंगे, जिन से नरक की आग भड़काई जाएगी, जिस तरह से कि वह काफ़िर इन्सानों से भड़काई जाएगी।

<sup>9</sup> अर्थ यह है कि मुझे इस बात की वदय की गई है कि यदि जिन्नात या इन्सान या दोनों सीधे रास्ते पर जमे रहते तो **لَأَسْقِيَنَّهُمْ مَاءً غَدَقًا** अर्थात् : अल्लाह तआला उन्हें बहुत अधिक पानी पिलाता।

<sup>10</sup> ताकि हम उनकी परीक्षा ले लें और जान लें कि वे नेमतें प्राप्त करके किस प्रकार शुक करते हैं।

<sup>11</sup> और जो व्यक्ति कुरआन से, या नसीहत से मुंह मोड़ेगा तो उसे बहुत ही मुश्किल और कठोर अजाब में डाल देगा।

<sup>12</sup> और मेरी ओर उसने इस बात की भी वदय की कि मस्जिदें मात्र अल्लाह के लिए विशेष हैं, वे मूर्ति पूजा के लिए नहीं हैं, **فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا** तो जिन चीज़ों की शक्ति मात्र अल्लाह को है उस पर उसके सिवाय किसी सृष्टि से सहायता न मांगो चाहे वह जितना अधिक मर्यादा वाला क्यों न हो; इसलिए कि हुआ इबादत है।

<sup>13</sup> इस बन्दे से मुराद नबी ﷺ हैं।

<sup>14</sup> अल्लाह को पुकार रहा था, और उसकी पूजा कर रहा था, और या घटना बल्ले नखला का है, जैसा कि चर्चा हुआ।

<sup>15</sup> तो करीब था कि जिन्नात अल्लाह के रसूल से कुरआन सुनने के लिए भीड़ के कारण उन पर झुण्ड के झुण्ड पिल पड़ते।

<sup>16</sup> मुझे इसकी शक्ति नहीं कि जुनिया और आखिरत में तुम से किसी नुकसान और हानि को रोक सकूँ, और न ही इसकी कि तुम्हें कोई लाभ पहुँचा सकूँ।

<sup>17</sup> ठिकाना, पनाह और बचने का स्थान।

<sup>18</sup> मगर यह कि अल्लाह की ओर से पहुँचा दूँ, और उसके संदेशानुसार कर्तव्य करूँ, दूसरों को जिन चीज़ों का आदेश देता हूँ स्वयं मैं भी वही करूँ, यदि मैंने ऐसा किया तो छुटकारा पालूँगा नहीं तो मैं भी बर्बाद हो जाऊँगा।

<sup>19</sup> सेना जिससे कि सहायता लिया जाता है।

<sup>20</sup> क्या संख्या में वह कम है या मोमिन लोग।

<sup>1</sup> आकाश की इस चौकस सुरक्षा द्वारा बुराई का विचार है, या **رَشَدًا** भलाई का विचार है। इब्ने जैद का कथन है कि : इब्नीस ने कहा : हमें इसकी जानकारी नहीं कि अल्लाह ने इस रुकावट के द्वारा धरती वालों पर अजाब उतारने का विचार किया है, या यह कि उनकी ओर रसूल भेजेगा।

<sup>2</sup> कुछ जिन्नों ने अपने साथी दूसरे जिन्नों से कहा जब उन्होंने अपने साथियों को मुहम्मद पर ईमान लाने की दावत दी : कुरआन सुनने के बाद हम में से कुछ लोग उस पर ईमान लाकर नेक बन गए, और कुछ ईमान नहीं लाए, इस तरह हमारी विभिन्न येलियाँ हो गईं, और हमारे इच्छाएँ विभिन्न हो गईं। सईद कहते हैं : वे जिन मुसलमान भी थे, यहूदी, नस्रानी और अगिन के पूजारी भी।

<sup>3</sup> अवश्य हमने यह जान लिया कि यदि अल्लाह ने हमारे साथ किसी चीज़ की इच्छा की तो वह होकर रहेगी, हम उस से बच नहीं सकते।

<sup>4</sup> उससे भागते हुए हम उसे बेबस नहीं कर सकते।

<sup>5</sup> **حَسَا** के मायने हैं : नुकसान, कमी और घाटा, और **رَهَقًا** के मायने हैं : अत्याचार, ज़्यादाती और सरकशी।

लिए दूर की मुद्दत <sup>1</sup> मुकरर (निर्धारित) करेगा।

<sup>26</sup> वह गैब (परोक्ष) का जानने वाला है तथा अपने गैब पर किसी को अवगत (बाखबर) नहीं कराता।

<sup>27</sup> सिवाय उस रसूल के जिसे वह प्रिय बना ले <sup>2</sup>, इसलिए कि उसके भी आगे-पीछे पहरे-दार लगा देता है <sup>3</sup>।

<sup>28</sup> ताकि जानकारी हो जाए कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिए <sup>4</sup>, अल्लाह ने उनके आस-पास की चीजों को घेर रखा है <sup>5</sup> और प्रत्येकवस्तु की संख्या की गिनती कर रखी है।

## सूरतुल मुज्जमिल - 73

**गुरस करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।**

<sup>1</sup> हे चादर में लिपटने वाले।

<sup>2</sup> रात (के समय तहज्जुद की नमाज़) में उठ खड़े हो जाओ, परन्तु थोड़ी देर।

<sup>3</sup> आधी रात या उससे भी कुछ कम।

<sup>4</sup> या उस पर बढ़ा दे और कुर्आन को ठहर-ठहर कर (स्पष्ट) पढ़ा कर।

<sup>5</sup> अवश्य हम तुझ पर बहुत भारी बात जल्द ही उतारेंगे।

<sup>6</sup> अवश्य रात का उठना दिल-जम्ह (मन की एकाग्रता) के लिए बहुत मुनासिब है और बात को बहुत उचित करने वाला है।

<sup>7</sup> अवश्य तुझे दिन में बहुत से कार्य होते हैं।

<sup>8</sup> और तू अपने प्रभु के नाम जप किया कर और समस्त सृष्टि से अलग होकर उसकी ओर मुतवज्जिह (ध्यानमग्न) हो जा।

<sup>9</sup> पूर्व और पश्चिम का रब जिसके सिवाय कोई सत्य पूज्य नहीं, तू उसी को अपना कार-साज़ बना ले।

<sup>10</sup> और जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह और उनसे अच्छी प्रकार से अलग-थलग रह।

<sup>11</sup> और मुझे और उन झुठलाने वाले खुश-हाल लोगों को छोड़ दे और उन्हें थोड़ा अवसर दे।

<sup>12</sup> अवश्य हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं और सुलगता हुआ नरक है।

<sup>13</sup> और गले में अटकने वाला भोजन है और दुःख-दायक अजाब है।

<sup>14</sup> जिस दिन धरती और पर्वत थरथरा जाएंगे और पर्वत भुरभुरी रेत के टीलों जैसे हो जाएंगे।

<sup>15</sup> अवश्य हमने तुम्हारी ओर भी तुम पर गवाही देने वाला रसूल भेज दिया है, जैसा कि हमने फ़िऔन की ओर रसूल भेजा था।

وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ فَمَن أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ

تَحَرَّوْا رَشَدًا <sup>16</sup> وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا <sup>17</sup>

وَأُولُو الْأَسْتِقْمَةِ عَلَىٰ الظَّرِيفَةِ لَا سَفِينَتُهُمْ مَاءٌ عَدَا <sup>18</sup> إِنْتَفَيْنَهُمْ

فِيهِ وَمَن يُعْرِضْ عَن ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا <sup>19</sup> وَأَن

الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا <sup>20</sup> وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ

يَدْعُوهُ كَادُوا يُكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا <sup>21</sup> قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ

بِهِ أَحَدًا <sup>22</sup> قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا <sup>23</sup> قُلْ إِنِّي

لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَن أَجِدَ مِن دُونِهِ مَلْتَحِدًا <sup>24</sup> إِلَّا بَلَاغًا

مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَتَهُ وَمَن يُعَصِّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنَّا لَنَارِجَهُنَّ

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا <sup>25</sup> حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَسَيَعْلَمُونَ

مَنْ أَضَعُفٌ نَّاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا <sup>26</sup> قُلْ إِن أَدْرَيْتُ أَقْرَبُ

مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا <sup>27</sup> عَلِيمُ الْغَيْبِ فَلَا

يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا <sup>28</sup> إِلَّا مَن أَرَادَ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُ

يَسْأَلُكَ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِن خَلْفِهِ رَصَدًا <sup>29</sup> يَتْلُونَ قَدِ ابْتَلَوْا

رِسَالَتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا <sup>30</sup>

<sup>16</sup> तो फ़िऔन ने उस रसूल की नाफमानी की तो हमने उसे घोर आपद में पकड़ लिया।

<sup>17</sup> तुम यदि काफ़िर रहे तो उस दिन कैसे बचोगे, जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा?

<sup>18</sup> जिस दिन आकाश फट जाएगा, अल्लाह का यह वचन पूरा होकर ही रहनेवाला है।

<sup>19</sup> अवश्य यह शिक्षा है, तो जो चाहे अपने रब की ओर के रास्ते को अपना ले।

<sup>20</sup> अवश्य तेरा रब भली-भाँति जानता है कि तू और तेरे साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात के और आधी रात के और एक तिहाई रात के (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) खड़ा होता है, और रात-दिन का पूरा अनुमान अल्लाह को ही है, वह (भली-भाँति) जानता है कि तुम उसे कभी न निभा सकोगे तो उसने तुम पर कृपा की, इसलिए जितना कुर्आन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो, वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ अन्य धरती पर सफर करके अल्लाह की कृपा (अर्थात् जीविका भी) खोजेंगे और कुछ अल्लाह के मार्ग में जिहाद भी करेंगे, तो तुम सरलता पूर्वक जितना (कुर्आन) पढ़ सकते हो पढ़ो। और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो और ज़कात (भी) देते रहा करो और अल्लाह को अच्छा कुर्ज़ (ऋण) दो, और जो नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ सर्वोत्तम रूप से बदले में अत्यधिक पाओगे। और अल्लाह से क्षमा माँगते रहो। यकीनन् अल्लाह क्षमा करने वाला मेहबान (कृपालु) है।

<sup>1</sup> सीमा और मुद्दत, बस अल्लाह के सिवाय किसी को इसकी जानकारी नहीं कि कियामत कब होगी।

<sup>2</sup> पिछले हुक्म से उस रसूल को अलग कर लिया जिसे वह पसन्द करले, तो अपने गैबी ज्ञान में से जो चाहे उन्हें वक्ष्य द्वारा बता देता है, और उसे उनके लिए मो'जज़ा (चमत्कार) और उनकी नुब्व्वत पर सच्चा प्रमाण बनाया, और ज्योतिषी और उस जैसे अन्य लोग जो पथरों से मारते हैं, हाथों की लकीरें पढ़ते हैं, या पत्थी उड़ते हैं, उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें अल्लाह ने पसंद किया है, बल्कि वह तो अल्लाह के साथ कुफ़ करने वाले, अपने अन्दाज़े, झूठ और अटकल द्वारा अल्लाह पर आरोप लगाने वाले हैं।

<sup>3</sup> अर्थात् अल्लाह तआला रसूल के आगे पीछे फ़रिश्तों में से सुरक्षाकर्मी निर्धारित कर देता है, जो उस की सुरक्षा करते हैं ताकि जब वह उस पर वक्ष्य को स्पष्ट करे तो शैतान आड़े न आसके, और इसी तरह उसे घेरे रहते हैं ताकि शैतान उसे सुन न सके और न ज्योतिषियों को बता सके।

<sup>4</sup> ताकि अल्लाह तआला जिस तरह गैब द्वारा जानता है उसी तरह यह देख भी ले कि उसके रसूलों ने उसके संदेशा ठीक-ठीक पहुँचा दिए हैं।

<sup>5</sup> अर्थात् घात में रहने वाले फ़रिश्तों के पास की, या रसूलों के पास की जो अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचाते हैं, या उन लोगों के पास की चीजों को घेर रखा है।



## سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَأْتِيهَا الْمُرْسَلُ ۝ (۱) قُرْآنٌ لَّيْلًا لَا قَلِيلًا ۝ (۲) يَصْفَهُ وَأَوَانُقُصُ مِنْهُ قَلِيلًا ۝ (۳) أَوْزُدْ عَلَيْهِ وَرَبِّلَ الْقُرْآنِ أَنْ تَرْتَبِلًا ۝ (۴) إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝ (۵) إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝ (۶) إِنَّ لَكَ فِي أُنْهَارٍ وَسَبْحًا طَوِيلًا ۝ (۷) وَأَذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝ (۸) رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝ (۹) وَأَصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝ (۱۰) وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝ (۱۱) إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَحِمِيمًا ۝ (۱۲) وَطَعَامًا إِذَا غَضَبْنَا وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝ (۱۳) يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَيْبًا مَهِيلًا ۝ (۱۴) إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكَ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكَ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَى فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝ (۱۵) فَعَصَى فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۝ (۱۶) فَكَيْفَ تَنْفِقُونَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝ (۱۷) السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۝ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝ (۱۸) إِنَّ هَذِهِ تَذْكَرَةٌ ۝ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَى رَبِّهِ سَبِيلًا ۝ (۱۹)

## सुरतुल मुद्दसिर 1 - 74

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 हे कपड़ा ओढ़ने वाले।
- 2 खड़ा हो जा और आगाह (सावधान) कर दे।
- 3 और अपने रब ही की बड़ाईयां (माहिमा) बयान कर।
- 4 और अपने कपड़ों को पवित्र रखा कर।
- 5 और नापाकी को छोड़ दे।

1 मुफ़ससिरिन कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ पर जब वय्य (प्रकाशना) की शुरूआत हुई, उस समय जिब्रईल عليه السلام आप के पास आए, आप ने उन्हें आकाश और धरती के बीच एक कुर्सी पर जगमगाती रौशनी की तरह बैठे देखा तो आप घबरा गए और बेहोश होकर गिर पड़े, फिर जब होश में आए तो खड़ीजा (हस्त) के पास आए, पानी मंगवाया और अपने ऊपर पानी छिड़का, फिर फरमाया : मुझे कपड़ा ओढ़ादो, मुझे कपड़ा ओढ़ादो, तो उन्होंने आप के ऊपर एक कपड़ा डाल दिया।

- 2 ऐ वह व्यक्ति जो अपने कपड़े में लिपटा हुआ है, और उसे ओढ़ रखा है।
- 3 अर्थात : उठ खड़ा हो, और मक्का वालों को यदि वे इस्लाम नहीं लाते तो उन्हें अज़ाब से डराओ।
- 4 और अपने रब का ही जो कि तेरा आका, मालिक, और तेरे काजों की इस्लाह करने वाला है, और उस पाक हस्ती ने बड़ाई और महानता को अपनी विशेषता बताई है, और वह इससे महान है कि उसका कोई साझीदार हो।
- 5 अल्लाह तआला ने आप को अपना कपड़ा पवित्र रखने, और उसे गन्दगी से पाक रखने का आदेश दिया। और क़तावा कहते हैं कि अपने नपस को पाप से पाक रखिए।
- 6 और बुतों और मूर्तियों को छोड़ दीजिए, और उनकी पूजा न कीजिए, क्योंकि यही अज़ाब के कारण हैं।

- 7 और इहसान (उपकार) करके अधिक लेने की इच्छा न कर।
- 8 और अपने प्रभु के मार्ग में सब्र (धैर्य) रख।
- 9 तो जब सूर (नरसिंघा) में फूँका जाएगा।
- 10 तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा।
- 11 (जो) काफ़िरों पर सरल न होगा।
- 12 मुझे और उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है।
- 13 और उसे अत्यधिक धन दे रखा है।
- 14 और हाज़िर रहने वाले पुत्र भी।
- 15 तथा मैंने उसे बहुत कुछ कुशादगी (समुद्धि) दे रखी है।
- 16 फिर भी उसकी चाहत है कि उसे और अधिक दूँ।
- 17 नहीं-नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी है।
- 18 जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा।
- 19 उसने विचार करके अनुमान किया।
- 20 उसका नाश हो! उसने कैसा अनुमान किया?
- 21 फिर उसका नाश हो! किस प्रकार उसने अनुमान किया?
- 22 उसने फिर देखा।
- 23 फिर मुख सिकोड़ लिया और मुँह बना लिया।
- 24 फिर पीछे हट गया, गर्व किया।
- 25 और कहने लगा कि यह तो मात्र जादू है जो नकल किया जाता है।
- 26 (यह) इन्सान की बात के सिवाय कुछ भी नहीं।
- 27 मैं जल्द ही उसे नरक में डालूँगा।
- 28 और तुझे क्या पता कि नरक क्या चीज़ है?
- 29 न वह बाकी रखती है और न छोड़ती है।
- 30 खाल को झुलसा देती है।

- 7 और नुबुवत का जो बोझ आप उठा रहे हैं उसका एहसान आप अपने रब पर न जताइए, उस व्यक्ति की तरह जो यदि किसी का बोझ उठाता है तो उससे अधिक मिलने की इच्छा रखता है। और एक कथन की रौशनी में इसका अर्थ यह है कि जब आप किसी को कोई उपहार दें तो मात्र अल्लाह की खुशी के लिए दें और लोगों पर उसका एहसान न जताएं।
- 8 अर्थात : आप पर भारी जिम्मेदारी लादी गई है, जिसके कारण आप से अरबी और अजमी युद्ध करेंगे, तो आप उस पर अल्लाह के लिए सब्र कीजिए।
- 9 इसका अर्थ सूर (नरसिंघा) में फूँक मारना है, गोया कि कहा जा रहा है कि आप इनकी ओर से पहुँचने वाली कष्टों पर सब्र करें; क्योंकि इनके सामने एक भयंकर दिन है जिसमें वे अपने कर्तुओं की सजा पाने वाले हैं।
- 10 मुझे और उस व्यक्ति को अकेला छोड़ दें जिसे मैंने पैदा किया है जबकि वह अपनी मां के पेट में अकेला था, न तो उसके पास धन था और न ही सन्तान, या इसका अर्थ यह है कि : मुझे अकेला उससे बदला लेने के लिए छोड़ दें, मैं आप की ओर से उससे निपटने के लिए काफ़ी हूँ।
- 11 ढेर सारे धन दिए।
- 12 और ऐसे बेटे जो हर समय उसके साथ मक्का ही में रह रहे हैं, न वह यात्रा करते हैं और न ही अपने बाप के धन के कारण जीविका की खोज में बाहर जाने के मुहताज हैं।
- 13 उसकी जीविका को फैला दिया है, लम्बी आयु दी है, और कुरैश की सरदारी भी।
- 14 क़ा में कभी नहीं बढ़ाऊँगा। إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عِيدًا वह हमारी निशानियों का विरोधी है, और जो हमने अपने रसूल पर उतारा है उसका इन्कार करने वाला है।
- 15 जल्द ही हम उस पर कठिन अज़ाब का बोझ डालेंगे, इहाँक कहते हैं कि इन्सान ऐसी भारी चीज़ उठाए जिसकी वह शक्ति न रखता हो।
- 16 उसने नबी ﷺ के बारे में सोचा और जी में विचार कर लिया, और जवाब देने के लिए बातें तैयार कर ली, तो अल्लाह ने उसे अपमानित किया।
- 17 उस पर शराप हो और उसका नाश हो उसने कैसी बात सोची।
- 18 उसने सोचा कि किस तरह कुरआन को रद्द करे और उसमें तूटि निकाले।
- 19 जब उसे कोई ऐसी तूटि नहीं मिली जिसके द्वारा वह कुरआन पर रद्द करे तो उसने अपना मुँह बनाया। وَرَبِّ وَأُورِ لِي وَرَبِّ وَأُورِ लِي और त्वोरी चढ़ाई।
- 20 यह कुरआन जादू के सिवाय और कुछ नहीं है जिसे मुहम्मद (ﷺ) दूसरों से नकल करके बता रहे हैं।
- 21 यह तो इन्सानों का कथन है, अल्लाह का कथन नहीं है।
- 22 जल्द ही मैं उसे जहन्नम की आग में डालूँगा।
- 23 जहन्नम लोगों को दिखाई देगी और वे अपनी आँखों से स्पष्ट रूप से देखेंगे, और कहा गया है कि वह लोगों के चेहरे का रंग बदल देगी, यहाँ

30 और उस पर उन्नीस (फरिश्ते नियुक्त) मुकर्रर हैं।<sup>1</sup>

31 और हमने नरक के दारोगे मात्र फरिश्ते रखे हैं। और हमने उनकी संख्या मात्र काफिरों की परीक्षा के लिए मुकर्रर (निर्धारित) कर रखी है, ताकि अहले किताब विश्वास कर लें और ईमान वाले ईमान में बढ़ जाएं और अहले किताब और मुसलमान शंका न करें, और जिनके दिल में रोग है वे और काफिर कहें कि इस उदाहरण से अल्लाह की क्या मुराद है? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत (मार्गदर्शन) देता है, और तेरे रब की सेनाओं को उसके सिवाय कोई नहीं जानता, यह सभी इत्सानों के लिए (साक्षत) शिक्षा (एवं उपदेश) है।<sup>2</sup>

32 कभी नहीं! चन्द्रमा की कसम।<sup>3</sup>

33 और रात की जब वह पीछे हटे।<sup>4</sup>

34 और सवेरे की जब वह रौशन हो जाए।<sup>5</sup>

35 कि (अवश्य वह नरक) बड़ी चीजों में से एक है।<sup>6</sup>

36 लोगों को डराने वाला।

37 उस व्यक्ति को जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।

38 प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले गिरवी है।<sup>8</sup>

39 परन्तु दाएं हाथ वाले।

40 (कि) वे जन्नतों में (बैठे हुए) पूछते होंगे।

41 पापियों से।

तक कि वह काले हो जाएंगे।

1 जहन्नम पर फरिश्तों में से 9९ दारोगे निर्धारित हैं, और कहा गया है कि 9९ प्रकार के फरिश्ते निर्धारित हैं।

2 जब यह आयत उतरी तो अबू जहल ने कहा : क्या मुहम्मद की सहायता करने वाले मात्र 9९ होंगे? तो क्या तुम में से सौ सौ व्यक्ति मिल कर भी एक को न पकड़ पाएंगे कि लोग जहन्नम से निकल जाएं? तो यह आयत उतरी, तो फरिश्तों से भिड़ने की किस के पास शक्ति है? और कौन उन्हें हरा सकता है? वह तो अल्लाह के हुक को उसकी मख्लूक (सृष्टि) में से सबसे अधिक कायम करने वाले हैं, और सबसे अधिक उसके लिए गुस्सा होने वाले हैं, उनका अज़ाब सबसे कठिन है, और उनकी पकड़ सबसे मजबूत है। **وَمَا جَعَلْنَا عَدِيَّتَهُمْ إِلَّا** उतरी, तो फरिश्तों से भिड़ने की किस के पास शक्ति है? और कौन उन्हें हरा सकता है? वह तो अल्लाह के हुक को उसकी मख्लूक (सृष्टि) में से सबसे अधिक कायम करने वाले हैं, और सबसे अधिक उसके लिए गुस्सा होने वाले हैं, उनका अज़ाब सबसे कठिन है, और उनकी पकड़ सबसे मजबूत है। **وَمَا جَعَلْنَا عَدِيَّتَهُمْ إِلَّا** हमने उनकी उल्लिखित संख्या को काफिरों की गुमाही और परीक्षा का कारण बनाया, तो उन्होंने अपने दिल की बातें कह लीं, ताकि उन पर अज़ाब में बढ़ती ही हो जाए और उन पर अल्लाह का क्रोध अधिक होता चला जाए। **لِيَسْتَفِينَ الَّذِينَ أُوذُوا بِالْكِتَابِ** क्योंकि कुरआन में जो संख्या बताया गया है वही संख्या उनकी किताबों में भी उल्लिखित है। **وَرَوَدَادَ الَّذِينَ مَأْسُومًا** यह देख कर उनका ईमान बढ़ जाए कि यहदियों और ईसाईयों ने भी उनकी मुवाफकत की है। **رَبُّوَالَّذِينَ** काफिर हैं मक्का वासियों में से या अन्य स्थानों के : **مَا آدَا أَرَادَ اللَّهُ هَذَا مَثَلًا** कि इस अचंभे में डाल देने वाली संख्या से अल्लाह की इच्छा क्या है? **وَمَا جَعَلْنَا جُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ** जहन्नम के दारोगे अगरचे 9९ ही हैं लेकिन फरिश्तों में से उनके मददगार और लुश्कर हैं जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा नहीं जानता। **وَمَا جَعَلْنَا إِلَّا ذِكْرًا لِلنَّاسِ**

अर्थात् जहन्नम और जहन्नम के दारोगों की यह संख्या मात्र संसार वालों की नसीहत के लिए है, ताकि उन्हें अल्लाह की परिपूर्ण शक्ति की जानकारी हो जाए, और इसकी भी कि उसे किसी मददगार की जरूरत नहीं है।

3 मैं इस पर चौंदा की और इसके बाद आने वाली चीजों की कसम खाता हूँ।

4 जब वह पीछे मुड़ कर जाने लगे।

5 जब वह रौशन और स्पष्ट हो जाए।

6 जहन्नम बड़े कष्टों तथा मुसीबतों में से एक है। और कहा गया है मुहम्मद (ﷺ) को झुठलाना बड़ी मुसीबतों में से एक है।

7 हर एक के लिए डराने वाला है चाहे ईमान के साथ आगे बढ़े या कुफ्र द्वारा पीछे रह जाए।

8 अपने कर्मों के कारण हर व्यक्ति की पकड़ होगी और वह उसके साथ गिरवी है, अब उसका वह कर्म या तो उसे अज़ाब से बचा लेगा, या उसे बर्बाद कर देगा।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثِي اللَّيْلِ وَبِضَمِّهِ، وَثُلُثَهُ، وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ أَن لَّنْ نَّحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكَ فَاقْرَأْ وَ مَا يَتَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۖ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ يُقِنُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاقْرَأْ وَ مَا يَتَسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاقْرَأُوا لِلَّهِ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ مِن خَيْرٍ نَّحْدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا وَأَسْفَعُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَتَأْتِيهَا الْمَدْيَنُ ۚ قُرْآنٍ ذَرِّيرٍ ۚ وَرَبِّكَ فَكِيرٍ ۚ وَيَأْتِيكَ فَطَيْعٌ ۚ وَالرَّحِزُ فَاهْجُرْ ۚ وَلَا تَمَنَّ عَلَى الْكُفْرَيْنِ ۚ وَلَا تَكُونَنَّ مِمَّنْ يَدْعُونَ إِلَى الْكُفْرَيْنِ فَأُوذُوا ۚ فَذَلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمِ عَسِيرٍ ۚ عَلَى الْكُفْرَيْنِ عَسِيرٌ ۚ ذَرِّيرٍ وَمَنْ خَلَقَتْ وَجِدًا ۚ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ۚ وَبَيْنَ شُهُودًا ۚ وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۚ ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۚ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عِنِيدًا ۚ سَاءَ رُفُوعُهُ صَعُودًا ۚ

32 तुम्हें नरक में किस बात ने डाला?<sup>9</sup>

33 वे जवाब देंगे कि हम नमाजी न थे।

34 न भूखों को खाना खिलाते थे।

35 और हम बाद-विवाद (इंकार) करने वालों के साथ बाद-विवाद में मशगूल (व्यस्त) रहा करते थे।<sup>10</sup>

36 और हम बदले के दिन को झुठलाते थे।

37 यहाँ तक कि हमारी मृत्यु आ गयी।<sup>11</sup>

38 तो उन्हें सिफारिश करने वालों की सिफारिश लाभ न देगी।

39 उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुख मोड़ रहे हैं?<sup>12</sup>

40 जैसे कि वे बिदके हुए गधे हैं।<sup>13</sup>

41 जो तीर अंदाजों से भागे हों।<sup>14</sup>

42 बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे स्पष्ट किताबें दी जाएं।<sup>15</sup>

9 उनसे पूछेंगे : तुम्हें किस चीज ने जहन्नम में डाल दिया?

10 कुकर्मियों के साथ उनके कुकर्म में व्यस्त रहते थे, जब भी कोई पापी पाप करता हम उसके साथ रहते।

11 अर्थात् : मौत आ गई।

12 कौन सी चीज उन्हें मिल गई है जिसने उन्हें कुरआन से दूर कर दिया है जबकि इसमें तो बहुत बड़ी नसीहत है।

13 जैसे कि वे बहुत अधिक बिदके हुए गधे हों।

14 जो तीर अंदाजों से भागे हों जो उन्हें तीर से मार रहे हों, और कहा गया है कि अरबी में **مَسْرُومٌ** का अर्थ शेर है। तो इसका अर्थ यह होगा कि यह जंगली गधे हैं जो शेर को अपनी ओर फाड़ खाने के लिए आता देख कर भाग रहे हों।

15 मुफरिसरीन कहते हैं कि काफिरों ने मुहम्मद से मांग किया कि : हम

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۖ (١٨) فَقِيلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ (١٩) ثُمَّ قِيلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ (٢٠) ثُمَّ نَظَرَ ۖ (٢١) ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۖ (٢٢) ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۖ (٢٣) فَقَالَ إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْتَىٰ ۖ (٢٤) إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۖ (٢٥) سَأَصْلِيهِ سَقَرٌ ۖ (٢٦) وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ۖ (٢٧) لَا تُبْقَىٰ وَلَا نَذْرٌ ۖ (٢٨) لَوَاحِيَةٌ لِلْبَشَرِ ۖ (٢٩) عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۖ (٣٠) وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً ۖ (٣١) لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَرَدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَّا وَلَا يُرَابِّبَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي ۖ (٣٢) مَن يَشَاءُ وَمَا يُعَلِّمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا يَهِدِي إِلَّا لِرِجَالٍ لِلْبَشَرِ ۖ (٣٣) كَلَّا وَالْقَمَرِ ۖ (٣٤) وَإِلَيْهِ إِذْ أَدْبَرَ ۖ (٣٥) وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ۖ (٣٦) إِنَّهَا لِإِحْدَى الْكُبَرِ ۖ (٣٧) نَذِيرٌ لِلْبَشَرِ ۖ (٣٨) لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۖ (٣٩) كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۖ (٤٠) إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۖ (٤١) فِي جَنَّاتٍ يَسَاءَلُونَ ۖ (٤٢) عَنِ الْمُجْرِمِينَ ۖ (٤٣) مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ۖ (٤٤) قَالُوا لَوْلَا آتَيْنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ (٤٥) وَلَوْلَا نُطْعِمُ الْمَسْكِينِ ۖ (٤٦) وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَالِضِينَ ۖ (٤٧) وَكُنَّا نَكْتُمُ بِيَوْمِ الدِّينِ ۖ (٤٨) حَتَّىٰ أَتَانَا الْيَقِينُ ۖ (٤٩)

53 कभी ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि यह कियामत (प्रलय) से बेखौफ (निर्भय) है।

54 सत्य बात तो यह है कि यह (कुरआन) एक नसीहत है।

55 अब जो चाहे इससे नसीहत प्राप्त करे।

56 और वे उस समय नसीहत प्राप्त करेंगे जब अल्लाह चाहे, वह (अल्लाह) इसी लायक (योग्य) है कि उससे डरें, और इस लायक भी कि वह क्षमा करे।

## सूरतुल कियाम - 75

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 मैं कसम (सौगन्ध) खाता हूँ 2 कियामत (प्रलय) के दिन की।

3 और कसम खाता हूँ उस मन की जो निन्दा करने वाला हो।

आप को रसूल उस समय मानेंगे जब हम में से हर व्यक्ति के पास जब हम सवेरे उठें तो अल्लाह की ओर से एक खुली हुई किताब हो जिसमें यह लिखा हो कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

1 **هُوَ** अर्थात्: जब अल्लाह उन्हें हिदायत देना चाहे। **وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ** वास्तव में वही इस लायक है कि परहेजगार उससे डरें, उसका अनुकरण करके और अवहेलना छोड़कर। **وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ** और वास्तव में वही इस लायक भी है कि मोमिनों के गुनाहों को जो उन से हुए हैं माफ करे।

2 **أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ** अधिक है, असल इस प्रकार है **أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ** मैं कियामत के दिन की कसम खाता हूँ, अल्लाह तआला ने कियामत के दिन की कसम उसकी महानता बताने के लिए खाई है, वह अपनी सृष्टि में से जिस की चाहे कसम खा सकता है, पर मख्लूक के लिए अल्लाह के सिवाय दूसरे की कसम खाना जायज़ नहीं है।

3 **بِأَنْفُسِ الْوَالِمَاتِ** से मुराद मोमिन का नपस है, जो कि उस की कमी और

3 क्या इन्सान यह विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी करेंगे ही नहीं 4

4 हाँ, अवश्य करेंगे, हमें शक्ति है कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक कर दें 5

5 बल्कि इन्सान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफ़रमानियाँ करता जाए 6

6 पूछता है कि कियामत (प्रलय) का दिन कब आएगा 7?

7 तो जिस समय आँखें पथरा जाएंगी 8

8 और चाँद बेनूर (प्रकाशहीन) हो जाएगा।

9 और सूर्य एव चाँद इकट्ठे कर दिए जाएंगे 9

10 उस दिन इन्सान कहेगा कि आज भागने का स्थान कहाँ है 10?

11 नहीं-नहीं, कोई पनाह-गाह नहीं 11

12 आज तो तेरे रब की ओर ही ठिकाना है 12

13 आज इन्सान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए से आगाह (अवगत) कराया जाएगा।

14 बल्कि इन्सान स्वयं अपने आप पर हज्जत (प्रमाण) है 13

15 अर्थात् कितने ही बहाने पेश करे 14

16 (हे नबी) आप कुआन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी जीभ को न हिलाएँ 15

कोताही पर उसे मलामत करता है, यह बुराई करने पर मलामत करता है कि तुने ऐसा क्यों किया, और नेकी करने पर भी निन्दा करता है कि और अधिक क्यों नहीं किया। मुक़ातिल कहते हैं कि इस से काफ़िर का नपस मुराद है जो आखिरत में अपने आप को मलामत करेगा, और अल्लाह के बारे में जो कमी कोताही की है उस पर अफ़सोस करेगा, या दोनों की एक साथ अल्लाह कसम खारहा है कि वह शीघ्र ही हड्डियों को इकट्ठा करेगा फिर प्रत्येक व्यक्ति को दोबारा जीवित करेगा ताकि वह उस से हिसाब ले और उसे उस का बदला दे, (हड्डियों का चर्चा ख़ास कर इसलिए किया गया है कि यही पैदाइश का असल ढांचा है)

उसके बिखर जाने के बाद दोबारा नए सिरे से उसे पैदा करेंगे ही नहीं, तो उसका भ्रष्ट गुमान है।

5 जल्द हम उन्हें ज़रूर इकट्ठा करेंगे, और हमें इस की भी शक्ति है कि उस की उंगलियों को एक दूसरे से जोड़ कर ऊँट के खुर की तरह कर दें लेकिन हम ने उन पर कसम किया है और उन्हें उंगलियाँ दीं जिनमें जोड़, नाखून, पतली रंगें, और बारीक हड्डियाँ हैं। और इस बारे में एक विचार यह है कि यह अल्लाह तआला की ओर से सावधानी है कि उसने प्रत्येक व्यक्ति के पोरे तक अलग बनाए हैं, जो उसकी महान शक्ति की दलील है, यदि वह चाहता तो सब की उंगलियों को पोरो को एक जैसा कर देता।

6 अर्थात् वह चाहता है कि आने वाले समय से पहले पहले बुराइयाँ कर गुज़रे, तो वह गुनाहों को करते जाता और तौबा को टालते जाता, वह जिन्दगी भर गुनाह करते जाता और मौत को याद नहीं करता।

7 अर्थात् कियामत को दूर समझकर उसका मज़ाक उड़ाते हुए प्रश्न करता है।

8 अर्थात् मौत अथवा दोबारा उठाए जाने की घबराहट, दहशत और डर से आँखें पथरा जाएंगी।

9 अर्थात् सूर्य भी चाँद की तरह प्रकाशहीन होजाएगा, दोनों की रौशनी एक साथ ख़तम हो जाएगी, इस तरह रात और दिन के आने जाने का चक्र ख़तम हो जाएगा।

10 अर्थात् अल्लाह से और उसके हिसाब और अज़ाब से भागने के लिए कोई स्थान न होगा।

11 अर्थात् कोई पहाड़, या किला या शरण-स्थल ऐसी न होगी जो तुम्हें अल्लाह से बचा सके।

12 अर्थात् के अर्थ शरण-स्थल और पनाह-गाह के हैं, मुराद मैदाने महशर है जहाँ अल्लाह बन्दों के बीच न्याय करेगा, और यह सम्भव न होगा कि कोई उस की अदालत से बच कर निकल जाए।

13 अर्थात् उसे वास्तविका का पता चल जाएगा कि वह ईमान पर है या कुफ़र पर, फ़र्माबंदारी पर या नाफ़रमानी पर, सिधाय पर या टेढ़ाई पर। और कहा गया है कि उस के हाथ पर और अंग स्वयं उसी के विरोध में गवाही देंगे।

14 अर्थात् चाहे वह जितने ही बहाने बनाए और अपना दिफ़ाऊ करे, लेकिन यह सारी चीज़ें उस के कुछ काम न आएंगी, और स्वयं उसके अंग उस के बहानों को झुटला देंगे।

15 अल्लाह के रसूल पर जब कुरआन नाज़िल होता था तो आप जिब्रैल

- 17 उसको जमा करना<sup>1</sup> और (आप के मुख से) पढ़ाना हमारे जिम्मे है<sup>2</sup>।  
 18 हम जब उसे पढ़ लें, तो आप उसके पढ़ने की पैरवी करें<sup>3</sup>।  
 19 फिर उसे बयान (स्पष्ट) कर देना हमारे जिम्मे है<sup>4</sup>।  
 20 नहीं-नहीं, तुम तो जल्दी मिलने वाले (संसार) से प्रेम रखते हो।  
 21 और आखिरत (प्रलोक) को छोड़ बैठे हो।  
 22 उस दिन बहुत से चेहरे हरे-भरे और प्रकाशित होंगे<sup>5</sup>।  
 23 अपने रब की ओर देखते होंगे<sup>6</sup>।  
 24 और कितने चेहरे उस दिन (बद-रौनक और) उदास होंगे<sup>7</sup>।  
 25 समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला व्यवहार किया जाएगा।  
 26 नहीं-नहीं, जब (रूह अर्थात् प्राण) हंसुली तक पहुँचेगी<sup>10</sup>।  
 27 और कहा जाएगा कि कोई झाड़-फूंक करने वाला है<sup>11</sup>?  
 28 और उसने विश्वास कर लिया कि यह जुदाई का समय है<sup>12</sup>।  
 29 और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी<sup>13</sup>।  
 30 आज तेरे रब की ओर चलना है<sup>14</sup>।  
 31 तो उस ने न तो पुष्टि की न नमाज़ पढ़ी<sup>15</sup>।  
 32 बल्कि झुठलाया और पलट गया<sup>16</sup>।

के पढ़कर फारिग होने से पहले उसे याद करने के लिए अपने दोनों होंट और अपनी जीभ को हिलाते थे, तो यह आयत उतरी, कि जब वह्य आप पर उतर रही हो तो इस डर से कि कहीं आप उसे भूल न जाएं उसे जल्दी याद करने के लिए अपनी जीभ को न हिलाएँ।

- 1 आप के सीने में कि उस में से कुछ भी आप से छूटने न पाए।  
 2 अर्थात् सही रूप में आप की जीभ पर उस की किराअत को साबित करना।  
 3 अर्थात् जिब्रईल द्वारा जब हम उसे पढ़कर फारिग हो जाएं तो उसके पश्चात् आप उसे पढ़ें, और जब तक हम उसे पढ़ें आप चुप होकर ध्यान देकर सुनते रहें।  
 4 रसूल द्वारा इसमें जो हलाल और हराम है उसे बयान कराना हमारा काम है, इस के बाद जिब्रईल जब भी आप के पास वह्य लेकर आते तो अल्लाह तआला की हिदायत अनुसार आप चुप होकर उसे सुनते, फिर जब चले जाते तो उसे पढ़ते।  
 5 यह ईमान वालों के चेहरे होंगे, जो अपने अच्छे अन्जाम के कारण खुश और प्रकाशित होंगे।  
 6 अपने रब को देख रहे होंगे और उसकी दीवार से लुफ उठा रहे होंगे, सहीह हदीसों द्वारा तवातुर के साथ यह प्रमाणित है कि नेक लोग कियामत के दिन अपने रब को ऐसे देखेंगे जैसे बिना परेशानी के चौदहवीं का चाँद देखते हैं।  
 7 यह काफिरों के चेहरे होंगे जो पीले पड़े होंगे और गम से काले होंगे।  
 8 **كَاوَرٌ** का अर्थ भयंकर आफत है, गویा कि उस ने उन की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी।  
 9 अर्थात् उनका कियामत पर ईमान लाना संभव ही नहीं है।  
 10 **تُرْوَى** की जमा है, गर्दन के कुरीब सीने और कंधे के बीच एक हड्डी है, और रूह की हंसली तक पहुँचने से किनाया मौत का कुरीब होना है।  
 11 अर्थात् उस के घर वालों में से जो उस के पास होंगे, कहेंगे : कोई है झाड़ फूंक करने वाला जो उसे स्वस्थ कर सके? जाओ हकीमों और डाक्टरों को ले आओ, लेकिन अल्लाह की आज्ञा के सामने कोई भी चीज उस के काम न आएगी।  
 12 और जिस की रूह हंसली तक पहुँच गई है उसे विश्वास हो जाएगा कि अब बीबी बच्चे और धन दौलत से जुदाई का समय आचुका है।  
 13 अर्थात् मौत के समय उस की एक पिंडली दूसरी पिंडली से मिल जाएगी, और उस के दोनों पैरों में भी जान बाक़ी नहीं रहेगी, उस की दोनों पिंडलियाँ भी सुख जाएंगी और उसे उठा नहीं जाएगी, जबकि पहले वह इन्ही दोनों पर खड़े होकर खूब दहलता घूमता था, और लोग उसके जिस्म की और फरिश्ते उस की रूह लेजाने की तैयारी में लग जाएंगे।  
 14 रूहों को शरीरों से निकालने के बाद उन्हें उनके रब की ओर ले जाया जाएगा।  
 15 अर्थात् इस ने न तो रिसालत की तस्दीक की और न ही कुरआन की तस्दीक की, और न ही अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ी, तो न वह दिल से ईमान लाया और न ही अपने अंगों द्वारा अमल ही किया।  
 16 अर्थात् रसूलों और उन की लाई हुई शरीअत को झुठलाया और ईमान

فَمَا نَفَعُهُمْ شَفَعَةُ الشَّافِعِينَ ﴿١٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿١٩﴾ كَانَهُمْ حُمْرٌ مُّسْتَفِرَّةٌ ﴿٢٠﴾ فَزَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٢١﴾ بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَى صُحُفًا مُّنثَرَةً ﴿٢٢﴾ كَلَّا بَلْ لَا يُخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢٣﴾ كَلَّا إِنَّهُ تَذَكَّرٌ ﴿٢٤﴾ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ﴿٢٥﴾ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ هُوَ أَهْلُ النُّحْيِ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٢٦﴾

سُوْرَةُ الْقِيَامَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أَقْسِمُ بِبَوَاقِيْمَةِ ﴿١﴾ وَلَا أَقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ أَحْسَبُ الْإِنْسَانَ أَنْ لَنْ يَجْمَعَ عِظَامَهُ ﴿٣﴾ بَلْ قَدِرِينَ عَلَيَّ أَنْ سُؤْيَ بِنَانَهُ ﴿٤﴾ بَلْ يَرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرْ أَمَامَهُ ﴿٥﴾ يَسْتَلْ أَيَّانَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ﴿٦﴾ فَإِذَا رَأَى الْبَصُرَ ﴿٧﴾ وَحَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾ وَجَمَعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْرُجُ ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ﴿١١﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَفَرُّ ﴿١٢﴾ يَبْتَوَىٰ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ مِمَّا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾ وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِرَهُ ﴿١٥﴾ لَأَخْرَجْكَ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٦﴾ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْءَانَهُ ﴿١٧﴾ فَإِذَا قَرَأْتَ فَانْفِعْ قُرْءَانَهُ ﴿١٨﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيِّنَاتِهِ ﴿١٩﴾

- 33 फिर अपने घर वालों की ओर इतराता हुआ गया<sup>17</sup>।  
 34 अफसोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।  
 35 फिर दुख है औ खराबी है तेरे लिए<sup>18</sup>।  
 36 क्या इन्सान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा<sup>19</sup>।  
 37 क्या वह एक गाढ़े पानी (मनी) की बूँद न था, जो टपकाया गया था<sup>20</sup>?  
 38 फिर वह खून का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया और ठीक रूप से बना दिया।  
 39 फिर उससे जोड़े अर्थात् नर-मादा बनाए।  
 40 क्या अल्लाह तआला इस बात की शक्ति नहीं रखता कि मुद को जिन्दा कर दे<sup>21</sup>?

लाने से मुंह मोड़ा।

17 इतराता और अकड़ता हुआ।

18 अर्थात् तेरी बर्बादी हो, असल में है : **اولئك الله ما تکرهه** : अल्लाह तुझे ऐसी चीज से दोचार करे जिसे तू नापसंद करता है। या तुझे हमेशा बर्बादी का सामना रहे।

19 अर्थात् उसे यूँही छोड़ दिया जाएगा जो मन में आए करे, न उसे किसी चीज का आवेश दिया जाए और न किसी चीज से रोका जाए, न ही उसे हिंसा देना पड़े और न ही उसे अच्छा या बुरा कोई बदला मिले।

20 अर्थात् वह मनी की बूँद न था जो रहम में टपकाया गया था?।

21 अर्थात् जिस अल्लाह ने उसे अनेक मर्हलों से गुज़ार कर ऐसी ऐसी निराली और अछोती पैदाइश की और उस पर उस की शक्ति रही, क्या उस में इस की शरीर को दोबारा लौटाने पर शक्ति न होगी? जबकि दोबारा लौटाना पहले की निस्वत में आसान है।

كَلَّا لَئِنْ مَحَبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿١٠﴾ وَنَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿١١﴾ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاصِرَةٌ ﴿١٢﴾  
 إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿١٣﴾ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿١٤﴾ تَطَّوَّنَ أَنْ يَفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿١٥﴾  
 كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ الرَّاقِيَ ﴿١٦﴾ وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ﴿١٧﴾ وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿١٨﴾ وَالنَّفْسُ  
 السَّاقِطَةُ بِالْسَّاقِ ﴿١٩﴾ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقِيُّ ﴿٢٠﴾ فَلَا صَدَقَ وَلَا وَاصِلٌ  
 ﴿٢١﴾ وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَمْتَطِعٌ ﴿٢٣﴾ أُولَٰئِكَ  
 فَأُولَىٰ ﴿٢٤﴾ ثُمَّ أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ﴿٢٥﴾ يَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ﴿٢٦﴾  
 أَلَمْ يَكُنْ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿٢٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٢٨﴾ فَعَجَلَ مِنْهُ  
 الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٢٩﴾ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن مَّحْيَىٰ الْمَوْتَىٰ ﴿٣٠﴾

### سُورَةُ الْاِنْسَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ﴿١﴾  
 إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا  
 بَصِيرًا ﴿٢﴾ إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ﴿٣﴾  
 إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ﴿٤﴾ إِنَّ  
 الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٥﴾

## सुरतुल-इन्सान - 76

शुरू करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- अवश्य ही इन्सान पर युग का एक वह समय भी गुजर चुका है <sup>1</sup> जबकि यह कोई कबिले जिक्र वस्तु न था <sup>2</sup>।
- बेशक हमने इन्सान को मिले जुले नुस्फे (वीर्य) से <sup>3</sup> परीक्षा के लिए <sup>4</sup> पैदा किया। और उसको सुनने वाला देखने वाला बनाया।
- हमने उसे मार्ग दिखाया <sup>6</sup>, अब चाहे वह शुक्र-गुजार

- यहां **الْإِنْسَانِ** से मुराद अबुल बशर आदम है, **حِينٌ** (एक समय) से मुराद एक कौल अनुसार रूह फूँके जाने से चालीस साल पहले का समय है। वह मिट्टी और पानी की मिलावट से, फिर सने हुए गारे से, फिर खनकती हुई मिट्टी से पैदा किए गए।
- अर्थात् रूह फूँके जाने से पहले, और एक कौल अनुसार इस का अर्थ यह है कि ऐसे युग भी बीत चुके हैं कि आदम कुछ नहीं थे, अभी वह अदम से वजूद में नहीं आए थे, और न सृष्टि के लिए चर्चा के कबिले थे।
- अर्थात् मर्द और औरत के नुस्फे से जो बच्चादाना में जाकर मिल जाते हैं, और एक कौल के अनुसार **أَمْشَاجٍ** का अर्थ मिली हुई चीजें हैं क्योंकि वीर्य अनेकों वस्तुओं से मिला होता फिर उसी से इन्सान को पैदा किया जाता है, और उन्हें से विभिन्न स्वभावों जनम लेती हैं।
- हम ने उसे परीक्षा के लिए पैदा किया, और हम उस की नेकी और बुराई तथा दूसरी जिम्मेदारियों द्वारा परीक्षा ले रहे हैं।
- अर्थात् हम ने उस के भीतर एहसास जगाया ताकि वह महसूस करे और उस की परीक्षा संभव हो सके।
- अर्थात् हम ने उसे हिदायत और गुमाही, पुण्य तथा पाप के रास्ते, और उसके लाम तथा हानि भी बता दिए, जिन की ओर वह अपनी फिजत

बने या ना-शुक्रा।

- बेशक हमने काफिरों के लिए जंजीरें, और तौक और भड़काने वाली आग तैयार कर रखी है।
- बेशक नेक लोग उसे प्याले से पिएंगे जिसमें काफूर की मिलावट है।
- जो एक स्रोत है <sup>9</sup>। जिससे अल्लाह के बंदे पिएंगे, उसकी नहरें निकाल ले जाएंगे <sup>10</sup> (जिधर चाहें)।
- जो मन्नत पूरी करते हैं <sup>11</sup> और उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों ओर फैल जाने वाली है <sup>12</sup>।
- और ज़रूरत के बावजूद खाना खिलाते हैं, गरीब, अनाथ और कैदियों <sup>13</sup> को।
- हम तो तुम्हें मात्र अल्लाह की खुशी के लिए खिलाते हैं <sup>14</sup>, न तुमसे बदला चाहते हैं न शुक्र-गुजारी।
- निःसंदेह हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो उदासी <sup>15</sup> और कठोरता <sup>16</sup> वाला होगा।
- तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन की बुराई से बचा लिया <sup>17</sup> और उन्हें ताजगी और खुशी पहुँचायी <sup>18</sup>।
- और उन्हें उनके सब (धैर्य) के बदले जन्नत और रेशमी कपड़े अता किए।
- यह वहाँ आसनों पर तकिए लगाए हुए बैठेंगे <sup>19</sup>, न वहाँ सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता <sup>20</sup>।

तथा बुद्धिमानी द्वारा मार्ग पा सकता है, अब वह चाहे शुक्र गुजार बने या नाशुक्रा।

- अर्थात् हम ने इन चीजों को इन्हीं के लिए तैयार किया ताकि इनके द्वारा हम इन्हें यातना में रखें, **وَأَغْلَالًا** की जमझू है, इसका अर्थ है बेड़ी जिस से हथ को गर्दन से बांधा जाता है, और **وَسَعِيرًا** का अर्थ है भड़कती हुई आग।
- इस शराब में काफूर मिली होगी, ताकि उस की खुशबू और मज़ा दोनों अच्छे और खुशगवार हो जाएं।
- जिस से वे शराब पिएंगे, इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उस शराब में उस स्रोत के पानी की मिलावट होगी।
- अर्थात् उसे जिस ओर चाहेंगे बहा ले जाएंगे।
- अर्थात् यह बदला उन्हें इस कारण मिलेगा क्योंकि वह मात्र अल्लाह के लिए मन्नत मानते थे, फिर उसे पूरा करते थे, मन्नत : नमाज़, रोज़ा तथा कुर्बानी इत्यादि में से उस अमल को कहते हैं जिसे बन्दा ने स्वयं अपने ऊपर वाजिब कर लिया हो, अल्लाह ने वाजिब न किया हो।
- अर्थात् कियामत के दिन से। जिस की बुराई इस तरह चारों ओर फैल जाने वाली होगी। आकाश और धरती भी उस की चपेट में आ जाएंगे, आकाश फट जाएगा, तारे टूट कर गिरने लगेंगे, और धरती कूट कर बराबर कर दी जाएगी, और पहाड़ कण कण होकर बिखर जाएंगे।
- अर्थात् इन तीनों तरह के लोगों को खाना खिलाते थे, बावजूद इस के कि उनके पास खाना कम मात्रा में होता, और स्वयं उन्हें उसकी चाहत होती थी, और एक कौल के अनुसार **حُيُوعٍ** की ज़मीर अल्लाह की ओर लौटती है, अर्थात् वह अल्लाह तआला की महबूबत में खाना खिलाते थे।
- अर्थात् वह बदले की भावना नहीं रखते, और न वह उस पर लोगों से अपनी प्रशंसा चाहते हैं, चूँकि अल्लाह उन के दिलों का भेद जानता है इसी लिए उसने इस पर उनकी प्रशंसा की है।
- अर्थात् जिसकी हौलनाकी और सख्ती से लोगों के चेहरे बिगड़ जाएंगे।
- जिस में आँखें सिकुड़ जाएंगी, और पलकों पर बल पड़ जाएंगे, और एक कौल के अनुसार कठोरता और सख्ती के कारण यह सब से कठोर और लम्बा दिन होगा।
- क्योंकि वह इस दिन की बुराई से डर कर नेकी और फर्माबंदारी के काम करते थे।
- अर्थात् काफिरों के चेहरे पर उदा विन उदारी छाई होगी, उदा के विपरीत ईमान वालों के चेहरों पर ताजगी होगी, और दिल खुशी से भरा होगा, चेहरों की यह खुशी नेमतों के प्रभाव के कारण होगी।
- और उन्हें उनके नेक कर्मों के बदले ऐसी जन्नत मिलेगी जिन में वह ताज वाले आसनों पर टेक लगाए बैठे होंगे।
- अर्थात् जन्नत में न तेज़ गर्मी होगी न कड़कने की सरदी, (वहाँ सदा बहार का ही मौसम रहेगा)

14 और उन पेड़ों के साए उन पर झुके होंगे और उनके (मेवों) और गुच्छे नीचे लटकाए हुए होंगे ।

15 और उन पर चाँदी के बर्तनों और उन गिलासों का दौर चलाया जाएगा 2 जो शीशे के होंगे ।

16 शीशे भी चाँदी के 3 जिनको (पिलाने वालों ने) अनुमान से नाप रखा होगा 4 ।

17 और उन्हें वहाँ वे जाम पिलाए जाएंगे जिनमें सौंठ की मिलावट होगी 5 ।

18 जन्नत की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है 6 ।

19 और उनके चारों ओर वे कम उम्र बच्चे धूमते-फिरते होंगे जो हमेशा रहने वाले हैं 7, जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वह बिखरे हुए (सच्चे) मोती हैं 8 ।

20 और तू वहाँ 9 जिस ओर भी निगाह डालेगा पूर्ण उपहार उपहार (नेमते) 10 और महान राज्य 11 ही देखेगा ।

21 उन के (शरीर) पर हरे महीन और मोटे रेशमी 12 कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंगन का जेवर पहनाया जाएगा और उन्हें उनका रब पवित्र शराब पिलाएगा 13 ।

22 (कहा जाएगा) कि यह है तुम्हारे कर्मों का बदला और तुम्हारी कोशिश की कदर की गई 14 ।

23 बेशक हमने तुझ पर (ब-तद्रीज) क्रमशः कुरआन अवतरित किया है 15 ।

24 तो तू अपने प्रभु के आदेश पर अटल रह और उनमें

1 उनके मेवों पर उन्हें पूरी शक्ति प्राप्त होगी, वह खड़े बैठे, लेते जिस तरह चाहेंगे उसे तोड़ सकेंगे, ऐसा न होगा कि दूरी या कटे के कारण उनके हाथ न पहुँच सकें और वापस फिर आएँ ।

2 चाँदी के बर्तनों और गिलासों को लिए नौकर फिरेंगे, जब वे पीना चाहेंगे तो उन से लेकर पी लेंगे ।

3 चाँदी का अर्थ शीशे के हैं, शीशे दुनिया में रेत के होते हैं, अल्लाह तआला ने उन शीशों की यह खूबी बताई कि वे चाँदी के होंगे जिन में अन्दर की चीज़ बाहर से दिखेगी ।

4 अर्थात् उन बर्तनों में उनकी चाहत और इच्छा का खास खयाल होगा, वह उतने अच्छे रूप के होंगे जितना वे चाहेंगे, न थोड़ा न अधिक, और एक कौल के अनुसार उन में शराब ऐसे अनुमान से भरी गई होगी कि जिस से वे सैराब हो जाएँ, अधिक की चाहत बाकी न रह जाए, और बर्तनों में भी बाकी न बचे ।

5 काना बर्तन जिस में शराब होगी। अर्थात् उस शराब में मिलावट सौंठ की होगी ।

6 का अर्थ तेजी से बहता हुआ साफ़ पानी है, जो कि गले के लिए बहुत ही अच्छा हो ।

7 अर्थात् उनका बचपन और उनकी रौनक हमेशा बर्क़रार रहेगी, वह न बूढ़े होंगे न उनकी सुन्दरता बदलेगी और न उन्हें मौत आएगी ।

8 अपनी सुन्दरता, रंगों में निखार और चेहरे की रौनक के कारण वह बिखरे हुए मोतियों के समान लगेंगे। बिखरे हुए मोतियों से उनकी तश्बीह इसलिए दी है कि वह तेजी से सेवा में लगे रहेंगे ।

9 अर्थात् जहाँ भी तुम जन्नत में नज़र उठाकर देखोगे ।

10 जिन की खूबिया बयान नहीं की जा सकती ।

11 जिन की महानता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता ।

12 अर्थात् पतला रेशम। अर्थात् मोटा रेशम

13 और सूरतुल फ़ातिर में है : "وَمِنْ دَرَجَاتٍ مِّنْ ذَٰلِكَ فَتَنَّا سَبْعًا مِّنْ دَرَجَاتٍ" "उस में उन्हें सोने का कंगन पहनाया जाएगा"। अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार जो चाहेगा पहनेगा ।

14 अबू क़िलाबा और इब्राहिम नखई कहते हैं कि उन्हें खाना दिया जाएगा, और जब वह उसे खा चुकेंगे तो पाकीज़ा शराब दी जाएगी, जिसे वे पिपेंगे जो उन के पेट की सारी गंदगियों को निकाल कर उन्हें पचका देगी, और उनकी शरीर से ऐसा पसीना बहाएगी जिस से कस्तूरी की खुशबू फूटेगी ।

15 अर्थात् अल्लाह अपने सेवक के कर्म की कदर करेगा, उसकी इत्ताअत को स्वीकार करेगा, और उस पर उसकी प्रशंसा करेगा ।

16 अर्थात् उसे एक ही बार उतारने के बजाए ज़रूरत के अनुसार थोड़ा थोड़ा करके विभिन्न समय में उतारा है, और यह तेरा अपना ग़ड़ा हुआ नहीं है जैसा कि मुश्रिकीन दावा करते हैं ।

عَيْنَا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ﴿٦﴾ يُوفُونَ بِالْأَنْدَرِ وَيَخَافُونَ

يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ﴿٧﴾ وَيَطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حَيْثُ مَسَكِنَتَا

وَتَيْمَامًا وَأَسِيرًا ﴿٨﴾ إِنَّمَا نَطْعَمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكْرًا

﴿٩﴾ إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَطَطِيرًا ﴿١٠﴾ فَوْقَهُمْ اللَّهُ سُرَّ ذَالِكِ

الْيَوْمِ وَلَفَتْهُمْ نُفْرَةٌ وَسُرُورًا ﴿١١﴾ وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا

﴿١٢﴾ مُتَّكِنِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرْبَابِ لَا يَرُونَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ﴿١٣﴾

وَدَائِبُهُمْ عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذَلَّلَتْ فَطْرُهَا نَذِيلًا ﴿١٤﴾ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِبَنَاتٍ

مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ فَوَارِيرًا ﴿١٥﴾ فَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا نَقِيرًا ﴿١٦﴾

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ﴿١٧﴾ عَيْنَايَا تَسْمَىٰ سَلْسِيلًا

﴿١٨﴾ وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنشُورًا

﴿١٩﴾ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمَلَكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ

خُضْرًا وَإِسْتَبْرَقٍ وَحُلُومًا أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَمَهُمْ رُبُّهُمْ شَرَابًا

طَهُورًا ﴿٢١﴾ إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعِيرًا مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾ إِنَّا

نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَطِعْ

مَنْهُمْ ءَايْمًا أَوْ كِفُورًا ﴿٢٤﴾ وَأَذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٢٥﴾

से किसी पापी या ना-शुक्रे (कृतघ्न) का कहना न मान 17 ।

25 और अपने रब के नाम का सवेरे-शाम ज़िक्र (वर्णन) किया कर 18 ।

26 और रात के समय उसके समक्ष सज्दे कर और बहुत रात तक उसकी तस्बीह (महिमागान) किया कर ।

27 अवश्य यह लोग जल्द मिलने वाली 19 को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन 20 को छोड़ देते हैं ।

28 हमने उन्हें पैदा किया और हमने ही उनके जोड़ (एवं बंधन) मज्बूत किए 21 और हम जब चाहें उनके बदले उन जैसे दूसरों को बदल लाएँ 22 ।

29 अवश्य यह तो एक नसीहत है, तो जो चाहे अपने रब का रास्ता अपनाते ।

30 और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह तआला ही चाहे 23 ।

17 उनमें से किसी पापी या कुफ़्र में सीमा पार कर जाने वाले की बात न सुन ।

18 और अपने रब के लिए सवेरे-सांझ नमाज़ पढ़ा कर, सवेरे से मुराद फज़्र की नमाज़ और सांझ से अन्न की नमाज़ है। (और एक कौल के अनुसार सवेरे-सांझ से मुराद सारे समय में अल्लाह का ज़िक्र है) ।

19 जल्दी मिलने वाली अर्थात् दुनिया ।

20 भारी दिन अर्थात् क़ियामत का दिन, इसे भारी दिन इस की सख्ती और भयानकपन के कारण कहा गया है, और इसे पीछे छोड़ने का अर्थ है कि उस के लिए तैयारी नहीं करते, और उस की परवाह नहीं करते ।

21 अर्थात् हम ने उनकी जोड़ों को रंगों और पड़ों द्वारा जोड़ कर मज्बूत किया ।

22 अर्थात् यदि हम चाहें तो उन्हें नष्ट करके उनके बदले ऐसी कौम ले आएँ जो उन से अधिक मेरी फ़र्मावर्दार हो ।

23 अर्थात् तुम अपने रब का रास्ता अपनाते की चाहत नहीं कर सकते

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَلَهُمْ تَبْدِيلًا ﴿٢٨﴾ إِنَّ هَذِهِ تَذْكَرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٣٠﴾ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣١﴾

### سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَأَلْغَصَفَتْ عَصْفًا ﴿٢﴾ وَالنَّشْرِ رِبِّ دُشْرًا ﴿٣﴾ فَأَلْغَرَفَتْ فَرْفًا ﴿٤﴾ فَأَلْمَلَيْتِ دُكْرًا ﴿٥﴾ عُدْرًا أَوْ نُدْرًا ﴿٦﴾ إِنَّمَا نُوعِدُونَ لَوْعٍ ﴿٧﴾ فَإِذَا النُّجُومُ طُوسَتْ ﴿٨﴾ وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾ وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ﴿١٠﴾ وَإِذَا الرَّسُلُ أَقْنَتْ ﴿١١﴾ لِأَيِّ يَوْمٍ أُخِّلَتْ ﴿١٢﴾ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾ وَبَلِّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾ أَلَمْ تَهْلِكِ الْأُولَىٰ ﴿١٦﴾ ثُمَّ تَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ﴿١٧﴾ كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿١٨﴾ وَبَلِّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٩﴾

अवश्य अल्लाह तआला जानने वाला और हिकमत वाला है।

31) जिसे चाहे अपनी रहमत (कृपा) में सम्मिलित कर ले, और ज़ालिमों के लिए उसने दर्द-नाक अज़ाब (कष्टदायी यातना) तैयार कर रखा है।

## सूरतुल मुसलात - 77

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1) कसम है उन फ़रिश्तों की जो व्ह्य लेकर भेजे जाते हैं।  
2) फिर उन फ़रिश्तों की कसम जो हवाओं को जोर से हांकेते हैं।  
3) और उन फ़रिश्तों की कसम जो फ़िज़ा में अपने परों को फैलाते हैं।  
4) फिर उन फ़रिश्तों की जो सत्य-असत्य को अलग-अलग कर देने वाले हैं।

5) और उन फ़रिश्तों की जो व्ह्य (प्रकाशना) लाने वाले हैं।  
6) जो (व्ह्य) इल्ज़ाम उतारने या आगाह कर देने के लिए हाती है।

जब तक कि अल्लाह की चाहत न हो, तो इस पर अल्लाह का अधिकार है तुम्हारा नहीं, भलाई और बुराई सब उसी के हाथ में है, तो जब तक अल्लाह न चाहे बन्दे की चाहत से न तो कोई भलाई प्राप्त हो सकती है, और न ही किसी बुराई को टाला जा सकता है।

1) और उन फ़रिश्तों की कसम, इन आयतों में अल्लाह तआला ने उन फ़रिश्तों की कसम खाई है जिन्हें वह व्ह्य लेकर अपने नबियों के पास भेजता है, और वह बड़ी तेज़ी से अपने पर फैलाए उन चीज़ों को लेकर आते हैं, जो सत्य तथा असत्य, और हलाल तथा हुराम के बीच फ़र्क करती हैं, यहाँ तक कि वह व्ह्य नबियों तक पहुँचा दी जाती हैं।

2) अर्थात् फ़रिश्ते व्ह्य लेकर आते हैं ताकि अल्लाह की ओर से हुज़्जत कायम

7) जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है वह निश्चित रूप से होने वाली है।

8) तो जब तारे बे-नूर (प्रकाशहीन) कर दिए जाएंगे।

9) और जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जाएगा।

10) और जब पर्वत टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा दिए जाएंगे।

11) और जब रसूलों को मुकर्रर (निर्धारित) समय पर लाया जाएगा।

12) किस दिन के लिए (उन्हें) टाला गया है?

13) निर्णय के दिन के लिए।

14) और तुझे क्या पता कि निर्णय का दिन क्या है?

15) उस दिन झुठलाने वालों के लिए खराबी है।

16) क्या हमने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया?

17) फिर हम उनके पश्चात पिछलों को लाए।

18) हम पापियों के साथ इसी प्रकार करते हैं।

19) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी है।

20) क्या हमने तुम्हें तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया।

21) फिर हमने उसे मजबूत स्थान में रखा।

22) एक मुकर्रर (निर्धारित) समय तक।

23) फिर हमने अनुमान लगाया तो हम क्या अच्छा अनुमान लगाते हैं।

24) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बर्बादी (विनाश) है।

25) क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया?

26) जिन्दों को भी और मुर्दों को भी।

27) और हमने उसमें उच्च (और भारी) पर्वत बना दिए और तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया।

28) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।

29) उस नरक की ओर जाओ जिसे तुम झुठला रहे थे।

हो जाए, और यह बहाना बाकी न रह जाए कि हमारे पास तो कोई अल्लाह का सदेश लेकर आया ही नहीं, उद्देश्य अल्लाह के अज़ाब से उन लोगों को डराना है जो कुफ़्र करने वाले होंगे, और एक कौल यह है कि इक-परस्तों के लिए शुभ संवाद है और बातिल-परस्तों के लिए डराव।

3) अर्थात् उस की रौशनी खतम कर दी जाएगी।

4) अर्थात् खोल और फाड़ दिए जाएंगे।

5) अर्थात् अपनी जगह से उखड़े दिए जाएंगे, और टुकड़े-टुकड़े करके फ़ज़ा में बिखेर दिए जाएंगे और धरती पर उन की जगह बराबर कर दी जाएगी।

6) अर्थात् उनके और उनकी उम्मतों के बीच निर्णय के लिए एक समय निर्धारित होगा।

7) अर्थात् ऐसे भयंकर दिन के लिए जिस की हैलनाकी के कारण लोग अचभे में हों, इस समय रसूल इक़डे होंगे अपनी उम्मत के विरुद्ध गवाही देने के लिए।

8) जिस दिन लोगों के बीच निर्णय किया जाएगा, और उनके कर्म के आधार पर अलग-अलग जन्नत तथा जहन्नम मिलेगी।

9) और तुम्हें किसने बताया के निर्णय का दिन क्या है? अर्थात् वह बहुत ही भयंकर है जिस का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

10) अर्थात् उन काफ़िर उम्मतों को जो आदम अलैहिस्सलाम से लेकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक गुज़री हैं, हमने उन्हें संसार में अज़ाब द्वारा नष्ट कर दिया जब उन्होंने अपने रसूलों को झुठलाया।

11) अर्थात् मक्का के काफ़िर और उनकी मुवाफ़क़त करने वालों को, जिन्होंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाया।

12) अर्थात् कमज़ोर और हकीर मनी से।

13) मजबूत और सुरक्षित स्थान अर्थात् बच्चादानों में।

14) अर्थात् गर्भ के समय तक जो कि ६ महीना है।

15) अर्थात् हमने उस के अंगों तथा खुबियों का ठीक ठीक अनुमान लगाया, और उस की सारी चीज़ों को उसी तरह बनाया जैसा हमने चाहा, तो अल्लाह कितना अच्छा अनुमान लगाते वाला है।

16) अर्थात् तुम सभी को समेट कर सुरक्षित रखने वाली है, जीवितों को अपनी पीठ पर और मृतकों को अपने अन्दर।

17) مُرَات: मीठा, यह सारी चीज़ें दोबारा जीवित किए जाने से भी अधिक अचभे में डालने वाली हैं।

18) उन से कहा जाएगा कि जिस अज़ाब को तुम झुठलाते थे उसे चल कर चखो।

- 30 चलो तीन शाखाओं वाले साए की ओर <sup>1</sup>।  
 31 जो वास्तव में न छाया देने वाला है और न ज्वाले से बचा सकता है <sup>2</sup>।  
 32 अवश्य (नरक) चिंगारियाँ फेंकता है जो महल की तरह हैं <sup>3</sup>।  
 33 जैसे कि वे पीले ऊँट हैं <sup>4</sup>।  
 34 उस दिन झुटलाने वालों की दुर्गति है।  
 35 आज (का दिन) वह दिन है कि यह बोल भी न सकेंगे।  
 36 न उन्हें बहाना करने की अनुमति दी जाएगी।  
 37 उस दिन झुटलाने वालों के लिए खराबी है।  
 38 यह है निर्णय का दिन, हमने तुम्हें और पहले के लोगों को (सब को) इकट्ठा कर लिया है <sup>5</sup>।  
 39 तो यदि तुम मुझसे कोई चाल चल सकते हो तो चल लो <sup>6</sup>।  
 40 दुःख है उस दिन झुटलाने वालों के लिए।  
 41 अवश्य परहेजगार (सदाचारी) लोग साए में हैं और बहते चश्मों (स्रोतों) में।  
 42 और उन फलों में जिनकी वे इच्छा करें।  
 43 (हे जन्मवालो!) खाओ-पिओ आनन्द से अपने किए हुए कर्मों के बदले।  
 44 अवश्य हम नेकी करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।  
 45 उस दिन झुटलाने वालों के लिए दुख (खेद) है।  
 46 (हे झुटलाने वालो!) तुम (संसार में) थोड़ा सा खा-पी लो और लाभ उठा लो, निःसंदेह तुम पापी हो।  
 47 उस दिन झुटलाने वालों के लिए विनाश है।  
 48 उनसे जब कहा जाता है कि रुकूअ कर लो तो रुकूअ नहीं करते <sup>8</sup>।  
 49 उस दिन झुटलाने वालों का विनाश है।  
 50 अब इस (कुरआन) के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे <sup>9</sup>?

## सूरतून-नबा - 78

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 यह लोग किस चीज की पूछताछ कर रहे हैं <sup>10</sup>।  
 2 उस बड़ी सूचना की? <sup>11</sup>

- 1 नरक के धुएं की छाया की ओर चलो, जो ऊँचा होकर तीन शाखाओं में फैला होगा।  
 2 अर्थात् यह छाया दुनिया के छाया जैसा ठंडी नहीं होगी, और न ही यह छाया नरक की गर्मी से बचा सकेगी। हिसाब व किताब से फारिग होन तक तुम्हें इसी छाया में रहना होगा।  
 3 अर्थात् नरक से उड़ने वाली चिंगारियाँ इतनी बड़ी बड़ी होंगी जैसे महल होते हैं।  
 4 डील डोल में इतने बड़े होंगे जैसे पीले ऊँट, पीला का अर्थ यहाँ पर काला है, अरबवासी काले ऊँट को पीला कहते हैं, और एक कौल के अनुसार चिंगारी जब उड़ेगी और गिरेगी तो उस नरक के रंग का जो प्रभाव होगा वह काले ऊँट जैसा होगा।  
 5 अर्थात् उन से कहा जाएगा कि निर्णय का दिन है, जिसमें लोगों के बीच निर्णय हो जाएंगे, और सत्य तथा असत्य के बीच अन्तर स्पष्ट किया जाएगा, हमने तुम्हें हे कुरैश के काफ़िरो, पिछली उम्मतों के काफ़िरो के साथ इकट्ठा कर लिया है।  
 6 अल्लाह तआला कहेगा : यदि तुम्हारे पास कोई चाल है जिसे तुम मेरे विरोध में चल सकते हो तो चल कर देख लो।  
 7 अर्थात् उन से यह संसार में कहा जाएगा, और पापी से मुराद मुशिरक और नाफ़रमान हैं।  
 8 अर्थात् जब उन्हें नमाज़ का आदेश दिया जाता था तो नमाज़ नहीं पढ़ते थे।  
 9 यदि कुरआन पर ईमान नहीं लाए तो भला इसके सिवा किरा चीज़ पर ईमान लाएंगे?  
 10 जब नबी ﷺ की बेसत हुई, और आप ने उन्हें तौहीद और दोबारा जीवित किए जाने के बारे में बताया, कुरआन की तिलावत की तो वे आपस में एक दूसरे से पूछने लगे। कहने लगे कि मुहम्मद को क्या हो गया, यह क्या लेकर आए हैं? तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी।  
 11 बड़ी सूचना से मुराद महान कुरआन है; क्योंकि यह किताब अल्लाह की

أَرْتَخَلَفُكُمْ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ﴿٢١﴾ إِلَىٰ قَدْرِ مَعْلُومٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَدِرُونَ ﴿٢٣﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٤﴾ أَلَّا يَجْعَلَ الْأَرْضَ كِنْفًا ﴿٢٥﴾ أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا رُوسًا شَمِخْتِ وَأَسْفَيْنَاكُمْ مَاءً فَرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾ أَنْظِلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾ أَنْظِلِقُوا إِلَىٰ ظِلِّ ذِي نُلْدِثِ شَعْبٍ ﴿٣٠﴾ لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُعْنَىٰ مِنَ اللَّهِ ﴿٣١﴾ إِنَّا تَرَىٰ إِشْرَكَ بِشُرَكَرِ الْكَافِرِ ﴿٣٢﴾ كَأَنَّهُ جُمِلَتْ صُفُرًا ﴿٣٣﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾ هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤَدِّنُ لَهُمْ فَيْعَنْدِرُونَ ﴿٣٦﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾ هَذَا يَوْمٌ الْفَصْلِ جَمَعْتُمْكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَيَكِيدُونَ ﴿٣٩﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾ إِنَّ الْمُنْفِقِينَ فِي ظُلُلٍ وَعَيُونٍ ﴿٤١﴾ وَفَوَكَهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾ كَلُوا وَأَشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا كَذَّابِكُمْ تَجْرِي الْمَحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾ كَلُوا وَتَمَنَعُوا فَلَيْلًا إِنَّكُمْ تَجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْظِعُوا لِرَبِّكُمْ ﴿٤٨﴾ وَيَلُّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

- 12 जिसके बारे में वे विरोध कर रहे हैं <sup>12</sup>।  
 13 यकीनन यह अभी जान लेंगे <sup>13</sup>।  
 14 फिर निश्चित रूप से उन्हें बहुत जल्द जानकारी हो जाएगी।  
 15 क्या हमने धरती को फर्श नहीं बनाया?  
 16 और पर्वतों को खूटा नहीं बनाया?  
 17 और हमने तुम्हें जोड़-जोड़े पैदा किए।  
 18 तथा हमने तुम्हारी निद्रा को तुम्हारे आराम का कारण बनाया।  
 19 और रात को हमने पर्दा बनाया।  
 20 और दिन को हमने रोज-गार (जीविका कमाने) का समय बनाया।

- वहदानियत, रसूल की सच्चाई और दोबारा उठाए जाने की खबर देती है।  
 12 कुरआन के बारे में उन्होंने इश्टिलाफ किया किसी ने उसे जादू कहा, किसी ने शार्दरी, किसी ने कहानत तो किसी ने उसे पहले लोगों के अपमान का नाम दिया।  
 13 इस में उन के लिए डॉट और फटकार है, कि जल्द ही उन्हें जानकारी हो जाएगी कि झुटलाने का अन्जाम क्या होने वाला है।  
 14 यह दोबारा उन्हें डॉट पिलाने के लिए है।  
 15 बिछौना और फर्श बनाया, जैसे बच्चों के लिए बिछौना तैयार किया जाता है ताकि उसे उस पर सुलाया जाए।  
 16 अर्थात् हम ने पहलों को धरती के लिए खूटा की तरह बनाया ताकि वह ठहरी रहे और उसमें हिल-डोल न हो।  
 17 शकाल हिलना बन्द हो जाता है ताकि शरीर को आराम मिले।  
 18 अर्थात् हम तुम्हें रात का अंधेरा पहना देते हैं बल्कि उस से ढक देते हैं जैसे कपड़े से शरीर ढक दिया जाता है।  
 19 अर्थात् हम दिन को रोशन कर देते हैं, ताकि लोग अपनी रोज़ी की खोज में दौड़ भाग करें।



## سُورَةُ النَّبَاِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ﴿٢﴾ الَّذِي هُوَ فِيهِ يُخْتَلَفُونَ ﴿٣﴾  
 كَلَّا سِعَامُونَ ﴿٤﴾ نُو كَلَّا سِعَامُونَ ﴿٥﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ اَلْاَرْضَ مَهْدًا ﴿٦﴾  
 وَاَلْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَخَلَقْنَا كُرُوْا وَاَجَا ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾  
 وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَاسًا ﴿١٠﴾ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَبَنَيْنَا  
 فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَاجًا ﴿١٣﴾ وَاَنْزَلْنَا  
 مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَمَّاجًا ﴿١٤﴾ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَجَعَلْنَا  
 اَلْاَنْهَارَ ﴿١٦﴾ اَنْ يَّجِيْنَ اِنْ يَّوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿١٧﴾ يَوْمَ يُفْعَخُ فِي الْاَنْصُورِ  
 فَنَّاوُونَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَفِيْحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ اَتْوَابًا ﴿١٩﴾ وَسَرِيْرٍ  
 اَلْجِبَالِ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾ اِنْ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطَّعِيْنِ  
 مَتَابًا ﴿٢٢﴾ لِّلَّذِيْنَ فِيْهَا اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾ لَا يَدْوُقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾  
 اِلَّا اَلْحَمِيْمًا وَعَسَاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَاءً وَّفَاقًا ﴿٢٦﴾ اِنْهُمْ كَانُوْا  
 لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَكَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا كِذْبًا ﴿٢٨﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ  
 اَحْصِيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

- 12 और तुम्हारे ऊपर हमने सात मजबूत आकाश बनाए।  
 13 और एक चमकता हुआ ज्योति दीप (सूरज) पैदा किया।  
 14 और मैघों से हमने अत्यधिक बहता हुआ पानी बरसाया।  
 15 ताकि उससे अनाज और बनस्पति उगाएं।  
 16 और घने बाग भी (उगाएं)।  
 17 बेशक निर्णय के दिन का समय मुकर्रर (निर्धारित) है।  
 18 जिस दिन कि सूर (नरसिंह) में फूका जाएगा फिर तुम सब दल के दल बन कर जाओगे।  
 19 और आकाश खोल दिया जाएगा, तो उसमें द्वार-द्वार हो जाएंगे।

- 20 और पर्वत चलाए जाएंगे तो वे सफेद बालू हो जाएंगे।  
 21 निःसंदेह नरक घात में है।  
 22 उद्विडियों का स्थान वही है।  
 23 उसमें वे युगों-युग पड़े रहेंगे।  
 24 न कभी उसमें ठंड का स्वाद चखेंगे न पानी का।  
 25 सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के।  
 26 (उनको) पूरा-पूरा बदला मिलेगा।  
 27 उन्हें तो हिसाब की उम्मीद (संभावना) ही न थी।  
 28 और दिलेरी से हमारी आयतों को झुटलाते थे।  
 29 हमने हर-एक बात को लिखकर सुरक्षित रखा है।  
 30 अब तुम (अपने किए का) स्वाद चखो, हम तुम्हारा अज्ञाब ही बढ़ाते जाएंगे।  
 31 यकीननु परहेजगारों (सदाचारियों) के लिए सफलता है।  
 32 बागात हैं और अंगूर हैं।  
 33 और नवयुवती कुंवारी हम-उम्र औरतें हैं।  
 34 और छलकते हुए शराब के प्याले हैं।  
 35 वहाँ न तो वे बुरी बातें सुनेंगे और न झूठी बातें सुनेंगे।  
 36 (उनको) तेरे रब की ओर से (उनके नेक-कर्मों का) यह बदला मिलेगा। जो काफ़ी इन्आम होगा।  
 37 (उस) रब की ओर से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का और जो कुछ उनके बीच है, उनका रब है, और बड़ी बख्शिश करने वाला है। किसी को उससे बातचीत करने का अधिकार नहीं होगा।  
 38 जिस दिन रूह और फरिश्ते सफ़े बाँध कर खड़े होंगे तो कोई बात न कर सकेगा मगर जिसे रहमान अनुमति देदे, और वह ठीक बात मुंह से निकालेगा।

- 12 अर्थात् पहाड़ों को उन की जगहों से जहाँ वे गड़े हुए हैं उखड़े कर हवा में चला दिया जाएगा, और वे कण-कण होकर बिखर जाएंगे, देखने वाला उन्हें "सराब" समझेगा, अर्थात् रेत जो दूर से पानी लगता है।  
 13 नरक में उसके दारोगे काफ़िरों के घात में होंगे, कि वे उसमें उन्हें अज्ञाब दें।  
 14 मय्या टिकाना जिसकी ओर वे लौटेंगे।  
 15 अर्थात् वे हमेशा नरक में ही रहेंगे, (حطب, احتباب का बहु बचन है) मुराद लम्बा ज़माना है, एक हक़ब जब खतम होगा दूसरा शुरू हो जाएगा, इस प्रकार इस सिलसिला का कभी अन्त न होगा, मतलब यह है कि वह सदा उसमें रहेंगे।  
 16 गरम पानी।  
 17 अर्थात् सज़ा पाप अनुसार होगी, तो शिर्क से बढ़कर कोई जुर्म नहीं और जहन्नम से बढ़कर कोई अज्ञाब नहीं, और उनके कर्तूत चूँकि बुरे थे इसलिए अल्लाह उन्हें वही देगा जो उन्हें गुन्गीन करदे।  
 18 न उन्हें सवाब की लालच थी और न हिसाब का डर, क्योंकि दोबारा जीवित किए जाने पर उनका ईमान ही नहीं था।  
 19 अर्थात् हम ने उसे "लौहे महफूज़" में लिख रखा है, और एक कौल यह है कि इस से मुराद उनके कर्तूत का वह रिकार्ड है जिसे निगरां फ़रिश्तों ने तैयार कर रखा है।  
 20 सफलता और जहन्नम से छुटकारा।  
 21 अर्थात् उनके लिए ऐसी कुंवारी और नवयुवती औरतें होंगी जिनकी छतियाँ सीनों पर उठी होंगी, टूटी या ढीली न होंगी।  
 22 अत्राब।  
 23 कासा दहाफ़ा शराब से भरे हुए प्याले।  
 24 जन्नत में कोई ख़राब और बेहूदा बात नहीं सुनेंगे, और कोई किसी से झूठ नहीं कहेगा।  
 25 अर्थात् जो अल्लाह के वादे में उनके लिए वाजिब हुआ होगा उसके अनुसार होगा, उसने एक नेकी पर दस नेकी के सवाब का वादा किया है, और किर्री के लिए ७०० गुने का वादा है, और किर्री के लिए ऐसी बदले का वादा है जिस की कोई सीमा न होगी।  
 26 अर्थात् वह इस से बात न कर सकेंगे, जब तक कि वह उन्हें उसकी अनुमति न दे दे, और न ही बिना उसकी अनुमति के सिफ़ारिश कर सकेंगे।  
 27 से मुराद फ़रिश्ता है, और एक कौल के अनुसार जिब्रईल मुराद है, और एक कौल के अनुसार फ़रिश्तों के इलावा अल्लाह का कोई लश्कर है।  
 28 सिफ़ारिश की, या वह मात्र उसी व्यक्ति के हक़ में बात कर सकेंगे

- 1 अर्थात् सात मजबूत से मुराद सात आकाश हैं, जो कि बहुत दोस हैं।  
 2 इस से मुराद सूरज है, وهج उसे कहते हैं जिसमें रौशनी और गर्मी दोनों हो।  
 3 अर्थात् वह बदलियाँ हैं जो पानी से भरी हुई हों लेकिन अभी बरसी न हों।  
 4 अर्थात् अधिक मात्रा में बहने वाला पानी।  
 5 जैसे गेहूँ, जौ और इस तरह के दूसरे अनाज और गल्ले और घास और चारे जिन्हें पशु खाते हैं।  
 6 घने बागीचे जिनके पेड़ों की डालियाँ एक दूसरे से मिली हों।  
 7 अर्थात् पहले और पिछलों के इकट्ठा होने और वादे का समय जिस में वह उस परिणाम को पाएंगे जिसका उनसे वादा किया गया है, और इसे निर्णय का दिन इसलिए कहा गया है कि उस दिन अल्लाह अपनी मख़बूक के बीच निर्णय करेगा।  
 8 नरसिंघा जिस में इसराफ़ील फूंक मारेंगे।  
 9 पेशी की जगह, (अर्थात् मैदाने महशर की ओर)।  
 10 फ़रिश्तों के उतरने के लिए।  
 11 अर्थात् उसमें ढेर सारे दवाज़े हो जाएंगे।

39 यह<sup>2</sup> दिन सत्य है<sup>3</sup>, अब जो चाहे अपने रब के पास (सत्यकर्म करके) स्थान बना ले।

40 हमने तुम्हें करीब में आने वाले अज़ाब से डरा दिया (और सावधान कर दिया)। जिस दिन इन्सान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा<sup>1</sup>। और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता।

## सुरतुन नाज़िआत - 79

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 डूबकर कठोरता से खींचने वालों की कसम।
  - 2 बंधन खोलकर छुड़ा देने वालों की कसम।
  - 3 और तैरने फिरने वालों की कसम।
  - 4 फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की कसम।
  - 5 फिर कामों के उपाय करने वालों की कसम।
  - 6 जिस दिन कांपने वाली कांपेगी।
  - 7 उसके बाद एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आएगी।
  - 8 (बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे।
  - 9 जिनकी निगाहें नीची होंगी।
  - 10 कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी स्थिति में फिर लौटाए जाएंगे?
  - 11 क्या उस समय जब हम गली हुई हड्डियाँ हो जाएंगे।
  - 12 कहते हैं कि यह लौटना फिर तो हानिकारक है।
- (जानकारी होनी चाहिए)

जिसके लिए रहमान अनुमति दे दे।

- 1 और यह व्यक्ति उन लोगों में से हो जिसने संसार में दुरुस्त बात कही हो, अर्थात् तौहीद की गवाही दी हो, और तौहीद का स्वीकारी रहा हो।
- 2 अर्थात् रूढ़ और फ़रिश्तों के इस तरह से खड़े होने का दिन।
- 3 अर्थात् हर हाल में आने वाला है।
- 4 अर्थात् ठिकाना, अर्थात् सुकर्म करके अपने रब के पास ठिकाना बना ले।
- 5 जिस दिन आदमी उस नेकी या बुराई को देख लेगा जिसे आगे भेजा था।
- 6 अर्थात् जो अज़ाब अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखा है उसे देख कर वह यह आरजू करेगा कि काश वह मिट्टी होता।
- 7 अल्लाह ने फ़रिश्तों की कसम खाई जो बन्दों की रूहों को उन की शरीरों से पूरी शक्ति से खींचते हैं, जैसे क़मान खींचने वाला जहाँ तक बढ़ सकता है पूरी शक्ति से खींच कर बढ़ाता है, जैसे **غُرْفًا** डूब कर, अर्थात् इस तरह सख्ती से कि शरीर के अन्तिम सिरे से उसे खींच लेते हैं।
- 8 **نَشْطًا** का माना रस्सी से डोल खींचने के हैं, अर्थात् जानों को शरीरों से पूरी शक्ति से खींच कर बाहर निकालते हैं, (और एक कौल यह है कि **نَشْطًا** का माना बंधन खोलने के हैं, अर्थात् मोमिन की जान फ़रिश्ते आसानी से निकाल लेते हैं, जैसे आसानी से किसी चीज़ का बंधन खोल दिया जाए)।
- 9 फ़रिश्ते तेज़ी से आकाश से उतरते हैं, वह हवा में तैरते हैं जैसे गोता-खोर पानी में तैरता है।
- 10 यह फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश कायम करने के लिए दौड़ते हैं, और उन में से कुछ मोमिनों की रूहें लेकर जन्नत की ओर दौड़ते हैं।
- 11 फ़रिश्तों का मामले का उपाय करने का अर्थ : उनका हलाल, ह्राम और उनकी तफ़सील को लेकर उतरना, और धरती वालों के लिए पानी और हवा वगैरः का उपाय करना।
- 12 यह पहली फूँक है जिस से सारी मख़्लूक फना हो जाएगी।
- 13 **رَادِفَةً** से मुराद दूसरी फूँक है जिस से सब लोग जीवित होकर कब्रों से निकल आएंगे।
- 14 कियामत की हौलनाकी को देख कर वह डरे होंगे और धड़कते होंगे।
- 15 अर्थात् उनकी निगाहों में ज़िल्लत और बेचारगी स्पष्ट होगी, और कियामत की हौलनाकी को देख कर उनकी नज़रें मारे डर के झुकी हुई होंगी, मुराद उन लोगों की नज़रें हैं जो बिना इस्लाम लिए गये होंगे।
- 16 ऐसा वे कहते हैं जो दोबारा जीवित किए जाने के इन्कारी हैं, जब उन से कहा जाता है कि मरने के पश्चात तुम दोबारा जीवित किए जाओगे तो आश्चर्य से कहते हैं कि क्या हम अपनी पहली हालत की ओर लौटा दिए जाएंगे, और मर जाने और कब्र के गढ़े में जाने के बाद फिर जीवित किए जाएंगे?
- 17 अर्थात् मरने बाद के लौटाए जाने और मुहम्मद ﷺ को कह रहे हैं उस से दोचार होने पर तो हम बड़े घाटे में होंगे। (यह बात वह मज़ाक उड़ाने के लिए कहते हैं)।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۖ حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۖ وَكَوَاعِبَ أَزْرَابًا ۖ وَكَأْسًا  
دِهَاقًا ۖ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِدَابًا ۖ جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاةٌ  
حِسَابًا ۖ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ لَا يَمْلِكُونَ  
مِنَهُ حِطَابًا ۖ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُونَ  
إِلَّا مَن أُوذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ صَوَابًا ۖ ذَلِكَ الْيَوْمَ الْحَقُّ فَمَن  
شَاءَ اخْتَدِ إِلَىٰ رَبِّهِ مَتَابًا ۖ إِنَّا أَنْذَرْتَكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ  
يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَلَيْتَنِي كُنتُ رُتَابًا ۖ

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا ۖ وَالنَّشِيطَاتِ نَشْطًا ۖ وَالسَّيِّحَاتِ سَبْعًا  
ۖ فَالسَّيِّغَاتِ سَبْقًا ۖ فَالْمُدْرِتَاتِ أَمْرًا ۖ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ  
ۖ تَتَّبِعُنَّ الرَّادِفَةَ ۖ ثُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ۖ أَبْصُرُهَا  
خَشِيعَةٌ ۖ يَقُولُونَ أَيْنَا الْمَرْدُودُونَ فِي الْخَافِرَةِ ۖ أَيْنَا كُنَّا  
عِظَامًا نَّحْرَةً ۖ قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۖ فإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ  
وَاحِدَةٌ ۖ فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ۖ هَلْ أُنَبِّئُكَ حَدِيثَ مُوسَىٰ ۖ

- 13 वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है<sup>18</sup> कि (जिसके जाहिर होते ही)।
- 14 वह एक-दम मैदान में इकट्ठे हो जाएंगे।
- 15 क्या मूसा (ﷺ) की कथा भी तुम्हें पहुँची है?<sup>20</sup>
- 16 जबकि उनके रब ने उन्हें पवित्र मैदान तुवा<sup>21</sup> में पुकारा।
- 17 कि तुम फ़िऔन के पास जाओ उसने उद्दण्डता अपना ली है।
- 18 उससे कहे<sup>22</sup> कि क्या तू अपना सुधार और इस्लाह चाहता है।
- 19 और यह कि मैं तुझे तेरे रब का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू (उससे) डरने लगे।

- 18 दूसरी फूँक होगी जिस से सारे लोग कब्रों में जीवित होकर निकल आएंगे, हमारी शक्ति इतनी महान है कि हमें इस के लिए कुछ और नहीं करना पड़ेगा।
- 19 एक कौल के अनुसार **سَاهِرَةٌ** सफेद धरती होगी जिसे अल्लाह वुजूद में लाएगा और उसी पर सभी का हिसाब लेगा।
- 20 **فَد** के माने में है, अर्थात् फ़िऔन और मूसा (ﷺ) की कथाएं तुम्हें पहुँच चुकी हैं जिन से उनकी कहानी जानी जा सकती है।
- 21 पाक और बा-बक़त तुवा, तूरे सीना में एक वादी है, जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा (ﷺ) को पुकारा था (और उन्हें अल्लाह से बात करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ था)।
- 22 उसके पास पहुँचने के बाद तुम उससे पूछो कि क्या तू शिर्क की गन्दगी से पवित्र होना चाहता है? मूसा (ﷺ) को आदेश दिया गया था कि जाकर उसे नरमी से समझाएं।
- 23 और क्या तू चाहता है कि मैं तुझ को उस की इबादत और उस की तौहीद का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू अपने परिणाम से डरे, और अल्लाह का डर उसी समय पैदा हो सकता है जब वह स्वयं अच्छा और नेक होना चाहता हो।

- 20 तो उसे बड़ी निशानी<sup>1</sup> दिखायी।  
 21 तो उसने झुटलाया और नाफरमानी की<sup>2</sup>  
 22 फिर पलटा दौड़-धूप करते हुए।  
 23 फिर सबको इकट्ठा करके पुकारा।  
 24 कहा कि तुम सबका बड़ा रब मैं ही हूँ।<sup>5</sup>  
 25 तो (सबसे बुलंद और महान) अल्लाह ने भी उसे परलोक तथा इस लोक के अज़बों में घेर लिया।<sup>6</sup>  
 26 बे-शक इसमें उस व्यक्ति के लिए शिक्षा है, जो डरे।<sup>7</sup>  
 27 क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है<sup>8</sup> या आकाश का? अल्लाह तआला ने उसे बनाया।  
 28 उसकी ऊँचाई चढ़ायी<sup>9</sup> फिर उसे ठीक ठाक कर दिया।<sup>10</sup>  
 29 और उसकी रात को अंधेरा किया<sup>11</sup> और उसके दिन को निकाला।<sup>12</sup>  
 30 और उसके बाद धरती को (समतल) बिछा दिया।<sup>13</sup>  
 31 उसमें से पानी और चारा निकाला।<sup>14</sup>  
 32 और पर्वतों को (मज्बूत) रूप से गाड़ दिया।<sup>15</sup>  
 33 यह सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लाभ के लिए (है)।  
 34 तो जब वह बड़ी विपत्ति (क्रियामत) आ जाएगी।<sup>16</sup>  
 35 जिस दिन कि इन्सान अपने किए हुए कर्मों को याद करेगा।  
 36 और (प्रत्येक) देखने वाले के सामने जहन्नम ज़ाहिर कर दी जाएगी।<sup>17</sup>  
 37 तो जिस (व्यक्ति) ने उद्वण्डता अपनायी (होगी)।<sup>18</sup>  
 38 और साँसारिक जीवन को तर्ज़ीह दी (होगी)।<sup>19</sup>

- 1 बड़ी निशानी से मुराद एक कौल के अनुसार लाठी है, और एक कौल के अनुसार 'यदे बैजा' है।  
 2 अर्थात् ईमान से उसने मुंह फेरा।  
 3 और धरती पर फसाद के लिए दौड़-धूप करता रहा, और मूसा عليه السلام जो मोजिजा लेकर आए थे उस के मुकाबला के लिए प्रयास में रहा।  
 4 अपने लश्कर को लड़ाई के लिए इकट्ठा किया, या जादूगरों को मूसा عليه السلام से मुकाबला के लिए इकट्ठा किया, या लोगों को मुसा عليه السلام और जादूगरों के बीच होने वाले मुकाबले को देखने के लिए इकट्ठा किया।  
 5 इस से उस मलजून की मुराद यह थी कि उस से बड़ा कोई रब नहीं।  
 6 तो अल्लाह ने उसे अपनी पकड़ में ले लिया और उसे उस की सजा दी, अर्थात् नरक का अज़ाब है। और **نكال الاولي** संसार में डुबाने का अज़ाब है, ताकि जो उस की खबर सुने उससे नसीहत प्राप्त करे।  
 7 फ़िर्तों के कथा और जो उस के साथ किया गया, उस में बड़ी इज़त और शिखा है उन लोगों के लिए जो अल्लाह से डरते और तप्या के रास्ते पर चलना चाहते हैं।  
 8 अर्थात् मरने के बाद फिर से तुम्हें पैदा करना और क़ब्रों से उठाना तुम्हारे अन्दाज़े में अधिक कठिन है, या उस महान आकाश को जिस में उस की शक्ति और कारीगरी की बहुत सी विचित्रताएँ हैं जो कि देखने वालों से छुपी नहीं हैं।  
 9 अर्थात् उसे ऊँचा बनाया जैसे धरती पर ऊँची बिल्डिंग होती है।  
 10 अर्थात् उस की शकल और सूरत को समतल और बराबर बनाया, उसमें न तो टेढ़ापन है और न ही फटन है।  
 11 **اطمئ** के मायने में है, अर्थात् उसे अंधेरा किया।  
 12 **اخرج، ابرز** के मायने में है, (और **نهارها** की जगह **ضحاها** इसलिए कहा गया है कि चाशत का समय सब से उत्तम होता है) अर्थ यह है कि दिन को सूरज द्वारा रौशन किया।  
 13 अर्थात् आकाश को पैदा करने के बाद धरती को बिछाया।  
 14 धरती से नहरें और चम्बे बहाए, और चारे और पौदे उगाए जिन में पशु चरते हैं।  
 15 अर्थात् पर्वतों को धरती पर खूंटों की तरह मज्बूत गाड़ दिया, ताकि जो उनके ऊपर रहते बसते हैं उनके साथ हिले न।  
 16 जो सारी मुसीबतों से बढ़ कर होगी, और वह दूसरी फूंक होगी जो जन्मदियों को जन्मत और जहन्नमियों को जहन्नम के हवाले कर देगी।  
 17 अर्थात् इस तरह ज़ाहिर कर दी जाएगी कि किसी से छुपी नहीं रहेगी।  
 18 अर्थात् कुफ़्र और पाप में सीमा पार किया होगा।  
 19 अर्थात् संसार को आखिरत पर वरीयता प्रदान किया होगा, और उसी को सब कुछ समझा होगा, और आखिरत के लिए कोई तैयारी नहीं की होगी।

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ يَا لَوْلَا اِلْمَقْدَسِ طُوًى ۝ اِذْ هَبَّ اِلَى فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغَى ۝ ۱۷  
 فَقُلْ هَلْ لَكَ اِلٰه اِلَّا اَنْ تَرْكٰى ۝ ۱۸ ۝ وَاَهْدِيْكَ اِلَى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝ ۱۹ ۝ فَاَرٰنَهٗ  
 اٰلَا يَهٗ اَلْكَبْرٰى ۝ ۲۰ ۝ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝ ۲۱ ۝ ثُمَّ اَدْبَرَ تَسْعٰى ۝ ۲۲ ۝ فَحَشَرَ  
 فَنَادٰى ۝ ۲۳ ۝ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمْ اَلْاَعْلٰى ۝ ۲۴ ۝ فَاَحْذَرَهُ اللّٰهُ نَكَالًا لِاٰخِرَةٍ وَّالْاٰوَلٰى ۝  
 ۲۵ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝ ۲۶ ۝ اَنَّمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَوْ السَّمَآءُ بَنْنَهَا  
 ۲۷ ۝ رَفَعَ سَعَتَهَا فَسَوَّيْنَهَا ۝ ۲۸ ۝ وَاَغْطَشَ لَهَا وَاَخْرَجَ ضُحَاهَا ۝ ۲۹  
 وَاَلْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحْنَهَا ۝ ۳۰ ۝ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَرَمَرَعَهَا ۝ ۳۱  
 وَاَلْجِبَالَ اَرْسَسَهَا ۝ ۳۲ ۝ مِّنْعًا لِّكُمْ وَّلَا تَعْمَلُكُمْ ۝ ۳۳ ۝ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَةُ  
 اَلْكَبْرٰى ۝ ۳۴ ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝ ۳۵ ۝ وَوَرِثَتِ الْجَحِيْمُ  
 لِمَنْ يَّرٰى ۝ ۳۶ ۝ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۝ ۳۷ ۝ وَاٰثَرُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۝ ۳۸ ۝ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ  
 هِىَ الْمَآوٰى ۝ ۳۹ ۝ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهٰى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝  
 ۴۰ ۝ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِىَ الْمَآوٰى ۝ ۴۱ ۝ يَسْتَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مَرَسَهَا  
 ۴۲ ۝ فِيمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرِنَهَا ۝ ۴۳ ۝ اِلَّا اِنَّ رَبَّكَ مِنْهَا ۝ ۴۴ ۝ اِنَّمَا اَنْتَ مُنذِرٌ  
 ۴۵ ۝ مَن يَّخْشٰىهَا ۝ ۴۶ ۝ كَانَتْهُمْ يَوْمَ بَرُوْنَهَا لِرَبِّلْتَوٰى اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحَاهَا ۝ ۴۷

- 39 (उसका) स्थान जहन्नम ही है।<sup>20</sup>  
 40 मगर जो व्यक्ति अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा होगा और अपने मन<sup>22</sup> को इच्छाओं से रोका होगा।  
 41 तो उसका स्थान जन्नत ही है।  
 42 लोग आपसे क्रियामत (प्रलय) के आने का समय पछते हैं।<sup>23</sup>  
 43 आपको उसके बयान करने से क्या सम्बन्ध? <sup>24</sup>  
 44 उसके (ज्ञान का) अंत तो आपके रब की ओर है।<sup>25</sup>  
 45 आप तो केवल उससे डरते रहने वालों को सावधान करने वाले हैं।<sup>26</sup>  
 46 जिस दिन यह उसे देख लेंगे, तो ऐसा लगेगा कि केवल दिन का अन्तिम हिस्सा या पहला हिस्सा ही (संसार में) रहे हैं।<sup>27</sup>

- 20 अर्थात् वही उस की जगह होगी जिस की ओर वह पनाह पकड़ेगा, उस के सिवाय कोई और शरण-स्थल न होगी जहाँ वह शरण ले सके।  
 21 अर्थात् क्रियामत के दिन अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा।  
 22 और मन को उन पापों और गुनाहों से रोक्ता रहा जिसका इच्छा मन में जगता है।  
 23 अर्थात् वह कब आएगी और कब कश्ती की तरह लंगर अंदाज़ होगी?  
 24 उसके ज्ञान और वर्णन से आप का क्या सम्बन्ध है, उसका वास्तविक ज्ञान तो अल्लाह के पास है।  
 25 अर्थात् उस के ज्ञान की सीमा तेरे रब की ओर है, मात्र वही जानता है दूसरा कोई नहीं जानता।  
 26 अर्थात् आप मात्र उस व्यक्ति को डराने वाले हैं जो क्रियामत आने से डर रहा हो।  
 27 अर्थात् जिस दिन वे उसे देख लेंगे दुनिया की मौज मस्ती सब कुछ भूल जाएंगे, और उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में पूरे एक दिन भी नहीं रहे, मात्र दिन के पहले या अन्तिम हिस्सा में दुनिया में रहे हैं।

## सूरतु अबस - 80

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रूहम करने वाला है।

- 1 वह चिड़चिड़ा हुवा और मुंह मोड़ लिया।<sup>1</sup>
- 2 (केवल इसलिए) कि उसके पास एक अंधा आया।<sup>2</sup>
- 3 तुझे क्या पता शायद वह सुधर जाता।
- 4 या नसीहत सुनता और उसे नसीहतें लाभ पहुँचाती।<sup>5</sup>
- 5 (परन्तु) जो लापरवाही करता है।<sup>6</sup>
- 6 उसकी ओर तो तू पूरा ध्यान दे रहा है।<sup>7</sup>
- 7 हालांकि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि नहीं।<sup>8</sup>
- 8 और जो व्यक्ति तेरी ओर दौड़ता हुआ आता है।<sup>9</sup>
- 9 और वह डर (भी) रहा है।
- 10 तो तू उससे बे-रुखी (विमुखता) बरतता है।<sup>10</sup>
- 11 यह उचित नहीं।<sup>10</sup> (कुरआन तो) नसीहत की (चीज़) है।<sup>11</sup>
- 12 जो चाहे उससे नसीहत ले।
- 13 यह तो सम्मानित किताबों में है।<sup>12</sup>
- 14 जो उच्च, महान और पवित्र और शुद्ध है।<sup>14</sup>
- 15 ऐसे लिखने वालों के हाथों में है।<sup>15</sup>
- 16 जो बुझुग और पवित्र हैं।<sup>17</sup>
- 17 अल्लाह की मार इंसान पर, कितना ना-शुक्रा (कृतघ्न) है।

1 नबी ﷺ ने तेवर चढ़ाई और अपना मुंह फेर लिया।

2 अपने पास अंधा के आने की वजह से, इस सूरत के नाज़िल होने का कारण यह है कि नबी ﷺ के पास कुछ कुरेश के शरीफ लोग बैठे हुए थे, जिन से आप बातें कर रहे थे, आप की चाहत थी कि यह इस्लाम स्वीकार कर लें, इतने में अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम जो कि अंधे थे और नेक सद्दाबा में से थे आ पहुँचे, और आप से धर्म सम्बन्धी बातें पूछने लगे, अल्लाह के रसूल को उनकी इस कतअ कलामी पर नागवारी हुई और उन की ओर ध्यान नहीं दिया तो यह आयतें नाज़िल हुईं।

3 ऐ मुहम्मद ﷺ।

4 अर्थात् वह अंधा व्यक्ति तुझ से धर्म की बातें सीख कर नेक कर्म करता जिस से वह गुनाहों से पवित्र हो जाता।

5 या नसीहत प्राप्त करता और जो नसीहत की बात उसे बताते उस से उसे लाभ पहुँचता।

6 और जो तुझ से बेपरवाही बरतता है, और उन चीज़ों से मुंह मोड़ता है जिन्हें लेकर तुम आए हो तो उसकी ओर तो तुम पूरा ध्यान लगाते हो।

7 यदि वह इस्लाम न लाता तो उस से तुम्हें क्या हानि पहुँचता, तुम्हारी जिम्मादारी तो मात्र पहुँचाने की है, इसलिए ऐसे काफिरों के मामले को इतनी महत्व न दो।

8 अर्थात् वह (अबुल्लाह पुत्र उम्मे मक्तूम) तेरे पास दौड़ते हुए आए हैं ताकि तू उनको लाभ का मार्ग दिखाए और अल्लाह की बातों की नसीहत करे।

9 तो तू उससे विमुखता बरतता है और अपना मुंह फेर लेता है।

10 तेरा यह बर्ताव ठीक नहीं, ऐसे लोगों का तो सम्मान करना चाहिए, न कि उन से मुंह फेरना चाहिए।

11 अर्थात् यह आयतें या यह सूरत नसीहत है, और इस लायक है कि तू इससे नसीहत प्राप्त करे, और इसे स्वीकारे और इस के तकाज़ों के अनुसार कर्म करे।

12 अर्थात् यह ऐसी किताबों में है जो ज्ञान और हिकमत से पुर होने और लौहै महफूज़ से नाज़िल होने के कारण अल्लाह के पास बड़े सम्मानित हैं।

13 और अल्लाह के पास बड़ी कद्र व मन्ज़िलत वाले हैं।

14 पवित्र हैं क्योंकि उन्हें पाक लोगों के अलावा कोई छूता ही नहीं, और शैतानों और काफिरों की पहुँच से सुरक्षित हैं, (इसलिए उन में कोई हेरा फेरी नहीं हो सकती)।

15 **सफ़र**, **सफ़र** की जमअ है, यह सिफरत से है, इस से मुराद वह फरिश्ते हैं जो अल्लाह और रसूलों के बीच दूत के काम करते हैं, और अल्लाह की वक्ष्य को रसूलों तक पहुँचाते हैं।

16 अपने रब के पास शरीफ और सम्मानित हैं।

17 परहेज़गार और अपने रब के आज्ञा का पालन करने वाले हैं, और अपने इमान में सच्चे हैं।

18 यहाँ इन्सान से काफिर इन्सान मुराद है, अर्थात् उसकी ना-शुक्रा बे-हद बढ़ी हुई है।

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَسَىٰ وَتَوَلَّىٰ ۙ ۱ أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ۚ ۲ وَمَلَيْدٌ لَكَ لَعْلَهُ ۚ يَرْكَبُ ۙ ۳ أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعُهُ ۙ ۴ الذِّكْرَىٰ ۚ ۵ أَمَامِنِ اسْتَعْنَىٰ ۙ ۶ فَآنت لَهُ ۙ ۷ تَصَدَّىٰ ۙ ۸ وَمَا عَلَيْكَ أَلَا يَنْزِي ۙ ۹ وَأَمَامِنِ جَاءَكَ يَسْعَىٰ ۙ ۱۰ وَهُوَ يَخْشَىٰ ۙ ۱۱ فَآنت عَنْهُ لَخِي ۙ ۱۲ كَلَّا إِنَّهَا لَلذِّكْرَىٰ ۙ ۱۳ مِّنْ شَاءَ ذَكَرَهُ ۙ ۱۴ فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ ۱۵ مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۙ ۱۶ بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۙ ۱۷ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۙ ۱۸ قِيلَ لِلْإِنْسَانِ ۙ ۱۹ مَا أَكْفَرَهُ ۙ ۲۰ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۙ ۲۱ مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۙ ۲۲ ثُمَّ أَلْسَيْلَ يَسْرَهُ ۙ ۲۳ ثُمَّ أَمَانَهُ فَأَقْبَرَهُ ۙ ۲۴ ثُمَّ إِذْ لَشَاءَ أَنْشَرَهُ ۙ ۲۵ كَلَّا لَمَّا بَقِضَ مَا أَمَرَهُ ۙ ۲۶ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۙ ۲۷ أَنَا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۙ ۲۸ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۙ ۲۹ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۙ ۳۰ وَعَبْنَا وَقَضَبًا ۙ ۳۱ وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۙ ۳۲ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۙ ۳۳ وَفَيْكِهِمُ وَأَنْبًا ۙ ۳۴ مَتَلَعَا كُورًا ۙ ۳۵ وَلَا تَعْمَكُورًا ۙ ۳۶ إِذَا جَاءَتِ الصَّخَابَةُ ۙ ۳۷ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۙ ۳۸ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۙ ۳۹ وَصَجِيئِهِ وَبَنِيهِ ۙ ۴۰ لِكُلِّ أَمْرٍ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ ۙ ۴۱ يُعِينِيهِ ۙ ۴۲ وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۙ ۴۳ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۙ ۴۴ وَوُجُوهٌ ۙ ۴۵ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۙ ۴۶ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۙ ۴۷ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكُفْرَةُ الْفَجْرَةُ ۙ ۴۸

18 उसे अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया?<sup>19</sup>

19 एक मनी (वीर्य) से पैदा किया<sup>20</sup>। फिर उसको अंदाजा पर रखा।<sup>21</sup>

20 फिर उसके लिए रास्ता आसान किया।<sup>22</sup>

21 फिर उसे मौत दी फिर कब्र में गाड़ दिया।<sup>23</sup>

22 फिर जब चाहेगा उसे जिन्दा करदेगा।<sup>24</sup>

23 कभी भी नहीं, उसने अब तक अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।<sup>25</sup>

24 इन्सान को चाहिए कि अपने खाने की ओर देखे।<sup>26</sup>

25 कि हमने खूब पानी बरसाया।

19 अर्थात् अल्लाह ने उस काफिर को किस चीज़ से पैदा किया।

20 अर्थात् उसकी पैदाइश एक घटिया वीर्य से हुई है जो पेशाब के निकलने के स्थान से निकलता है, फिर ऐसे व्यक्ति को घमंड क्योंकिर भाता है जो पेशाब निकलने के स्थान से दो बार निकला हो।

21 अर्थात् उसे ठीक ठाक बनाया, उसे दो हाथ, दो पैर, दो आँख और दूसरी भांपने वाली चीज़ें दी।

22 भलाई और बुराई प्राप्त करने के मार्ग उस के लिए आसान किए।

23 अर्थात् मरने के पश्चात उसे कब्र में दफनाने का आदेश दिया, ताकि उसका सम्मान बरकरार रहे, उसे धरती पर पड़ा नहीं रहने दिया कि पशु पक्षि उसे नोच नोच कर खाएँ जिस से उस का अपमान हो।

24 अर्थात् जिस समय वह चाहेगा उसे दोबारा जीवित करेगा।

25 अर्थात् उसे पालन करने में कमी की, कुछ ने कुफ़ करके और कुछ ने ना-फ़रमानी करके, और जिन चीज़ों का अल्लाह ने आदेश दिया था उसे बहुत कम लोगों ने पूरा किया।

26 अर्थात् उसे विचार करना चाहिए कि अल्लाह ने उस की रोज़ी जो उस के जीवन का कारण है कैसे पैदा की।

## سُورَةُ التَّكْوِيْنِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

۱ إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۲ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۳ وَإِذَا الْجِبَالُ  
سُيِّرَتْ ۴ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۵ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ  
۶ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۷ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۸ وَإِذَا  
الْمَوْتُ دَسَّ سِيلَتْ ۹ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۱۰ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ  
۱۱ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۱۲ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِرَتْ ۱۳ وَإِذَا الْجَنَّةُ  
أُزْلِفَتْ ۱۴ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۱۵ فَلَا أُقْسِمُ بِالْجَنَّةِ  
۱۶ لَلْجُورِ الْكَبِيرِ ۱۷ وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ۱۸ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۱۹  
إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۲۰ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۲۱  
سَمِيعٍ أَمِينٍ ۲۲ وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۲۳ وَقَدْ رَآهُ بِالْأَفْئِقِ الْمُسِينِ  
۲۴ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۲۵ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۲۶  
فَأَن تَذَهَبُونَ ۲۷ إِن هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۲۸ لَمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن  
يَسْتَفِيمَ ۲۹ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۳۰

## سُورَةُ الْاِنْفِطَارِ

- 26 फिर धरती को अच्छी तरह फाड़ा।<sup>1</sup>
- 27 फिर उसमें अन्न उपजाए।<sup>2</sup>
- 28 और अंगूर और तरकारी।<sup>3</sup>
- 29 और जैतून और खजूर।
- 30 और घने बाग।
- 31 और मेवा और (घास) चारा<sup>4</sup> (भी उगाया)।
- 32 तुम्हारे प्रयोग और लाभ के लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए।
- 33 फिर जब कान बहरे करने वाली (कियामत) आ जाएगी।
- 34 तो आदमी उस दिन अपने भाई से।
- 35 अपनी माँ और बाप से।
- 36 अपनी पत्नी और संतान से भागे गा।<sup>6</sup>
- 37 उनमें से प्रत्येक को उस दिन एक ऐसी फिर होगी जो

उसके लिए काफी होगी।<sup>7</sup>

- 38 बहुत से चेहरे उस दिन रौशन<sup>8</sup> होंगे।
- 39 (जो) हँसते हुए प्रसन्न होंगे।
- 40 और बहुत से चेहरे उस दिन धूल में अटे<sup>9</sup> होंगे।
- 41 जिन पर कालिक चढ़ी होगी।<sup>10</sup>
- 42 वे यही काफिर बद-किर्दार (दुराचारी) लोग होंगे।<sup>11</sup>

## सूरतु तकवीर - 81

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 जब सूरज लपेट लिया जाएगा।<sup>12</sup>
- 2 और जब सितारे झड़ कर गिरने लगेंगे।<sup>13</sup>
- 3 और जब पर्वत चलाए जाएंगे।<sup>14</sup>
- 4 और जब हामिला (गर्भवती) उँटनियाँ छोड़ दी जाएंगी।<sup>15</sup>
- 5 और जब वक्षी जानवर (वन प्राणी) इकट्ठे किए जाएंगे।<sup>16</sup>
- 6 और जब सागर भड़काए जाएंगे।<sup>17</sup>
- 7 और जब जानें (जिस्मों से) मिला दी जाएंगी।<sup>18</sup>
- 8 और जब ज़िन्दा गाड़ी गयी लड़कियों से प्रश्न किया जाएगा।<sup>19</sup>
- 9 कि किस पाप के कारण उनकी हत्या की गयी?
- 10 और जब नाम-ए-आमाल (कर्मपत्र) खोल दिए जाएंगे।<sup>20</sup>
- 11 और जब आकाश की खाल खींच ली जाएगी।<sup>21</sup>
- 12 और जब जहन्नम भड़कायी जाएगी।<sup>22</sup>
- 13 और जब जन्नत करीब कर दी जाएगी।<sup>23</sup>

7 जो उन्हें उन के अपनों से बे-परवाह कर देगी, और उन्हें देख कर वह इस डर से भागेंगे कि कहीं वह उन से नेकी न मांग बैठें, या इस कारण भागेंगे कि उन का दुःख न देख सकें।

8 रौशन।

9 धूल।

10 अर्थात् उस पर कालिक उदासी छाई होगी।

11 अर्थात् धूल अटे चेहरे वाले।

12 अर्थात् जब सूरज गेंद के रूप का कर दिया जाएगा, और लपेट कर फेंक दिया जाएगा।

13 अर्थात् टूट टूट कर गिरने और बिखरने लगेंगे, और एक कौल यह है कि वे बे-नूर कर दिए जाएंगे।

14 अर्थात् उसे धरती से उखेड़ कर हवा में चला दिया जाएगा, (और धुनी हुई रूई की तरह उड़ने लगेंगे)।

15 **عشاره** गाभिन ऊँटनियाँ जिन के पेट में दस महीने के बच्चे हों, दस महीने की गाभिन ऊँटनी का चर्चा इसलिए है कि उन की गिन्ती अरबों के यहाँ सब से अच्छे धन में होती है, और **عطلت** का अर्थ बिना चरवाहे के यँ ही छोड़ दी जाएंगी, अर्थात् कियामत की हौलनाकी को देख कर लोगों की अपनी इस प्रकार की कीमती ऊँटनियों की भी परवाह न होगी।

16 अर्थात् उन्हें भी जीवित किया जाएगा ताकि एक-दूसरे से अपना बदला ले सकें, और एक कौल यह है कि उन का हश्र उन की मौत है।

17 अर्थात् वह जला दिए जाएंगे और उनमें आग भड़क उठेगी।

18 अर्थात् मोमिनो की जानें बड़ी बड़ी आँख वाली हूरों से और काफिरों की जानें शैतानों से मिला दी जाएंगी, हुसन बसरी कहते हैं कि हर व्यक्ति को उस की पार्टी और उसके हम खयाल लोगों से मिला दिया जाएगा, यहूदी को यहूदियों के साथ, ईसाई को ईसाईयों के साथ, मजूसी को मजूसियों के साथ, मुनाफिक को मुनाफिकों के साथ, और मोमिन को मोमिनों के साथ मिला दिया जाएगा।

19 अर्थात् अरबों के यहाँ जब कोई लड़की पैदा होती थी तो उसे आर या भुक्रमरी के डर से जिन्दा दफन कर देते थे, इस प्रकार हत्यारा से प्रश्न करके उस की सरजनिश की जाएगी, क्योंकि वास्तविक मुज्रिम तो वही है, न कि दफन की जाने वाली लड़की; क्योंकि बिना किसी पाप के उस की हत्या की गयी है।

20 अर्थात् मौत के समय यह कर्म-पत्र लपेट दिए जाते हैं, फिर कियामत के दिन हिसाब के लिए खोल दिए जाएंगे।

21 अर्थात् जब उखेड़ दिया जाएगा जैसे छत उखेड़ी जाती है।

22 अर्थात् अल्लाह का गुस्ता और बनू आदम के पाप उसे भड़का देंगे।

23 अर्थात् परहेजगारों के करीब कर दी जाएगी, यह पूरे 92 हैं, जिन में शुरू के 6 का सम्बंध संसार से है, और अन्तिम 6 का सम्बंध आखिरत से है।

1 अर्थात् कि वह बीज जैसे कमजोर वस्तु से जब वह पहली बार उगता है तो धरती में फट जाता है, अर्थात् उस में यह शक्ति नहीं थी कि वह धरती को फाड़ कर बाहर निकले यह शक्ति हम ने उसे दी है।

2 जो इन्सान की रोजी है, अर्थात् पौदा बराबर बढ़ता रहता है यहाँ तक कि अनाज और दाने में बदल जाता है।

3 **قضية** एक हरा पौदा मुराद साग और तरकारी जो लटकती है।

4 **ابا** वह घास और चारा जो स्वयं उपजे जिसे बोया न जाता हो, जिसे पशु खाते हैं।

5 **صاحبة** कियामत के दिन की चीख जो इतनी भयंकर होगी कि कानों को बहरा कर देगी।

6 यह सब से खास करीबी लोग हैं और इस लायक हैं कि उनके साथ नरमी की जाए, तो ऐसे लोगों से उस का भागना बे-हद भयानकपन के कारण ही हो सकता है।

14 तो उस दिन प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा।

15 मैं कसम खाता हूँ पीछे हटने वाले<sup>2</sup>

16 चलने-फिरने वाले छिपने वाले सितारों की<sup>4</sup>

17 और रात की जब जाने लगे।

18 और सवेरे की जब चमकने लगे।<sup>6</sup>

19 वे-शक यह एक महान रसूल का कहा हुआ है।<sup>7</sup>

20 जो शक्तिशाली है<sup>8</sup> अर्श वाले (अल्लाह) के पास सम्मानित है।

21 जिसका वहाँ (आकाशों पर आदेश का) पालन किया जाता है<sup>10</sup> (वह) अमीन है।<sup>11</sup>

22 और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।<sup>12</sup>

23 उसने उस (फरिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।<sup>13</sup>

24 और यह<sup>14</sup> रैब (परोक्ष) की बातें बताने में कंजूस भी नहीं है।<sup>15</sup>

25 और यह (कुरआन) मर्दूद शैतान का कहा हुआ नहीं।<sup>16</sup>

26 फिर तुम कहाँ जा रहे हो।

27 यह तो सारे संसार वालों के लिए नसीहत नामा (शिक्षापत्र) है।

28 (विशेषरूप से उसके लिए), जो तुममें से सीधे रास्ते पर चलना चाहे।

29 और तुम बिना सारे जहाँ के रब के चाहे, कुछ नहीं चाह सकते।

## सूरतुल इफ्तार - 82

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 जब आकाश फट जाएगा।<sup>18</sup>

1 अर्थात् जब कर्म-पत्र खोल दिए जाएंगे तो प्रत्येक व्यक्ति को यह पता चल जाएगा कि वह कैसा कर्म कर के संसार से आया है बुराई या भलाई।

2 अल्लाह तआला सितारों की कसम खा रहा है जो दिन को अपने मन्जर से पीछे हट जाते हैं, और सूर्य के प्रकाश के कारण दिखाई नहीं देते।

3 जो अपने स्थान पर चलते रहते हैं।

4 और जो डूबने के समय छुप जाते हैं, और कनास, कनास से है जिस में वहशी जानवर जैसे हिरण वगैरा छुपते हैं।

5 अर्थात् जब वह चली गई हो और उसका अंधेरापन खतम होने लगा हो, और उजाला होने लगा हो।

6 अर्थात् सवेरे की जब वह भीनी भीनी और सुहानी हवा लेकर आ गई हो।

7 अर्थात् जिब्रईल عليه السلام का; क्योंकि वही कुरआन अल्लाह की ओर रसूलुल्लाह ﷺ के पास लेकर उतरते थे।

8 अर्थात् बहुत शक्तिशाली है, जो भी काम उस के हवाले किया जाए उसे पूरी शक्ति के साथ करता है।

9 अर्थात् अल्लाह के पास बड़े मर्तबा वाला है।

10 अर्थात् फरिश्तों में उसके आदेश का पालन होता है, वे उसकी ओर आते हैं और उस की बात मानते हैं।

11 अर्थात् वह्य के बारे में अमीन और भरोसा के काबिल है।

12 साथी से मुराद मुहम्मद ﷺ हैं, उन्हें साथी यह कहने के लिए बताया गया है कि वह तुम्हारे वंश और नगर के हैं जिन्हें तुम खूब जानते हो, वह लोगों में सब से बड़े बुद्धिमान और पुर्ण हैं, (फिर तुम उन्हें दीवाना क्यों कह रहे हो?) क्या यह स्वयं तुम्हारे पागलपन का सबूत नहीं है?)

13 अर्थात् मुहम्मद ﷺ ने जिब्रईल عليه السلام को असली रूप में देखा है, उन के ६०० बाजू थे, मुजाहिद कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने उन्हे अन्याद की ओर जो मक्का के पूरब में है, देखा।

14 अर्थात् मुहम्मद ﷺ।

15 अर्थात् आप आकाश की खबरें बताने में बखीली नहीं करते, और वह्य को लोगों को अच्छी तरह बता और सिखा देते हैं।

16 अर्थात् यह कुरआन किसी शैतान की बात नहीं, जो आसमान की कुछ बातें चोरी छुपे सुन लेते हैं, और जिन्हें शिहाबे-साकिब से मार मार कर भगाया जाता है।

17 अर्थात् किस रास्ते पर जा रहे हो, क्या यह उस रास्ते से जिसे हमने तुम से बयान किया अधिक स्पष्ट है?

18 फरिश्तों के उतरने के कारण फट जाएगा।

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انشَرتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ

فُجِرَتْ ۝ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعِثَتْ ۝ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ

وَأَخَّرَتْ ۝ يَأْتِيهَا الْإِنْسَانُ مَا عَرَفَ رَبِّكَ ۝ الْكَرِيمِ ۝ الَّذِي

خَلَقَكَ فَسَوَّنَكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالذِّينِ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا

كُنِينِ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ

الْفَجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝ يَصَلُّونَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِعَائِينَ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ ثُمَّ مَّا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۝ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَبِلِّ الْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا أَكَلُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝ أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ

مَبْعُوثُونَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

2 और जब सितारे झड़ जाएंगे।<sup>19</sup>

3 और जब सागर बह चलेंगे।<sup>20</sup>

4 और जब कब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जाएंगी।<sup>21</sup>

5 उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए (अर्थात् अगले पिछले कर्मों को) जान लेंगा।<sup>22</sup>

6 हे इन्सान! तुझे अपने करीम रब से किसने बहकाया?<sup>23</sup>

7 जिस (रब ने) तुझे पैदा किया<sup>24</sup> फिर ठीक-ठाक किया<sup>25</sup> फिर (उचित रूप से) बराबर बनाया।<sup>26</sup>

8 जिस रूप में तुझे चाहा ढाला।<sup>27</sup>

19 अर्थात् बिखर-बिखर कर गिरने लगेंगे।

20 एक कौल यह है कि आपस में मिल कर सब एक हो जाएंगे, या वह फूट पड़ेंगे जैसे ज्वालामुखी फूटता है, और यह कियामत आने से पहले होगा, (जैसा कि इस से पहली वाली सूरत में गुजरा है।)

21 अर्थात् उस की मिट्टी पलट दी जाएगी और उस के मुँदे बाहर आ जाएंगे।

22 अर्थात् जो अच्छे और बुरे कर्म उसने आगे भेजा होगा, और जो उसने पीछे छोड़े होंगे उनका ज्ञान कर्म-पत्र के बिखरे जाने के समय हो जाएगा, उस की कोई अच्छाई और बुराई उस से छुपी नहीं रहेगी।

23 अर्थात् फिर किस चीज ने तुझे बोक में डाल दिया कि तूने अपने रब्वे करीम का इन्कार किया, और एक कौल यह है कि उस के बोक में रखने से मुराद अल्लाह का उसको माफ किए रहना और उसे अपनी फकड़ में लेने में जल्दी न करना है।

24 जिस रब ने तुझे मनी से पैदा किया जब कि तू कुछ नहीं था।

25 अर्थात् ऐसा इन्सान बना दिया जो देखता सुनता हो, और अकल रखता हो।

26 अर्थात् तुझे सीधी कामत और अच्छे रूप का बनाया, और तेरे अंगों को फिट-फाट बनाया।

27 अर्थात् अपनी चाहत के अनुसार उसने तेरी जैसी शकल चाही बनाई,



किसी चीज का अधिकारी न होगा, और सारे आदेश उस दिन अल्लाह के ही होंगे।

## सुरतुब मुतफिफोन - 83

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहनत बहुत रद्द करने वाला है।  
 1 बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए।  
 2 कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा पूरा लेते हैं।  
 3 और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं<sup>10</sup>, तो कम देते हैं।  
 4 क्या उन्हें अपने मरने के बाद जीवित हो उठने का विश्वास नहीं है।  
 5 उस बड़े भारी दिन के लिए।  
 6 जिस दिन सभी लोग सारे जगत के रब के सामने खड़े होंगे।  
 7 बे-शक कुकर्मियों का नाम-ए-आ'माल (कर्म पत्र) सिज्जीन में है।  
 8 तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है?<sup>14</sup>  
 9 यह तो लिखी हुई किताब है।  
 10 उस दिन झुटलाने वालों की बड़ी दुर्गत है।  
 11 जो बदले और दण्ड के दिन को झुटलाते रहे।  
 12 उसे केवल वही झुटलाता है, जो सीमा उल्लंघन कर जायें वाला और पापी होता है।  
 13 जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं<sup>16</sup>, तो कह देता है कि यह अगले लोगों की कथाएँ हैं।  
 14 यूँ नहीं! बल्कि उनके दिलों पर उनके कर्म के कारण मोरचा चढ़ गया है।

7 अर्थात् उस दिन न कोई फ़ैसला कर सकेगा, और न कोई किसी के लिए कुछ कर सकेगा, किसी को कोई अधिकार प्राप्त न होगा सिवाए रब्बुल आलमीन के, उस दिन अल्लाह किसी को किसी चीज का मालिक नहीं बनाएगा जैसा कि उस ने दुनिया में बनाया था, सारे अधिकार उसी के हाथ में होंगे।

8 इन्हे अब्बास से रिवायत है कि नबी जब मदीना आए तो मदीना वाले नाप-तौल में बहुत बुरे लोग थे, तो अल्लाह तआला ने यह सुरत उतारी, इस के उतरने के बाद उन्होंने अपना नाप-तौल ठीक कर लिया, और इस एतेबार से भी वे अच्छे हो गए।

9 **تطفیف** का अर्थ है नाप-तौल में थोड़ी बहुत कमी करना, कभी-कभी लोगों के पास दो बटखरे होते थे, एक से नाप कर लोगों को देते थे, और दूसरे से लिया करते थे।

10 जब कोई चीज अपने लिए खरीदते हैं तो पूरा पूरा नाप-तौल कर लेते हैं।

11 और जब कोई चीज दूसरों को नाप या तौल कर देते हैं तो उस नाप या तौल में कमी करते हैं।

12 अर्थात् उन डंडी मारने वालों को इसका ध्यान नहीं होता कि वे अपनी कुब्रों से उठाए जाएंगे, और जो कुछ कर रहे हैं उन से उस की पूछ-ताछ होगी, क्या उन्हें इस का विश्वास नहीं कि वे इस बारे में सोचें और इस के बुरे परिणाम से डर कर इसे छोड़ दें।

13 अर्थात् जिस दिन लोग अपने रब के सामने खड़े होंगे, और उसके आदेश तथा न्याय की प्रतीक्षा करेंगे और अपने बदले या हिसाब का इन्तिज़ार कर रहे होंगे, इसमें इस बात का प्रमाण है कि कम नापना बहुत ही भयंकर जुर्म है, क्योंकि इसके द्वारा दूसरों का धन ना-हक खाया जाता है।

14 अर्थात् कुकर्मियों के नाम जिन में कम तौलने वाले भी शामिल हैं जहन्नमियों के रजिस्टर में लिखे होंगे, या वे कैद और तंगी में होंगे।

15 अर्थात् यह ऐसी किताब है जिसमें उन के नाम होंगे, एक कौल यह है कि सिज्जीन असल में सिज्जील है जो सिजिल से है, जिसके मायने रजिस्टर और किताब के हैं।

16 अर्थात् बदकार और पापी जो सीमा पार किया हुवा हो,।

17 जो मुहम्मद पर उतारी गई हैं।

18 अर्थात् यह पहले लोगों की कथाएँ और उनकी अविश्वासनीय बातें हैं जिन्हें उन लोगों ने अपनी किताबों में लिख रखा है।

19 यह सीमा पार करने वाले कुकर्मियों के लिए डॉट फटकार है, कि वे ऐसी बुरी बात न कहें और इसे झुटलाने से बचें।

20 अर्थात् उनके पाप इतने अधिक होगए हैं कि उसने उनके दिलों को घेर

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفَجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ﴿٧﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ﴿٨﴾ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَإِلَىٰ يَوْمِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿١١﴾ وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ إِذِ انْتَبِهُ عَلَيْهِ إِبْنُ آدَمَ إِذْ أَنشَأَ نَادَىٰ سَطِيرٌ ﴿١٣﴾ أَلْأَلْوِينَ ﴿١٤﴾ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٥﴾ كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمِذٍ لَّحَجُونَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُنْفَخُ هَذَا الَّذِي كُتِبَ بِهِ يَوْمِذٍ ﴿١٨﴾ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٩﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿٢٠﴾ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢١﴾ يُشْهَدُهُ الْمُقْرَبُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٣﴾ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٢٤﴾ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٥﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَّخْتُمٍ ﴿٢٦﴾ خِتْمُهُ مِسْكٌَ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَفَّسْ الْمُنْتَفِسُونَ ﴿٢٧﴾ وَمَرَجَعُهُمْ إِلَىٰ سِينِيهِ ﴿٢٨﴾ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقْرَبُونَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ ءَامَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَرُونَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣٢﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُونَ ﴿٣٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ﴿٣٤﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِينَ ءَامَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٥﴾

9 कभी भी नहीं, बल्कि तुम तो दण्ड और बदले के दिन को झुटलाते हो।

10 बे-शक तूम पर इज्जत वाले रक्षक।

11 लिखने वाले नियुक्त हैं।

12 जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।

13 बे-शक नेक लोग (जन्त के ऐशो-आराम और) नेमतों में होंगे।

14 और यकीनन कुकर्मियों लोग जहन्नम में होंगे।

15 बदले वाले दिन उसमें जाएंगे।

16 वे उसमें से कभी गायब न हो जाएंगे।

17 तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है?

18 मैं फिर (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (और दण्ड) का दिन क्या है?

19 (वह है) जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिए

उस में तेरा कोई अधिकार नहीं रहा।

1 यह डॉट फटकार है अल्लाह की उस नवाज़िश से थोका खाने पर और उसे उसके कफ़ का माध्यम बनाने पर।

2 अर्थात् बदले के दिन का।

3 अल्लाह फरमा रहा है कि तुम बदले के दिन को झुटला रहे हो जब कि अल्लाह के फरिश्ते तुम्हारी निगरानी पर नियुक्त हैं और तुम्हारे सारे कर्म लिख रहे हैं, ताकि क़ियामत के दिन तुम से उस का हिसाब लिया जा सके।

4 अर्थात् बदले का दिन जिसे वे झुटलाया करते थे, उसी दिन उसकी लपट और शोलों में उन्हें जलना पड़ेगा।

5 अर्थात् कभी उससे अलग नहीं होंगे, बल्कि सदा उसी में रहेंगे।

6 अर्थात् सवाब और बदले का दिन।

- 15 कभी नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन से भी ओट में रखे जाएंगे।  
 16 फिर ये लोग निश्चित रूप से जहन्नम में झोंक दिए जाएंगे।  
 17 फिर कह दिया जाएगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे।  
 18 अवश्य अवश्य नेक लोगों का नाम—आमल इल्लीईन में है।  
 19 तुझे क्या पता कि इल्लीईन क्या है?।  
 20 (वह तो) लिखी हुई किताब है।  
 21 मुकर्रब फरिश्ते उसके पास उपस्थित होते हैं।  
 22 यकीननु नेक लोग बहुत सुख में होंगे।  
 23 मसहरीयों पर (बैठे) देख रहे होंगे।  
 24 तू उनके चेहरों से ही सुखों की सुखदा को पहचान लेगा।  
 25 यह लोग अत्यन्त शुद्ध मुहर लगी शराब पिलाए जाएंगे।  
 26 जिस पर कस्तूरी की मुहर लगी होगी, आगे बढ़ने वालों को उसी में आगे बढ़ना चाहिए।  
 27 और उसमें तस्नीम की मिलावट होगी।  
 28 अर्थात् वह जल श्रोत जिसका पानी मुकर्रब लोग पिएंगे।

लिया है। तिर्मिज़ी ने अबू हुरैर: ॥ से रिवायत की है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया कि बन्दा जब पाप करता है तो उसके दिल पर एक काला नुक्ता पड़ जाता है, यदि तौबा कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, और यदि तौबा के बजाए पाप पर पाप किए जाता है तो वह कालक बढ़ती रहती है यहाँ तक कि उसके पूरे दिल पर छा जाती है, यही वह जंग है जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में किया है।

1 अर्थात् क्रियामत के दिन उन्हें उनके रब के दीदार से रोक दिया जाएगा, वे उसे नहीं देख सकेंगे जबकि मोमिन उसे देखेंगे। काफिर जिस प्रकार संसार में उसकी तौहीद स्वीकार करने से महरूम थे उसी प्रकार वे क्रियामत के दिन उस के दीदार से भी महरूम होंगे।

2 अर्थात् नरक में डाल दिए जाएंगे जहाँ वे उस की गर्मी चखेंगे।

3 अर्थात् उन के नाम इल्लीईन वालों में लिखे होंगे, और इल्लीईन से मुराद जन्नत है या जन्नत का ऊपरी भाग है, और अबरार से मुराद नेक लोग हैं।

4 अर्थात् ऐ मुहम्मद! आप को क्या पता कि इल्लीईन क्या है? यह तरीका इल्लीईन की शान बढ़ाने के लिए अपनाया गया है।

5 अर्थात् जिस किताब में उनके नाम दर्ज हैं वह एक लिखी हुई किताब है।

6 अर्थात् उस किताब के पास फरिश्ते उपस्थित रहते हैं, और उसे देखते रहते हैं, और एक कौल यह है कि उसमें जो कुछ दर्ज है क्रियामत के दिन उस की गवाही देंगे।

7 **ارائك، اريكه** की जमअ है, जिसके अर्थ छपरखाट और ऐसे सिंहासन के हैं जिसे दुल्हन के लिए तैयार किया जाता है।

8 अर्थात् उन उपहारों को देख रहे होंगे जो अल्लाह ने उनके लिए तैयार किए हैं, या अल्लाह की दीदार से अपनी आँखों को खुश कर रहे होंगे।

9 तुम उन्हें देखते ही यह जान लोगे कि यह लोग बड़े ही आराम में हैं; क्योंकि उनके चेहरे पुर-नूर, खूबसूरत और सुन्दर होंगे।

10 **رحيق** साफ़ सुथरा शराब है, जिसमें किसी खोट की मिलावट न हो, और न कोई ऐसी चीज़ मिली हुई हो जो उसे खराब कर दे।

11 अर्थात् उसे किसी ने छुवा नहीं होगा, यहाँ तक कि जन्तियों के लिए ही उस की मुहर तोड़ी जाएगी। और उसकी अन्तिम घूँट कस्तूरी होगी, जब पीने वाला पी कर अपना मुँह बर्तन से हटाएगा तो अपनी अन्तिम घूँट से कस्तूरी की खुशबू पाएगा, और एक कौल यह है कि उस शराब के बर्तन पर जो मुहर होगी वह कस्तूरी की होगी।

12 अर्थात् उसकी चाहत रखने वालों को उसकी ओर बढ़ना चाहिए, तनाफूस का मायना किसी चीज़ में झगड़ने और उसे अपने लिए चाहने के हैं ताकि दूसरा उसे न पा सके।

13 अर्थात् उस में तस्नीम मिली होगी, और तस्नीम ऐसी शराब है जो जन्नत के ऊपरी भाग से एक चश्मे से बहती हुई आकर उन पर गिरेगी, और जन्नत की सब से अच्छी शराब होगी।

14 अर्थात् तस्नीम ऐसा जल-स्रोत है जिस से मुकर्रब लोग पिएंगे। अबरार नेकोकारों के जाम में उस की मिलानी होगी, जैसे शराब में केवड़ा या

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٢٥﴾ هَلْ تُوْبَ الْكَفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٢٦﴾

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ﴿١﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ﴿٢﴾ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحَقَّتْ ﴿٥﴾ تَبَّأْتِهَا الْإِنْسُنُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَى رَبِّكَ كَدْحًا فَمَلَقْتَهُ ﴿٦﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ﴿٧﴾ فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حِسَابًا سَيِّئًا ﴿٨﴾ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿٩﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ وِرَآءَ ظَهْرِهِ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصَلِّي سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿١٣﴾ إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّنْ نُّجِزَهُ ﴿١٤﴾ وَإِنَّ رَبَّهُ بَادٍ بِصَيْرِهِ ﴿١٥﴾ فَلَا أَقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْءَانُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْذِبُونَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾

25 बे-शक पापी लोग ईमान वालों की हँसी उड़ाया करते थे।

26 और उनके पास से गुज़रते हुए कनखियों से उनका अपमान करते थे।

27 और जब अपनों की ओर लौटते तो दिल लगी करते थे।

28 और जब उन्हें देखते तो कहते कि यकीननु यह लोग गुमराह हैं।

29 यह उनपर निगराँ बनाकर तो नहीं भेजे गए।

30 तो आज ईमान वाले उन काफिरों पर हँसेंगे।

31 सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे।

32 कि अब इंकार करने वालों ने जैसा वे किया करते थे पूरा पूरा उसका बदला पा लिया।

गुलाब का अर्क (रस) मिलाकर दिया जाता है।

25 अर्थात् काफिर मोमिनो की हँसी उड़ाया करते थे, और उन पर भिन्नियाँ कसा करते थे।

26 **فمز** से है, जिसका अर्थ है भवों और कन्खियों द्वारा इशारा करना, अर्थात् उन्हें इस्लाम लाने पर शरम दिलाते थे।

27 अर्थात् जब यह काफिर इन सभाओं से अपने घरों को लौटते तो अपनी हलत पर इतरते और खुश होते हुए और ईमान वालों से दिल लगी करते हुए लौटते थे।

28 अर्थात् यह काफिर मुसलमानों पर अल्लाह की ओर से निगराँ और पहरेदार बनाकर तो नहीं भेजे गए हैं कि उस ने उन्हें इस बात की जिम्मेदारी दी हो कि वे उनकी हालतों और कर्मों को देखते रहें, और उन पर बोलियाँ कसते रहें।

29 अर्थात् उस दिन ईमान वाले उन काफिरों पर जब उन्हें अपमानित और हारे धके हुए देखेंगे तो हँसेंगे जैसे काफिर उन पर संसार में हंसा करते थे।

30 अर्थात् ईमान वाले ऐश-व-आराम में सिंहासन पर बैठे होंगे, अल्लाह के इन दुश्मनों को देख रहे होंगे जो अजाबे-इलाही में गिरफ्तार होंगे।



## सूरतुल इंशिकाक - 84

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रझम करने वाला है।

- 1 जब आकाश फट जाएगा।
- 2 और अपने रब के आदेश को सतर्क होकर सुनेगा।<sup>2</sup> और उसी के लायक वह है।<sup>3</sup>
- 3 और धरती (खींच कर) फैला दी जाएगी।<sup>4</sup>
- 4 और उसमें जो है उगल देगी और खाली हो जाएगी।<sup>5</sup>
- 5 और अपने रब के आदेश पर कान लगाएगी। और उसी के लायक वह है।
- 6 ऐ इन्सान! तू अपने रब से मिलने तक यह कोशिश<sup>6</sup> और सारे काम और मेहनत करके उससे मुलाकात करने वाला है।<sup>7</sup>
- 7 तो उस समय जिस व्यक्ति के दाहिने हाथ में नाम-ए-आमाल (कर्मपत्र) दिया जाएगा।<sup>8</sup>
- 8 उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जाएगा।<sup>9</sup>
- 9 और वह अपने परिवार वालों की ओर<sup>10</sup> हसी खुशी लौट आएगा।
- 10 मगर जिस व्यक्ति का नाम-ए-आमाल उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा।<sup>12</sup>
- 11 तो वह मृत्यु को बुलाने लगेगा।<sup>13</sup>
- 12 और भड़कती हुई जहन्नम में<sup>14</sup> प्रवेश करेगा।
- 13 यह व्यक्ति अपने परिवार वालों (संसार) में प्रसन्न था।<sup>15</sup>
- 14 उसका विचार था कि अल्लाह की ओर लौटकर ही न जाएगा।<sup>16</sup>
- 15 यह कैसे हो सकता है।<sup>17</sup> हालांकि उसका रब उसे अच्छी

तरह देख रहा था।<sup>18</sup>

- 16 मुझे सांझ की लालिमा की कसम।<sup>19</sup>
- 17 और रात की, एवं उसकी इकड़ी की हूई चीजों की कसम।<sup>20</sup>
- 18 और पूर्ण चन्द्रमा की कसम।<sup>21</sup>
- 19 अवश्य तुम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुँचोगे।<sup>22</sup>
- 20 उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते?<sup>23</sup>
- 21 और जब उनके पास कुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते?<sup>24</sup>
- 22 बल्कि जिन्होंने कुफ्र किया वह झुठला रहे हैं।<sup>25</sup>
- 23 और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है, जो कुछ यह दिलों में रखते हैं।<sup>26</sup>
- 24 उन्हें दर्दनाक अज़ाबों (कष्टदायी यातनाओं) की सूचना सुना दो।<sup>27</sup>
- 25 मगर ईमान वालों और नेक लोगों को अग्निन्त और खतम न होने वाला बदला दिया जाएगा।<sup>28</sup>

## सूरतुल बुरुज - 85

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रझम करने वाला है।

- 1 बुजों वाले आकाश की कसम।
- 2 वायदा किए हुए दिन की कसम।<sup>30</sup>
- 3 गवाही देने वाले की<sup>31</sup> और जिसकी गवाही दी गई है<sup>32</sup> उसकी कसम।
- 4 (कि) खाई वाले मारे गए।<sup>33</sup>

1 अर्थात् आकाश का फटना कियामत की निशानियों में से है।

2 अर्थात् उस की बात मानेगा और जो आदेश देगा उसे ध्यान से सुनेगा, और उसके अनुसार कर्म करेगा।

3 वह उसी के लायक भी है कि सुने और इताअत करे।

4 अर्थात् उस पर जो पर्वत वगैरा हैं उन्हें कूट कर बराबर कर दिया जाएगा, और वह एक चटयल मैदान की तरह हो जाएगी।

5 अर्थात् उसमें जो मुद्दे दफन थे उन्हें निकाल कर बाहर कर देगी, और उन्हें अल्लाह के इवाले कर देगी, और स्वयं खाली हो जाएगी ताकि उनके बारे में अल्लाह तआला अपना फैसला जारी करे।

6 **يا ايها الانسان** से इन्सान की जिन्स मुराद है, जिन में काफिर और मोमिन सभी शामिल हैं, अर्थात् तेरा सम्पूर्ण प्रयास तुझे तेरे रब की ओर ले जा रहा है, और तू खींचा उसी की ओर बढ़ता चला जा रहा है।

7 अर्थात् तू अपने अच्छे बुरे कर्मों के साथ अपने रब से जा मिलेगा।

8 यह ईमान वाले होंगे जिन्हें उनका कर्म-पत्र उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।

9 उनके पाप उन पर पेश किए जाएंगे और अल्लाह तआला बिना किसी प्रश्न के उन्हें माफ कर देगा, बुखारी तथा मुस्लिम में आइशा رضي الله عنها से रिवायत है कि नबी صلى الله عليه وسلم ने फरमाया : जिस से हिसाब में कुरेद किया गया तो उसे अज़ाब में धर लिया जाएगा, वह कहती हैं कि मैं ने कहा क्या अल्लाह यह नहीं फरमा रहा है कि उन से आसान हिसाब लिया जाएगा? तो आप ने फरमाया : यह हिसाब नहीं बल्कि पेशी होगी, और जिस से कियामत के दिन हिसाब में खोद कुरेद किया गया वह अवश्य अज़ाब में धर लिया जाएगा।

10 इस से मुराद उसकी जन्तवी विधियाँ और बड़ी आँखों वाली हूरे हैं।

11 अर्थात् वह अपने सम्मान से खुश होगा।

12 क्योंकि उसका दाहिना हाथ उसकी गर्दन से बंधा हुवा होगा और उसका बायाँ हाथ उसके पीछे होगा, और यह काफिर तथा ना-फर्मान लोग होंगे।

13 अर्थात् जब वह अपना कर्म-पत्र पढ़ेगा तो चीखे चिल्लाएगा, शोर मचाएगा कि मैं तो मारा गया, मैं तो हलाक हो गया।

14 अर्थात् जहन्नम की भड़कती हुई आग में जाएगा, और उसकी जलन और गर्मी उसे सहनी पड़ेगी।

15 अर्थात् वह चाहत के साथ अपनी इच्छाओं पर डटा रहता था, और परलोक के भयानकपन की उसे कोई परवाह नहीं थी।

16 अर्थात् वह यह समझ रहा था कि उसे बदले के लिए अल्लाह की ओर पलटना नहीं है।

17 अर्थात् उसे जरूर लौटना होगा।

18 अर्थात् अल्लाह उसे और उसके कर्मों को खूब जानता है, उससे उसकी कोई चीज़ भी छुपी नहीं है, अवश्य वह उसे उसके कुकर्मों की सज़ा देकर रहेगा।

19 अल्लाह तआला उस लालिमा की कसम खा रहा है जो आकाश के किनारे सूरज डूबने के बाद इशा के समय तक रहती है।

20 अर्थात् रात का अंधेरापन जिन चीजों को इकट्ठा कर लेती और समेट लेती है, क्योंकि दिन में चीजें फैली और बिखरी रहती हैं, रात आते वे सब अपने ठिकाने की ओर सिमट आती हैं।

21 जब वह कुमरी (चाँद के) महीने के आधे में पूर्ण होजाता है।

22 अर्थात् एक झलत से दूसरी झलत की ओर जैसे मालदारी और गरीबी, मौत और जीवन, और जन्म या जहन्नम में जाने वगैरा विभिन्न हालतों की ओर।

23 अर्थात् कुरआन पर ईमान नहीं लाते जबकि ऐसे प्रमाण मौजूद हैं जो उस पर ईमान लाने को वाजिब और लाज़िम करार दे रहे हैं।

24 कुरआन की तिलावत के समय सजदा करने और आजिज़ी अपनाने से उन्हें कौन सी चीज़ रोक रही है, और एक कौल यह है कि इससे मुराद सन्द-ए-तिलावत है, अर्थात् जब उनके सामने सजदे वाली आयत पढ़ी जाती है तो सजदा करने से उन्हें कौन सी चीज़ रोकती है।

25 अर्थात् कुरआन को झुठलाते हैं जिसमें तौहीद, दोबारा जिन्दा किए जाने, सज़ा और बदला का चर्चा है।

26 अर्थात् अल्लाह उनके झुठलाने को जो वे अपने दिल में छुपाए हुए हैं खूब जानता है।

27 इसे डांट के रूप में खुश-खबरी कहा गया है।

28 अर्थात् जो कभी खतम या कम न होगा।

29 बुजों से सितारों की मंजिलें मुराद हैं, यह 92 सितारों की अलग अलग 92 मंजिलें हैं।

30 इससे मुराद कियामत का दिन है जिसका वादा किया गया है।

31 शाहिद से मुराद वह सारी मख़बूक हैं जो उस दिन गवाही देंगे।

32 मशहूद से मुराद वह भयानक जराएम हैं जिन्हें इन मुजरिमों ने इन्हीं गवाहों के साथ किया होगा जो उनके खिलाफ गवाहियाँ देंगे, और यह गवाह वे सारे लोग होंगे जो अल्लाह के रास्ते में शहीद किए गए होंगे, जैसा कि अस्हाबे उख़दूद का घटना है जिसका चर्चा आगे आ रहा है।

33 अर्थात् उन लोगों के लिए हलाकत और बर्बादी है जिन्होंने अल्लाह पर ईमान लाने वालों को खन्दकों में डाल कर हलाक कर दिया, और यह एक काफिर राजा और उसका लश्कर था, जिसने अपने प्रजा में से कुछ लोगों को ईमान लाने के जुर्म में ग़दा खोदवाकर और उसमें आग का अलाव तैयार करके उसमें डाल दिया था और राजा और उसके साथी यह मन्ज़र देख रहे थे।

- 3 वह एक आग थी ईंधन वाली<sup>1</sup>  
 4 जबकि वह लोग उसके आस पास बैठे थे<sup>2</sup>  
 5 और जो मुसलमानों के साथ कर रहे थे कियामत के दिन उसके गवाह होंगे<sup>3</sup>  
 6 यह लोग उन मुसलमानों के किसी अन्य पाप का बदला नहीं ले रहे थे, सिवाय इसके कि वे अल्लाह ग़ालिब, प्रशंसा के लायक की हस्ती पर ईमान लाए थे।<sup>4</sup>  
 7 जिसके लिए आकाशों और धरती का राज्य है, और अल्लाह (तआला) के सामने हर चीज़ है।<sup>5</sup>  
 8 बे-शक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को जलाया, फिर क्षमा भी न मांगी<sup>6</sup> उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और जलने की यातना है।<sup>8</sup>  
 9 बे-शक ईमान स्वीकार करने वालों और नेक कार्य करने वालों के लिए वे बाग हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। यही बड़ी सुफलता है।<sup>9</sup>  
 10 यकीनन तेरे रब की पकड़ अधिक कठोर है।<sup>10</sup>  
 11 वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा जन्मा करेगा।<sup>10</sup>  
 12 वह बड़ा बड़खने वाला<sup>11</sup> और अत्यधिक प्रेम करने वाला है।<sup>12</sup>  
 13 अर्श का मालिक महान है।<sup>13</sup>  
 14 जो चाहे उसे कर देने वाला है।<sup>14</sup>  
 15 तुझे सेनाओं की खबर भी मिली है।<sup>15</sup>  
 16 अर्थात फिर्औन और समूद की।<sup>16</sup>  
 17 (कुछ नहीं) बल्कि काफिर तो झूठलाने में पड़े हुए है।<sup>16</sup>  
 18 और अल्लाह (तआला) भी उन्हें प्रत्येक ओर से घेरे हुए है।<sup>17</sup>  
 19 बल्कि यह कुरआन है ही बड़ी शान वाला।<sup>18</sup>

1 ईंधन जिसे जलाया जाता है।

2 खन्दक के चारों ओर कुर्सियों पर बैठ कर आग को घेरे में ले रखा था, और ईमान वालों के जलने का तमाशा देख रहे थे।

3 अर्थात वह कियामत के दिन स्वयं अपने ही विरुद्ध अपने किए की गवाही देंगे कि उन्होंने ईमान वालों को उन के धर्म से फेरने के लिए आग में डाला था, यह गवाही उनके खिलाफ स्वयं उनकी जुबान और उनके हाथ पेर देंगे।

4 अर्थात उन मुसलमानों का जुर्म बस इतना ही था कि वह अल्लाह ग़ालिब पर जो प्रत्येक प्रकार की तारीफ के लायक है ईमान ले आए थे, इसके सिवाय उनका कोई दूसरा जुर्म नहीं था।

5 अर्थात मोमिनों के साथ जो कुछ उन लोगों ने किया है उसकी गवाही अल्लाह भी देगा, क्योंकि उनके साथ उन लोगों ने जो कुछ भी किया है उसमें से कोई भी चीज़ उससे छुपी नहीं है, इसमें अस्हबे उखदूद को भयंकर धमकी है, और उन लोगों के लिए भलाई का वादा है जिन्हें अपने दीन पर जमे रहने के कारण सताया गया।

6 काफिरों ने मोमिनों को आग में डाल दिया, इसके सिवाय उन्हें कोई और अधिकार दिया ही नहीं कि वह अल्लाह के साथ कुफ्र करते, इस तरह उनके धर्म के बारे में उन्हें आजमाया गया, ताकि वह इस से फिर जाएं।

7 अपनी इस घटना हकत और कुफ्र से तौबा भी नहीं की।

8 क्योंकि उन्होंने भी ईमान वालों को आग में जलाया था।

9 अर्थात अत्याचारियों और सर्कशों के लिए उस की पकड़ बहुत कठोर है।

10 अर्थात उसने संसार में सारी मख़्लूक़ात को पैदा किया है और कियामत के दिन भी वही मरने के बाद उन्हें दोबारा जीवित करेगा।

11 अर्थात वह अपने मोमिन बन्दों के पापों को बहुत बड़खाने वाला है, वे उन्हें पाप के कारण अपमाणिता नहीं करेगा।

12 अर्थात अपने वलियों से जो इसके फर्माबंदार हैं बहुत प्रेम करने वाला है।

13 अर्थात वही महान अर्श का मालिक है।

14 अर्थात बहुत ही बख़्शिश और करम वाला है।

15 अर्थात ऐ मुहम्मद! तुम्हारे पास उस काफिर जत्थे की बात पहुँच चुकी है जो अपने नबियों को झूठलाता था, जिनके पास उन से मुक़ाबला के लिए कोई जत्था नहीं था, और जत्थों की खबर से मुराद उन के अल्लाह की पकड़ में आने का घटना है, अर्थात तुम्हें इस की जानकारी होगई है कि अल्लाह ने उन्हें किस प्रकार पकड़ा।

16 बल्कि यह अरब के मुश्रिक भी उनकी तरह उन चीज़ों को झूठलाने में लगे हुए हैं जिन्हें तुम लेकर आए हो, उनकी घटनाओं से उन लोगों ने कोई नसीहत नहीं पकड़ी।

17 अर्थात इस बात की शक्ति रखता है कि उन पर भी वही अज़ाब भेज दे जो उन से पहले के काफिरों पर भेजा था।

## سُورَةُ الرُّوحِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرُّوْحِ ۝۱ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝۲ وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ۝۳  
 قِيلَ أَصْحَابُ الْأَعْدَادِ ۝۴ النَّارِ ذَاتِ الْوُجُوْدِ ۝۵ إِذْ هُرِّعَتْهَا  
 فَعُوْدٌ ۝۶ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝۷ وَمَا نَقَمُوا  
 مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝۸ الَّذِي لَهُ مُلْكُ  
 السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۝۹ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝۹  
 إِنَّا لِلَّذِينَ  
 فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ  
 عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝۱۰ إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ  
 جَنَّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۝۱۱ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝۱۱  
 إِنَّ بَطْشَ  
 رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝۱۲ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِي وَيُعِيدُ ۝۱۳ وَهُوَ الْعَفُوُّ الْوَدُوْدُ ۝۱۴  
 ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝۱۵ فَعَالَ لِمَا يُرِيدُ ۝۱۶ هَلْ أَنْتَ حَدِيثُ الْجُنُوْدِ  
 ۝۱۷ فَرِعُونَ وَمَعُوْدُ ۝۱۸ بِلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبِ ۝۱۹ وَاللَّهُ مِنْ  
 وَرَآءِهِمْ مُحِيطٌ ۝۲۰ بَلْ هُوَ قُرْءَانٌ مَجِيدٌ ۝۲۱ فِي رُوحٍ مَحْفُوْطٍ ۝۲۲

22 लौहे मस्फूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में लिखा हुआ है।<sup>19</sup>

## सुरतुतारिक - 86

- 3 शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहर्बान बहुत रहम करने वाला है।<sup>19</sup>  
 4 कसम है आकाश की और अंधेरे में रौशन होने वाले की।<sup>20</sup>  
 5 तुझे पता भी है कि वह रात को नमूदार (प्रकट) होनी वाली चीज़ क्या है?  
 6 वह रौशन सितारा है।<sup>21</sup>  
 7 कोई ऐसा नहीं जिस पर निगहबान (फरिश्ते) न हों।<sup>22</sup>  
 8 इन्सान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से बनाया गया है?  
 9 वह एक उछलते पानी (वीर्य) से<sup>23</sup> पैदा किया गया है।

18 अर्थात अनगिनत फज़ल, शरफ और बर्कत वाला है, यह कविता, कहानत और जादू नहीं है जैसा कि यह काफिर कह रहे हैं।

19 अर्थात लौहे मस्फूज़ में लिखा हुआ है, और अल्लाह के पास सुरक्षित है, शैतानों की उस तक पहुँच नहीं।

20 अल्लाह तआला आकाश की और रात में प्रकट होने वाले सितारों की कसम खा रहा है, सितारे को तारिक इसलिए कहा गया है कि वह रात में निकलता है, और दिन में गुप्त रहता है, और जो चीज़ें रात में निकलती हैं उन्हें तारिक कहा जाता है।

21 النجم الثاقب रौशन सितारा, जिसकी रौशनी इतनी तेज़ हो, गोया वह रात के अंधेरे को सखी से फाड़ रही हो।

22 वह कसम का जवाब है, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति पर अल्लाह की ओर से निगहबान नियुक्त हैं, और यह वही निग्रॉ फरिश्ते हैं, जो इन्सान की निग्रानी पर नियुक्त होते हैं, और उसके प्रत्येक क़ौल व फेल का रिकार्ड रखते हैं, और जो भी अच्छाई या बुराई करता है उसे लिख कर सुरक्षित रखते हैं।

23 अर्थात पानी के टोप से, जो तेज़ी से बच्चावानी में जाकर गिरता है, और वह



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ١ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ٢ أَنْتُمْ أَنثَابُ ٣ أَنْ كَلُّ  
 نَفْسٍ لَمَّا عَلِيهَا حَافِظٌ ٤ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ٥ خُلِقَ مِن مَّاءٍ  
 دَافِقٍ ٦ يُخْرَجُ مِن بَيْنِ الصَّلْبِ وَالرَّأْسِ ٧ إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ٨  
 يَوْمَ بُدِيَ السَّرَائِرُ ٩ فَآلَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرَ ١٠ وَالسَّمَاءَ ذَاتَ الرَّجَمِ ١١  
 وَالْأَرْضَ ذَاتَ الصَّعِجِ ١٢ إِنَّهُ لَقَوْلُ فَصْلٍ ١٣ وَمَاهُو بِالْهَيْدَلِ ١٤ إِنَّهُمْ  
 يَكِيدُونَ كَيْدًا ١٥ وَأَكِيدُ كَيْدًا ١٦ فَمِهْلُ الْكَافِرِينَ أَهْمُهُمْ وَوَيْدًا ١٧

سُبْحَانَكَ يَا أَعْلَى ١٧  
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 سَبَّحَ اسْمُ رَبِّكَ الْأَعْلَى ١ الَّذِي خَلَقَ فَسُوَّى ٢ وَالَّذِي قَدَرَفَهْدَى  
 ٣ وَالَّذِي أَخْرَجَ الرَّعَى ٤ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ٥ سَتَرْتُكَ  
 فَلَا تَنسَى ٦ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ٧ وَيَسِّرُكَ  
 لِلْيُسْرَى ٨ فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَى ٩ سَيِّدُكَرْمَنٍ يَخْشَى ١٠  
 وَبَنَجْنَهَا الْأَشْفَى ١١ الَّذِي بَصَلَى النَّارَ الْكُبْرَى ١٢ ثُمَّ لَا يَمُوتُ  
 فِيهَا وَلَا يَحْيَى ١٣ قَدِ افْلَحَ مَنْ تَزَى ١٤ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ١٥

- 7 जो पीट तथा छाती<sup>1</sup> के बीच से निकलता है।  
 8 बे-शक वह उसे फेर लाने पर अवश्य शांति रखने वाला है।<sup>2</sup>  
 9 जिस दिन पोशीदा (गुप्त) भेदों की जांच पड़ताल होगी।<sup>3</sup>  
 10 तो न कोई जोर चलेगा उसका और न कोई सहायक होगा।<sup>4</sup>  
 11 बारिश वाले आकाश की कसम।  
 12 और फटने वाली धरती की कसम।  
 13 बे-शक यह (कुरआन) अवश्य दो टूक निर्णय करने

मर्द और औरत दोनों का वीर्य है जिस से इन्सान की पैदाइश होती है, चूँकि दोनों पानी मिलकर एक हो जाता है इसलिए इसके लिए एक का सेगा लाया गया, नहीं तो वास्तव में वह मर्द और औरत दोनों का पानी होता है।

1 कहा जाता है कि रीढ़ से मुराद मर्द की रीढ़ है, और सीने की हड्डियों से मुराद औरत के सीने की हड्डियाँ हैं, सीने पर हार की जगह को तराइब कहते हैं, बच्चे की पैदाइश इन्ही दोनों पानियों से होती है, और एक कील के अनुसार सुल्ब और तराइब से मुराद शरीर के सारे अंग हैं।

2 अर्थात् मरने के बाद उसे दोबारा जीवित करने पर।  
 3 तबिली जांच पड़ताल की जाएगी कि उनमें से क्या ठीक थे और क्या गलत, जो सरान से मुराद अक़ीदा, नियत और गुप्त बातें हैं जो दिलों में छुपी रहती हैं, जब तक इन्सान उन्हें जाहिर नहीं करता स्पष्ट नहीं होती, इन सब की अच्छाई-बुराई उस दिन स्पष्ट हो जाएगी।

4 अर्थात् इन्सान उस दिन बेबस होगा, न तो स्वयं उसमें इतनी शक्ति होगी कि अपने आप को अल्लाह के अज़ाब से बचा सके और न ही कोई उसका सहायक होगा जो उसे उसकी मुसीबत से निकाल सके।

5 अर्थात् बारिश, रजیع का मायना लौटना और फलट कर आना है, और चूँकि बारिश भी बार बार लौट कर आती है, इसलिए उसे रजیع कहा गया है।

6 अर्थात् ऐसी चीज़ जिस के लिए धरती फट जाती है, अर्थात्, पौदे, फल और वृक्ष।

वाली<sup>7</sup> कथन है।

14 यह हँसी की (और व्यर्थ की) बात नहीं।

15 अल्बत्ता वे (काफिर) दाँव-घात में हैं।<sup>8</sup>

16 और मैं भी एक दाँव चल रहा हूँ।<sup>9</sup>

17 तू काफिरों को अवसर दे, उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।<sup>10</sup>

## सुरतुल आ'ला - 87

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

11 अपने बहुत बुलन्द रब के नाम की पाकी बयान कर।

12 जिसने पैदा किया और सही और स्वस्थ बनाया।

13 और जिसने ठीक-ठाक अनुमान लगाया और फिर रास्ता दिखाया।

14 और जिसने ताजा घास पैदा की।

15 फिर उसने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया।<sup>14</sup>

16 हम तुझे पढ़ाएंगे, फिर तू न भूलेगा।

17 मगर जो कुछ अल्लाह चाहे<sup>17</sup>, वह जाहिर और छुपा को जानता है।<sup>18</sup>

18 हम आप के लिए आसानी पैदा कर देंगे।<sup>19</sup>

19 तो आप नसीहत करते रहें यदि नसीहत कुछ लाभ दे।<sup>20</sup>

20 डरने वाला तो नसीहत ले लेगा।

21 (मगर) दुर्भाग्य पूर्ण उससे दूर रह जाएगा।<sup>21</sup>

22 जो बड़ी आग में जाएगा।<sup>22</sup>

7 अर्थात् कुरआन ऐसा कलाम है जो सत्य और असत्य के बीच फर्क करता है, और उसे स्पष्ट कर देता है।

8 अर्थात् अल्लाह के रसूल जो दीन लेकर आए हैं उसे विफल करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

9 और मैं भी उन्हें इस तरह ढील देता जा रहा हूँ कि उन्हें उसका एहसास नहीं, उन की दाँव का मैं उन्हें कठोर बदला दूंगा।

10 अर्थात् उन पर जल्द अज़ाब लाने की माँग न कर, उन्हें कुछ ढील दे दे ताकि वह अपनी दुश्मनी और सरकशी में और आगे निकल जाएँ।

11 प्रत्येक उस चीज़ से जो उसकी शान के लायक नहीं "सبحان रبي الأعلى" कह कर।

12 अर्थात् जिसने इन्सान को सीधे डील-डाल का बनाया, और उसने अंगों में बराबरी रखी और उसे समझ बूझ की नेमत अता की। और उसे मुकल्लफ होने के काबिल बनाया।

13 अर्थात् जिसने सारी चीज़ों का अनुमान किया और प्रत्येक व्यक्ति को उस मार्ग पर चलाया जो उन के लिए उचित है।

14 अर्थात् उन्हें सुखा कर सूखा और काला कर दिया, जबकि वह हरे भरे थे,।

15 अर्थात् कुरआन पढ़ाएंगे।

16 अर्थात् आप जो पढ़ेंगे उसे भूलेंगे नहीं, जिब्रईल عليه السلام जब वक्ष लेकर आते और अन्तिम आयत तक पढ़ कर अभी फारिग नहीं होते कि नबी عليه السلام इस डर से कि उसे भूल न जाएँ पढ़ना शुरू कर देते, तो यह आयत उतरी कि हम आप को ऐसा पढ़ा देंगे कि आप भूलेंगे नहीं, इस प्रकार अल्लाह तआला ने कुरआन को भूल जाने से आप की हिफाजत की।

17 सिवाय उस के जिसको अल्लाह आप से भुला देना चाहे।

18 अर्थात् सारी चीज़ों को जानता है, चाहे वह जाहिर हों या गुप्त।

19 अर्थात् जन्नत के कर्म को हम आप के लिए आसान कर देंगे।

20 अर्थात् ऐ मुहम्मद! आप लोगों को उन चीज़ों द्वारा नसीहत कीजिए जो हमने आप की ओर वक्ष की है, और भलाइ के मार्ग और दीन के अहकाम की ओर उनकी राहबरी कीजिए, और यह उस जगह जहाँ नसीहत लाभदायक हो, रहा वह व्यक्ति जिसे नसीहत कर दी गई और जिसके सामने हक पूरी स्पष्टता के साथ बयान कर दिया गया फिर भी उसने अपनी मन चाही की, और उद्दण्डता पर अड़ा रहा तो ऐसे व्यक्ति की नसीहत की जरूरत नहीं, यह उस अवस्था में जब दोबारा तिवारा दावत दी जा रही हो, और यदि पहले पहल दावत दी जा रही हो तो यह सभी को दी जाएगी।

21 अर्थात् आप की नसीहत से वह जरूर लाभ उठाएगा जो अल्लाह से डरता होगा, नसीहत के कारण उस में अल्लाह से डरने और अपनी इस्लाह करने की भावना अधिक बढ़ जाएगी, और इस से वह व्यक्ति लाभ न उठा सकेगा जो अपने कुकुर पर अड़ा रहेगा, और नसीहत से मुंह मोड़ेगा।

22 अर्थात् बड़ी भयानक आग, बड़ी आग से मुराद जहन्नम की आग है, और छोटी आग सांसारिक आग है।

- 13 जहाँ फिर न वह मर सकेगा <sup>1</sup> न जिएगा <sup>2</sup>, (बल्कि प्राण निकलने की अवस्था में पड़ा रहेगा)  
 14 बे-शक उसने सफलता प्राप्त कर ली, जो पाक हो गया <sup>3</sup>  
 15 और जिसने अपने रब का नाम याद रखा <sup>4</sup> और नमाज़ पढ़ता रहा।  
 16 लेकिन तुम तो साँसारिक जीवन को तर्जिह (श्रेष्ठता) देते हो।  
 17 और आखिरत (प्रलोक) अत्यन्त सुखद और स्थाई है।  
 18 यह बातें <sup>5</sup> पहली किताबों में भी हैं। <sup>7</sup>  
 19 (अर्थात्) इब्राहीम और मूसा की किताबों में <sup>8</sup>।

## सूरतुल् गाशिया - 88

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 क्या तुझे भी छिपा लेने वाली (प्रलय) (क़ियामत) की सूचना पहुँची है।  
 2 उस दिन बहुत से चेहरे ज़लील (अपमानित) होंगे।<sup>10</sup>  
 3 (और) मेहनत करने वाले <sup>11</sup> थके हुए होंगे।  
 4 वे दहकती हुई आग में जाएंगे।  
 5 और अत्यन्त गर्म (उबलते हुए स्रोत) चश्मे <sup>12</sup> का पानी उनकी पिलाया जाएगा।  
 6 उनके लिए मात्र काँटेदार दरख्तों <sup>13</sup> (वृक्षों) के अन्य कुछ खाना न होगा।  
 7 जो न मोटा करेगा और न भूख मिटाएगा।  
 8 बहुत से चेहरे उस दिन प्रसन्न और हरे-भरे होंगे।<sup>14</sup>  
 9 अपने कर्मों के कारण ख़ूश होंगे।<sup>15</sup>  
 10 उच्च स्वर्ग में होंगे।  
 11 जहाँ कोई बेहूदा (अश्लील) बात नहीं सुनेंगे।  
 12 जहाँ बहता हुवा चश्मा होगा।  
 13 (और) उसमें ऊँचे-ऊँचे तख़्त (सिंहासन) होंगे।  
 14 और प्याले रखे हुए (होंगे)।  
 15 और एक लाइन में रखे हुए तकिए होंगे।<sup>16</sup>  
 16 और मख़मली कालीनें बिछी होंगी।<sup>17</sup>

- 1 कि जिस अज़ाब में वह पड़ा है उससे छुटकारा पा जाए।  
 2 अर्थात् ऐसा जीवन जो उस के लिए लाभ-दायक हो।  
 3 अर्थात् जिसने शिर्क से पवित्रता अपनाई, और अल्लाह और उसकी वहदानियत पर ईमान ले आया, और उसके आदेश का पालन करता रहा।  
 4 और अपनी जुबान पर उसके नाम का ज़िक्र जारी रखा।  
 5 और पाँचों समय की नमाज़ की पाबन्दी की।  
 6 अर्थात् <sup>17</sup> <sup>18</sup> <sup>19</sup> <sup>20</sup> <sup>21</sup> से <sup>22</sup> तक की आयतों में जो बातें चर्चित हैं।  
 7 अर्थात् उनमें यह बातें चर्चित हैं।  
 8 अर्थात् अल्लाह ने इब्राहीम और मूसा <sup>19</sup> पर जो किताबें उतारी हैं उन में यह बात लिखी हुई थी कि परलोक संसार के मुक़ाबले बहुत अधिक उत्तम है।  
 9 <sup>23</sup> <sup>24</sup> के मायने में है, और <sup>25</sup> से मुराद क़ियामत है, अर्थात् ऐ मुहम्मद! आप के पास क़ियामत की बात आ चुकी है, उसे छिपा लेनी वाली इसलिए कहा गया है कि उसकी कठोरता और भयंकरपन सारी मख़्लूक को ढांप लेगी।  
 10 लोग क़ियामत के दिन दो दलों में बटे हुए होंगे, एक दल वालों के चेहरे झुके हुए अपमानित होंगे, उस अज़ाब के कारण जिसमें वह डाले जाने वाले होंगे।  
 11 वह पूजा में अधिक मेहनत करते थे और अपने आप को धका देते थे, लेकिन वह सब बेकार हो जाएगा और उन्हें उन पर कोई पुण्य नहीं मिलेगा, क्योंकि वे जिस कुफ़्र और गुम्राही में पड़े थे, उस पर डटे हुए थे।  
 12 अर्थात् ऐसे स्रोत से जिसका पानी बहुत गरम होगा।  
 13 यह एक काँटेदार झाड़ की किस्म है, जब वह हरा भरा रहे तो कुरैश की जुबान में उसे शबरक कहते हैं और जब सूख जाए तो ज़रीअ कहते हैं।  
 14 अर्थात् हर प्रकार की नेमतों से प्रसन्न और हरे भरे, और यह दूसरे दल के चेहरे होंगे जो अपने मामले के अच्छे परिणाम को देखकर खुशी से खिले होंगे।  
 15 अपने उस कर्म के कारण जो दुनिया में उन्होंने किया था ख़श होंगे क्योंकि उन्हें उसका इतना सवाब मिलेगा जो उन्हें प्रसन्न कर देगा।  
 16 अर्थात् लाइन में एक दूसरे से लगे हुए तकिए होंगे।  
 17 और कालीनें होंगी, जिनके झालर फले प्रकार के होंगे, जो सभाओं में चारों ओर जगह जगह फैली होंगी और जन्ती जहाँ आराम करना चाहेंगे कर सकेंगे।

بَلْ تُؤْمِرُونَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْآخِرَةَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٧﴾ إِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاٰوَّلٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوسٰى ﴿١٩﴾

سُوْرَةُ الْغٰشِيَةِ ﴿٨٨﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ  
 هَلْ اٰتٰنَكَ حَدِيْثٌ الْغٰشِيَةِ ﴿١﴾ وُجُوْهُ يَوْمَئِذٍ خٰشِعَةٌ ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ نّٰاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصَلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تَسْتَقْفِي مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ صَرِيْعٍ ﴿٦﴾ لَا يَسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ﴿٧﴾ وُجُوْهُ يَوْمَئِذٍ نّٰاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لَسَعِيْمًا رّٰضِيَةً ﴿٩﴾ فِي حَنَدٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَا تَسْمَعُ فِيْهَا لَغِيْبَةً ﴿١١﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جّٰرِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾ وَاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾ وَنَارٌ مَّصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾ وَرِزْقًا مَّثْبُوْتَةٌ ﴿١٦﴾ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاٰيٰلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَاِلَى السَّمٰوٰتِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ اِنَّمَا اَنْتَ مَذْكُرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّطٍ ﴿٢٢﴾ اِلَّا مَنْ تَوَلٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيَعَذِّبُهٗ اللّٰهُ الْعَذٰبَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ اِنَّا اِنْتِزَا اِيَابِهِمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّا عَلَيْنَا حِسَابُهُمْ ﴿٢٦﴾

- 17 क्या ये ऊँटों को नहीं देखते <sup>18</sup> कि वे किस तरह पैदा किए गए हैं?  
 18 और आकाशों को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया है? <sup>19</sup>  
 19 और पर्वतों की ओर, कि किस प्रकार गाड़ दिए गए हैं? <sup>20</sup>  
 20 और धरती की ओर, कि किस प्रकार बिछाई गयी है?  
 21 तो आप नसीहत कर दिया करें <sup>21</sup> (क्योंकि) आप केवल नसीहत करने वाले हैं। <sup>22</sup>  
 22 आप कुछ उनपर दारोगा तो नहीं हैं <sup>23</sup>  
 23 हाँ, जो व्यक्ति पीठ फेरें और कुफ़्र करें। <sup>24</sup>  
 24 उसे अल्लाह (तआला) अत्यन्त कठोर अज़ाब देगा। <sup>25</sup>  
 25 बे-शक हमारी ओर उनको लौटना है। <sup>26</sup>  
 26 फिर बे-शक हमारे जिम्मे है उनसे हिसाब लेना। <sup>27</sup>

- 18 वे अपनी पैदाइश के लिहाज़ से कितने अजीब, और किस प्रकार ताकतवर और शक्तिमान हैं और कैसे अजीब अजीब उनमें गुण हैं।  
 19 अर्थात् धरती पर बिना किसी खम्बे के इस प्रकार खड़ा है कि वह अकल की समझ से बाहर है।  
 20 अर्थात् इस प्रकार धरती पर मञ्चुती से गाड़ दिए गए हैं कि वह अपनी जगह से न हिल सकते हैं, न इधर उधर झुक सकते हैं, और न हट सकते हैं।  
 21 अर्थात् ऐ मुहम्मद! आप उन्हें नसीहत कीजिए और अल्लाह के अज़ाब से डराइए।  
 22 अर्थात् आप की जिम्मेदारी मात्र इतनी है कि आप उन्हें समझा दें, मानना या न मानना उनका काम है।  
 23 कि आप उन पर ईमान लाने के लिए जोर दें।  
 24 अर्थात् नसीहत से मुंह मोड़ेंगा।  
 25 बड़े अज़ाब से मुराद जहन्नम का हमेशगी का अज़ाब है।  
 26 अर्थात् मरने के बाद हमारी ही ओर पलट कर आएंगे।  
 27 अर्थात् कर्मों से उनके उठाए जाने के बाद हम ही उन का हिसाब लेंगे

## سُورَةُ الْفَجْرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْفَجْرِ ۱ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۲ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۳ وَاللَّيْلِ إِذَا يَسِرُّ ۴  
 ۵ هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّدِي حَجْرٍ ۶ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۷  
 ۸ إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۹ الَّتِي لَمْ يُخَلِّقْ مِثْلَهَا فِي الْعَالَمِ ۱۰  
 ۱۱ وَتَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۱۲ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَارِ ۱۳  
 ۱۴ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۱۵ فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۱۶ فَصَبَّ ۱۷  
 ۱۸ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۱۹ إِنَّ رَبَّكَ لَيَ الْمُرْصَادِ ۲۰ فَأَمَّا ۲۱  
 ۲۲ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْنَلَّهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ ۲۳ وَنَعَّمَهُ ۲۴ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۲۵  
 ۲۶ وَأَمَّا إِذَا مَا ابْنَلَّهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ ۲۷ وَنَعَّمَهُ ۲۸ فَيَقُولُ رَبِّي أَهْنَنِ ۲۹  
 ۳۰ كَلَّا بَلْ لَّا تَتَذَكَّرُونَ الْيَتِيمَ ۳۱ وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ ۳۲  
 ۳۳ الْمَسْكِينِ ۳۴ وَتَأْكُلُونَ الثَّرَاثَ أَكْلًا لَمًّا ۳۵  
 ۳۶ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۳۷ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا ۳۸  
 ۳۹ دَكًّا ۴۰ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۴۱ وَجَاءَ يَوْمَئِذٍ ۴۲  
 ۴۳ بِحَمَمٍ يَوْمِئِذٍ نَذَرَ الْإِنْسَانَ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ۴۴

## सूरतुल फज्र - 89

शुरू करता है अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 कसम है फज्र की।
- 2 और दस रातों की।
- 3 और जोड़े और त्राक (सम और विषम) की।
- 4 और रात की जब वह चलने लगे।
- 5 क्या उनमें बुद्धिमानों के लिए काफी कसम है?
- 6 क्या आप न नहीं देखा कि आपके रब ने आदियों के साथ क्या किया?
- 7 रतम्भों वाले इरम के साथ।
- 8 जिनके जैसे लोग (अन्य किसी) देशों में पैदा नहीं किए गए।

और उनके कर्मों का उन्हें बदला देंगे।

1 अल्लाह तआला ने फज्र की कसम खाई है इसलिए कि यह दिन से अंधेरापन के छंटने का समय है, मुजाहिद कहते हैं इस से मुराद दस जुलहिज्जा की फज्र है।

2 यह जुलहिज्जा के शुरू की दस राते हैं।

3 शफअ के मायने हर चीज के जोड़े, और वित्र के मायने बेजोड़ के हैं, और एक कौल यह है कि शफअ से मुराद 99 और 92 जुलहिज्जा है और वित्र से मुराद 92 जुलहिज्जा है।

4 अर्थात जब वह आए, जारी रहे, फिर चली जाए,।

5 फज्र के मायना अक़ल है, अर्थात बुद्धिमान को इसकी जानकारी है कि अल्लाह ने जिन चीजों की कसम खाई है वह इस लायक है कि उनकी कसम खाई जाए।

6 इरम आदि उल्ला का दूसरा नाम है, और एक कौल यह है कि यह आद कौम के दादा का नाम है, और एक तीसरा कौल यह है कि यह उस जगह का नाम है जहाँ यह आबाद थे, यह हिमशक है या अहकाफ का कोई नगर जिसकी बिल्डिंग पत्थरों को तराश करके लम्बे लम्बे खम्बों पर बनाई गई थी।

9 और समुद्रियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे?

10 और फिरौन के साथ जो खूंटों वाला था?

11 उन सभी ने नगरों में सिर उठा रखा था।

12 और बहुत उपद्रव मचा रखा था।

13 अन्त में तेरे रब ने उन सब पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।

14 अवश्य तेरा रब घात में है।

15 इन्सान (का यह हाल है) कि जब उसका रब उसे आजमाता है और इज्जत और नेमत देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा सम्मान किया।

16 और जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए उसकी रोजी को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा अपमान किया।

17 ऐसा कभी भी नहीं, बल्कि (बात यह है कि) तुम (ही) लोग यतीमों (अनाथों) का आदर नहीं करते।

18 और निर्धनों को खिलाने की एक-दूसरे को तर्गीब (प्रेरणा) नहीं देते।

19 और (मृतकों की) मीरास समेट-समेट कर खाते हो।

20 और धन से जी भरकर प्रेम करते हो।

21 अवश्य जिस समय धरती कूट-कूट कर बिल्कुल (बराबर) समतल कर दी जाएगी।

22 और तेरा रब (स्वयं) आ जाएगा और फ़रिश्ते सफ़े बांधकर (पंक्तिबद्ध होकर) आ जाएंगे।

23 और जिस दिन जहन्नम भी लाई जाएगी, उस दिन

7 अर्थात अपनी इमारतों की मजबूती में इस जैसा कोई और नगर किसी देश में बसाया ही नहीं गया।

8 जो पहाड़ों को तराशते थे, और उन्हें काट कर घर बनाते थे, और उसमें रहते थे, और उनकी वादी का नाम हिज़्र या वादिलुकुरा था जो मदीना से शाम के रास्ते में पड़ता है।

9 औताद से मुराद अहरामे मिस्र हैं, जिन्हें फिरौनियों ने बनवाया था, ताकि उनमें उनकी कब्रें हों, और एक कौल यह है कि डी الأند से मुराद ऐसे लश्करों वाला है जिसके पास अनगिनत खेमे थे, जिन्हें वे खूंटों से बाँधते थे।

10 यह आद, समूद और फिरौन की सिफत है, अर्थात उनमें से प्रत्येक ने अपने अपने नगरों में उपद्रव मचा रखा था।

11 अर्थात कुफ्र और पाप करके और अल्लाह के बन्दों पर अत्याचार करके।

12 अर्थात उन पर आकाश से अपना अज़ाब उतार उन्हें हलाक कर दिया।

13 अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के कर्म की निग्रानी कर रहा है, और उसकी ताक में है ताकि उसकी अच्छाइयों का उसे अच्छा बदला दे, और पाप पर उसे सज़ा दे, इसन बसरी कहते हैं कि बन्दों का रास्ता इसी से होकर आगे बढ़ता है इस से कोई बच कर नहीं जा सकता।

14 अर्थात उसे धन देता है और उस की जीविका बढ़ा देता है।

15 अर्थात जो धन सम्पत्ती उसे मिली है उससे प्रसन्न होकर उसी को असल सम्मान समझने लगता है।

16 अर्थात तंगी में डाल कर उसे आजमाता है।

17 यह काफिर की सिफत है, रहा मोमिन तो उसके पास असल सम्मान यह है कि अल्लाह उसे अपनी इताअत से नवाजे, और परलोक के लिए कर्म करने की तौफ़ीक दे, और उसके पास असल अपमान यह है कि अल्लाह उसे अपनी इताअत और परलोक के लिए कर्म करने की तौफ़ीक से महरूम रखे।

18 अल्लाह तआला के लिए हुए इस धन द्वारा यदि तुम उनका आदर करते तो इसके कारण अल्लाह के पास तुम्हारा आदर होता।

19 अर्थात न तो तुम स्वयं उसकी ओर रागिब हो, और न आपस में एक दूसरे को उसकी प्रेरणा और आदेश देते हो, और उसकी राह दिखाते हो, इस प्रकार निर्वन तुम्हारे बीच लाचार पड़ा रहता है, कोई उसकी सहायता करने वाला नहीं होता।

20 अर्थात अनाथों, विधवाओं और कमजोरों के मालों को समेट समेट कर खूब खा रहे हो।

21 अर्थात तुम्हारा यह व्यवहार बिल्कुल उचित नहीं।

22 अर्थात झंझोड़ दी जाएगी और बराबर हिलाई जाएगी, या उसके पर्वतों को कूट-कूट कर बराबर कर दिया जाएगा।

23 अपने बन्दों के बीच निर्णय करने के लिए तेरा रब स्वयं आएगा।

24 इस प्रकार कि हर हर आकाश के फ़रिश्तों की सफ़े अलग अलग होंगी।

25 इस अवस्था में कि वह (७० हजार) लगानों से जकड़ी हुई होगी और (हर लगाम के साथ ७० हजार) फ़रिश्ते उसे खींच रहे होंगे।

इन्सान को समझ आएगी, मगर आज समझने का लाभ कहाँ?

- 24 वह कहेगा कि काश कि मैंने इस जीवन के लिए, कुछ (नेकी का काम) पहले से किया होता।  
 25 तो आज (अल्लाह) के अज़ाब जैसा अज़ाब किसी का न होगा।  
 26 न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा।  
 27 ऐ इतमीनान वाली रूह (आत्मा)।  
 28 तू अपने प्रभु की ओर लौट चल, इस तरह कि तू उससे प्रसन्न और वह तुझ से खुश।  
 29 तो तू मेरे खास बन्दों में सम्मिलित हो जा।  
 30 और मेरी जन्नत में चली जा।

## सूरतुल बलद - 90

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहनाना बहुत रहम करने वाला है।

- 1 मैं इस नगर की कसम खाता हूँ।  
 2 और आप इस नगर में मुकीम (ठहरे हुए) हैं।  
 3 और कसम है इन्सानी बाप और सन्तान की।  
 4 यकीनन हम ने इन्सान को (बड़ी मशक़त) परिश्रम में पैदा किया है।  
 5 क्या यह विचार करता है कि यह किसी के बस में ही नहीं?।  
 6 कहता (फिरता) है कि मैंने तो अत्यधिक माल खर्च कर डाला।  
 7 क्या (इस तरह) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं?।  
 8 क्या हम ने उसकी दो आँखें नहीं बनार्या?।  
 9 और एक जीभ और दो होंठ (नहीं बनाये)?।  
 10 और उसको दोनों रास्ते दिखा दिए।  
 11 तो उससे न हो सका कि घाटी में प्रवेश करता।<sup>16</sup>

1 अर्थात जिस प्रकार अल्लाह काफ़िरो को अज़ाब देगा कोई और नहीं दे सकता।

2 और जिस प्रकार वह जंजीरों और बेड़ियों से जकड़ेगा कोई और नहीं जकड़ सकता, क्योंकि उस दिन सारे अधिकार मात्र उसी के पास होंगे, किसी को उसके सामने पर मारने की हिम्मत न होगी।

3 अर्थात ऐसा नपस जो अल्लाह पर और उसकी वहदानियत पर ऐसा विश्वास रखने वाला था, जिसमें कण बराबर भी शंका न था।

4 अर्थात उस सवाब से जो तेरे रब ने तुझे दिया है।

5 और तू उसके पास पसंदीदा है।

6 अर्थात मेरे नेक बन्दों के दल में सम्मिलित होजा।

7 उनके साथ (और यह ऐसा सम्मान है जिस से बढ़कर कोई सम्मान नहीं)।

8 अर्थात मैं इस हुर्मत वाले नगर की कसम खाता हूँ, यह कसम अल्लाह के पास मक्का की महानता को स्पष्ट करने के लिए है, क्योंकि इस नगर में का'बा है, और इस्माईल عليه السلام और हमारे नबी ﷺ का शहर है, और इसी शहर में हज्ज के कर्म पूरे किए जाते हैं।

9 अर्थ यह है कि मैं इस नगर की कसम जिसमें आप हैं आप की बड़ाई और आप के रुखे को स्पष्ट करने के लिए खा रहा हूँ। क्योंकि आप के कियाम के कारण यह नगर महान बन गया है।

10 अल्लाह तआला बाप और उसकी औलाद की कसम खा रहा है, जैसे आदम की और उनकी नसल से जो सन्तान हुई उसकी, इसी प्रकार जानवरों में से प्रत्येक बाप और उसके औलाद की, यह कसम नसल की अहमियत और अल्लाह की शक्ति, और उसके ज्ञान पर उसकी तब्यीह और आगाही के लिए है।

11 अर्थात वह पैदा होने के समय से लेकर बराबर संसार की कठिनाईयों में उलझा रहता है, और उसे बरदाश्त करता रहता है, यहाँ तक कि वह मर जाता है, फिर मरने के बाद उसे क़ब्र और बर्ज़ख़ की कठिनाईयाँ झेलनी पड़ती हैं, फिर उसे आख़िरत की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

12 अर्थात क्या इब्ने आदम यह समझता है कि उस पर किसी की शक्ति नहीं चलती, और कोई उससे बदला नहीं ले सकता, चाहे वह कितनी भी बुराईयाँ क्यों न करे, यहाँ तक कि उसका ख़ालिक और पालनहार भी।

13 **مَالَا يَسَاءُ** का अर्थ है बहुत अधिक धन। अर्थ यह कि सांसारिक कामों में दिल खोल कर पैसा खर्च करता है और फिर लोगों से उसका चर्चा करता फिरता है।

14 अर्थात क्या वह यह समझता है कि अल्लाह उसे देख नहीं रहा है, और वह उससे उसके धन के बारे में पूछेगा नहीं कि उसने उसे कहाँ से कमाया और कहाँ खर्च किया।

15 मतलब यह है कि क्या हमने उसे भलाई और बुराई दोनों के रास्ते नहीं बतला दिए हैं, और उन्हें इस प्रकार स्पष्ट नहीं कर दिए हैं जैसे दो ऊँचे मार्ग स्पष्ट होते हैं?

يَقُولُ بَلَيْتَنِي قَدَمَتُ لِحْيَايَ ۚ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابُهُ أَحَدًا ۚ وَلَا يُوثِقُ وِثْقَاهُ أَحَدًا ۚ يَتَابَتَبُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۚ أَرْجِعِي ۚ إِنَّ رِيكَ رَاضِيَةٌ مَرْضِيَّةٌ ۚ فَأَدْخِلِي فِي عِدْدِي ۚ وَأَدْخِلِي جَنَّتِي ۚ

سُورَةُ الْبَلَدِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أَقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ۚ وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ۚ وَالْوَالِدِ وَمَا وُلِدَ ۚ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ۚ أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۚ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَا بَدَأَ ۚ أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۚ أَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۚ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۚ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۚ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۚ فَكَّرَبَهُ ۚ فَأَوْطَعَهُ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْجَبٍ ۚ يَتَسَاءَلُونَ مَقْرَبَةَ ۚ أَوْ مَسْكِنًا ذَا مَرَبٍ ۚ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبرِ وَتَوَاصَوْا بِالرَّحْمَةِ ۚ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا سَاءَ مَا يَنْبَغُهُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۚ عَلَيْهِمُ نَارٌ مُؤَصَّدَةٌ ۚ

سُورَةُ الْبَلَدِ

- 12 और तू क्या समझता कि घाटी है क्या?  
 13 किसी गर्दन (दास-दासी) को आज़ाद (स्वतन्त्र) करना।  
 14 या भूख वाले दिन खाना खिलाना।  
 15 किसी रिश्तेदार यतीम को।  
 16 या भूमि पर पड़े गरीब को।  
 17 फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाते और एक दूसरे को सब्र की<sup>20</sup> और दया करने की<sup>21</sup> वसीयत करते हैं।  
 18 यही लोग हैं दाएँ हाथ वाले<sup>22</sup>  
 19 और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़ किया, वही लोग हैं बाएँ हाथ वाले।<sup>23</sup>

16 अर्थात वह क्यों तैयार नहीं रहा, और उसने अपने और अल्लाह की फ़र्माबदारी के बीच नपस के बहकावे और शैतान की पैरवी जैसी रुकावटें क्यों दूर नहीं कीं।

17 **في يوم ذي مسغبة** का अर्थ भूक है, और **في يوم ذي مسغبة** का अर्थ भूक वाला दिन जिसमें खाने की इच्छा होती है।

18 अर्थात किसी अनाथ को, जिसके बचपने में उसके पिता का निधन होगा हो, खाना खिलाना और वह अनाथ उसके रिश्तेदारों में से हो।

19 अर्थात ऐसा गरीब जिसके पास कुछ भी न हो, गोया कि वह अपनी मुहताजी के कारण मिट्टी से चिपका हुआ है। मुजाहिद कहते हैं कि जिसके पास पहनने के कपड़े भी न हों जिसके द्वारा वह मिट्टी से बच सके।

20 अर्थात अल्लाह की इताअत करने और उसके पाप से बचने और इस मार्ग में आने वाली मुसीबतों और कठिनाइयों पर सब्र की।

21 अर्थात अल्लाह के बन्दों पर रहम करने की।

22 अर्थात जिनके दाएँ हाथ में कर्मपत्र मिलेगा।

23 अर्थात जिनके बाएँ हाथ में कर्मपत्र मिलेगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۝ ١ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ۝ ٢ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا ۝ ٣  
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ۝ ٤ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَدَهَا ۝ ٥ وَالْأَرْضِ وَمَا حَمَلَهَا ۝ ٦  
وَالنَّفْسِ وَمَا سَوَّاهَا ۝ ٧ فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۝ ٨ قَدْ  
أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۝ ٩ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ۝ ١٠ كَذَّبَتْ ثَمُودُ  
بِطَعُونِهَا ۝ ١١ إِذِ انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۝ ١٢ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ  
نَافَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۝ ١٣ فَكَذَّبُوهُ فَفَعَرَوْهَا فَكَدَمَ  
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذُنُوبِهِمْ فَسَوَّاهَا ۝ ١٤ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۝ ١٥

سُورَةُ اللَّيْلِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَاللَّيْلِ إِذَا يَأْتِي ۝ ١ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ۝ ٢ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۝ ٣  
إِنْ سَعَيْكُمْ لَسَعَى ۝ ٤ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى ۝ ٥ وَصَدَقَ بِالْحَسَنِ ۝ ٦  
فَسَيَسِّرُهُ لِّلْيُسْرَى ۝ ٧ وَأَمَّا مَنْ مَجَلَّ وَأَسْتَفَى ۝ ٨ وَكَذَّبَ بِالْحَسَنِ ۝ ٩  
فَسَيَسِّرُهُ لِّلْعُسْرَى ۝ ١٠ وَمَا يَعْزُبُ عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۝ ١١ إِنَّ عَلَيْنَا  
لِلْهُدَى ۝ ١٢ وَإِنَّا لَنَالِ الْآخِرَةَ وَالْأُولَى ۝ ١٣ فَأَنْزَلْنَاهُ نَارًا لَّا تَلْطَى ۝ ١٤

20) उन्हीं पर आग होगी जो चारों ओर से घेरे हुए होगी।

## सूरतुश शम्स - 91

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1) कसम है सूरज की और उसकी धूप की।
- 2) कसम है चाँद की जब उसके पीछे आए।
- 3) कसम है दिन की जब सूरज को जाहिर करे।
- 4) कसम है रात की जब उसे ढाँक ले।
- 5) कसम है आकाश की और उसके बनाने की।
- 6) कसम है धरती की और उसे हम्वार (समतल) करने की।
- 7) कसम है नफ्स (आत्मा) की और उसके सुधार करने की।
- 8) फिर समझ दी उसको पाप की और उससे बचने की।
- 9) जिसने उसे पाक किया वह सफल हो गया।

1) अर्थात् वह आग चारों ओर से बन्द होगी ताकि कोई उससे बाहर न निकल सके।

2) जिस सूरज निकलने के बाद उसके ऊपर चढ़ आने का समय, जब उसकी रौशनी पूरी हो जाती है।

3) अर्थात् सूरज डूबने के बाद जब चाँद निकला।

4) सूरज जैसे जैसे फैलता जाता है दिन पूरी तरह स्पष्ट होता चला जाता है।

5) जिसने उसे चारों ओर बिछाया और फैलाया।

6) जिसने उसे पैदा किया और आत्मा से उसे जोड़ा, और उसे अनगिनत शक्तियों और सलाहियतों और अनेक प्रकार के अनुभवों से ज्ञात किया, और उसे सीधे डील-डाल का और फिजत के बमोजिब बनाया, जैसा कि हदीस में है कि : हर बच्चा फिजत पर पैदा होता है, फिर उसके माता पिता उसे यहूदी या नस्रानी या मजूसी बना देते हैं।

7) अर्थात् इन दोनों के हालात से ज्ञात कर दिया, और इन दोनों की अच्छाई और बुराई को बता दिया।

10) और जिसने उसे मिट्टी में मिला दिया वह असफल हुआ।

11) समुद्रियों ने अपनी उद्वेगता के कारण झुठलाया।

12) जब उनमें का बड़ा बद-बख्त (दुर्भयशाली) उठ खड़ा हुआ।

13) उन्हें अल्लाह के रसूल ने<sup>2</sup> कह दिया था कि अल्लाह (तंजाला) की ऊँटनी<sup>13</sup> और उसके पीने की बारी की (सुरक्षा करो)।

14) उन लोगों ने अपने संदेष्टा को झूठा समझ कर उस ऊँटनी की कूचें काट दीं, तो उनके रब ने उनके पाप के कारण उन पर हलाकत (विनाश) डाल दिया<sup>15</sup>, और फिर विनाश को आम (आम लोगों के लिए) कर दिया, और उस बस्ती को बराबर कर दिया।

15) वह निर्भय है इस प्रकोप के परिणाम से।<sup>17</sup>

## सूरतुल लैल - 92

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1) कसम है रात की जब छा जाए।
- 2) और कसम है दिन की जब रौशन हो जाए।
- 3) और कसम है उस (शक्ति) की जिसने नर-मादा<sup>8</sup> पैदा किया।
- 4) अवश्य तुम्हारी कोशिश विभिन्न प्रकार की है।<sup>19</sup>
- 5) तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा।<sup>20</sup>
- 6) और नेक बातों की तस्दीक (पुष्टि) करता रहा।<sup>21</sup>
- 7) तो हम भी उसके लिए सरल रास्ते की आसानी कर देंगे।<sup>22</sup>
- 8) मगर जिसने कंजूसी की और लापवाही बर्ती।
- 9) और नेक बातों को झुठलाया।
- 10) तो हम भी उस पर तंगी और कठिनाई का साधन उपलब्ध करा देंगे।<sup>23</sup>

8) अर्थात् जिसने अपने को साफ सुथरा किया, उसे बढ़ाया और तक्वा द्वारा उसे ऊँचा किया तो वह अपने हर उद्देश्य में सफल और अपनी प्रत्येक मन-पसंद चीज को पाने में कामयाब रहा।

9) अर्थात् वह घाटे में रहा जिसने उसे गुम्राह किया, और सीधे रास्ते से भटककाया, और अल्लाह के पास उसे गुमानाम कर दिया और उसे ताअत और अमले-सालेह के द्वारा शोहरत नहीं दी।

10) अर्थात् कौम समूद को झुठलाने पर उनकी उद्वेगता ने उभारा। **طغیان** का अर्थ पाप और सर्कशी में सीमा पार कर जाना है।

11) अर्थात् जिस समय समूद का या सूट्टी का सब से बद-बख्त व्यक्ति खड़ा हुआ, उसका नाम किदार बिन सालिफ था, उसने जाकर ऊँटनी की कूचें काट दीं, **انبعث** का अर्थ है उस काम के लिए अपने आप को आगे बढ़ाया और उसे कर डाला।

12) अल्लाह के रसूल से मुराद उनके नबी सालिह **عليه السلام** हैं।

13) अर्थात् अल्लाह की ऊँटनी को छोड़ दो, उससे छेड़-छाड़ न करो, और उसे कोई नुकसान न पहुँचाओ, उन्होंने उससे उन्हें डराया।

14) और उसके पानी के पीने का खयाल रखना, और उसकी बारी के दिन उससे कोई छेड़-छाड़ न करना।

15) अर्थात् उन्हें हलाक कर दिया और उन पर कठोर अजाब नज़िल किया।

16) फिर धरती उन पर बराबर कर दी और उन्हें मिट्टी के नीचे गाड़ दिया।

17) अर्थात् उन्हें अजाब देने के कारण अल्लाह को किसी का डर नहीं है।

18) अल्लाह ने अपनी मख्लूक में से दोनों जिनसे नर और मादा की कसम खाई है, चाहे यह नर और मादा इन्सानों में से हों या दूसरी मख्लूक़ात में से।

19) अर्थात् तुम्हारे कर्म अलग अलग हैं कोई जन्नत के लिए कर्म कर रहा है तो कोई जहन्नम के लिए।

20) अर्थात् जिसने नेकी के कामों में अपना धन खर्च किया और अल्लाह ने जिन चीजों से रोका उन से बचा।

21) अर्थात् अल्लाह की ओर से मिलने वाले अच्छे की पुष्टि की और उसके रास्ते में खर्च करने पर जिस सवाब का उसने वादा किया है उसे सच जाना।

22) तो हम उसके लिए पुण्य के रास्ते में खर्च करने को, और अल्लाह के लिए अनुकरण को आसान कर देंगे, यह आयतें अबू बक्र सिदीक के बारे में उतरी हैं, जिन्होंने ६ मीमिन गुलाम आजाद किए, जो मक्का के काफिरों की गुलामी में थे और वे उन्हें कठोर यातना पहुँचा रहे थे।

23) बुराई के काम को अर्थात् कुफ्र, गुनाह और नाफरमानी के काम को हम उसके लिए आसान कर देंगे, यहाँ तक कि नेकी के द्वारा उसके लिए कठिन होजाएँगे, और अच्छे कामों के करने की तौफीक से वह महकम रहेगा, और कुफ्र और पाप में बढ़ता चला जाएगा जो उसे जहन्नम में पहुँचा देंगे।

11 और उसका माल<sup>1</sup> उसके (मुख के बल औंधा) गिरते समय कोई काम न आएगा।

12 बे-शक रास्ता दिखा हमारे जिम्मे है।<sup>3</sup>

13 और हमारे ही हाथ में आखिरत (परलोक) और संसार है।<sup>4</sup>

14 मैंने तो तुम्हें शोले मारती हुई आग से डरा दिया है।<sup>5</sup>

15 जिसमें केवल वही बद-बख्त (दुर्भाग्यशाली) जाएगा।<sup>6</sup>

16 जिसने झुठलाया और (उसके अनुकरण से) मुंह फेर लिया।<sup>7</sup>

17 और उससे ऐसा व्यक्ति दूर रखा जाएगा जो परहेजगार होगा।<sup>8</sup>

18 जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता है।<sup>9</sup>

19 किसी का उस पर कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।<sup>10</sup>

20 बल्कि केवल अपने महान और बर्तार रब की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए।

21 यकीनन वह (अल्लाह भी) जल्द ही राजी हो जाएगा।<sup>11</sup>

## सूरतुद दुहा<sup>12</sup> - 93

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 कसम है चाशत (सूर्य के ऊंचे हो जाने) के समय की।<sup>13</sup>

2 और कसम है रात की जब छा जाए।<sup>14</sup>

3 न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा है<sup>15</sup>, न बेजार (विमुख) हो गया।<sup>16</sup>

4 अवश्य तेरे लिए अन्जाम अमाज़ (अन्त आरम्भ) से बेहतर है।<sup>17</sup>

5 तुझे तेरा रब बहुत जल्द (पुरस्कार) देगा<sup>18</sup> और तू खूश हो जाएगा।

6 क्या उसने तुझे यतीम (अनाथ) पाकर जगह नहीं दी?<sup>19</sup>

7 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

8 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

9 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

10 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

11 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

12 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

13 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

14 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

15 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

16 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

17 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

18 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

19 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

20 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

21 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

22 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

23 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

24 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

25 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

26 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

27 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

28 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

29 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

30 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

31 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

32 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

33 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

34 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

35 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

36 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

37 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

38 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

39 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

40 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

41 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

42 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

43 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

44 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

45 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

46 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

47 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

48 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

49 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

50 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

51 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

52 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

53 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

54 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

55 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

56 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

لَا يَصْلِيٰهَا إِلَّا الْأَشْقَىٰ ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ وَسَيَجْزِيٰهَا ۝  
الْآتَىٰ ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِن ۝  
نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝

سُورَةُ الضُّحَىٰ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

۝ وَالضُّحَىٰ ۝ ۱ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ ۲ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَآ قَلَىٰ ۝ ۳ ۝

۝ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ ۴ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ ۝

فَرَضَىٰ ۝ ۵ ۝ أَلَمْ يَجِدَكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۝ ۶ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا ۝

فَهَدَىٰ ۝ ۷ ۝ وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝ ۸ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝

۹ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ ۱۰ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝ ۱۱ ۝

سُورَةُ الشُّرَحِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ ۱ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ ۲ ۝ الَّذِي ۝

أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝ ۳ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ ۴ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ ۵ ۝ إِنَّ ۝

مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ ۶ ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ ۷ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝ ۸ ۝

1 और तुझे गरीब पाकर अमीर नहीं बना दिया।<sup>21</sup>

2 तो यतीम पर तू भी कठोरता न किया कर।<sup>22</sup>

3 और न मांगने वाले को डांट-डपट।<sup>23</sup>

4 और अपने रब की नेमतों (उपकारों) को बयान करता रह।<sup>24</sup>

## सूरतुशह - 94

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

1 क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया?<sup>25</sup>

2 और तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।<sup>26</sup>

3 जिसने तेरी पीठ तोड़ दी थी।<sup>1</sup>

4 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

5 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

6 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

7 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

8 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

9 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

10 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

11 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

12 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

13 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

14 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

15 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

16 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

17 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

18 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

19 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

20 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

21 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

22 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

23 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

24 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

25 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

26 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

27 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

28 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

29 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>

30 और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?<sup>20</sup>



## سُورَةُ التَّيْنِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالَّذِينَ وَالرَّيْثُونَ ۝١ وَطُورِ سِينِينَ ۝٢ وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝٣  
لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝٤ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝٥  
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝٦  
فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدَ الْبَلَدَيْنِ ۝٧ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَاكِمِينَ ۝٨

## سُورَةُ الْحَجَّاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَقْرَأَ بِأَسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢ اقْرَأْ وَرَبُّكَ  
الْأَكْرَمُ ۝٣ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ كَلَّا إِنَّ  
الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَن لَطِفٌ ۝٦ أَنزَلْنَاهُ آسْفَلَ ۝٧ إِنَّا لَنَارِكُ رَبِّكَ الرَّحْمَنَ ۝٨ آذَيْنَا  
الَّذِي يَنْهَى ۝٩ عَبْدًا إِذَا صَلَّى ۝١٠ أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝١١ أَوْ أَمَرَ  
بِالتَّقْوَىٰ ۝١٢ أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝١٣ الزَّعِيمَ ۝١٤ إِنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ ۝١٥  
لِرَبِّئْتِهِ لَشَعْمًا ۝١٦ نَاصِيحَةٍ ۝١٧ كَذِبِي خَاطِئَةٌ ۝١٨ كَلَّا لَئِن لَّمْ يَكُنِ اللَّهُ  
سَدِّدَ ۝١٩ سَدِّدِ الزَّيْنَابِيَّةِ ۝٢٠ كَلَّا لَا تُطِعْهُمْ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝٢١

- 1 और हमने तेरा चर्चा बुलंद कर दिया।  
2 तो यकीननु कठिनाई के साथ आसानी।  
3 यकीननु कठिनाई के साथ आसानी है।  
4 तो जब तू खाली हो तो (इबादत में) मेहनत (परिश्रम) कर।  
5 और अपने रब की ओर दिल लगा।

## सूरतुत्तौन - 95

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।  
1 कसम है इंजीर की और जैतून की।  
2 और सीनीन के तूर (पर्वत) की।

- 1 अर्थात् वह बोझ यदि तेरी पीठ पर लदा रहता तो यह बात सुनी गई होती कि उसने तेरी पीठ तोड़ दी।  
2 अर्थात् लोक और परलोक दोनों जगहों पर तेरे चर्चे को बुलंद किये, कुछ चीजों का आदेश देकर जिनमें से एक बात यह है कि जब वह 'अला' अहद अन ला कहे तो 'अहद अन मेहला رسول الله' भी कहे, इसी तरह अज्ञान में आप का नाम बुलन्द करने की हिदायत फरमाई, और लोगों को आप पर बहुत अधिक दुरूद भजने का आदेश दिया।  
3 अर्थात् उस कठिनाई के साथ जिसका अभी चर्चा हुआ एक और आसानी भी है और यह दोनों आसानीयाँ अल्लाह की ओर से हैं।  
4 अर्थात् अपनी नमाज़ से या तबीलीग से या जिहाद से खाली हो।  
5 दुआ करने में और अल्लाह से मांगने में लग जा, या इबादत में अपने आप को थका दे।  
6 अर्थात् जहन्नम से डरते हुए और जन्नत की चाहत रखते हुए उसकी ओर दिल लगा।  
7 अल्लाह तआला इंजीर की जिसे लोग खाते हैं और और जैतून की जिस से तेल निचोड़ते हैं कसम खा रहा है, इन दोनों चीजों से इशारा फिलिस्तीन की धरती की ओर है जो इंजीर और जैतून वाली धरती है।  
8 तूरे सीनीन से वह पर्वत मुराद है जिस पर अल्लाह तआला ने मूसा से

- 1 और इस शान्ति वाले नगर की।  
2 यकीननु हमने इन्सान को बेहतरीन रूप<sup>10</sup> में पैदा किया।  
3 फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया।  
4 लेकिन जो लोग ईमान लाये और फिर नेकी के कर्म किये<sup>12</sup>, तो उनके लिए ऐसा बदला है। जो कभी समाप्त न होगा।<sup>13</sup>  
5 तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी बात आमादा (उत्साहित) करती है।<sup>14</sup>  
6 क्या अल्लाह (तआला) सारे हाकिमों का हाकिम नहीं है?<sup>15</sup>

## सूरतुल अलक - 96

- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।  
1 अपने रब का नाम लेकर पढ़<sup>16</sup> जिसने पैदा किया है।  
2 जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया।<sup>17</sup>  
3 तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला (उदार) है।<sup>18</sup>  
4 जिसने कलम के द्वारा (इल्म) सिखाया।<sup>19</sup>  
5 जिसने इन्सान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।<sup>20</sup>  
6 वास्तव में इन्सान तो आप से बाहर हो जाता है।<sup>21</sup>  
7 इसलिए कि वह अपने आप को बे-पर्वा (निश्चिन्त या धनवान) समझता है।  
8 अवश्य लौटना तेरे रब की ओर है।<sup>22</sup>

बात की थी, अर्थात् तूरे सैना।

- 9 अर्थात् मक्का की, इसे बलदे अमीन कहा गया; क्योंकि वह शान्ति वाला है, इसमें इन्सान ही नहीं, पशु तथा पक्षि भी शान्ति पाते हैं, गोया कि अल्लाह तआला इन तीनों चीजों की कसम खा रहा है इसलिए कि यह प्रारम्भ से ही वक्ष्य के स्थान हैं, मूसा तथा ईसा और मुहम्मद ﷺ पर वक्ष्य इन्हीं स्थानों में नाज़िल हुई, और तीनों आसमानी किताबें तौरात, इन्जील तथा कुरआन इन्हीं जगहों में उतरी, और हिदायत का प्रकाश यहीं से निकला।  
10 अर्थात् हम ने उसे लम्बा और सीधा बनाया जो अपनी रोज़ी को अपने हाथ में ले सकता है, और उसे ज्ञान दिया, बोलने, उपाय करने और समझने बूझने की शक्ति दी, और उसे धरती पर हुकूमत करने के क़बिल बनाया।  
11 अर्थात् हम ने उसे उम्र की अन्तिम सीमा को पहुँचा दिया जिसमें जवानी और शक्ति के बाद बुढ़ापा और कमजोरी होजाती है, और एक क़ौल के अनुसार इन्सान जिसे अल्लाह तआला भले रूप में पैदा किया किरदार की ऐसी गिरावट और परती में चला जाता है कि वह पशुओं से भी अधिक गया-गुजरा होजाता है, और उस की हालत सारी मख़्लूक से बुरी हो जाती है, और नरक के सब से निचले दरजे में डाल दिया जाता है।  
12 अर्थात् वह नरक में नहीं लौटाए जाते, बल्कि अल्लाह की कुशादा जन्नत इलीसीन की ओर लौटाए जाते हैं।  
13 अर्थात् उनकी नेकी का उन्हें ऐसा सवाब मिलता है जिसका सिलसिला सदा जारी रहेगा, कभी बन्द नहीं होगा।  
14 अर्थात् ऐ इन्सान! जब तूने यह जान लिए कि अल्लाह ने तुझे भले रूप में पैदा किया और तुझे नरक में भी लौटा सकता है, तो फिर तुझे दोबारा लौटाए न जाने और जज़ा व सज़ा को झुठलाने पर कौन सी चीज़ उभार रही है? और तू क्यों उनका इनकार करता है?  
15 अर्थात् न्यायपूर्ण न्याय करने के हिसाब से; क्योंकि उस ने इन्सान को अच्छे रूप का बनाया, फिर जिसने उसके साथ कुछ किया उसे औषध मुंह नरक में डाल दिया, और जो उस पर ईमान लाया उसे बुलन्द दर्जे अता किए।  
16 यह सब से पहली वक्ष्य है जो नबी ﷺ पर उतरी, अर्थात् ऐ मुहम्मद ﷺ अपने रब के नाम से पढ़ना आरम्भ कीजिए, और एक क़ौल के अनुसार अपने रब के नाम से सहायता चाहते हुए पढ़िए।  
17 जो पहले गलीज़ पानी के रूप में होता है फिर अल्लाह की कुदरत से खून में बदल जाता है जैसे वह जमे हुए खून का कोई टुकड़ा हो।  
18 यह उस के करम का ही फल है कि उस ने तुम्हें पढ़ने की शक्ति दी बावजूद इस के कि तुम अनपढ़ हो।  
19 अर्थात् जिस रब ने इन्सान को कलम द्वारा लिखना सिखाया, अल्लाह तआला इस्लाम की दावत का आरम्भ पढ़ने और लिखने की दावत और उस की ओर दिल लगाने से की; क्योंकि यह दोनों चीज़ें बहुत ही लाभ-दायक हैं।  
20 अर्थात् उस ने इन्सान को कलम द्वारा ऐसी ऐसी चीज़ें सीखाई जिन्हें वह नहीं जानता था।  
21 अर्थात् अपने धन और अपनी शक्ति के कारण अपने आप को निस्पृह समझ कर उद्वेगता करता है।  
22 न कि किसी दूसरे की ओर।

- (भला) उसे भी तूने देखा, जो (एक बन्दे को) रोकता है?<sup>1</sup>  
 जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है?  
 भला बताओ तो यदि वह सीधे मार्ग पर हो?<sup>2</sup>  
 या परहेजगारी का हुक्म देता हो?<sup>3</sup>  
 भला देखो तो यदि यह झुठलाता हो और मुँह फेरता हो?<sup>4</sup> तो  
 क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे खूब  
 देख रहा है।  
 अवश्य यदि ये नहीं रुका तो हम उसकी पेशानी  
 (ललाट) के बाल पकड़कर घसीटेंगे।  
 ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है।<sup>7</sup>  
 या उसे परहेजगारी अर्थात् इस्लाम, तौहीद और नेकी का आदेश दे रहा  
 हो जिस से नरक से बचा जा सकता हो।  
 हम भी नरक के रक्षकों को बुला लेंगे।<sup>9</sup>  
 सावधान! उसका कहना कभी भी न मानना और सजदा  
 कर<sup>10</sup> और करीब होना।<sup>11</sup>

## सूरतुल कद्र - 97

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- यकीनन हमने उसे<sup>12</sup> कद्र की (शुभ) रात में उतारा।  
 तू क्या समझा कि कद्र की (शुभ) रात क्या है?<sup>13</sup>  
 कद्र की रात एक हजार महीनों से बेहतर (श्रेष्ठ) है।<sup>14</sup>  
 इसमें (प्रत्येक कार्य को पुरा करने के लिए) अपने रब  
 के हुक्म से फरिश्ते और रूह (जिब्रिल) उतरते हैं।<sup>17</sup>  
 यह रात सरासर शान्ति की होती है<sup>18</sup>, और फज्र के

1 जो बन्दे को रोकता है उससे मुराद अबू जहल है, और बन्दे से मुराद मुहम्मद ﷺ हैं।

2 अर्थात् मुहम्मद ﷺ अगरचे सीधे मार्ग पर हों और और अपने मानने वालों को सीधे मार्ग पर ले जा रहे हों।

3 या उसे परहेजगारी अर्थात् इस्लाम, तौहीद और नेकी का आदेश दे रहा हो जिस से नरक से बचा जा सकता हो।

4 अर्थात् अबू जहल जो रसूल की लाई हुई चीजों को झुठलाता है और ईमान से मुँह फेरता है।

5 कि अल्लाह उस की सारी बातों को जानता है, और उसे उस के किए की सजा देगा, फिर उसे इस की जुअत कैसे हुई?

6 यह उस के लिए डाँट और फटकार है, अर्थात् यदि वह अपनी इस घिनावनी इर्कत से नहीं रुका तो हम उस की पेशानी पकड़ कर घसीट कर उसे नरक में डाल देंगे, **नाविबे** का अर्थ ललाट है।

7 झूठी और पापी पेशानी से मुराद पेशानी वाले का झूठा और पापी होना है।

8 **नादी** का अर्थ सभा है, जिस में लोग बैठते हों, अर्थात् अपने सभा वालों को बुला ले, और एक कौल यह है कि अबू जहल ने अल्लाह के रसूल ﷺ को कहा था कि मुहम्मद! तुम मुझे बमकी दे रहे हो जबकि इस वादी में मेरे हिमायती, और मेरे सभा वाले सब से अधिक हैं, तो यह आयत उतरी।

9 अर्थात् फरिश्तों को जो बहुत कठोर दिल वाले हैं, वह उसे पकड़ कर नरक में डाल देंगे।

10 अर्थात् तुम्हें जो वह नमाज़ से रोक रहा है तो तुम उस की यह बात कदापि न मानना, और उसके रोकने की परवाह किए बिना मात्र अल्लाह की खुशी के लिए नमाज़ पढ़ते रहना।

11 और इताअत तथा इबादत द्वारा अपने रब की नजदीकी चाहते रहना।

12 अर्थात् कुरआन को जो शुभ रात्री में लौहे महफूज़ से बैतुल इज्जत में जो कि पहले आकाश पर है एक ही बार पूरा उतार दिया गया, और वहाँ से ज़रूरत के अनुसार नवी ﷺ पर पूरे २३ वर्ष उतरता रहा, शबे कद्र रमज़ान की अन्तिम १० रातों में से कोई एक रात है, जिस में कुरआन उतारा गया।

13 कद्र का अर्थ अन्दाज़ा और फ़ैसला करने के हैं, इसे कद्र की रात इसलिए कहा गया है कि इसमें अल्लाह पूरे साल के काम के अन्दाज़े और फ़ैसले करता है, और एक कौल के अनुसार कद्र का अर्थ महानता और शर्फ़ है, और इसे कद्र वाली रात इसलिए कहा गया है कि यह कद्र व मन्ज़िलत और शर्फ़ वाली रात है।

14 अर्थात् उस में एक रात की इबादत हजार महीनों (८३ वर्ष ४ महीने) की इबादत से उत्तम है।

15 सारे कामों को पूरा करने के लिए।

16 रूह से मुराद जिब्रिल ﷺ हैं।

17 अर्थात् आकाश से धरती पर उतरते हैं।

18 अर्थात् यह पूरी रात शान्ति और भलाई वाली है, इस में कोई बुराई नहीं, इसमें शैतान न कोई गलत काम कर सकता है और न किसी को दुःख दे

## سُورَةُ الْقَدْرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۚ  
 لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۚ نَزَّلَ الْمَلَكُ وَالرُّوحُ  
 فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ۚ سَلَّمَ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

## سُورَةُ الْبَيِّنَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِينَ  
 حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً ۚ  
 فِيهَا كُتِبَ قِيمَةٌ ۚ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ  
 بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ  
 لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ  
 الْقِيمَةِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ  
 فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۚ إِنَّ  
 الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۚ

तुलुअ (उदय) होने तक (होती है)।

## सूरतुल बय्यिन: - 98

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- अहले किताब के काफ़िर<sup>19</sup> और मूर्तिपूजक लोग<sup>20</sup>  
 जब तक कि उनके पास स्पष्ट निशानी न आ जाए, रुकने  
 वाले न थे<sup>21</sup> (वह निशानी यह थी कि)।

- अल्लाह (तआला) का एक रसूल ﷺ, जो पाक किताबें<sup>23</sup> पढ़े।  
 जिसमें ठीक और उचित आदेश हों।<sup>24</sup>

- अहले किताब अपने पास जाहिर निशानी आ जाने के

सकता, और यह सिलसिला फज्र के उदय होने तक रहता है, फरिश्तों का दल के दल आकाश से उतरना फज्र तक बन्द नहीं होता।

19 अर्थात् यहूद और नसारा।

20 अर्थात् अरब के मुश्रिकीन जो मूर्तियों के पूजारी थे।

21 अर्थात् अपने कुफ़ से रुकने वाले नहीं थे, स्पष्ट निशानी से मुराद मुहम्मद और कुरआने मजीद है जिसे लेकर आप ﷺ आए और आप ने उन की गुमाही को उन पर स्पष्ट किया, और उन्हें ईमान की दावत दी।

22 अर्थात् मुहम्मद ﷺ।

23 जो हेर-फेर और रह व बदल से सुरक्षित हो और वाकई अल्लाह का कलाम हो।

24 इस से मुराद आयात और अहकाम हैं जो उन में लिखी हुई हैं।

**قیمة** सीथा महकम जिनमें हक से इन्हिराफ और देहापन न हो, जो कुछ उस में हो पूरा का पूरा हिदायत और हिक्मत हो, जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है : ( **وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلِيَمْلِكَ لَهُ عَوجًا** ) : "सम्पूर्ण प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी, और उस में कोई कमी नहीं रखी, और उसे बिल्कुल ठीक-ठाक रखा, जो भी उसकी पैरवी करे वह सीधे मार्ग पर होगा"।

جَزَاؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ. ٨

سُورَةُ الزُّلْمَاتِ ٩

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ١ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ٢ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ٣ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ٤ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَى لَهَا ٥ يَوْمَئِذٍ يَصُدُّرُ النَّاسُ أَشْنَاءًا ٦ يَلْمِزُوا أَعْمَلَهُمْ ٦ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا ٧ يَرَهُ ٧ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا ٨ يَرَهُ ٨

سُورَةُ الْعَنَّاكِاتِ ١١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
وَالْعَادِيَاتِ صَبِيحًا ١ فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا ٢ فَالْمُعِيرَاتِ صُبْحًا ٣ فَأَثَرْنَ بِهِ نَقْعًا ٤ فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ٥ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ٦ وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَلِكٍ لَشَهِيدٌ ٧ وَإِنَّهُ لِيَحْبِبَ ٨ الْخَيْرَ لَشَدِيدٌ ٨ أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعِثَ رَمًا فِي الْقُبُورِ ٩

बाद ही (मतभेद में पड़कर) मुतफर्रिक (विभाजित) हो गए।  
5 उन्हे इसके सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को खालिस (शुद्ध) कर रखें। इब्राहीम हनीफ (एकेश्वरवादी) के धर्म पर, और नमाज को कायम रखें, और जकात देते रहें, यही है दीन सीधी मिल्लत का।  
6 बे-शक जो लोग अहले किताब में से काफिर हुए और मूर्तिपूजक, वे जहन्नम की आग (में जाएंगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, ये लोग बद्-तरीन (तुच्छ) मख्लूक हैं।  
7 बे-शक जो लोग ईमान लाये और नेक कार्य किये, ये लोग बेहतरीन (सर्वोच्च श्रेणी) की मख्लूक हैं।

1 अर्थात् उन के बीच इखिलाफ इस कारण नहीं हुआ कि उन पर हक स्पष्ट नहीं था, बल्कि हक को पहचान कर कुछ लोग ईमान ले आए, और कुछ लोगों ने इन्कार किया, हालांकि उन पर एक ही मार्ग को अपनाना लाजिम था।  
2 अर्थात् उन किताबों में जो उन पर उतरी थी और कुरआने मजीद में भी।  
3 कि वह अल्लाह की इबादत को लाजिम पकड़ें उसे के साथ किसी को साझी न बनाएं, और इबादत को उसी के लिए शुद्ध रखें।  
4 अर्थात् सारे धर्मों से अपना नाता तोड़ कर मात्र इस्लाम धर्म की ओर माइल होजाएँ।  
5 नमाजों को ठीक रूप से अपने समय पर पढ़ें जिस प्रकार अल्लाह को मतलूब है।  
6 और जब उन पर जकात वाजिब हो तो जकात दें।  
7 अर्थात् यही इस मिल्लत का धर्म है जो सीधा है इसलिए इससे इखिलाफ मुनासिब नहीं।  
8 क्योंकि मात्र हसद के कारण उन्होंने हक को टुकराया, और रसूल पर मात्र इस कारण ईमान नहीं लाए कि वह इस्माइल की औलाद में पैदा हुए, इसलिए अंजाम के हिसाब से मख्लूक में सब से बुरे लोग हैं।

9 उनका बदला उनके रब के पास हमेशगी वाली जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह (तआला) उनसे खुश हुआ और ये उससे। ये है उसके लिये जो अपने रब से डरे।

## सूरतुज्जिल्जाल - 99

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।  
1 जब धरती पूरी तरह झंझोड़ दी जाएगी।  
12 और अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।  
13 और इन्सान कहने लगेगा कि उसे क्या होगया? 14  
15 उस दिन धरती अपनी सारी खब्रें बयान कर देगी।  
16 इसलिए कि तेरे रब ने उसे आदेश दिया होगा।  
17 उस दिन लोग विभिन्न दलों में होकर (वापस) लौटेंगे।  
18 ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिए जाएँ।  
19 तो जिसने कण के बराबर भी नेकी की होगी वह उसे देख लेगा।  
20 और जिसने कण के बराबर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।

## सूरतुल् आदियात-100

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।  
1 हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की कसम।  
2 फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की कसम।  
22 फिर सवेरे धावा बोलने वालों की कसम।  
23 तो उस समय धूल उड़ते हैं।  
24 फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच घुस जाते हैं।  
25

9 अर्थात् वह जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनका बदला।  
10 अर्थात् जिन के पेड़ों और महलों के नीचे।  
11 अर्थात् उस से न वह निकले जाएँगे और न स्वयं छोड़ कर कहीं जाएँगे, और न ही उन्हें मौत आएगी।  
12 अर्थात् पूरी कठोरता के साथ हिला दी जाएगी, और इस तरह धरथराने लगेगी कि जो चीज भी उस पर होगी सब टूट फूट जाएगी, और यह पहली फूंक के समय होगा।  
13 अर्थात् जितने मुद्दें और खजाने उस में दफन हैं सब को निकाल बाहर करेगी, और सारे लोग जिन्या होंकर उठ खड़े होंगे, और यह दूसरी फूंक के समय होगा।  
14 अर्थात् वह इसके मामला में हेरान परीशान और भयभीत होकर कहेगा : यह क्यों हिलाई जा रही है और अपने बोझ निकाल कर फेंक रही है?  
15 अर्थात् वह अपनी खब्रें बयान करेगी और जो भी पुण्य तथा पाप उस पर किए गए हैं उसे बताएगी, अल्लाह उसे बोलने की शक्ति दे देगा ताकि वह बन्दों के खिलाफ गवाही दे।  
16 अर्थात् वह अपनी खब्रें अल्लाह की वय्य और उस के इशारे पर बयान करेगी, अल्लाह की ओर से उसे आदेश मिला होगा कि वह उन्हें बयान करे, और लोगों के खिलाफ गवाही दे।  
17 अर्थात् अपनी कब्रों से लोग मशरर की ओर अनेक दलों में पलटेंगे, कुछ लोग दाईं ओर से आएँगे और कुछ बाईं ओर से, इसी प्रकार उन के धर्म मजहब और कर्म भी विभिन्न होंगे।  
18 ताकि अल्लाह उन्हें उनके कर्म दिखाए जो उन पर पेश होंगे, और एक कौल यह है कि उन के कर्म का बदला दिखाए।  
19 तो जिसने संसार में कण बराबर भी नेकी की होगी वह उसे क्रियामत के दिन अपने नामए-आमाल पाकर खुश होगा, या उस नेकी को अपनी आँख से देखेगा।  
20 इसी प्रकार संसार में कोई बुराई की होगी उसे क्रियामत के दिन अपने नामए-आमाल में पाकर दुःखी होगा, कण उस गर्द व गुबार को कहते हैं जो सूरज की रोशनी में दिखाई देता है।  
21 इस से मुराद वह घोड़े हैं जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के लिए घोड़-सवारों को लेकर उन काफिर शत्रुओं की ओर दौड़ते हैं, जो अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी रखने वाले हैं।  
22 उचित दौड़ने के समय घोड़े की सांस से निकलने वाली आवाज।  
23 उचित दौड़ने से है, जिसका अर्थ आग निकालना है, और फुदह का अर्थ है टाप मारना, मुराद वह घोड़े हैं जिन की टापो की रगड़ से पथरों से आग निकलती है, जैसे चकमाक के टकराने से आग निकलती है।  
24 उचित दौड़ने से है, सुबह के समय हमला करने वाले या धावा बोलने वाले।  
25 जो दौड़ कर दुश्मनों के बीच घुस जाते हैं।

- अवश्य इन्सान अपने रब का बड़ा ना-शुक्रा है।<sup>1</sup>  
 और निश्चित रूप से वह खुद भी उस पर गवाह है।<sup>2</sup>  
 और यह खैर<sup>3</sup> के प्रेम में भी बड़ा कठोर है।  
 क्या उसे उस समय की जानकारी नहीं, जब कब्रों में जो कुछ है निकाल दिए जाएंगे।<sup>4</sup>  
 और सीनों में छिपी बातों को ज़ाहिर कर दिया जाएगा।<sup>5</sup>  
 बे-शक उनका रब उस दिन उनके ह़ाल से पूरी तरह से बा-ख़बर (परिचित) होगा।

### सूरतुल कारिया: - 101

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- खड़खड़ा देने वाली।<sup>1</sup>  
 क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?  
 तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?  
 जिस दिन इन्सान बिखरे हुए पतियों जैसे हो जाएंगे।<sup>2</sup>  
 और पर्वत धुने हुए रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।  
 फिर जिसके पलड़े भारी होंगे।<sup>3</sup>  
 वह तो दिल पसंद आराम की ज़िन्दगी में होगा।<sup>4</sup>  
 और जिसके पलड़े हल्के होंगे।  
 उसका ठिकाना 'हाविया' है।<sup>5</sup>  
 तुझे क्या पता कि वह क्या है?<sup>6</sup>  
 वह बहुत तेज भड़कती हुई आग है।<sup>7</sup>

### सूरतुत तकासुर - 102

- अर्थात् इन्सान बड़ा ना-शुक्रा है, वह अल्लाह के उपहारों की कदर नहीं करता, और न उनका हक़ अदा करता।  
 अर्थात् वह अपने विरोध में स्वयं गवाही देता है कि वह बड़ा ना-शुक्रा है; क्योंकि उस के ना-शुक्रा होने का छाप उस पर स्पष्ट होता है।  
 खैर से मुराद धन है, अर्थात् वह धन से बहुत ही अधिक प्रेम करने वाला, उसकी तलब और खोज में दौड़-भाग करने वाला है, और उस के लिए मर मिटने वाला है।  
 अर्थात् कब्रों में जो मुर्दे हैं निकाल कर बाहर फेंक दिए जाएंगे।  
 अर्थात् जो रब उन्हें उनकी कब्रों से निकालेगा, और उनके सीनों के भेदों को स्पष्ट करेगा, उस के बारे में हर व्यक्ति जान सकता है कि वह कितना ख़बर रखने वाला है, उस पर कोई भी चीज़ छुपी नहीं सकती, और न ही उस दिन और उसके अलावा दूसरे दिनों में उस से कोई चीज़ छुपी रह सकती है, वह उस दिन हर एक को उस के कर्म के अनुसार बदला देगा, तो जब उन्हें इसकी जानकारी है तो यह उचित नहीं कि धन का प्रेम उन्हें अपने रब के शुक्र और उसकी इबादत से और क़ियामत के दिन के लिए कर्म करने से उन्हें फेर दे।  
 क़ियामत के नामों में से एक नाम है, इसे कारिअह इसलिए कहा गया है कि यह दिलों को अपनी हौलनाकियों से खड़खड़ा देगी, या अल्लाह के दुश्मनों को अज़ाब से खड़खड़ा देगी।

- अर्थात् पतियों, जो रौशनी के चारों ओर मंडलाते हैं।  
 अर्थात् क़ियामत वाले दिन मारे डर के लोग बिखरे हुए पतियों की तरह इधर उधर भागते फ़िरेंगे, यहाँ तक कि वह मैदाने महशर में इकट्ठा कर दिए जाएंगे।  
 अर्थात् धुने हुए ऊन की तरह जो विभिन्न रंग के हों, यह हालत उन की इसलिए होगी कि वह कण-कण होकर उड़ रहे होंगे, इसके बाद फिर अल्लाह तआला ने मैदाने महशर में इसाबो-किताब के समय लोगों की स्थिति और उन के दो दिलों में बटे होने का इजमाली रूप से चर्चा किया है।  
 अर्थात् जो मुराद नैक कर्म हैं, और एक कौला अनुसार यह मुराद नैक कर्म हैं, तराजू के मायने में जिसमें कर्म तौले जाएंगे, अर्थात् नैकियों के पलड़े बुराईयों के पलड़ों से झुके हुए होंगे।  
 अर्थात् पसंदीदा जिसे आदमी पसंद करता हो।  
 अर्थात् उसका ठिकाना नरक होगा, उसे कहा गया है क्योंकि उसी की ओर शरण लेंगे जैसे दुख पीला बच्चा मां की गोद में शरण लेता है।  
 उसकी भयंकरपन और कठोर अज़ाब को बताने के लिए है, कि वह इन्सान की सोच से ऊपर है, वह उसकी वास्तविकता तक नहीं पहुंच सकता।  
 अर्थात् उसकी गमी अपनी अन्तिम सीमा को और तेज़ी अपनी इन्तिहा को पहुंची होगी।

وَحَصَلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝۱۰۱ إِنَّ رَبَّهُمْ بِمَوْمِنَةٍ أَدْنَىٰ ۝۱۱

سُورَةُ الْقَارِعَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقَارِعَةُ ۝۱ مَا الْقَارِعَةُ ۝۲ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝۳  
 يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝۴  
 وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝۵ فَأَمَّا  
 مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝۶ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝۷  
 وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝۸ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝۹  
 وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ۝۱۰ نَارُ حَامِيَةٍ ۝۱۱

سُورَةُ التَّكْوِيْنِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْهَمَّكُمُ التَّكْوِيْنُ ۝۱ حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝۲ كَلَّا سَوْفَ  
 تَعْلَمُونَ ۝۳ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝۴ كَلَّا لَتَوَعَّلَمُونَ  
 عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝۵ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝۶ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا  
 عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝۷ ثُمَّ لَتَسْتَلْنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝۸

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- अधिकता की चाहत ने तुम्हें ग़ाफिल (अचेत) कर दिया।<sup>15</sup>  
 यहाँ तक कि तुम कब्रिस्तान जा पहुँचे।<sup>16</sup>  
 कभी भी नहीं तुम जल्द ही जान लोगे।<sup>17</sup>  
 कभी भी नहीं फिर तुम जल्द ही जान लोगे।  
 कभी भी नहीं यदि तुम निश्चित रूप से जान लो।<sup>18</sup>  
 तो बे-शक़ तुम जहन्नम देख लोगे।<sup>19</sup>  
 और तुम उससे विश्वास की आँख से देख लोगे।<sup>20</sup>  
 फिर उस दिन तुमसे अवश्य-अवश्य नेमतों का प्रश्न होगा।<sup>21</sup>

अर्थात् धन और संतान की अधिकता की चाहत में लगे रहने, उनकी अधिकता पर आपस में फ़खर (गर्व) करने, और एक दूसरे पर ग़ालिब आने, और उन्हें अधिक से अधिक प्राप्त करने की चाहत ने तुम्हें अल्लाह

- की इताअत और परलोक के लिए कर्म करने से अचेत कर दिया है।  
 यहाँ तक कि तुम्हें मौत ने आ लिया और तुम उसी ग़फ़लत में पड़े रहो।  
 इसमें उनके लिए अधिकता की चाहत में पड़े रहने पर डांट और इस बात की वारनिंग है कि वह जल्द क़ियामत के दिन उसके परिणाम से अवगत होजाएंगे।  
 अर्थात् तुम जिस ग़फ़लत में पड़े हुए हो उसके परिणाम को वास्तविक रूप से जान लो जैसे तुम उन चीज़ों को जानते हो जो संसार में वास्तविक रूप में तुम्हारे पास हैं तो यह तुम्हें अधिकता की चाहत और आपस में फ़खर करने से ब्यस्त कर देगा और इस अहम और सँगीन मामले में तुम ग़फ़लत और लापवाही से काम नहीं लोगे।  
 अर्थात् तुम परलोक में नरक को अपनी आँखों से देखो गे।  
 अर्थात् तुम नरक को देखो गे, इसी को विश्वास की आँख कहा गया है, और इससे जहन्नम को देखना मुराद है।  
 अर्थात् संसार की नेमतों के बारे में जिसने तुम्हें आखिरत के लिए कर्म करने से अचेत कर रखा था, उदाहरण स्वरूप अल्लाह ने तुम्हें जो स्वास्थ,



سُورَةُ الْعَصْرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ ۝١ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝٢ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّصُوا بِالحَقِّ وَتَوَّصُوا بِالصَّبْرِ ۝٣

---

سُورَةُ الْبَهَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَبَلِّ لِكُلِّ هُمْزَةٍ لُحْمَةً ۝١ الَّذِي جَمَعَ مَا لَا وَعَدَدُهُ ۝٢ يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدُهُ ۝٣ كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْأُطْمَةِ ۝٤ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْأُطْمَةُ ۝٥ نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ۝٦ الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝٧ إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ ۝٨ فِي عَمْدٍ مُّمدَّدةٍ ۝٩

---

سُورَةُ الْفَتَنِكَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝١ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضَلُّلٍ ۝٢ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝٣ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝٥

### सूरतुल अस्त्र - 103

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।  
 1 जमाने की कसम।  
 2 वास्तव में सारे इंसान सर्वथा घाटे में है।  
 3 उनके सिवाय जो ईमान लाए और नेक कार्य किए और (जिन्होंने) आपस में सत्य की वसीयत की और एक-दूसरे को सब्र की नसीहत की।

### सूरतुल हुमज़ - 104

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

खाली समय, और खाने पीने की जाहकदार चीजें दी है, प्यास बुझाने के लिए ठंडा पानी दिया है, धूप और गर्मी से बचने के लिए घरों का छाया और दूसरी नमतें दी हैं उनके बारे में तुम से पूछा जाएगा।

1 अल्लाह तआला ने **عصر** अर्थात् जमाने की कसम खाई है, क्योंकि रात व दिन के चक्कर और रोशनी और अंधेरे के अदल बदल कर आने जाने में बहुत सी इब्रत और नसीहत की बातें छुपी हैं, इसी से जीवन में सीधापन है और इससे जिन्दों की बहुत सी मसलहते जुड़ी हैं, और इस में अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) पर स्पष्ट और खुला प्रमाण मौजूद है। मुक़तिल का कहना है कि अस्त्र से मुराद अस्त्र की नमाज़ है।

2 **خسر** के मायने दिवालिया होजाने और असल धन के बर्बाद हो जाने के हैं।  
 3 अर्थात् एक दूसरे को हक़ की वसीयत की जिसकी अवाएगी जरूरी है, और वह है अल्लाह पर और उसकी वहुदानियत पर ईमान लाना, तौहीद और उसकी शरीअत अनुसार कर्म करना और जिन चीजों से रोक़ा गया है उन से रुकना।

4 अर्थात् पाप से बचने पर सब्र, उसके आदेश और फ़राएज़ निभाने पर सब्र, और उन दुःखों और मुसीबतों पर सब्र जो उसकी तक्दीर में लिखी जा चुकी हैं।

1 बड़ी ख़राबी है उस व्यक्ति की जो त्रुटियाँ टटोलने वाला चंगुली करने वाला हो।

2 जो माल को इकट्ठा करता जाए और गिनता जाए।  
 3 वह समझता है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा।

4 कभी भी नहीं यह तो अवश्य तोड़-फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जाएगा।

5 और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?  
 6 वह अल्लाह (तआला) की सुलगायी हुई आग होगी।

7 जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी।  
 8 और उन पर बड़े-बड़े खम्बों में<sup>10</sup>, हर ओर से बंद की हुई होगी।

### सूरतुल फील - 105

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।  
 1 क्या तू ने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों<sup>12</sup> के साथ क्या किया?

2 क्या उसने उनके मक़ (दु-प्रयोजन) को अकारथ नहीं कर दिया।  
 3 और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिए।<sup>14</sup>

4 जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ<sup>15</sup> मार रहे थे।  
 5 तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।<sup>16</sup>

5 **ويل** का अर्था रुसवाई (अपमान), या अज़ाब, यर बर्बादी है, **हम्زة** उस व्यक्ति को कहते जो लोगों के मुह पर उनकी बुराई करता है, **लुम्زة** उस व्यक्ति को कहते है जो पीठ पीछे लोगों की बुराई करता है।

6 इसमें गीबत करने का कारण बताया गया है, अर्थात् इकट्ठा किए गए धन के कारण वह स्वयं को सब से उत्तम समझने लगा है, और दूसरे उस बौने दिखते हैं।

7 अर्थात् वह समझता है कि अपने धन के कारण हमेशा हमेशा जीवित रहेगा कभी मरे गा ही नहीं; क्योंकि वह अपने इकट्ठा किए हुए धन के कारण सख्त किस्म की खुद पसंदी में पड़ गया है, और उसका ध्यान इस ओर जाता ही नहीं है कि वह मरने के बाद के बारे में भी कुछ सोच सके।

8 अर्थात् मामला ऐसा नहीं है जैसा वह समझ रहा है बल्कि वह और उसका धन ऐसी आग में फेंक दिए जाएंगे जो हर उस चीज़ को जो उसमें डाली जाएगी तोड़ फोड़ डालेगी।

9 अर्थात् उसकी गर्मी दिलों को पहुँच जाएगी, और पूरे दिल को ढक लेगी, क्योंकि दिल में ही नापाक इरादे, बुरे चरित्र और हसद पाया जाता है।

10 अर्थात् वे लम्बे खम्बों में बाँध दिए गए होंगे, मुक़तिल कहते हैं : उन पर दरवाज़े बन्द कर दिए जाएंगे फिर उन्हें लोहे के खम्बों से बाँध दिया जाएगा, फिर न कोई दरवाज़ा खुलेगा और न किसी तरह का आराम उन्हें मिल सकेगा।

11 अर्थात् उसके सारे दरवाज़े उन पर बन्द होंगे, वह उससे निकल नहीं सकेगा।

12 यह हूबशा के कुछ नसरानी थे जो यमन पर हुकूमत कर रहे थे, फिर वे का'बा को गिराने के इरादे से निकले, और मक्का पहुँच गए, तो अल्लाह ने उन पक्षियों को भेजा जिनका चर्चा इस सूरत में है, उन पक्षियों ने उन्हें हलाक कर दिया, यह एक चिन्ह था, और यह नबी ﷺ की बेसत से 80 साल पहले की बात है, और जिन लोगों ने इस घटने को अपनी आँखों से देखा था उन में से बहुत से लोग आप की बेसत के समय भी जीवित थे।

13 अर्थात् क्या अल्लाह ने उनके मक़ और का'बा को गिराने की प्रयास को अकारत नहीं कर दिया, और उसे स्वयं उनकी बर्बादी का कारण नहीं बना दिया?

14 अर्थात् उन पर पक्षियों के झुन्ड भेज दिए, यह पक्षियाँ काले रंग की थीं, जो समुन्दर की ओर से दल के दल आई थीं, हर पक्षि के साथ तीन तीन कंकरियाँ थीं, दो उनके दोनों पैरों में और एक उनकी चोंच में, जिसे भी यह कंकरियाँ लगतीं उसे खाए हुए भूसे की तरह कर देतीं।

15 लोगों का कहना है कि यह ऐसी कंकरियाँ थीं जो नरक की आग में पकाई गई थीं, और जिन लोगों को यह लगती थीं उस पर उनका नाम लिखा होता था, जो चने की तरह मसूर से कुछ बड़ी थीं।

16 तो वह उन्हें खाए हुए भूसे की तरह कर देती थीं, जैसे पशु पतियाँ खाकर पाखाने के रास्ते से निकालता है, और एक कौल यह है कि वह खेत की उन पतियों की तरह होएँ जिसे जानवरों ने खालिया हो और डन्टल बाकी रह गया हो।

## सूरत कुरेश - 106

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 कुरेश को प्रेम दिलाने के लिए।
- 2 (अर्थात) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा से<sup>1</sup> मानूस करने के लिए।
- 3 तो (उसके शुक्रिए<sup>2</sup> में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहे।
- 4 जिसने उन्हें भूख में भोजन दिया<sup>3</sup> और डर (और भय) में अमन और शान्ति दिया।<sup>4</sup>

## सूरतुल माऊन - 107

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 क्या तुने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झटलाता है?<sup>1</sup>
- 2 यही वह है जो यतीम को धक्के देता है<sup>2</sup>
- 3 और निर्धन (भूखे) को खिलाने की तर्गीब नहीं देता<sup>3</sup>
- 4 उन नमाजियों के लिए अफसोस (और वैल नामी जहन्नाम की जगह) है।
- 5 जो अपनी नमाज़ से गाफिल हैं<sup>4</sup>
- 6 जो दिखावे का कार्य करते हैं।
- 7 और प्रयोग में आने वाली चीज़ें रोकते हैं।<sup>5</sup>

<sup>1</sup> इस सूरत का नाम सूरए ईलाफ भी है।

साल में दो बार कुरेश का व्यापार के लिए यात्रा होता था, एक यमन की ओर जो सरदियों में होता था क्योंकि वह गरम मुल्क है, दूसरा शाम की ओर जो गरमियों में होता था; क्योंकि वह ठंडा मुल्क है, कुरेश की गुज़रान का माध्यम व्यापार था, यदि यह दोनों यात्रा न होते तो उन्हें कोई सम्मान प्राप्त न होता, और यदि वे अपने खान-ए-का'बा के पड़ोस में रहने के कारण सुरक्षित न होते तो यह दोनों यात्रा उन के लिए सम्भव न होता। मक़सद यह है कि यह अल्लाह का उन पर एहसान है कि उसने उन्हें इन दोनों यात्राओं से मानूस किया, और उन्हें इनके लिए आसान कर दिया, तो इस कारण इन्हें मात्र अल्लाह की ही इबादत करनी चाहिए।

<sup>2</sup> तो अल्लाह तआला ने उन्हें इस बात से आगाह किया कि वही इस घर का रब है; क्योंकि उन्होंने बहुत सी मूर्तियाँ बना रखी थीं, जिनकी वे पूजा करते थे, तो अल्लाह ने उन से अपने आप को छोट कर अलग कर लिया।

<sup>3</sup> अर्थात उन्हें इन दोनों यात्राओं के माध्यम से भोजन दिया, और उन्हें उस भूक से छुटकारा दिया जिस में वे इस से पहले गिरिफ्तार थे।

<sup>4</sup> इस से पहले अरबों में हत्या और लूट-पाट साधारण सी बात थी, लोग एक दूसरे को बन्दी बना कर दास बना लिया करते थे, लेकिन कुरेश को हरम के कारण इस भय और डर से सुरक्षित रखा, और उसने उन्हें उन हबशियों के भय से भी सुरक्षित कर दिया जो अपने हाथी द्वारा खान-ए-का'बा को ढाने आए थे।

<sup>5</sup> अर्थात क्या हिसाब-व-किताब और बदले के दिन को झटलाने वाले को तुने देखा।

<sup>6</sup> अर्थात यदि तू ध्यान से देखे तो यह वही व्यक्ति है जो अनाथ को धक्के देता है और उस के हक को पामाल करता है। जाहिलियत काल के अरब औरतों और बच्चों को वरासत में हिस्सा नहीं देते थे।

<sup>7</sup> अर्थात ऐसे व्यक्ति में धन की ऐसा लालच होती है कि वह फकीर को खाना तक नहीं खिला सकता, और न ही वह अपने बाल बच्चों और दूसरों को उस पर उभार सकता है।

<sup>8</sup> साहोन् नमाज़ से गफ़लत और लापरवाही करने वाले, ऐसे लोग यदि नमाज़ पढ़ते भी हैं तो उन्हें अपनी नमाज़ों से पुण्य की उम्मीद नहीं होती और यदि छोड़ देते हैं तो उन्हें सज़ा का कोई डर नहीं होता, इस कारण उन्हें इस की कोई पर्वाह नहीं होती यहाँ तक कि उसका समय जाला रहता है।

<sup>9</sup> अर्थात यदि वे नमाज़ पढ़ते भी हैं तो मात्र दिखावे के लिए पढ़ते हैं, इस तरह जो भी नेकी के काम वे करते हैं, मात्र दिखावे के लिए करते हैं, ताकि लोग उनकी प्रशंसा करें।

<sup>10</sup> माऊन ऐसी चीज़ को कहते हैं जिसे लोग एक दूसरे से मांग लिया करते हैं, जैसे डाल, और हांडी वगैरा, या ऐसी चीज़ जिसे देने से कोई नहीं रोकता, जैसे पानी, नमक और आग वगैरा, और एक कौल यह है कि माऊन से मुराद ज़कात है, अर्थात जो क़ियामत के दिन के बदले पर ईमान नहीं रखते वे ऐसे कन्जूस होते हैं कि ज़कात नहीं दे सकते, बल्कि ऐसे लोग ऐसी चीज़ें भी आरियत में नहीं देना चाहते जिसे साधारण लोग देने से नहीं

سُوْرَةُ الْقُرَيْشِ  
آيَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ ١  
إِلَيْهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ٢  
فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ٣  
الَّذِي أَطْعَمَهُمْ ٤  
مِن جُوعٍ وَآمَنَهُمْ مِنَ خَوْفٍ ٥

سُوْرَةُ الْمَاعُونِ  
آيَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالذِّبْرِ ١  
فَذَلِكَ الَّذِي ٢  
يَدْعُ الْيَتِيمَ ٣  
وَلَا يُحِصُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ٤  
فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ٥  
الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهَوْنَ ٦  
الَّذِينَ هُمْ بِإِرَاءَتِهِمْ ٧  
وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ٨

سُوْرَةُ الْبَكْرَةِ  
آيَاتُهَا ٢٨

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكِتَابَ ١  
فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَر ٢  
إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ٣

## सूरतुल कौसर - 108

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 यकीनन हम ने तुझे कौसर<sup>1</sup> (और बहुत कुछ) दिया है।
- 2 तो तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और कुर्बानी कर।<sup>2</sup>
- 3 अवश्य तैरा शत्रु<sup>3</sup> ही लावारिस और बेनाम व निशान है।

## सूरतुल काफिरून - 109

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- 1 आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो!<sup>1</sup>

हिचकिचाते।

<sup>11</sup> कौसर जन्नत की एक नहर का नाम है जिसे अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ और आप की उम्मत के सम्मान का कारण बनाया है।

<sup>12</sup> इस से मुराद पाँचों समय फर्ज़ नमाज़ों की अदायगी है, लोग गैरुल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ते और कुर्बानियाँ करते थे, अल्लाह तआला ने अपने नबी को आदेश दिया कि आप अपनी नमाज़ और कुर्बानी अल्लाह के लिए शुद्ध कीजिए, क़ताब, अता और इक्रमा कहते हैं कि मुराद ईद की नमाज़, और बक्रइद की कुर्बानी है।

<sup>13</sup> अवश्य तैरा शत्रु ही ऐसा है कि उसके मरने के बाद उसका कोई नामलेवा नहीं रहेगा। इतर ऐसे व्यक्ति को कहते जिसकी कोई नरीना संतान न हो, जब रसूलुल्लाह ﷺ के बेटे की वफ़ात हुई तो कुछ मुशिक कहने लगे कि इनकी जड़ कट गई और यह बे-नसल होगा, तो उसके जबाब में अल्लाह तआला ने यह सूरत उतारी।

<sup>14</sup> इस सूरत का शाने नुजूल यह है कि काफ़िरो ने अल्लाह के रसूल के सामने यह मांग रखी कि आप एक साल उनके उपास्यों की पूजा करें, और एक साल वे आप के माबुद की इबादत करेंगे, तो उस समय अल्लाह तआला ने आप को उन से यह कहने का आदेश दिया।



### سُورَةُ الْكَافُرَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ❶ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ❷  
وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ❸ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مِمَّا  
عَبَدْتُمْ ❹ وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ❺ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ❻

### سُورَةُ النَّازِعَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ❶ وَرَأَيْتَ النَّاسَ  
يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ❷ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ  
وَأَسْتَغْفِرْ لَهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ❸

### سُورَةُ الْمَسَدِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ❶ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا  
كَسَبَ ❷ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ❸ وَأَمْرَاتُهُ  
حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ❹ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ❺

- ❶ न तो मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो।
- ❷ और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ।
- ❸ और न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिसकी तुमने इबादत की।
- ❹ न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ।
- ❺ तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म है और मेरे लिये मेरा धर्म है।

### सूरतुन्नस - 110

- 1 अर्थात् जिन बुतों की इबादत का तुम प्रस्ताव रख रहे हो मैं उनकी इबादत नहीं कर सकता।
- 2 और न तुम जब तक अपने शिर्क और कुफ्र पर कायम रहोगे उस अल्लाह की इबादत करने वाले होंगे जिस की इबादत मैं करता हूँ।
- 3 अर्थात् मैं भविष्य में भी तुम्हारे उन उपासकों की पूजा नहीं कर सकता जिन की तुम पूजा करते हो।
- 4 अर्थात् तुम अपनी भविष्य काल में जब तक अपने कुफ्र और शिर्क पर कायम रहोगे अल्लाह की इबादत नहीं कर सकते, क्योंकि यदि तुम इबादत करो भी तो वह स्वीकार नहीं होगी। और एक क़ौल यह है कि इन आयतों में तकारार है जिसका उद्देश्य काफ़िरों के दिलों से इस भ्रम को निकाल बाहर करना है कि आप उन की मांग मान लेंगे।
- 5 अर्थात् यदि तुम अपने धर्म से प्रसन्न हो जो कि शिर्क, और महान पाप है, है, और उसे नहीं छोड़ सकते, तो मैं भी अपने धर्म से प्रसन्न हूँ जो कि ख़ालिस सत्य ईश्वर "अल्लाह" की इबादत है, और भला मैं इसे कैसे छोड़ दूँ। हमारे लिए हमारा कर्म है और तुम्हारे लिए तुम्हारा।
- 6 इस सूरत को सूरते-तौवी'अु भी कहते हैं, अहमद और इब्ने जरीर ने इब्ने अब्बास से रिवायत किया है कि जब यह सूरत नाज़िल हुई तो

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- ❶ जब अल्लाह की मदद और विजय प्राप्त हो जाए।
- ❷ और तू लोगों को अल्लाह के धर्म की ओर झुण्ड के झण्ड आता देख ले।
- ❸ तो अपने रब की पाकी करने लग प्रशंसा के साथ, और उससे माफ़ी की दुआ कर, बे-शक वह बड़ा ही तौबा स्वीकार करने वाला है।

### सूरतुल्लहब - 111

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

- ❶ अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह (स्वयं) नाश हो गया।
- ❷ न तो उसका माल उसका काम आया और न उसकी कमाई।
- ❸ वह जल्द ही भड़कने वाली आग में जाएगा।
- ❹ और उसकी पत्नी भी (जाएगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।
- ❺ उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुयी रस्सी होगी।

अल्लाह के रसूल ने फर्माया इस में मुझे मेरी मौत की खबर दी गई है।  
7 अर्थात् ऐ मुहम्मद! जब आप के पास कुरैश के विरुद्ध जिन्होंने आप से दुश्मनी कर रखी है अल्लाह की सहायता आजाए और मक्का विजय होजाए।  
8 नसर से मुराद अल्लाह की मदद है जिससे आपके शत्रु पराजित हो जाएं और आप उन पर गालिब हो जाएं। और फ़तह से मुराद है उनके ठिकानों को पराजित कर देना तथा उनके घरों में घुस जाना, और उनके दिलों को हक़ स्वीकार करने के लिए खोल देना।

9 अर्थात् लोगों को अल्लाह के धर्म में झुण्ड के झुण्ड आता देख ले, क्योंकि जब अल्लाह के रसूल ने मक्का फ़तह किया तो अरब-वासी कहने लगे कि जब मुहम्मद को हरम वालों पर सफलता मिल गई जिन्हें अल्लाह तआला ने हथी वालों से पनाह दी थी, तो इसका अर्थ यह है कि वह सत्य पर है और तुम उन्हें पराजित नहीं कर पाओगे, इसलिए लोग इस्लाम में झुण्ड के झुण्ड आने लगे, जबकि इस से पहले लोग इस्लाम में इक्का दुक्का आ रहे थे।  
10 चुनांचे पूरे का पूरा कबीला इस्लाम में दाखिल होने लगा।

11 इसमें अल्लाह की तस्बीह और हम्द दोनों का एक साथ चर्चा है, तस्बीह तस्बीह में इस बात पर तअज्जुब किया गया है कि अल्लाह ने आप को ऐसी चीज़ों की तौफ़ीक दी है और उन्हें आप के लिए सरल कर दिया है, जिनके बारे में आप को या दूसरों को गुमान तक न था, और हम्द इस महान एहसान पर है कि अल्लाह ने आप की मदद की, मक्का फ़तह कराया, और लोगों को झुण्ड के झुण्ड इस्लाम में दाखिल कराया।

12 अर्थात् आप अल्लाह के सामने झुकते हुए अपने गुनाहों की माफ़ी माँगिए।  
13 क्योंकि वह बड़ा ही तौबा स्वीकार करने वाला है, क्योंकि उसकी शान यही है कि जो भी उससे माफ़ी चाहे उसकी माफ़ी स्वीकार करे। इमाम बुख़ारी वगैरः ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फर्माया : कि इस सूरत में अल्लाह तआला ने अल्लाह के रसूल को आप की मौत की खबर दी है, और कहा है कि जब अल्लाह की सहायता आजाए और मक्का फ़तह होजाए, तो यह इस बात की निशानी है कि आप की मौत का समय क़रीब आचुका है, इसलिए आप अपने रब की तस्बीह में रहिए और उससे बख़्शिश तलब करने में लग जाइए, अवश्य वह बड़ा ही तौबा स्वीकार करने वाला है।

14 अर्थात् जो तस्निया (ख़ीयचन) है, मुराद इससे उसकी जान है, अर्थात् जो शाप उसने नबी को दी थी "तुम्हारी हलाकत हो, क्या तुमने हमें इसी लिए इकट्ठा किया था" कह कर, उलट कर स्वयं उसी पर आएगी और वही नष्ट होगा। अबू लहब नबी का चचा था, और उसका नाम अब्दुलउज्जा था।

15 अर्थात् जो बर्बादी उसे आई उसे न तो उसका इकट्ठा किया हुवा माल उससे दूर कर सका, न उसकी सरदारी और न ही उसका सम्पान।

16 जल्द ही वह भड़कती हुई आग में जाएगा जो उसकी चमड़ी जला देगी, जो कि जहन्नम की आग है।

17 और उसके साथ उसकी पत्नी भी उस भड़कती हुई आग में जाएगी, और वह अबू सुफयान की बहन उम्मे जमील बन्ते हब है जो कि काटि-दार झाड़ हो डो कर लाती और रात में आपके रास्ते में डाल दिया करती थी।

18 अबू लहब पत्नी को कहते हैं जिस से रस्सी बटी जाती है, उसके पास एक कीमती हार था, उसने कहा कि लात और उज्जा की कसम मैं इसे मुहम्मद की दुश्मनी पर खर्च कर दूंगी तो कियामत के दिन उसकी सज़ा यही होगी कि उस हार की जगह उसकी गर्दन में यह रस्सी होगी।

## सूरतुल इख्लास - 112

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

(आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।  
अल्लाह (तआला) बे-नियाज़ है (किसी के अधीन नहीं  
सभी उसके अधीन हैं)।

न उससे कोई पैदा हुवा और न वह किसी से पैदा हुवा।

और न कोई उसका हमसर (समकक्ष) है।

## सूरतुल फलक - 113

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

आप कह दीजिये कि मैं सवेरे के रब की शरण में आता हूँ।  
प्रत्येक उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है।

और अंधेरी रात की बुराई से, जब उसका अंधकार फैल जाए।

और गौंड (लागा कर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)।

और हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे।

## सूरतुनास - 114

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहबान बहुत रहम करने वाला है।

आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की शरण में आता हूँ।  
लोगों के मालिक की। (और)।

1 उबै बिन कअब رضي الله عنه से रिवायत है कि मुशिरको ने नबी ﷺ से कहा : ऐ मुहम्मद! तुम अपने रब का नसब बयान करो, तो यह सूरत नाज़िल हुई। इस शैतान नुजूल की रौशनी में इसका अर्थ यह हुवा कि यदि तुम उसके नसब की स्पष्टता चाहते हो तो जान लो कि वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं।

2 **صمد** ऐसी हस्ती को कहते हैं जिसकी ओर हाजत लेकर जाया जाए, क्योंकि वह उसे पूरी करने की शक्ति रखता है। इब्ने अब्बास कहते हैं कि: समद वह सरदार है जो अपनी सरदारी में पूरा हो, और वह शरीफ है जो अपनी बड़ाई में पूरा हो, और वह बुदबंद है जो अपनी बुदबंदारी में पूरा हो, और वह बे-नियाज़ है जो अपनी बे-नियाज़ी में पूरा हो, और वह जानी है जो अपने ज्ञान में पूरा हो, और वह हकीम है जो अपनी हिकमत में पूरा हो, और ऐसी हस्ती मात्र अल्लाह की हस्ती है, और समदियत ऐसा गुण है जो अल्लाह के सिवाय किसी और को शोभा नहीं देता।

3 अर्थात् उसकी कोई संतान नहीं है और न वह स्वयं किसी का संतान है, इसलिए कि कोई उसका हम-जिस नहीं, और इसलिए भी कि उसकी ओर पहले और बाद दोनों की निस्वत मुहाल है, क्योंकि यदि वह पैदा हुवा तो इसका अर्थ है कि वह पैदा होने से पहले नहीं था, क़ताब: कहते हैं कि अरब के मुशिरक कहते थे कि फ़िरिशते अल्लाह की बेटियाँ हैं, और यहूदी कहते थे कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं, और ईसाई कहते थे कि ईसा अल्लाह के बेटे हैं, तो अल्लाह तआला ने इस नकारा, और कहा : **لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ** "उसने न किसी को जना है और न वह जना गया है"।

4 अर्थात् उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता, और उसके गुणों में कोई उसका साझी नहीं है।

5 **قلق** का अर्थ सवेरा है इसलिए कि वह रात को फ़ाड़ कर निकलता है, और एक क़ौल के अनुसार इससे मुराद वह सारी सृष्टि है जो किसी चीज़ को फ़ाड़ कर निकलती है। और एक क़ौल यह भी है कि इस से इशारा इस बात की ओर है कि जो हस्ती इस पूरी दुनिया से रात के अंधकार को खतम करने की शक्ति रखती है वह इसी तरह इस बात की भी शक्ति रखती है कि पनाह में आने वाले व्यक्ति से वे सारी चीज़ें दूर कर दे जिस का उसे डर है।

6 अर्थात् मैं अल्लाह के शरण में आता हूँ उसकी सृष्टि में से प्रत्येक उस चीज़ की बुराई से जिसे उसने पैदा किया है, यह आम है इस्लाम उसकी संतान, जहन्म इत्यादि प्रत्येक वह वस्तु सम्मिलित है जिससे इन्सान को हानि हो सकती है।

7 अर्थात् मैं रात के अंधकार से जब वह आकर हर चीज़ को ढाक लेता है अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। इसलिए कि रात ही में दरिन्दे अपने झाड़ों से जानवर अपने बिलों से और मुज़िम लोग अपने नापाक मंशा को लेकर निकलते हैं, इन शब्दों द्वारा इन सारी चीज़ों से पनाह मांगी गई है।

8 अर्थात् मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ जादूगरियों की बुराई से, उन्हें **نفاثات** इसलिए कहा गया है, क्योंकि वह जादू करते समय बागे के गौंड पर फूँकती थीं। (इससे जादू का क़ाला कर्तव करने वाले और औरत दोनों मुराद हैं)।

9 अल्लाह तआला ने जिस पर इन्आम किया है उससे नेमत के छिन जाने की तमन्ना करना हसद कहलाता है, और यह एक महान पाप है जो नैकियों को खाजाता है।

10 लोगों का रब वही है जिसने उन्हें पैदा किया, और जो उनके समस्याओं को सुलझाता है।

11 लोगों के इक़ोकी बादशाह के शरण में जिसकी पूरे संसार पर राज है।

## سُورَةُ الْاِخْلَاصِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝۱ اللّٰهُ الصَّمَدُ ۝۲ لَمْ يَلِدْ  
وَلَمْ يُولَدْ ۝۳ وَتَمَّ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝۴

## سُورَةُ الْفَلَاقِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ اَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲ وَمِنْ  
شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝۳ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي  
الْمَقَادِ ۝۴ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝۵

## سُورَةُ النَّاسِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ اَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝۱ مَلِكِ النَّاسِ ۝۲ اِلٰهِ  
النَّاسِ ۝۳ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝۴ الَّذِي  
يُوسْوِسُ فِي صُدُوْرِ النَّاسِ ۝۵  
مِنْ اَلْحِجَّةِ وَالنَّاسِ ۝۶

लोगों के माबूद की (शरण में) <sup>12</sup>  
शंका डालने वाले <sup>13</sup> पीछे हट जाने वाले <sup>14</sup> की बुराई से।  
जो लोगों के सीने में <sup>15</sup> शंका डालता है। <sup>16</sup>  
(चाहे) वह जिन्न में से हो या इन्सान में से। <sup>17</sup>

12 क्योंकि बादशाह कभी पूजनीय होता है कभी नहीं होता, **إله الناس** कह कर यह स्पष्ट कर दिया गया कि **إله** "माबूद" शब्द उसी इक़ोकी बादशाह के साथ खास है जिस की पूरे संसार पर राज है, जिसमें उसका कोई भी साझी नहीं।

13 **وسوسة** छुपी आवाज़ को कहते हैं, **وسواس** से मुराद शैतान है, क्योंकि वह बहुत ही छुपी तरीके से इन्सान के दिल में बुरी बातें डाल देता है।

14 **خناس** का अर्थ खिसक जाने वाला है, यह शैतान का गुण है, जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो खिसक जाता है, और जब अल्लाह के ज़िक्र से गाफ़िल होजाया जाए तो फैल कर दिल पर छा जाता है, और वसवसा डालता है।

15 शैतान का वसवसा उसका ऐसी धीमी आवाज़ में अपने अनुकरण की ओर बुलाना है जो दिल तक पहुँच जाए, पर कान से सुनी न जासके।

16 अगर अल्लाह तआला ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि वसवसे डालने वाले शैतान दो प्रकार के हैं, एक जिन्न में से और दूसरा इन्सान में से।

17 जिन्नी शैतान लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, जैसा कि ऊपर इसका चर्चा किया गया, और इन्सानी शैतान भी लोगों के दिलों में वसवसा डालते हैं पर वे उन्हें ख़ैरखाह दिखाई देते हैं। जबकि वह जिन्नी शैतानों की सुझाई हुई बातों को बड़े ही अच्छे अन्दाज़ में उनके दिलों में डालते हैं, और एक क़ौल यह है कि इब्नीस इन्सानों के दिलों में वसवसे डालता है, इब्ने अब्बास से रिवायत है कि जो बच्चा भी पैदा होता है उस पर शैतान मुसल्लत कर दिया जाता है, जब वह अल्लाह का ज़िक्र करता है तो वह खिसक कर पीछे होजाता है, और जब वह ज़िक्र से गाफ़िल होजाता है तो आकर दिल में अनेक प्रकार के वसवसे डालता है। उसकी चालों से और वसवसों से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं।



## मुसलमान के जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्न

- 1- मुसलमान अपने अक़ीदे के बारे में जानकारी कहाँ से प्राप्त करें?** वह अपने अक़ीदे के बारे में जानकारी अल्लाह तआला की किताब और उसके उस नबी ﷺ की सहीह हदीस से प्राप्त करे जो अपनी ओर से कोई बात नहीं कहता ﴿ **إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ** ﴾ “वह तो मात्र व़ह्य है जो उतारी जाती है”। और यह जानकारी सहाबए किराम رضي الله عنهم और सलफ़ सालिहीन की समझ के अनुसार होनी चाहिए।
- 2- यदि हमारे बीच इख़्तिलाफ़ होजाए तो उसका हल कहाँ है?** उसके हल के लिए हम शरीअत की ओर लौटें, इस बारे में हुक्म (फैसला) अल्लाह की किताब और उस के रसूल ﷺ की सुन्नतों में है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ **فَإِنْ نَزَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ** ﴾ “फिर यदि किसी बात में इख़्तिलाफ़ करो तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ”। और नबी ने फ़रमाया: “मैं तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़े जाता हूँ जब तक तुम इन्हें मज़बूती से थामे रहोगे गुम्राह नहीं होगे : एक अल्लाह की किताब है और दूसरी चीज़ है उसके रसूल की सुन्नत”। (हाकिम)
- 3- क़ियामत के दिन नजात पाने वाली जमाअत कौन सी है?** नबी ﷺ ने फ़रमाया : “ मेरी उम्मत 73 फ़िर्कों में बट जाएगी, सारे फ़िर्के जहन्नम में जाएंगे सिवाए एक के, सहाबए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन सी जमाअत होगी? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: यह वह जमाअत होगी जो मेरे और मेरे सहाबए किराम के तरीके पर होगी। ” (अहमद और तिर्मिज़ी) अतः हक़ उस चीज़ में है, जिस पर आप और आप के सहाबए किराम थे, इसलिए यदि तुम नजात और आमाल की कुबूलियत चाहते हो तो उनकी पैरवी करो और बिद्अतों से बचो।
- 4- नेक कर्म के स्वीकार होने की क्या शर्तें हैं?** इसकी तीन शर्तें हैं : ① अल्लाह और उसकी तौहीद पर ईमान लाना; अतः मुशिरक का कर्म स्वीकार नहीं होता। ② इख़्लास, अर्थात् कर्म द्वारा मात्र अल्लाह की मर्ज़ी चाही जाए। ③ नबी ﷺ की मुताबअत, वह इस तरह की आप की सुन्नत के अनुसार कर्म किया जाए। अतः आप के बताए हुए तरीके मुताबिक ही अल्लाह की इबादत की जाए। और यदि इनमें से कोई भी एक शर्त नहीं पाई गई तो उसका कर्म रद्द कर दिया जाएगा, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ **وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنشُورًا** ﴾ “और उन्होंने जो जो कर्म किए थे हमने उनकी ओर बढ़कर उन्हें कणों (ज़रों) की तरह तहस-नहस कर दिया”।
- 5- इस्लाम धर्म के कितने मर्तबे हैं?** तीन हैं : इस्लाम, ईमान और एहसान।
- 6- इस्लाम का अर्थ क्या है, और इसके कितने अर्कान हैं?** तौहीद को स्वीकारते हुए अपने आप को अल्लाह के सपुर्द कर देने, उस की इताअत (आज्ञा पालन) करने, और शिर्क और मुशिरकों से बराअत (संपर्क न रखने) का नाम इस्लाम है। इसके पाँच अर्कान हैं, जिन्हें नबी ﷺ ने अपनी हदीस में ज़िक्र किए हैं : “ इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर कायम है; इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, और यह कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ कायम करना, ज़कात देना, बैतुल्लाह (अल्लाह के घर काबा) का हज़्ज करना, और रमज़ान का रोज़ा रखना ”। (बुख़ारी और मुस्लिम)
- 7- ईमान का अर्थ क्या है और इसके कितने अर्कान हैं?** दिल से एतिकाद, जुबान से इक्रार और अंगों से अमल करने का नाम ईमान है जो नेकी करने से बढ़ता है, और पाप करने से घटता है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ **لِيُزَادُوا إِيْمَانًا مَّعَ إِيْمَانِهِمْ** ﴾ “ताकि वे अपने ईमान के साथ और भी ईमान में बढ़ जाएं”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया : “ ईमान की सत्तर से अधिक शाखाएं हैं, इनमें सब से बुलन्द ‘ला-इलाहा इल्लल्लाह’ कहना है, और सब से कमतर रास्ते से कष्ट-दायक चीज़ को हटा देना है, और शर्म व हया ईमान का एक हिस्सा है। ”

(मुस्लिम) इस बात की ताकीद इस से भी होती है कि नेकियों के मौसम में एक मुसलमान अपने मन में नेकी के कामों में चुस्ती महसूस करता है जबकि पाप करने के कारण बुझा बुझा सा रहता है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ﴾ “अवश्य नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं”। और ईमान के 6 अर्कान हैं जैसा कि आप ﷺ ने फ़रमाया कि : “ तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, और अच्छी और बुरी किस्मत पर ईमान ले आओ ”। (बुख़ारी और मुस्लिम)

**8- ला-इलाहा इल्लल्लाह का क्या अर्थ है?** गैरुल्लाह के इबादत का हक़दार होने का इन्कार करना और मात्र अल्लाह तआला के लिए इबादत को साबित करना।

**9- क्या अल्लाह हमारे साथ है?** हाँ, अल्लाह तआला अपने इल्म द्वारा हमारे साथ है, वह हमारी बातों को सुनता है, हमें देखता है, हमारी रक्षा करता है, हमें घेरे हुए है, वह हम पर कादिर है, हमारे अन्दर उसकी मशीयत (चाहत) चलती है। लेकिन उसकी ज़ात मख़लूको (सृष्टि) के अन्दर मिली हुई नहीं है, और न ही कोई मख़लूक उसे घेरे में ले सकती है।

**10 क्या अल्लाह तआला को आँखों द्वारा देखा जा सकता है?** मुसलमानों का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि संसार में अल्लाह तआला को नहीं देखा जा सकता है, पर मोमिन बन्दे परलोक में मैदाने महशर में और जन्नत में अल्लाह तआला को देखेंगे, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَجُوهٌ يُّوْمِرُونَ نَاصِرَةٌ ۖ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاطِرَةٌ﴾ “उस दिन बहुत से चेहरे रौनक वाले होंगे, जो अपने रब की ओर देखते होंगे”।

**11 अल्लाह तआला के नाम और गुण जानने से क्या लाभ होगा?** अल्लाह तआला ने बन्दे पर सब से पहले अपने बारे में जानकारी प्राप्त करने को फ़र्ज़ किया है, तो जब लोग अपने रब के बारे में जान लेंगे तो कमा हक़ूहू (यथायथ) उसकी इबादत करेंगे, उसका फ़रमान है :

﴿فَاعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ﴾ “आप जान लें कि अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, और अपने पापों की बख़्शिश मांगा करें”। चुनाँचे अल्लाह का उसकी विस्तार रहमतों के साथ ज़िक्र करना उससे उम्मीद रखने का कारण है, और उसकी कठोर सज़ाओं का चर्चा उससे ख़ौफ़ को वाजिब करता है, और अकेले उसके मुन्इम (एहसान करने वाला) होने का चर्चा उसके शुक्र को लाज़िम करता है।

और अल्लाह तआला के नामों और उसके गुणों द्वारा उसकी इबादत करने का अर्थ यह है कि : सेवक को इन चीज़ों की जानकारी हो, उनके अर्थ की समझ हो, और उनके अनुसार उसका अमल हो, अल्लाह तआला के कुछ नाम और गुण ऐसे हैं कि जिन्हें अपनाना बन्दे के लिए प्रशंसा का पात्र है, जैसे : इल्म, दया और इंसाफ़, और कुछ ऐसे हैं जिन को अपनाने से बन्दे की मज़म्मत होती है, जैसे : उलूहियत (इबादत की योग्यता) तजब्बुर (ग़ल्बे वाला होना) तकब्बुर (बड़ाई वाला होना), और बन्दों के कुछ गुण ऐसे हैं जिन पर उनकी प्रशंसा होती है, और जिनका उन्हें आदेश दिया जाता है, जैसे : बन्दगी, फ़कीरी, मुहताजी, आजिज़ी, सवाल इत्यादि। लेकिन यह गुण अल्लाह तआला के नहीं हो सकते, और अल्लाह तआला के पास सबसे अधिक महबूब (पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला पसन्द करता है, और मब्बूज़ (ना-पसन्दीदा) व्यक्ति वह है जो ऐसे गुण अपनाए जिन्हें अल्लाह तआला ना-पसन्द करता है।

**12 अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों का अर्थ क्या है?** : अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : ﴿وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا﴾ “और अच्छे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं, सो इन नामों से

उसी को पुकारा करो”। और नबी ﷺ से साबित है कि आप ने फ़र्माया : “अल्लाह तआला के ६६ नाम हैं, १०० में ९ कम, जिसने उनका इहसा किया वह जन्नत में दाखिल होगया”। बुखारी और मुस्लिम। इहसा का अर्थ है : ① उस के शब्द तथा संख्या की गिन्ती करना। ② उस के अर्थ को समझना और उस पर ईमान लाना। चुनान्वि जब बन्दा (अल्-हकीम) कहता तो अपनी सारी चीज़ें अल्लाह के हवाले कर देता है; क्योंकि सारी चीज़ें उसी की हिक्मत के आधार पर होती हैं। और जब (अल्-कुदूस) कहता है तो उस के ध्यान में यह चीज़ आती है कि वह हर प्रकार की कमी से पवित्र है। ③ इन नामों द्वारा अल्लाह तआला से दुआ करना। दुआएं दो प्रकार की होती हैं। ① जिसमें प्रशंसा और इबादत हो, ② जिसमें तलब और मांग हो। और कुआन व सुन्नत का ततब्बु’अ (अनुसन्धान) करने वाला इन नामों को इन प्रकार पाएगा :

नाम	अर्थ
<b>अल्लाह :</b>	उपास्य, जो सारी सृष्टि की इबादत का हकदार है, चुनान्वि वही वह सत्य उपास्य और मा'बूद है जिस के लिए झुका जाता, रुकूअ और सज्दा किया जाता, और हर तरह की इबादत उसी के लिए खास की जाती हैं।
<b>अरह्मान :</b>	अल्लाह तआला के इस नाम में यह अर्थ पाया जाता है कि वह सारी सृष्टि पर दयावान है, और यह नाम मात्र अल्लाह तआला के लिए खास है, दूसरे के लिए इस का प्रयोग सही नहीं है।
<b>अरह्मीम :</b>	लोक तथा प्रलोक में मोमिनों पर मेहबान है, उस ने संसार में उन्हें अपनी इबादत की राह दिखाई और आखिरत में जन्नत अता करके उनका सम्मान करेगा।
<b>अल्-गफूर :</b>	जो अपने बन्दे के गुनाहों पर पर्दा डाल देता है, और उन्हें रुसवा नहीं करता, न उन के पाप पर उन्हें सज़ा देता है।
<b>अल्-गफ़ार :</b>	क्षमा चाहने वाले बन्दे के गुनाहों को बहुत अधिक माफ़ करने वाला।
<b>अरऊफ़ :</b>	यह रा'फ़त से है जिसका अर्थ होता है हद दर्जा मेहबान, यह दया संसार में सारी सृष्टि के लिए आम है, और आखिरत में मो'मिन औलिया के लिए खास है।
<b>अल्-हलीम :</b>	शक्ति के बावजूद जो सज़ा देने में जल्दी नहीं करता, बल्कि यदि वह माफ़ी चाहें तो उन्हें माफ़ कर देता है।
<b>अत्तौबाब :</b>	जो अपने बन्दों में से जिसे चाहे तौबा की तौफीक़ देता है, और उनके तौबा को कबूल करता है।
<b>अस्सितीर :</b>	जो अपने बन्दे के गुनाहों पर पर्दा डालता है, और उन्हें सरे आम रुसवा नहीं करता, और वह यह पसन्द भी करता है कि बन्दा स्वयं अपने और दूसरे के ऐब को पर्दे में रखे, और अपनी गुप्ताड की रक्षा करे।
<b>अल्-गनी :</b>	जो अपने परिपुर्ण विशेषताओं के कारण किसी का मुहताज नहीं है, जबकि सारी मख़लूक उस की मुहताज है, और उसके उपहार और दया के जरूरतमन्द हैं।
<b>अल्-करीम :</b>	बहुत अधिक भलाई वाला और अता करने वाला, जो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, जो चाहता है, जैसे चाहता है सवाल या बिना सवाल किए देता है, इसी तरह गुनाहों को माफ़ करता है, और लोगों के ऐब पर पर्दा डालता है।
<b>अल्-अक्रम :</b>	जो बेइन्तिहा करम वाला है, जिसमें उस की कोई बराबरी करने वाला नहीं, चुनान्वि सारी भलाई उसी की ओर से है, और वही मोमिनों को अपने फज़ल से बदला देता है, और मुंह मोड़ने वाले का हिसाब अपनी अदुल की ब्रन्याद पर करता है।
<b>अल्-वह्हाब :</b>	बहुत अधिक देना वाला, जो बिना किसी बदले और मकसद के देता है, और बिना सवाल किए इन्आम करता है।
<b>अल्-जौवाद :</b>	जो अपनी सम्पुर्ण सृष्टि को बहुत अधिक देने वाला और उन पर फज़ल करने वाला है, और उस के जूद-व-करम का एक बड़ा हिस्सा मोमिनों के नसीब में है।

<b>अस्सुबूद् :</b>	अपने वलियों से मुहब्बत करता है, उन्हें माफ़ करता है, अपनी नेमतों को उन पर निछावर करते हुए उन से खुश होता है, उनके कर्मों को स्वीकार करता है, और दुनिया वालों के दिलों में उनकी मुहब्बत डाल देता है।
<b>अल्-मु'अत्ती :</b>	अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपने खज़ाने से अत्ता करता है, और उस में से उस के वलियों का एक बड़ा हिस्सा है, और वही है जिसने हर चीज़ को पैदा किया और उन की सूरत बनाई।
<b>अल्-वासि'अ :</b>	महान सिफ़तों वाला है, कमा हक्कूह कोई उस की ता'रीफ़ नहीं कर सकता, वह बड़ाई वाला, महान सलतनत वाला है, बहुत अधिक माफ़ करने वाला दयावान है, और बहुत ही अधिक फ़ज़ल और इहसान करने वाला है।
<b>अल्-मुह्सिन् :</b>	जो अपने नाम, सिफ़ात, कर्म और व्यक्तित्व में सब से सुन्दर है, और जिसने हर चीज़ सुन्दर बनाई, और उन पर इहसान किया।
<b>अर्राज़िक् :</b>	जो सारी मख़लूक को रोज़ी देता है, जिसने उन्हें पैदा करने के पहले ही उनकी रोज़ी मुक़द्दर दी, जो उन्हें हर हाल में मिल कर रहेगी।
<b>अर्राज़्जाक् :</b>	जो बहुत अधिक मात्रा में सृष्टि को जिविका प्रदान करता है, चुनान्वि प्रश्न करने से पहले वह उन्हें रोज़ी देता है, बल्कि नाफ़र्मानों के बावजूद वह उन्हें रोज़ी देता है।
<b>अल्लतीफ़ :</b>	जिसे हर छोटी बड़ी चीज़ की जानकारी है, चुनान्वि कोई भी चीज़ उस से छुपी हुई नहीं है, वह ख़ैर-व-भलाई को बन्दे तक ऐसे छिपे रास्ते से पहंचाता है कि उन्हें उसका गुमान तक नहीं होता।
<b>अल्-ख़बीर :</b>	वह छुपी हुई और बातिनी चीज़ों को भी जानता है जैसा कि उसे ज़ाहिरी चीज़ों की जानकारी है।
<b>अल्-फ़ताह :</b>	जो अपनी हिक़मत और ज्ञान स्वरूप जितना चाहता है अपनी सलतनत, रहमत और रोज़ी के ख़ज़ाने को खोलता है।
<b>अल्-अलीम :</b>	जिसे ज़ाहिरी और बातिनी, ढकी और छुपी, और गुजरी हुई, मौजूदा और भविष्य की जानकारी है, चुनान्वि उस से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं है।
<b>अल्-बर् :</b>	जो अपनी मख़लूक पर बहुत अधिक इहसान करने वाला है, इस क़दर अत्ता करता है कि कोई उन्हें शूमार नहीं कर सकता, वह अपने वादे में सच्चा है, बन्दों के गनाहों से दरग़ज़र करता, उनकी मदद करता और उनकी सहायता करता है, थोड़ी चीज़ों को भी स्वीकार करके उनमें बर्कत देता है।
<b>अल्-इकीम :</b>	जो सारी चीज़ों को उचित स्थान देता है, और उसके निज़ाम में किसी प्रकार की कमी कोताही नहीं होती।
<b>अल्-इक़म :</b>	जो न्याय के साथ मख़लूक के बीच फ़ैसला करता है, और किसी पर अन्याय नहीं करता, और उसी ने अपनी ग़ालिब किताब क़ूर्आन नाज़िल फ़र्माई ताकि लोगों के बीच फ़ैसला करने वाला हो।
<b>अशशाकिर :</b>	जो अपने इत्ताअत-गुज़ारों की प्रशंसा करता है, और कर्म चाहे थोड़ा ही क्यों न हो उस पर उन्हें बदला देता है, जो उस की नेमतों पर शुक़ बजा लाते हैं उन्हें दुनिया में अधिक देता है और आख़िरत में बदला उत्तम बदला देता है।
<b>अशशकूर :</b>	जिस के पास बन्दे का थोड़ा कर्म भी बढ़ जाता है और उस पर उन्हें कई गुन्ना बढ़ाकर बदला देता है, चुनान्वि अल्लाह का बन्दे के लिए शुक़ अदा करने का मतलब है बन्दे की शुक़गुज़ारी पर सवाब देना और उनकी इत्ताअत क़बूल करना।
<b>अल्-जमील :</b>	जिसकी व्यक्तित्व, नाम, सिफ़ात और कर्म खूबसूरत तर हैं, और सृष्टि की सारी सुन्दरता उसी द्वारा है।
<b>अल्-मजीद् :</b>	जिस के लिए आकाश तथा धर्ती में फ़ख़, करम, प्रतिष्ठता और बुलन्दी है।
<b>अल्-वली :</b>	जो अपनी सलतनत का निज़ाम चलाने वाला कारसाज़ है, और अपने वलियों का मदद्गार और सहायक है।
<b>अल्-इमीद् :</b>	जिसके नाम, विशेषता और कर्म पर उसकी तारीफ़ होती है, और उसी की व्यक्तित्व है जो खुशी ग़मी, सख़्ती और नर्मी के हर अवसर में प्रशंसा योग्य है, क्योंकि वह अपनी विशेषताओं में परिपूर्ण है।



<b>अल्-मौला :</b>	वही रब है, मलिक है, सैयिद है और अपने वलियों का सहायक और मददगार है।
<b>अन्नसीर :</b>	वह अपनी मदद से जिसकी चाहे सहायता करता है, चुनान्वि जिस की उसने सहायता की कोई उस पर गालिब नहीं होसकता, और जिसे उसने रुस्वा कर दिया कोई उसका सहायक नहीं होसकता।
<b>अस्समीअ :</b>	जो कि हर भेद और कानाफूसी को, जाहिर और खुले को, बल्कि सारी धीमी और तेज़ आवाज़ को सुनता है, और वही है जो दुआ करने वाले की सुनता है।
<b>अल्-बसीर :</b>	वही है जिसकी निगाह ने लोक और प्रलोक की सारी चीज़ों को वह चाहे जितनी खुली या छिपी हों, छोटी या बड़ी हों अपने घेरे में ले रखी है।
<b>अश्शहीद :</b>	जो कि निगहबान है अपनी सृष्टि पर, जिस ने अपने लिए वहदानियत और इन्साफ के साथ कायम रहने की गवाही दी है, और मुमिन यदि उसकी वहदानियत बयान करते हैं तो उनकी सच्चाई पर गवाह है, और अपने रसूलों और फ़रिश्तों के लिए भी गवाह है।
<b>अरकीब :</b>	जिसे अपनी सृष्टि की पूरी जानकारी है, उनके कर्मों को एक-एक करके गिन रखवा है, लिहाज़ा कोई चीज़ उस से फ़ौत नहीं होसकती।
<b>अरफीक :</b>	जो अपने कर्मों में नमी बरतता है, और थोड़ा थोड़ा करके पैदा करता और आदेश देता है, और अपने बन्दों से नमी का मुआमला करता है, उन पर ऐसी चीज़ें फ़र्ज़ नहीं करता जिस के करने की उन्हें ताक़त न हो। और वह अपने बन्दों में से नमी करने वालों को पसन्द करता है।
<b>अल्-करीब :</b>	जो अपने ज्ञान और शक्ति द्वारा अपनी आम सृष्टि से करीब है, और नमी और सहायता द्वारा मोमिनो से करीब है, जबकि वह अर्श पर है, और किसी मख़्लूक के अन्दर नहीं है।
<b>अल्-मुजीब :</b>	वही है जो अपने इल्म और हिक़मत के आधार पर दुआ करने वाले की दुआ और मांगने वाले की मांग को पूरी करता है।
<b>अल्-मुकीत :</b>	वही है जिसने रोज़ी पैदा करके मख़्लूक तक उसे पहुंचाने की जिम्मादारी ले रखी है। और वही है उस का और बन्दों के कर्मों का बिना कमी किए रक्षा करने वाला।
<b>अल्-हसीब :</b>	वही है जो अपने बन्दों के लिए दीन और दुनिया के सारे ग़मों की ओर से काफ़ी होता है, और ख़ास कर मुमिनो के लिए, और वही है जो उनके कर्मों के आधार पर उनका मुहासबा करेगा।
<b>अल्-मुअ्मिन् :</b>	अपने रसूलों और उनके पैरोकारों की तस्तीक़ करने वाला उनकी सच्चाई की गवाही देकर, और उन्हें मो'अज़ज़ा अता करके, चुनान्वि दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की शान्ति कायम करने वाला वही है, और जो उस पर ईमान लाता है वह उसकी ओर से अत्याचार, अज़ाब और क़ियामत के दिन की घब्राहट से सुरक्षित रहता है।
<b>अल्-मन्नानु :</b>	बहुत अधिक देने वाला, महान इन्आम करने वाला, और वाफ़िर मात्रा में इत्सान करने वाला।
<b>अतैयिबु :</b>	वह हर प्रकार के ऐब और कमी से पवित्र तथा परिपूर्ण है, उसी के लिए सुन्दरता है, और वह अपने बन्दे को बहुत अधिक मात्रा में भलाई से नवाज़ता है, और वही कर्म तथा सद्क़ा स्वीकार करता है जो पवित्र तथा सुध हो।
<b>अश्शाफ़ी :</b>	जो दिल तथा शरीर को हर प्रकार की बीमारी से निरोग करता है, लोगों के पास मात्र दवाएं हैं जबकि शिफ़ा अल्लाह के होथ में है।
<b>अल्-हफ़ीज़ :</b>	जो अपने फ़ज़ल द्वारा अपने मु'मिन् बन्दों और उनके कर्मों का रक्षा करता है, और अपनी शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि की हेर चाह करता है।
<b>अल्-मुतवत्तिल् :</b>	जिसने अपने जिम्मे संसार को बनाने और उसके इन्तिज़ाम की जिम्मेदारी ले रखी है, चुनान्वि उसी ने इसे बनाया और संवारा है, और वह मु'मिनो का कारसाज़ है जिसने करने से पहले उसके जिम्मे अपने काम सौंप दिए, और करते समय उस से मदद चाही, तौफीक़ मिलने पर उसका शुक़्रिया अदा किया, और आज़माइश पर रिज़ामन्दी जाहिर की।
<b>अल्-ख़ल्लाक :</b>	अल्लाह तआला के लिए अन्नूगिनित पैदा करने का माना इस नाम में पाया जाता है, चुनान्वि अल्लाह तआला हमेशा से पैदा कर रहा है, और अभी भी उसकी यह महान सिफ़त है।
<b>अल्-ख़ालिक् :</b>	जिसने सारी सृष्टि बिना किसी उदाहरण के अनोखी बनाई।
<b>अल्-बारिअु :</b>	जिसने निर्धारित सृष्टि को पैदा किया और उन्हें वजूद में लाया।
<b>अल्-मुसौविर् :</b>	जिस ने अपने बन्दों को अपनी पसन्दीदा सूरत पर पैदा किया

<b>अर्बु :</b>	जो अपनी नेमतों द्वारा अपनी मख्लूक की तर्बियत करता है, उन्हें पर्वान चढ़ाता है, और अपने वलियों की ऐसी तर्बियत करता है, जिस से उनके दिलों इस्ताह होजाए, और वही स्रष्टा, मालिक और सैय्यद है।
<b>अल्-अज़ीम :</b>	जो अपनी व्यक्तित्व, नाम और सिफ़ात में महान है, इसी लिए सृष्टि पर उसकी महानता और बढ़ाई करना वाजिब है, और यह भी कि उसके आदेश का पालन करें।
<b>अल्-काहिर :</b>	जो अपने बन्दों को अपने अधिन में रखता है, उन्हें अपना दास बनाता है, और वह उन से उच्चतर है, वह ग़ालिब है जिस के लिए गर्दन झुक गई, और चेहरे ताबेदार होगई, और काहिर से मुबालगा का सेगा है।
<b>अल्-मुहैमिन् :</b>	सारी चीज़ों पर कायम, उनका निगरां, उन पर गवाह और उन्हें अपने घेरे में रखने वाला।
<b>अल्-अज़ीज़ :</b>	उस के लिए सम्पूर्ण प्रकार की अभिमानता है, वह शक्तिशाली है, कोई उस पर गालिब नहीं होसकता, वह किसी का मुहताज नहीं, सभों को उस की ज़रूरत है, और वही है कहर ढाने वाला प्रभूत्व जिस की अनुमति के बिना कोई चीज़ हिल नहीं सकती।
<b>अल्-जब्बार् :</b>	जिसकी इच्छा पूरी होती है, जिस की अधिनता में सारी मख्लूक है, जिस की महानता के आगे झुकी हुई है, और जिस के आदेशों का पालन करती है, और वही है जो कमी पूरी करता है, फकीर को धनी बनाता है, कठिन को सहज बनाता है, और रोगी को निरोग करता है।
<b>अल्-मुत्कब्बिर :</b>	महान, हर प्रकार की बीमारी और कमी से उच्च, बन्दों पर अत्याचार करने से पवित्र, तानाशाहों को निचे करने वाला, जिस के लिए बढ़ाई की सिफ़त है, और जो उसे प्राप्त करना चाहता है उसे तोड़ देता और सज़ा देता है।
<b>अल्-कबीर् :</b>	जो अपनी व्यक्तित्व, सिफ़ात और नाम में महान है, और कोई भी चीज़ उस से बड़ी नहीं है, बल्कि उस के सिवाय सारी चीज़ें उस की महानता के आगे निच्च है।
<b>अल्-इय्यु :</b>	वह हया और शर्म करता है जैसा कि उस के पूर नूर चेहरे और महान सल्लतनत के लायक है, अल्लाह की करम, नेकी, उदार और महिमा की हया है।
<b>अल्-हैय्यु :</b>	जिस के लिए परिपूर्ण स्थायी जीवन है, और ऐसी अस्तित्व है जिसकी न तो कोई शुरूआत है और न अंत। और हर जिवित वस्तु को उसी ने जीवन प्रदान की है।
<b>अल्-कैय्यूम :</b>	जो ख़ुद से कायम है, अपनी सृष्टि से बेनियाज़ है, आकाश और पृथ्वि में बसने वाले सभों को थामने वाला है, और सब उसके ज़रूरतमंद हैं।
<b>अल्-वारिसु :</b>	सृष्टि के फ़ना होजाने के बाद भी जो बाकी रहेगा, और सारी चीज़ें फ़ना होकर उसी की ओर पलट कर जाने वाली हैं, और जो भी चीज़ हमारे पास है वह अमानत है जो एक न एक दिन अपने मालिक के ओर पलट कर चली जाएगी।
<b>अहैय्यानु :</b>	सारी चीज़ें जिसके अधिन में हैं, और जो अपने बन्दों को कर्मों पर बदला देता है, यदि कर्म नेक हो तो बढ़ा कर देता है, और यदि बुरा हो तो उस पर सज़ा देता है या माफ़ कर देता है।
<b>अल्-मलिक् :</b>	जो आदेश देता है, मना करता है, और ग़ालिब है, वही है जिस के आदेश सृष्टि पर लागू होते हैं, वह स्वयं अपनी सलतनत का देख रेख करता है, उस पर किसी की इहसान नहीं है।
<b>अल्-मालिक् :</b>	जो शुरू से ही मालिक है और उसका हक्द्वार है, जब से उसने संसार का निर्माण किया मालिक है, उसमें कोई उसका साझी नहीं, और उस समय भी वही मालिक होगा जब कि इसका अंत होगा।
<b>अल्-मलीक् :</b>	इस नाम के अन्दर उसके मुतलक् मालिक होने का अर्थ पाया जाता है, जो कि मलिक से बढ़कर है।
<b>अस्सुब्बूह :</b>	जो कि हर ऐब और कमी से पवित्र है, क्योंकि उसकी सिफ़ते सुन्दर तथा परिपूर्ण हैं।
<b>अल्-कुद्दूस :</b>	जो कि किसी भी तरह की कमी और ऐब से पवित्र और पाक है; क्योंकि वही तने तन्हा परिपूर्ण सिफ़तों मुत्सिफ़ है, लिहाज़ा उस के लिए मिसाल नहीं दी जासकती।
<b>अस्सलामु :</b>	जो सम्पूर्ण प्रकार की ऐब और कमी से सालिम है, अपनी व्यक्तित्व में, नाम में, सिफ़ात में और कर्मों में, और दुनिया तथा आख़िरत में हर प्रकार की सलामती उसी की ओर से है।
<b>अल्-इक्क :</b>	जिस के बारे में किसी प्रकार का शंका नहीं है, न तो उस के नाम में, न सिफ़ात में, न बन्दगी में, वही सच्चा माबूद है, जिसके सिवाय कोई पूजा के योग्य नहीं।



<b>अल्-मुबीन् :</b>	वह्दानियत, हिकमत तथा रहमत में जिसका मामला स्पष्ट है, और जो अपने बन्दों के लिए भलाई का मार्ग स्पष्ट करता है ताकि उसकी ताबेदारी करें, और बुराई का मार्ग भी ताकि उस से बचें।
<b>अल्-कवी :</b>	जो कि परिपूर्ण इच्छा के साथ शक्तिमान है।
<b>अल्-मतीन् :</b>	जो कि अपनी ताकत और शक्ति में ठोस है, और जिसे अपने कर्म में किसी प्रकार की कठिनाई, परीशानी और थकन नहीं होता।
<b>अल्-कादिर् :</b>	जिस की शक्ति तले हर चीज़ है, आकाश और पृथ्वि में कोई भी चीज़ उसे मगलूब नहीं कर सकती, और वही हर चीज़ को निर्धारित करने वाला।
<b>अल्-कदीर :</b>	यह भी अल्-कादिर के अर्थ में है, मगर इसमें अल्लाह तआला के लिए प्रशंसा का मात्रा अधिक पाया जाता है।
<b>अल्-मुक्तदिर :</b>	अपने ज्ञान अनुसार तक्दीर लागू करने तथा पैदा करने पर अल्लाह तआला के अधिक शक्तिशाली होने का अर्थ इस नाम में पाया जाता है।
<b>अल्-अली :</b>	जो अपनी शान, कूहर, और जात में उच्च तथा महान है, सारी चीज़ें उस की सलतनत के अधिन में है, और कोई भी चीज़ उस से बालातर नहीं है।
<b>अल्-मुतआल् :</b>	जिसकी बुलन्दी के आगी सारी चीज़ें झुकी हुई हैं, और कोई भी चीज़ उस के ऊपर नहीं है, बल्कि हर चीज़ उसके नीचे, और उस की सलतनत के अधिन में है।
<b>अल्-मुकदिम् :</b>	जो वस्तुओं को आगे बढ़ाता है, और अपनी चाहत तथा हिकमत अनुसार सारी चीज़ों को उसके समान जगह देता है, और अपने इल्म और फज़ल के अनुसार किसी सृष्टि को दूसरे पर बढ़ावा देता है।
<b>अल्-मुअख़िर् :</b>	जो प्रत्येक वस्तु को उचित स्थान देता है, और अपनी हिकमत से जिसे चाहे आगे पीछे करता है, और जो अज़ाब को टाले रखता है ताकि बन्दे तौबा करके के उसकी ओर पलट आएं।
<b>अल्-मुसअइर् :</b>	जो सामान का मोल, उसका सम्मान और प्रभाव बढ़ाता है, या कम करता है, चूनाचि उसकी हिकमत और इल्म के आधार पर चीज़ें सस्ती और महंगी होती हैं।
<b>अल्-काबिज़् :</b>	जो रूह कब्ज़ करता है, और अपनी हिकमत और शक्ति के आधार पर जिस की चाहे रोज़ी तंग कर देता है, ता कि उन्हें आजमाए।
<b>अल्-बासि़्त :</b>	जो अपनी सखावत और रहमत के कारण जिस की चाहे रोज़ी बढ़ा देता, और अपनी हिकमत से इस द्वारा भी उस की आजमाइश करता है, और क़कर्मियों के लिए तौबे के साथ दोनों हाथों का भैलाता है।
<b>अल्-अव्वल् :</b>	जिस से पहले कोई चीज़ नहीं थी, बल्कि समपूर्ण सृष्टि उस द्वारा रचना में आई, और स्वयं उस की शुरूआत की कोई सीमा नहीं है।
<b>अल्-आख़िर् :</b>	जिस के बाद कोई चीज़ नहीं होगी, वह सदा बाकी रहने वाला है, और संसार में जो भी है वह फना होजाने वाला है, फिर उसी की ओर उसे पलट कर जाना है, और उस के वजूद की कोई अंत नहीं है।
<b>अज़्ज़ाहिर् :</b>	जो कि हर चीज़ के ऊपर है, और कोई भी चीज़ उस से ऊपर नहीं है, जो कि हर चीज़ को अपने अधिन में रखे हुए है, और उन्हें घेरे हुए है।
<b>अल्-बातिन् :</b>	जिस के वरे कोई चीज़ नहीं है, वह सब से करीब है, उन्हें घेरे में लिए हुए है, और संसार में मख्लूक की निगाहों से ओझल है।
<b>अल्-वित्र :</b>	वह अकेला है जिसका कोई साझी नहीं है, तन्हा है जिस जैसा कोई नहीं है।
<b>अस्सैइद् :</b>	जिसे अपनी सृष्टि पर पूरी सरदारी प्राप्त है, वह उनका मालिक और प्रभू है, और वे उसके बन्दे और दास हैं।
<b>अस्समद् :</b>	ऐसा सरदार जो अपनी सरदारी में कामिल है, सारी मख्लूक सख़्त मुहताजी के कारण जिस की ओर अपनी ज़रूरत पूरी होने के लिए ध्यान लगाती हैं। वही है जो खिलाता है और खिलाया नहीं जाता।
<b>अल्-वाहिद् :</b>	जो अपनी सारी ख़ुबियों में यकता है, उन्में उसका कोई साझी नहीं है, और न ही कोई
<b>अल्-अहद् :</b>	उस जैसा है, और यह ख़ूबी यह लाज़िम करती है कि इबादत के लायक मात्र वह अकेले है, जिसमें कोई उस का साझी नहीं है।
<b>अल्-इलाह् :</b>	सच्चा मा'अबूद, दूसरों के सिवाय तन्हा इबादत के लायक।

- 13 अल्लाह के नाम और उसके गुण में क्या फर्क हैं?** पनाह लेने और कसम खाने में दोनों में कोई फर्क नहीं है, लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं जिन में दोनों में फर्क है, जिन में से महत्वपूर्ण यह हैं : **1** अल्लाह तआला के नामों के द्वारा दुआ करना, और उसके नामों के आगे अब्द बढ़ाकर नाम रखना जायज़ है, किन्तु उसके गुणों के द्वारा जायज़ नहीं, जैसे (अब्दुल करीम) नाम रखना जायज़ है, लेकिन (अब्दुल करम) नाम रखना जायज़ नहीं है, और (या करीम) कह कर दुआ करना जायज़ है, लेकिन (या करमल्लाह) कह कर दुआ करना जायज़ नहीं है। **2** अल्लाह के नामों द्वारा उसके गुण साबित होते हैं जैसे उसके नाम (अरहमन) द्वारा उसकी सिफ़त (रहमत) साबित हुई। लेकिन उसकी सिफ़तों द्वारा उसके ऐसे नाम साबित नहीं किए जा सकते जिनका चर्चा कुरआन और हदीस में न हुवा हो, जैसे उसकी सिफ़त (अल्इस्तिवा) द्वारा उसके लिए (अल्मुस्तवी) नाम नहीं रखा जा सकता। **3** अल्लाह तआला के कामों के द्वारा उसके ऐसे नाम साबित नहीं किए जा सकते जिनका चर्चा कुरआन और हदीस में न हुवा हो, अल्लाह तआला के कामों में से (अल्ग़ज़ब) गुस्सा होना है, लेकिन यह नहीं कहा जाएगा कि अल्लाह तआला के नामों में से एक (अल्ग़ाज़िब) है, **अलबत्ता उसके कामों से उसकी सिफ़त साबित होगी**, तो उसके लिए हम (ग़ज़ब) गुस्सा होने की सिफ़त साबित करेंगे, इसलिए कि गुस्सा होना भी उसके कामों में से है।

- 14 फ़रिश्तों पर ईमान लाने का अर्थ क्या है?** उन पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि उनके अस्तित्व को स्वीकार किया जाए, और इस बात को भी कि अल्लाह तआला ने उनको अपनी इबादत और अपने आदेश-पालन के लिए पैदा किया है,

﴿عِبَادٌ شُكِرْتُمْ﴾ **“उसके सम्मानित बन्दे हैं, किसी बात में अल्लाह पर पहल नहीं करते, बल्कि उसके आदेश पर कारबन्द हैं”**। और **उन पर ईमान लाना चार चीज़ों को शामिल है :** **1** उनके अस्तित्व पर ईमान लाना। **2** उन में से जिनके नाम को जानते हैं उन पर (उनके नामों के साथ) ईमान लाना, जैसे जिब्रईल। **3** उनके जिन गुणों को जानते हैं उन गुणों पर ईमान लाना, जैसे उनकी महान ख़िल्कत। **4** उनके जिन ख़ास कामों को जानते हैं उन पर ईमान लाना। जैसे मलकुल्मौत पर ईमान लाना कि उनका काम रुह कब्ज़ करना है।

- 15 कुरआन क्या है?** कुरआन अल्लाह तआला का कलाम है, जिसकी तिलावत इबादत है, उसी से आरम्भ हुवा है, और उसी की ओर पलट जाएगा, हकीकत (वास्तव) में अक्षर और आवाज़ के साथ अल्लाह तआला ने उसे बोला है, जिब्रईल عليه السلام ने अल्लाह तआला से उसे सुना फिर उसे मुहम्मद صلى الله عليه وسلم तक पहुँचाया, और सारी आसमानी किताबें अल्लाह तआला का कलाम हैं।

- 16 क्या हम कुरआन को लेकर नबी صلى الله عليه وسلم की सुन्नत (हदीसों) से बेनियाज़ हो सकते हैं?** यह जायज़ नहीं, बल्कि सुन्नत के अनुसार अमल करना ज़रूरी है, अल्लाह तआला ने इसका आदेश देते हुए फ़रमाया: ﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا﴾ **“और तुम्हें जो कुछ रसूल दे उसे ले लो, और जिससे रोके रुक जाओ”**। और सुन्नत, कुरआन की तफ़सीर है, दीन की तफ़सील जैसे नमाज़ के बारे में इस के बिना नहीं जाना जा सकता, नबी صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया : **“ सुन लो! मुझे किताब दी गई है, और उसके साथ उसी जैसी (सुन्नत), सुन लो! करीब है कि कोई आसूदा आदमी अपनी मसनद पर टेक लगाए हुए कहे : तुम मात्र इस कुरआन को लाज़िम पकड़ो, और इसमें जो चीज़ें हलाल हैं उन्हें हलाल जानो, और जो हराम हैं उन्हें हराम जानो ”**। (अबू दाऊद)

- 17 रसूलों पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?** रसूलों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि यह विश्वास रखा जाए कि अल्लाह तआला ने हर समुदाय में उन्हीं में से एक रसूल मात्र अपनी



इबादत की ओर दावत देने, और गैरों की इबादत को नकारने के लिए भेजे हैं, और वे सब सच्चे, भले, इज्जत वाले, नेक, मुत्तकी, अमीन, हिदायत याफता, और मार्ग-दर्शक हैं, उन्होंने हम तक धर्म को पहुँचाया, वे अल्लाह के सब से अफजल मख्तूक हैं, और वे पैदाइश से लेकर मौत तक अल्लाह के साथ शिर्क करने से पाक हैं।

**18 क़ियामत के दिन शफ़ाअत की कितनी किस्में होंगी?** शफ़ाअत कई प्रकार की होगी, इनमें सब से बड़ी शफ़ाअत ① (शफ़ाअते उज्मा) होगी, जो कि हश्म के मैदान में होगी, बाद इसके कि लोग पचास हजार साल तक ठहरे रहेंगे, अपने बीच फैसले के इन्तिज़ार में होंगे, उस समय मुहम्मद ﷺ अपने रब के पास शफ़ाअत करेंगे कि लोगों के बीच फैसला कर दिया जाए, और यह शफ़ाअत हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के लिए खास है, और यही मक़ामे म्हुमूद है जिसका उनसे वादा किया गया है। ② दूसरी शफ़ाअत होगी जन्नत का दर्वाज़ा खोलवाने के लिए, और सब से पहले हमारे नबी मुहम्मद ﷺ जन्नत का दर्वाज़ा खोलवाएंगे, और सारी उम्मतों में सब से पहले उन्हीं की उम्मत जन्नत में जाएगी। ③ कुछ तौहीद परस्तों के बारे में शफ़ाअत जिनके जहन्नम में जाने का आदेश होगया होगा, कि उन्हें जहन्नम में न भेजा जाए। ④ तौहीद परस्तों में से अपने गुनाहों के कारण जो जहन्नम में डाले गए होंगे, उन्हें जहन्नम से निकालने की शफ़ाअत । ⑤ कुछ जन्नतियों के दर्जे बुलन्द करने के लिए शफ़ाअत । आखिरी तीन हमारे नबी के लिए खास नहीं है, लेकिन वह दूसरों पर मुकद्दम होंगे, और इस सफ़ में आप के बाद दूसरे नबी, फ़रिश्ते, नेक लोग और शहीद लोग होंगे। ⑥ कुछ लोगों को बिना हिसाब लिए जन्नत में दाखिल किए जाने की शफ़ाअत । ⑦ कुछ काफ़िरों के अज़ाब में कमी करने के लिए शफ़ाअत , और यह हमारे नबी के लिए खास होगी वह अपने चचा अबू तालिब के अज़ाब में कमी के लिए शफ़ाअत करेंगे। फिर अल्लाह तआला अपनी रहमत से बिना किसी की शफ़ाअत के जहन्नम से ऐसे लोगों को निकाल देगा, जिनकी मृत्यु तौहीद पर हुई थी, और उन्हें अपनी रहमत से जन्नत में दाखिल करेगा। ऐसे लोगों की संख्या केवल अल्लाह ही जानता है।

**19 क्या ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना या शफ़ाअत चाहना जायज़ है?** हाँ, ज़िन्दा लोगों से सहायता मांगना जायज़ है, बल्कि शरीअत ने एक दूसरे की मदद करने पर उभारा है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَعَاوُؤَا عَلَىٰ الْاِزْرِ وَاللَّقَوٰى﴾ **“नेकी और तक्वा के कामों में एक दूसरे का सहयोग करो।”** और नबी ﷺ ने फ़रमाया : **“अल्लाह तआला अपने बन्दे की मदद में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।”** (मुस्लिम) और शफ़ाअत की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है, इसका अर्थ है किसी के लिए माध्यम बनना। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿مَنْ يَشْفَعْ شَفَعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا﴾ **“और जो व्यक्ति किसी सवाब और भले काम करने की सिफ़ारिश करे उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा”** और नबी ﷺ ने फ़रमाया : **“शफ़ाअत करो अज़्र पाओगे।”** (बुख़ारी) और इसके जायज़ होने के लिए कुछ शर्तें हैं: ① मदद या शफ़ाअत ज़िन्दा व्यक्ति से तलब की जाए; क्योंकि मुर्दा से उसका तलब करना दुआ (पुकार) कहलाता है और मुर्दा उसकी दुआ (पुकार) में से कुछ भी सुन नहीं सकता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : ﴿اِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دَعْوَةً كُمْ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ﴾ अर्थात : **“अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं, और अगर (मान लिया कि) सुन भी लें तो फ़र्याद रसी नहीं करेंगे।”** पस कैसे मैयत से मदद या शफ़ाअत तलब की जाएगी, हालाँकि वह खुद ही ज़िंदों की दुआओं के मुहताज है, और उसका अमल उसके मौत से मुनक़तिअ (ख़त्म) हो गया है मगर दुआ वगैरा के माध्यम से जो उसको पहुँचे। नबी ﷺ ने फ़रमाया : **“जब आदम की औलाद मर**

जाता है तो उसका अमल मुनकतिअ (खत्म) हो जाता है सिवाय तीन के: सदका जारिया, वह इल्म जिससे नफा उठाया जाए या नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे। (मुस्लिम) ② वह जो बात कह रहा हो समझ में आ रही हो। ③ जिस व्यक्ति से शफाअत तलब की जा रही है, वह हाज़िर हो। ④ शफाअत ऐसी चीज़ के बारे में हो जो आदमी के बस में हो। ⑤ सांसारिक चीज़ों के बारे में शफाअत हो। ⑥ जायज़ काम के लिए शफाअत हो जिस में कोई हानी न हो।

**20 वसीले कितने प्रकार के होते हैं?** दो प्रकार के होते हैं : 1- **जायज़ वसीला** : और यह तीन प्रकार के होते हैं : ① अल्लाह के नामों और उसके गुणों द्वारा वसीला पकड़ना। ② बन्दे का अपने नेक अमल द्वारा वसीला पकड़ना, जैसे गार वाले तीनों व्यक्तियों ने किया। ③ किसी उपस्थित ज़िन्दा नेक मुस्लिम व्यक्ति की दुआ द्वारा वसीला पकड़ना जिसकी दुआ के स्वीकार होने की आशा हो। 2- **हराम वसीला** : और यह दो प्रकार के होते हैं : ① अल्लाह तआला से नबी ﷺ या किसी वली के जाह-व-जलाल के माध्यम से सवाल करना, जैसे यह कहना कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे नबी के जाह-व-जलाल के वसीले, या हुसैन के जाह-व-जलाल के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि नबी ﷺ और नेक लोगों के जाह-व-जलाल अल्लाह तआला के नज़दीक महान हैं, लेकिन सहाबए किराम رضي الله عنهم ने जो कि हर भलाई के काम में आगे आगे रहते थे कहत-साली (अकाल) पड़ जाने के अवसर पर नबी ﷺ के जाह-व-जलाल का वसीला नहीं पकड़ा जबकि आप की कब्र उनके पास मौजूद थी। बल्कि उन्होंने आप رضي الله عنه के चचा अब्बास رضي الله عنه की दुआ से वसीला पकड़ा। ② नबी ﷺ की या किसी वली की कसम खाकर अल्लाह तआला से अपनी हाजत को मांगना। जैसे यह कहना ऐ अल्लाह! मैं तेरे फ़लाँ वली के वसीले से, या तेरे फ़लाँ नबी के हक के वसीले से तुझ से सवाल करता हूँ। और यह हराम इसलिए है कि मख्लूक की मख्लूक पर कसम खाना हराम है, तो अल्लाह को किसी मख्लूक की कसम देना और अधिक वर्जित है। और दूसरी बात यह है कि मात्र अल्लाह की इताअत कर लेने से बन्दे का अल्लाह पर कोई हक़ वाजिब नहीं हो जाता।

**21 आखिरत के दिन पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?** इस बात पर पुख़ता यकीन रखा जाए कि क़ियामत कायम होगी, और साथ ही मौत पर, मौत के बाद कब्र की परीक्षा (आज़माइश), कब्र के अज़ाब और उसकी नेमत, सूर में फूँक मारा जाना, लोगों का अपने रब के सामने खड़ा होना, नामए आमाल को फैलाया जाना, मीज़ान (तराजू) और पुल-सिरात का कायम होना, हौज़े कौसर और शफाअत, फिर उसके बाद जन्नत या जहन्नम की ओर जाने पर ईमान रखना।

**22 क़ियामत की बड़ी निशानियाँ क्या क्या हैं?** नबी ने फ़रमाया: “क़ियामत उस समय तक कायम नहीं होगी जब तक कि उससे पहले तुम दस निशानियाँ न देख लो, और इन का चर्चा करते हुए फ़रमाया: धुआँ, दज्जाल, जानवर, पश्चिम से सूरज का निकलना, ईसा बिन मर्यम का नाज़िल होना, याजूज माजूज का निकलना, तीन जगहों पर ज़मीन का धंसना, पश्चिम, पूरब और जज़ीरतुलअरब में, और अन्तिम निशानी के रूप में यमन से आग निकलेगी जो लोगों को महशर में इकट्ठा करेगी”। (मुस्लिम) इब्ने उमर की हदीस के अनुसार इनमें सब से पहली निशानी पश्चिम से सूरज का निकलना है। और इसके अलावा दूसरी बातें भी कही गई हैं।

**23 लोगों के लिए सब से बड़ा फ़िल्ता कौनसा होगा?** नबी ﷺ ने फ़रमाया: “आदम की पैदाइश से लेकर क़ियामत कायम होने तक दज्जाल से बड़ा कोई फ़िल्ता नहीं है”। (मुस्लिम) दज्जाल आदम की औलाद में से है, जो कि अन्तिम ज़माने में निकलेगा, उसकी दोनों आँखों के बीच **(كفار)** लिखा होगा, जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा, वह दाहिनी आँख का काना होगा, गोया कि अंगूर की तरह उभरी हुई हो, वह जब निकलेगा तो शुरू में सुधार का दावा करेगा, फिर नुबुव्वत और अल्लाह

होने का दावा करेगा, लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, लोग उसे झुठला देंगे, वह उनके पास से वापस होगा तो उनके माल भी उसके पीछे पीछे हो लेंगे, और वे खाली हाथ हो जाएंगे। फिर दूसरे लोगों के पास आएगा और उन्हें अपनी ओर बुलाएगा, वे उसकी बात मान लेंगे और उसकी पुष्टि करेंगे, वह आकाश को आदेश देगा तो बरसात होगी, ज़मीन को आदेश देगा तो अनाज निकालेगी। वह लोगों के पास पानी और आग के साथ आएगा, उसकी आग ठन्डी होगी और उसका पानी गरम होगा। मोमिन के लिए मुनासिब यह कि हर नमाज़ के अन्त में उसके फित्ने से अल्लाह की पनाह मांगे। और यदि उसे पा ले तो उस पर सूरतु-ल-कहफ़ की शुरू की आयतें पढ़े। और उससे मुठ-भेड़ करने से बचे ताकि कहीं फित्ने में न पड़ जाए, नबी ﷺ का फ़रमान है: “जो दज्जाल के बारे में सुने वह उससे दूर रहे, इसलिए कि अल्लाह कि क़सम व्यक्ति उसके पास आएगा और वह अपने आप को मोमिन समझ रहा होगा, लेकिन उसके उसके साथ जो शुबहात होंगे उन के कारण उसकी पैरवी करने लगेगा”। (अबू दाऊद) वह संसार में 40 दिन तक रहेगा, पहला दिन एक वर्ष के बराबर होगा, दूसरा दिन एक महीने के बराबर, तीसरा दिन एक सप्ताह के बराबर और बाकी दिन साधारण दिनों के तरह होंगे। और मक्का और मदीना के सिवाय बाकी सारे शहर और देश में जाएगा, फिर ईसा ﷺ आकाश से उतरेंगे और उसकी हत्या करेंगे।

**24 क्या जन्नत और जहन्नम मौजूद हैं?** हाँ दोनों के दोनों मौजूद हैं। अल्लाह ने इन्हें लोगों को पैदा करने से पहले पैदा किया, और यह दोनों न तो फना होंगे न मिटेंगे, अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से कुछ लोगों को जन्नत के लिए पैदा किया है, और अपने न्याय और अद्ल से कुछ लोगों को जहन्नम के लिए पैदा किया है, और हर किसी के लिए वह चीज़ आसान कर दी गई है जिस के लिए वह पैदा किया गया है।

**25 तक्दीर पर ईमान लाने का क्या अर्थ है?** इस बात पर पुख़्ता विश्वास करना कि हर भलाई और बुराई अल्लाह तआला के फ़ैसले और उसकी लिखी हुई तक्दीर के अनुसार होती है, और वह जो चाहता है करता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया : “ यदि अल्लाह तआला आकाश वालों, और धरती वालों को अज़ाब दे, तो वह उन्हें अज़ाब देने में ज़ालिम नहीं होगा, और यदि उन पर रहम करे तो उसकी रहमत उनके कर्मों से बेहतर होगी, और यदि तूने अल्लाह के रास्ते में उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी खर्च किया तो अल्लाह तआला उसे स्वीकार नहीं करेगा यहाँ तक कि तू तक्दीर पर ईमान ले आ और यह जान ले कि जो चीज़ें तुझे मिली हैं वे तुझ से दूर होने वाली नहीं थीं, और जो चीज़ें तुझ से दूर हो गईं वे तुझे मिलने वाली नहीं थीं। और यदि इसके सिवा (दूसरे अक़ीदे) पर तुम्हारी मौत होई तो तू अवश्य जहन्नम में जाएगा”। (अहमद और अबू दाऊद) और तक्दीर पर ईमान लाना 4 चीज़ों को शामिल है : ① इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला को सारी वस्तुओं की स्पष्ट जानकारी है। ② इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ने उन्हें लौहे महफूज़ में लिख रखा है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने आकाश और धरती को पैदा करने के 50 हज़ार वर्ष पहले मख़्लूकों की तक्दीर लिख दी है”। (मुस्लिम) ③ अल्लाह तआला की लागू होने वाली मशीयत (चाहत) पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ रोक नहीं सकती और उसकी शक्ति पर ईमान लाना जिसे कोई चीज़ बेबस नहीं कर सकती, वह जो चाहता है, होता है, और जो नहीं चाहता, नहीं होता। ④ इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तआला ही ख़ालिक (पैदा करने वाला) है और सारी चीज़ों को वुजूद में लाने वाला है, और उसके सिवाय सारी चीज़ें उसकी मख़्लूक हैं।

**26- क्या मख़्लूक के पास भी वास्तविक शक्ति, चाहत और इच्छा है?** हाँ, इन्सान के पास भी वास्तविक चाहत, इच्छा और मर्ज़ी है, लेकिन यह अल्लाह की चाहत के दायरे के अन्दर है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ﴾ “तुम अल्लाह तआला के चाहे बिना कुछ भी नहीं चाह सकते”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कर्म करो; इसलिए कि हर व्यक्ति पर वह कर्म आसान कर दिया गया है जिस के लिए वह पैदा किया गया है”। (बुखारी और मुस्लिम) और अल्लाह तआला ने हमें शुद्ध और अशुद्ध में फ़र्क करने के लिए बुद्धि, आँख और कान दिए हैं, तो क्या कोई ऐसा बुद्धिमान भी है जो चोरी करने के बाद कहे कि अल्लाह ने हम पर चोरी लिख दी है?! और यदि वह ऐसी बात कहेगा भी तो लोग उसके इस उज़्र को स्वीकार नहीं करेंगे। बल्कि उसे सज़ा देंगे और कहेंगे : अल्लाह तआला ने तुम पर सज़ा भी लिखी है, तो तक्दीर को हुज्जत और बहाना बनाना जायज़ नहीं है बल्कि वास्तव में यह तक्दीर को झुठलाना है। अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاءُنَا وَلَا حَرَمًا مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ﴾ “मुशिरक कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बुजुर्ग शिरक नहीं करते, न किसी चीज़ को हराम बनाते, इसी तरह इनके पहले के लोग झुठलाए”।

**27 एहसान क्या है?** नबी ﷺ ने जिब्रईल عليه السلام के प्रश्न का उत्तर देते हु फ़रमाया: “तुम अल्लाह की इबादत इस तरह से करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो, और यदि तुम नहीं देख रहे हो तो वह तुम्हें देख रहा है”। (बुखारी और मुस्लिम और यह लफ़ज़ मुस्लिम का है)। और दीन के तीनों मर्तबों में यह सब से ऊँचा मर्तबा है।

**28 तौहीद की कितनी किस्में हैं?** तीन किस्में हैं : ① तौहीदुर्सूबूबिय: अल्लाह तआला को उसके कर्मों में अकेला मानना, जैसे : पैदा करना, रोज़ी देना और जीवन देना इत्यादि। नबी ﷺ के आने से पहले भी काफ़िर तौहीद की इस किस्म का इफ़्कार करते थे। ② तौहीदुल् उलूहीय: इबादतों के द्वारा अल्लाह तआला को अकेला मानना। जैसे : नमाज़, नज़र और नियाज़ और सद्के इत्यादि। रसूलों को इसी कारण भेजा गया कि मात्र अल्लाह तआला की इबादत की जाए। और इसी कारण किताबें भी उतारी गईं। ③ तौहीदुल् अस्मा वसिफ़ात : बिना तहरीफ़, ता’तील, तक्दीफ़ और तम्सील के अल्लाह तआला के लिए उसके अच्छे नामों और ऊँचे गुणों को जिस तरह स्वयं अल्लाह ने और उसके रसूल ने साबित किए हैं साबित करना।

**29 वली कौन है?** नेक और परहेज़गार मोमिन जो अल्लाह से डरता हो वही वली है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ “याद रखो अल्लाह के मित्रों पर न कोई डर है न वे दुखी होते हैं, ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और गुनाह से परहेज़ करते हैं”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मेरा वली अल्लाह है और नेक मोमिन हैं”। (बुखारी और मुस्लिम)

**30 सहाबए किराम رضي الله عنهم का हमारे ऊपर क्या हक़ है?** हमारे ऊपर वाजिब है कि हम उनसे महबबत करें, उनके नामों के साथ رضي الله عنهم कहें, अपने दिलों और जुबानों को उनके बारे में साफ़ सुथरा रखें। उनकी प्रतिष्ठाओं को आम करें, उनकी गलतियों और उनके बीच होने वाले इख़्तिलाफ़ पर चुप रहें, वे गलतियों से मा’सूम नहीं हैं, लेकिन उन्होंने इज्तिहाद किया, तो उन में से जो हक़ को पहुँचा उसे दो सवाब मिलेगा, और जिन से गलती हुई उन्हें उनके इज्तिहाद पर एक अज़्र मिलेगा। और उनकी गलतियाँ माफ़ हैं, और यदि उनसे गलतियाँ हुई भी तो उनकी नेकियाँ उनके गुनाहों को मिटा देंगी। और वे आपस में एक दूसरे पर फ़ज़ीलत रखते हैं : उन में सब से अफ़ज़ल दस सहाबए किराम हैं : अबू बक्र, फिर उमर, फिर उसमान, फिर अली, फिर तल्हा, जुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सा’द बिन अबी वक़्ास, सईद बिन ज़ैद और अबू उबैदा बिन

जरीह, फिर बाकी मुहाजिरीन, फिर मुहाजिरीन और अन्सार में से जो बदर में शरीक हुए, फिर बकीया अन्सार, फिर बाकी सारे सहाबए कराम। नबी ﷺ ने फरमाया: “तुम मेरे सहाबए किराम को गालियाँ मत दो, कसम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है यदि तुम में से कोई उहुद के बराबर भी सोना खर्च करे तो उनके खर्च किए हुए मुद या आधे मुद के बराबर भी नहीं पहुच सकता”। (बुखारी और मुस्लिम) और आप ने यह भी फरमाया : “जिस ने मेरे सहाबा को गाली दी उस पर अल्लाह उस के फरिश्ते और सारे लोगों की लानत हो”। तब्रानी।

**31 क्या अल्लाह के रसूल की तारीफ में मुबालगा करना जायज़ है?** इसमें कोई शक नहीं है कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ मख्लूक में सबसे उत्तम और श्रेष्ठ हैं, लेकिन फिर भी उनकी तारीफ में सीमा को छलांगना जायज़ नहीं जैसा कि नसारा ने ईसा عليه السلام की तारीफ में छलांगा था; क्योंकि नबी ﷺ ने हमें इस से रोका है, आप ﷺ ने फरमाया: “तुम मेरी तारीफ में हर्दे उस तरह पार न करना जैसाकि नसारा ने इब्ने मर्यम की तारीफ में किया, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ; इसलिए मुझे अब्दुल्लाह और रसूलुल्लाह कहो”। (बुखारी)

**32 क्या अहले किताब (यहूदी और ईसाई) मोमिन हैं?** नबी ﷺ की बे'सत के बाद इस्लाम धर्म के अतिरिक्त दूसरे धर्मों को मानने वाले चाहे वे यहूदी और ईसाई हों या कुछ और सब के सब काफ़िर हैं, अल्लाह तआला का फरमान है :

“وَمَنْ يَبْتَغِ عِزَّ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ” और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे धर्म को अपनाए, तो उसका धर्म स्वीकार नहीं होगा और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में से होगा”। और यदि कोई मुस्लिम व्यक्ति उनके काफ़िर होने का अकीदा न रखे या उनके धर्म के बातिल होने के बारे में शक करे तो वह काफ़िर है; इसलिए कि उसने अपने कुफ़्र के कारण अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म का विरोध किया। और अल्लाह तआला का फरमान है : “وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالْتَأْرَامُوعِدُهُ” और सभी गुटों में से जो भी इसका इन्कारी हो तो उसके अन्तिम वादे की जगह नरक है”। और नबी ﷺ का फरमान है : “उस हस्ती की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, इस उम्मत का कोई भी व्यक्ति वह चाहे यहूदी या ईसाई हो मेरे बारे में सुनने के बाद मुझ पर ईमान नहीं लाया तो वह जहन्नम में जाएगा”। (मुस्लिम)

**33 क्या काफ़िरों पर अन्याय करना जायज़ है?** अन्याय करना हराम है क्योंकि हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला का कथन है : “मैं ने अपने आप पर अत्याचार हराम कर लिया है, और इसे तुम्हारे ऊपर भी हराम किया है इसलिए तुम अत्याचार न करो”। (मुस्लिम) काफ़िरों के साथ व्यवहार किए जाने के लिहाज से उन की दो किस्में हैं : 1- जिनके साथ मुआहदा (समझौता) हो, और इनकी तीन किस्में हैं : 1- ज़िम्मी : यह वे लोग हैं जो मुस्लिम मुलूक में रहने के लिए जिज़्या (टैक्स) दिया करते हैं, और इन्होंने यह मुआहदा किया हो कि इन पर इस्लामी आदेश लागू होगा। तो इन्हें हमेशा के लिए पनाह दी जाएगी। 2- मुआहद : जिन्होंने मुसलमानों के साथ उनके देश में बाकी रहने के लिए सुलह कर लिया हो। तो इन पर इस्लामी आदेश तो लागू नहीं होंगे, लेकिन इन्हें मुसलमानों से लड़ाई करने से बचना होगा। जैसा कि यहूद नबी ﷺ के ज़माने में थे। 3- मुस्ता'मन : जो किसी काम के लिए मुसलमानों के देश में आए हों, रहने की इच्छा न हो, जैसे एलची, व्यापारी, सैयाह, पर्यटक, पनाह चाहने वाले और इन जैसे लोग। तो इन्हें कतूल नहीं किया जासकता, और न ही इन से जिज़्या लिया जाएगा, पनाह चाहने वाले को इस्लाम की दावत दी जाएगी यदि वह स्वीकार कर लिया तो अच्छा है, और यदि वह अपनी शान्ति-भवन को पहुँचना चाहता है तो उसे वहाँ

पहुँचा दिया जाएगा। ② **हर्बी काफिर** : जिनका मुसलमानों से न तो कोई मुआहदा हो, और न ही जिन्हें शान्ति प्रदान की गई हो, बल्कि वे मुसलमानों से लड़ रहे हों, या इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में लड़ाई का एलान कर चुके हों, या इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों की मदद करते हों, तो इन से लड़ाई की जाएगी और इन्हें मारा जाएगा।

**34 बिद्अत का अर्थ क्या है?** इब्ने रजब कहते हैं : “बिद्अत हर उस चीज़ का नाम है जिसे धर्म के अन्दर बे-बुनियाद जन्म दिया गया हो, और यदि शरीअत में उसकी बुनियाद मौजूद है तो फिर वह बिद्अत नहीं है। चाहे उसे लुगत में बिद्अत कहा जाता हो”।

**35 क्या धर्म में अच्छी और बुरी बिद्अत भी पाई जाती है?** आयतों और हदीसों में बिद्अत की निंदा की गई है। नबी ﷺ का फ़रमान है : “जिसने कोई ऐसा कर्म किया जो हमारे आदेश के विरुद्ध हो तो वह अस्वीकृत है”। (बुख़ारी और मुस्लिम) और आप ﷺ ने फ़रमाया : “धर्म में हर नयी ईजाद की जाने वाली चीज़ बिद्अत है, और हर बिद्अत गुम्राही है।” (अबू दाऊद) और इमाम मालिक बिद्अत के बारे में कहते हैं कि “जिस ने धर्म में बिद्अत ईजाद की और उसे उसने अच्छा समझा, तो अवश्य उसने ऐसा सोचा कि मुहम्मद ﷺ ने रिसालत में ख़ियानत की; क्योंकि अल्लाह ﷻ का फ़रमान है : ﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي﴾ “आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया, और तुम पर अपनी ने‘मतेँ पूरी कर दी”।

और कुछ हदीसों ऐसी आई हैं जिनमें लुगवी मायने के लिहाज़ से बिद्अत की प्रशंसा की गई है, और वास्तव में यह हदीसों उन चीज़ों के बारे में हैं जिनकी बुनियाद शरीअत में मौजूद है, लेकिन बाद में वह भुला दी गई हों तो नबी ﷺ ने उन्हें फिर से ज़िन्दा करने पर ज़ोर दिया है, जैसा कि आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिसने इस्लाम में किसी अच्छी सुन्नत को ज़िन्दा किया तो उसे उसका सवाब मिलेगा, और उसके बाद उसके आधार पर कर्म करने वालों का सवाब भी मिलेगा, और उनके सवाबों में कोई कमी न होगी”। (मुस्लिम) और इसी मायने में जमाअत के साथ तरावीह की नमाज़ पढ़ने के बारे में उमर رضي الله عنه का फ़रमान है : “यह क्या ही अच्छी बात है”। क्योंकि ऐसा करना शरीअत द्वारा साबित था, और नबी ﷺ ने तीन रातों में जमाअत के साथ तरावीह पढ़ी भी थी, लेकिन इस डर से कि वह फ़र्ज़ न कर दी जाए आप ने जमाअत के साथ पढ़ना छोड़ दिया था, तो उमर رضي الله عنه ने अपने दौर में लोगों को इस सुन्नत पर इकट्ठा किया।

**36 निफ़ाक की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं : ① **निफ़ाके एतिक़ादी** : इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति ज़ाहिर तो ईमान करे लेकिन कुफ़्र को छुपाए हो, और यह चीज़ धर्म से बाहर निकाल देती है, और यदि इसी अवस्था में व्यक्ति की मृत्यु हो गई तो उसकी मृत्यु कुफ़्र पर हुई, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ﴾ “मुनाफ़िकीन तो अवश्य नरक की सब से निचली तह में जायेंगे”। और इनकी पहचान यह है कि यह अल्लाह और मोमिनों को धोका देते हैं, मोमिनों का मज़ाक उड़ाते हैं, उन पर काफ़िरोँ की सहायता करते हैं, और अपने नेक कर्मों के द्वारा सांसारिक लाभ चाहते हैं। ② **निफ़ाके अमली** : ऐसा व्यक्ति धर्म से बाहर तो नहीं निकलता, लेकिन यदि तौबा न करे तो बड़े निफ़ाक से जा मिलने का डर होता है। और ऐसे व्यक्ति की पहचान यह है कि जब बात करता है तो झूट बोलता है, वादा करता है तो पूरा नहीं करता, लड़ाई करता है तो गाली बकता है, और मुआहदा (प्रतिज्ञा) करता है तो धोका देता है, और जब उसके पास अमानत रखी जाती है तो उस में ख़यानत करता है। तो भाईयो! अपने आप को इस तरह की चीज़ों से बचाओ और अपने नफ़्स का हिसाब करो।

**क्या मुसलमान पर निफ़ाक से डरना वाजिब है?** हाँ, सहाबए किराम رضي الله عنهم भी कर्मों में निफ़ाक से डरा करते थे। इब्ने मुलैका رضي الله عنه कहते हैं : मेरी मुलाक़ात 30 सहाबए किराम से हुई वे सब

अपने ऊपर निफाक से डरते थे। और इब्राहीम तैमी عليه السلام कहते हैं : मैं ने जब भी अपने कथन को अपने कर्मों के ऊपर नापा तो मुझे अपने झूठे होने का डर हुआ। हसन बसरी عليه السلام कहते हैं : निफाक से मोमिन ही डरता है, और मुनाफिक ही निडर रहता है। और उमर عليه السلام ने हुजैफा عليه السلام से पूछा : मैं तुझे अल्लाह का वास्ता देता हूँ, क्या नबी عليه السلام ने मुझे भी मुनाफिकों में शुमार किया है? तो हुजैफा ने कहा : नहीं, और आप के बाद मैं किसी की भी सफ़ाई नहीं दूँगा।

**37 अल्लाह तआला के यहाँ सब से बड़ा पाप क्या है?** अल्लाह तआला के साथ साझी बनाना सब से बड़ा पाप है, अल्लाह तआला का फ़रमान है : **﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾** “अवश्य शिर्क सब से बड़ा पाप है”। और जब आप عليه السلام से पूछा गया कि कौनसा पाप सब से बड़ा है? तो आप ने फ़रमाया: “तू अल्लाह के साथ दूसरे को साझी बनाए, जबकि उसने तुझे पैदा किया है”। (बुखारी और मुस्लिम)

**38 शिर्क की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं : **1 शिर्के अक्बर** : इतना बड़ा पाप है कि यह शिर्क करने वाले व्यक्ति को इस्लाम धर्म के दायरे से बाहर निकाल देता है। और ऐसे मुशिरक व्यक्ति की मृत्यु यदि शिर्क से बिना तौबा किए हो गई तो उसकी कभी भी माफी नहीं होगी। अल्लाह तआला का फ़रमान है: **﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ﴾** “निःसन्देह अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को नहीं क्षमा करता, और इस के अतिरिक्त पाप जिसके चाहे क्षमा कर देता है।” और इसकी चार किस्में हैं : **1.** दुआ में शिर्क करना। **2.** नियत, इरादे और इच्छा में शिर्क करना। जैसे गैरुल्लाह के लिए नेक कर्म करना। **3.** पैरवी में शिर्क करना। जैसे अल्लाह तआला ने जिन चीजों को हलाल किया है, उन्हें हराम ठहराने में या जिन्हें हराम किया है उन्हें हलाल ठहराने में आलिमों की बातें मानना। **4.** महब्बत में शिर्क करना, अर्थात अल्लाह तआला जैसी महब्बत दूसरे से करना।

**2 शिर्के अस्गर** : यह पाप शिर्क करने वाले व्यक्ति को धर्म के दायरे से बाहर नहीं निकालता। और यह दो प्रकार के होते हैं : **1 ज़ाहिर** : चाहे उस का सम्बंध कथन से हो जैसे गैरुल्लाह की क़सम खाना, या यह कहना : जो अल्लाह चाहे और आप चाहें, या यह कहना : अल्लाह न होता और आप न होते। या उस का सम्बंध कर्म से हो जैसे मुसीबत टालने या दूर करने के कड़ा और छल्ला पहन्ना, या धागा बांधना, या नज़र से बचने के लिए तावीज लटकाना, या चरा, नाम, शब्द और जगह से बद्फ़ाली लेना। **2 और छुपे हुए** : औश्र यह नियत, मक्सद और इरादे में शिर्क करना, जैसे रिया।

**39 शिर्के अक्बर और शिर्के अस्गर में क्या फर्क है?** दोनों में अन्तर यह है कि शिर्के अक्बर करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर माना जाएगा, और आखिरत में वह सदा के लिए जहन्न में जलेगा। लेकिन शिर्के अस्गर करने वाले व्यक्ति को संसार में धर्म के दायरे से बाहर नहीं माना जाएगा, और न ही आखिरत में वह सदा के लिए जहन्न में जलेगा। इसी तरह शिर्के अक्बर सारे कर्मों को नष्ट कर देता है, लेकिन शिर्के अस्गर मात्र उसी कर्म को नष्ट करता है जिसमें वह शामिल हो। लेकिन एक बात में मतभेद है कि क्या शिर्के अस्गर से माफी के लिए तौबा ज़रूरी है? या वह भी दूसरे बड़े गुनाहों की तरह अल्लाह की मशीयत तले है? बहरहाल दोनों सूरतों में मुआमला ख़तरनाक है।

**40 क्या छोटा शिर्क होने से पहले इससे बचाव का कोई रास्ता या हो जाने के बाद इसका कोई कफ़ारा है?** इससे बचाव का रास्ता यह है कि अल्लाह की खुशी प्राप्त करने के लिए कर्म करे, और यदि थोड़ा सा हो तो दुआ द्वारा इससे पनाह तलब करे, नबी عليه السلام ने फ़रमाया: “लोगो! इस शिर्क से बचो जो चीटी की चाल से अधिक छिपा हुआ है, तो लोगों ने

पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! जब यह चीटी की चाल से भी अधिक छिपा है तो हम इससे कैसे बचें? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: यह दुआ किया करो **اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ نُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَعْلَمُهُ وَنَسْتَفْتِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُ** "ऐ अल्लाह! हम जान बूझ कर तेरे साथ शिर्क करने से तेरी पनाह में आते हैं, और जो नहीं जानते हैं उससे तेरी माफ़ी चाहते हैं"। (अहमद) और गैरुल्लाह की कसम खाने का कफ़ारा यह है कि **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहे जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिस ने लात और उज़्ज़ा की कसम खाई तो वह **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहे"। (बुखारी और मुस्लिम) और बद्-फ़ाली के कफ़ारे के बारे में नबी ﷺ का फ़रमान है : "जिसे बद्-फ़ाली ने अपनी ज़रूरत पूरी करने से रोक दिया, तो उसने यकीनन् शिर्क किया"। लोगों ने पूछा : तो इसका कफ़ारा क्या है? आप ने फ़र्माया : यह दुआ पढ़े : **أَنْ تَقُولَ: اللَّهُمَّ لَا حَيْرَ إِلَّا حَيْرَتِكَ، وَلَا ظَهْرَ إِلَّا ظَهْرَتِكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرِكَ** "ऐ अल्लाह! सारी भलाइयाँ तुझ ही से हैं, और तेरी फाल के अतिरिक्त कोई फाल नहीं, और तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं"। (अहमद)

**41 कुफ़ की कितनी किस्में हैं?** दो किस्में हैं। ❶ बड़ा कुफ़ जो कि व्यक्ति को इस्लाम के दायरे से बाहर निकाल देता है। और इसकी पाँच किस्में हैं : 1- झूठलाने का कुफ़। 2- तस्दीक के साथ घमण्ड करने का कुफ़। 3- शक का कुफ़। 4- मुंह फेरने का कुफ़ 5- निफाक के द्वारा कुफ़ करना। ❷ छोटा कुफ़, और इसे कुफ़े नेमत भी कहते हैं। और यह पाप है लेकिन इससे व्यक्ति इस्लाम के दायरे से बाहर नहीं निकलता। जैसे किसी मुस्लिम व्यक्ति की हत्या करना।

**42 नज़्र का क्या हुक्म है?** नबी ﷺ ने नज़्र को नापसन्द करते हुए फ़रमाया : " इससे कोई भलाई नहीं आती"। (बुखारी) यह बात उस अवस्था की है जब कि नज़्र मात्र अल्लाह के लिए मानी गई हो, यदि किसी क़ब्र या वली के लिए नज़्र मानी जाए तो फिर नज़्र मानना हराम है जो पूरी नहीं की जाएगी।

**43 काहिन या ज्योतिशी के पास जाने का क्या हुक्म है?** हराम है, यदि उनके पास लाभ की उम्मीद से गया और उनकी बातों को सच नहीं माना तो उसकी 40 दिन की नमाज़ें स्वीकार नहीं होंगी, नबी ﷺ का फ़रमान है : "जिसने ज्योतिशी के पास आकर उससे कुछ पूछा तो उसकी 40 रात की नमाज़ें नहीं स्वीकार होंगी"। (मुस्लिम) और यदि उसने उनके ग़ैबी इल्म के दावे को सत्य मान लिया तो उसने मुहम्मद ﷺ के धर्म के साथ कुफ़ किया, नबी ﷺ का फ़रमान है : "जो व्यक्ति ज्योतिशी या काहिन के पास आया और उस की बात को सच मान लिया तो उसने मुहम्मद पर उतारे गए धर्म के साथ कुफ़ किया"। (अबू-दाऊद)

**44 नक्षत्रों (तारों) से बारिश तलब करना बड़ा शिर्क कब होगा और छोटा शिर्क कब होगा?** जिसकी यह आस्था हो की वर्षा बरसाने में अल्लाह तआला की चाहत के बिना नक्षत्रों की अपनी तासीर होती है, वही पानी बरसाते हैं तो यह बड़ा शिर्क है। पर जो यह आस्था रखे कि अल्लाह तआला की चाहत से नक्षत्रों का प्रभाव होता है, वर्षा बरसाने के लिए अल्लाह तआला ने उन्हें माध्यम बनाया है, जब वह नक्षत्र होता है तभी पानी पड़ता है तो यह छोटा शिर्क है। इसलिए कि उसने शरीअत की दलील के बिना उसे सबब बनाया। अलबत्ता मौसम और वर्षा के समय की जानकारी के लिए इसके द्वारा अनुमान लगाना जायज़ है।

**45 मुस्लिम हुक्मरान (शासक) के तई क्या वाजिब है?** खुशी और ग़मी हर अवस्था में उनकी बातों को सुनना और मानना वाजिब है, यदि वे अत्याचार भी करें तब भी उनके विरोध बगावत करना हराम है, उन्हें शरापना जायज़ है और न ही उनकी इताअत से मुंह मोड़ना जायज़ है, बल्कि हम उनकी भलाई और दुरुस्तगी के लिए दुआ करेंगे, और जब तक वे हमें बुराई का आदेश न दें उनकी इताअत को हम अल्लाह तआला की इताअत का हिस्सा समझते



हैं, और यदि उन्होंने बुराई का आदेश दिया तो उसमें उनकी इताअत नहीं की जाएगी बाकी इताअत की चीजों में भलाई के साथ उनकी इताअत की जाएगी। नबी ﷺ ने फरमाया: “हाकिम की बात सुनो और उसकी इताअत करो, अगरचे तुम्हें मारा जाए और तुम्हारा माल छीन लिया जाए तो भी सुनो और इताअत करो”। (मुस्लिम)

**46 क्या अम्र और नह्य (करने या न करने के आदेशों) के बारे में अल्लाह की हिकमत का प्रश्न करना जायज़ है?** हाँ जायज़ है, लेकिन इस शर्त के साथ कि हिकमत की जानकारी पर ईमान लाना या कर्म करना निर्भर न हो। बल्कि यह जानकारी इस लिए हो कि मोमिन व्यक्ति हक़ पर और पुख्ता होजाए। लेकिन प्रश्न किए बिना स्वीकार कर लेना पूरी बन्दगी, अल्लाह और उसकी कामिल हिकमत पर ईमान की दलील है। जैसा कि सहाब-ए-कराम رضي الله عنهم का हाल था।

**47 अल्लाह तआला के इस फरमान ﴿ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ ﴾** “तुझे जो भलाई मिलती है वह अल्लाह तआला की ओर से है, और जो बुराई पहुँचती है वह तेरे अपने खुद की ओर से है” का क्या मतलब है? आयत में ﴿ حَسَنَةٍ ﴾ से मुराद ने’मत और ﴿ سَيِّئَةٍ ﴾ से मुराद बुराई है, और यह सारी चीजें अल्लाह तआला की ओर से मुक़द्दर हैं, पर ने’मत की निस्वत अल्लाह तआला की ओर की गई है इस्लिए की इन्-आमकर्ता वही है, लेकिन बुराई को भी अल्लाह तआला ने ही ख़ास हिकमत के कारण पैदा किया है, और बुराई को इस नज़रिया से देखा जाए तो वह अल्लाह तआला की ओर से एहसान है, इसलिए कि वह कभी बुराई करता ही नहीं, बल्कि उस के सारे काम अच्छे हैं, जैसा कि नबी ﷺ ने फरमाया: “हर प्रकार की भलाई तेरे दोनों हाथों में है, और बुराई की निस्वत तेरी तरफ़ नहीं की जासकती”। (मुस्लिम) बन्दों के कर्मों का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, और साथ ही साथ स्वयं बन्दे की अपनी कमाई भी है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۖ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۖ فَسَنِيْرُهُ لِيُسْرَىٰ ۖ ﴾ “तो जो व्यक्ति देता रहा और डरता रहा, और अच्छी बातों की पुष्टि करता रहा, तो हम भी उसके लिए आसानी पैदा कर देंगे”।

**48 क्या यह कहना जायज़ है कि फ़लाँ व्यक्ति शहीद है?** किसी ख़ास व्यक्ति को शहीद कहना वैसे ही है जैसे उसे जन्नती कहा जाए, और इस सम्बंध में अहले सुन्नत-वल-जमाअत का मज़हब यह है कि जिनके बारे में नबी ﷺ ने जन्नती या जहन्नमी होने की ख़बर दी है उनके सिवाय किसी भी मुस्लिम को जन्नती या जहन्नमी न कहा जाए, क्योंकि हक़ीकत पोशीदा है, और किस स्थिति में उस व्यक्ति की मौत हुई इसकी जानकारी हमें नहीं है, और अन्तिम कर्मों का ही एतेबार होगा, और नियत की जानकारी मात्र अल्लाह तआला को है, लेकिन नेकी करने वाले के लिए सवाब की उम्मीद करते हैं, और पापी पर सज़ा से डरते हैं।

**49 क्या किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति को काफ़िर कह सकते हैं?** किसी ख़ास मुस्लिम व्यक्ति पर कुफ़्र, शिर्क या निफ़ाक़ का हुक़म लगाना जायज़ नहीं है, यदि उससे इस तरह का कोई कर्म ज़ाहिर न हो। और उसकी भेद को हम अल्लाह के हवाले कर देंगे।

**50 क्या का’बा के अलावा दूसरी जगहों का तवाफ़ करना जायज़ है?** का’बा के अलावा दूसरी किसी भी जगह का तवाफ़ करना जायज़ नहीं है, और न ही किसी भी जगह की बराबरी उससे करना जायज़ है चाहे उस जगह की फ़ज़ीलत कितनी भी अधिक क्यों न हो। और जिसने का’बा के अलावा किसी जगह का उसकी ताज़ीम करते हुए तवाफ़ किया तो उसने अल्लाह की नाफरमानी की।

## दिलों के कर्म

अल्लाह तआला ने दिल को पैदाकरके उसे सारे अंगों का बादशाह बनाया, और अंगों को उसका लश्कर, यदि दिल भला हो तो सारे लश्कर भले रहते हैं, नबी ﷺ ने फर्माया :

«وَأَنَّ فِي الْجَسَدِ مُضْغَةً إِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ، وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ أَلَا وَهِيَ الْقَلْبُ»  
 “यकीनन् दिल में एक टुकड़ा है, यदि वह ठीक होजाए तो पूरा बदन ठीक रहता है, और यदि वह खराब होजाए तो पूरा जिस्म खराब होजाता है, और यह दिल है।” (बुखारी तथा मुस्लिम)  
 तो दिल या तो ईमान और तक्वा की जगह है, या कुफ्र, निफाक और शिर्क की। नबी ﷺ का फर्मान है : “तक्वा यहां है, और आप ﷺ ने तीन बार अपने सीने की ओर इशारा किया”।

(मुस्लिम)

★ आस्था, बचन तथा कर्म का नाम ईमान है, अर्थात दिल से आस्था रखना, जुबान से इफ़्कार करना और दिल तथा अंगो द्वारा कर्म करना। चुनाचि दिल ईमान लाता है और तस्दीक करता है, जिसके नतीजे में जुबान कल्मए-शहादतैन की गवाही देता है, फिर दिल में जो मुहब्बत, डर और उम्मीद जगती है उसके नतीजे में जुबान जिक्र करने लगता है, कुर्आन की तिलावत करता है, और अल्लाह ﷻ की नजदीकी प्राप्त करने के लिए शरीर में मौजूद बाकी दूसरे अंग रूकुअ, सज्दा और नेकी करने में व्यस्त होजाते हैं; चुनाचि शरीर दिल का गुलाम है, इसी लिए दिल में जो बात भी घर कर जाती है किसी न किसी तरह से उसका असर अंगों द्वारा प्रकट होजाता है।

★ दिल के आमाल से मुराद ऐसे कर्म हैं जिन की जगह दिल है, उन कर्मों का दिल से गहरा नाता है, और इनमें सब से महान कर्म अल्लाह तआला पर ईमान लाना है; क्योंकि ईमान की जगह दिल है, इसी प्रकार इफ़्कार करना और ऐसी तस्दीक करना जो शरीअत का पाबन्द बनाए दिल के महान कर्मों में से है, साथ ही साथ इन्सान के दिल में अल्लाह ﷻ के लिए पैदा होने वाले यह सारे कर्म भी हैं, जैसे मुहब्बत, डर, भय, उम्मीद, उस की ओर वापसी, उस पर भरोसा, सब्र, विश्वास और खुशुअ खुजुअ इत्यादि।

★ दिल के हर कर्म के मुकाबले में दिल की बीमारी भी है, जैसे खुलूस इसकी ज़िद्द दिखलावा है, यकीन के बरख़िलाफ़ शंका है और मुहब्बत के बरअक्स नफ़रत इत्यादि, लिहाज़ा यदि हम अपने दिलों को सुधारने से चूक गए तो उस पर गुनाहों का तह लगते चले जाएंगे, जो उसे बर्बाद करदेंगे। जैसा कि नबी ﷺ का फर्मान है :

«إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا أَخْطَأَ خَطِيئَةً نُكِتَ فِي قَلْبِهِ نُكْتَةٌ فَإِنْ هُوَ تَزَعَّ وَاسْتَعْفَرَ وَتَابَ صِيغَلَتْ فَإِنْ عَادَ زِيدَ فِيهَا وَإِنْ عَادَ زِيدَ فِيهَا حَتَّى تَعْلُو فِيهِ فَهُوَ الرَّانُ الَّذِي ذَكَرَ اللَّهُ: ﴿كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ﴾»

“बन्दा जब पाप करता है तो उस के दिल पर एक काला नुक्ता पड़ जाता है, यदि तौबा इस्तिग़फ़ार कर लेता है तो वह कालक मिटा दी जाती है, पर यदि वह फिर गुनाह पर गुनाह करता जाता है, तो वह कालक बढ़ती जाती है, यहां तक कि उस के पूरे दिल पर छा जाती है, और यही वुह रैन है जिस का चर्चा अल्लाह तआला ने कुर्आन में किया है : ﴿كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ﴾”  
 यून नहीं, बल्कि उन के दिलों पर उन के कर्म के कारण मोर्चा चढ़ गया है” तिमएज़ी।

और नबी ﷺ ने यह भी फर्माया कि : “फिल्ने दिलों से इस प्रकार चिमटते चले जाएंगे जैसे चटाई बुन्ने में एक एक करके सीक पिरोई जाती है, तो जिस दिल में बुराई घर कर लेती हैं उस में एक काला नुक्ता पड़ जाता है, और जो दिल भी उसे नकार देता है उस पर एक सफेद नुक्ता पड़ जाता है, यहां तक के दिल दो प्रकार के हो जाते हैं, एक सफेद पत्थर की तरह जिस पर आकाश और धर्ती के रहने समय तक फिल्ने का असर न होगा, और दूसरा गदले

काले की तरह होजाता जैसे झुका हुआ कूड़ा हो जिसे अपनी नफ़सानी खादिश के सिवा न तो भलाई की पहचान होती है और न ही बुराई की” मुस्लिम।

★ और अंगों से जुड़ी इबादतों के मुकाबले में, दिल से जुड़ी हुई इबादतों की जानकारी अधिक अहम है; क्योंकि यह बुनियाद हैं, और अंगों वाली इबादतें इनकी शाखें हैं, इन से दिली इबादतें पूरी होती हैं, और यह उन्हीं के फल स्वरूप हैं। चुनान्वि दिल ज्ञान और फिक्र कि जगह है, और इसीलिए अल्लाह के पास लोगों में से बेहतर वह है जिस के दिल में ईमान, विश्वास और इख़लास इत्यादि ने घर कर लिया हो। हसन बसरी ने फ़र्माया है : “अल्लाह की क़सम अबू बक्र ने नमाज़ अथवा रोज़े के द्वारा सहबए कराम पर सबक़त नहीं प्राप्त किया बल्कि उस ईमान द्वारा किया जो उनके दिल में बस चुका था”।

★ **दिल के कर्मों का अंगों के कर्मों पर महानता के कई कारण हैं :**

1- दिल की इबादतों में गड़बड़ी के कारण अंगों की इबादतें बर्बाद हो जाती है, जैसे दिखलावे के लिए कर्म करना। 2- दिल की इबादतें असल हैं, लिहाज़ा दिल के इरादे के बिना यदि मुंह से कोई शब्द निकल आए या शरीर द्वारा कोई अशिलल हर्कत होजाए तो उस पर कोई पकड़ नहीं होती। 3- इनके द्वारा जन्नत में बुलन्द मुक़ाम प्राप्त होते हैं, जैसे जुहद और तक्वा। 4- यह अंगों वाले कर्मों से अधिक कठिन हैं, इब्ने मुन्कदिर कहते हैं कि : “मैंन 40 साल तक अपने दिल का इलाज किया फिर जाकर वह मेरा ताबेदार बना”। 5- इनके बड़े सुन्दर प्रभाव होते हैं, जैसे अल्लाह के लिए प्रेम करना। 6- इन पर बहुत अधिक सवाब मिलते हैं, अबुद्वरदा رضي الله عنه कहते हैं कि : “कुछ समय ध्यान लगाना रात भर कियाम करने से उत्तम है”। 7- इनके द्वारा अंगें हरकत में आती हैं। 8- यह अंगों के कर्मों के महान होने का कारण बनते हैं या उन्हें घटान और बर्बाद करने का, जैसा कि खुशुअ के साथ नमाज़ पढ़ना। 9- यह कभी कभार अंगों के कर्मों के बदले का सबब बनते हैं, जैसे धन न होने के बावजूद भी सदके की नियत करना। 10- इन पर मिलने वाले सवाब की कोई सीमा नहीं है, जैसे सब्र के कारण मिलने वाले सवाब। 11- यदि अंग करना बन्द करदे तो भी इनका सवाब जारी रहता है। 12- अंगों द्वारा कर्म करने से पहले और कर्म के दौरान भी यह पाए जाते हैं।

**अंगों के कर्म करने से पहले दिल कई एक अवस्था से गुज़रता है,** ① किसी भी कर्म के लिए दिल में सौच पैदा होती है। ② फिर उस के लिए जगह बनती है। ③ फिर वह उसे करने या छोड़ने के बारे में मंज़धार में रहता है। ④ फिर करने का इरादा ग़ालिब होता है। ⑤ फिर उसे करने के लिए इरादे में पुख्तगी आती है। चुनान्वि पहले के तीनों अवस्था में न तो नेकी के कर्म पर उसे सवाब मिलता है और न ही कुकर्म पर गुनाह। अलबत्ता इरादे के कारण नेकी के इरादे पर उसे एक सवाब मिलता है, और बुराई के इरादे पर गुनाह नहीं मिलता। लेकिन इरादा यदि पुख्ता हो जाए तो नेकी के कर्म का पुख्ता इरादा करने पर उसे सवाब मिलता है, और इसी तरह पाप के करने का पुख्ता इरादा करने पर गुनाह मिलता अगणच पाप न कर पाये। क्योंकि शक्ति के साथ किसी कर्म के करने का इरादा करने से उस कर्म का होना लाज़िम आता है। अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : **﴿إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ﴾** “जो लोग मुसलमानों में बे-हयाई फैलाने के आर्जू में रहते उनके लिए कष्ट-दायक अज़ाब हैं”। और अल्लह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : “यदि दो मुसमान तलवार लेकर आमने सामने होगए तो क़ातिल और मक़तूल दोनों जहन्नमी हैं”, सहाबी कहते हैं

: मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह तो भला कातिल है पर मकतूल का क्या जुर्म है? तो आप ﷺ ने फ़र्माया : “वह भी अपने साथी की हत्या करना चाहता था”। बुख़ारी।

**यदि पुख़्ता इरादा कर लेने के बाद भी पाप नहीं करता तो वास्तव में इसके 4 प्रकार हैं:**

① या तो उसे अल्लाह के डर से छोड़ा हो, फिर तो उसे सवाब मिलेगा। ② या लोगों के डर से छोड़ा हो, तो ऐसा व्यक्ति पापी करार पाएगा; क्योंकि पाप न करना इबादत है, जिसे अल्लाह के लिए होना लाज़िम है। ③ निर्बस होने के कारण उसे न कर पाया हो, और उसे करने के लिए जो अस्बाब दरकार थे उनका भी प्रयोग न किया हो तो ऐसा व्यक्ति भी अपने पुख़्ता इरादे के कारण पापी करार पाएगा। ④ पाप करने के लिए जो अस्बाब दरकार थे उनका प्रयोग तो किया हो लेकिन बेबसी के कारण उसकी इच्छा पूरी न हो पाई तो ऐसे व्यक्ति पर पाप करने वाले के बराबर पूरा पूरा गुनाह लिखवा जाएगा; जैसा कि पिछली हदीस द्वारा स्पष्ट है। और जब कभी भी बन्दे के अन्दर किसी बुराई के करने का इरादा हो तो उसकी उस पर पकड़ होगी, चाहे उस ने बुराई पहले किया हो या बाद में, चुनान्वि जिस व्यक्ति ने कभी हराम काम किया हो, और शक्ति होने के साथ ही दोबारा उसे करना चाहता हो, तो गोया कि वह अपने पाप पर मुसिर है; लिहाज़ा वह अपनी इस नियत के कारण पापी करार पाएगा; अगणच वह इसे दोबारा न कर पाए।

★ **दिल के कुछ कर्म :**

★ **नियत :** नियत का अर्थ है इरादा और इच्छा करना, नियत के बिना कोई कर्म स्वीकार नहीं होता, जैसा कि नबी ﷺ का फ़र्मान है : “**कर्मों के सवाब का दारोमदार नियत पर है, और हर व्यक्ति को वही चीज़ प्राप्त होती है जिसकी वह इच्छा करता है**”। इब्ने मुबारक رحمته फ़र्माते हैं : “बहुत से छोटे कर्म नियत के कारण महान होजाते हैं, और बहुत से महान कर्म नियत के कारण तुच्छ होजाते हैं”। और फुज़ैल रहे ने फ़र्माया : “अल्लाह तआला तुझ से मात्र तुम्हारी नियत और इरादा चाहता है, चुनान्वि कर्म यदि अल्लाह तआला के लिए हो तो उस का नाम इख़्लास है, और इख़्लास यह कि किसी भी कर्म अल्लाह तआला के सिवाय किसी दूसरे की हिस्सेदारी न हो, और यदि ग़ैरुल्लाह के लिए कर्म किया गया हो तो इसका नाम रिया, या निफ़ाक़ आदि है।

**फ़ाइद:** ज्ञानी लोगों के इलावा बाकी सारे लोग बर्बाद होने वाले है, और सारे के सारे ज्ञानी बर्बाद होने वाले हैं सिवाय कर्म करने वालों के, और सारे के सारे कर्म करने वाले हलाक होने वाले हैं सिवाय मुख़्तसों के। चुनान्वि जिस बन्दे के अन्दर कर्म करने का इच्छा हो उसके लिए सब से पहले नियत के बारे में ज्ञान लेने की आवश्यकता है, फिर सच्चाई और इख़्लास की वास्तविकता को समझ कर नियत को कर्म द्वारा सुधारे, क्योंकि बिना नियत के कर्म करने से मात्र थकान हासिल होता है, और नियत के अन्दर यदि इख़्लास न हो तो फिर वह रिया और दिखलावा है, और ईमान के बिना इख़्लास भूस जैसा है।

**कर्म तीन प्रकार के होते हैं :** ① कुकर्म : अच्छी नियत गुनाह के कामों को नेकी में नहीं बदल देती, बल्कि बुरी नियत के कारण गुनाह अधिक बढ़ जाता है। ② मुबाह़त : जायज़ और मुबाह कर्म जिसे कई प्रकार की नियत से किया जासकता है, जो उसे नेकी में भी बदल देती है। ③ सुकर्म : नेकी के कामों के सहीह होने तथा उन पर सवाब मिलने का आधार

नियत है <sup>1</sup>, यदि नेक कर्म द्वारा दिखलावा मक्सूद हो फिर तो यह पाप, और छोटा शिर्क है, जो बड़ा शिर्क भी होसकता है। और इसकी 3 स्तिथी हो सकती है : ① इबादत शुरू ही की हो दिखलावे के लिए तो यह शिर्क है और ऐसी इबादत बातिल है। ② इबादत अल्लाह के लिए शुरू की हो, फिर बीच में दिखलावे की नियत पैदा होजाए, तो यदि इबादत का अन्तिम हिस्सा पहले हिस्से पर निर्धारित न हो जैसे सदका, तो इसका पहला भाग सहीह है और अन्तिम भाग बर्बाद है, और यदि पहला भाग अन्तिम भाग से मिला हुआ हो जैसे नमाज़, तो इसकी दो हालत है : क : रिया को दूर करने का प्रयास करे, तो इबादत पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। ख : रिया के साथ ही इबादत पूरी करे तो पूरी इबादत बातिल होजाएगी। ③ इबादत से फ़ारिग होने के बाद रिया की नियत पैदा है, तो यह वास्तव में शैतानी वस्वसा है, जिसका इबादत और आबिद पर कोई असर नहीं होता। इनके इलावा भी रिया के चोर दरवाजे हैं जिनकी जानकारी प्राप्त करना और उन से बचना ज़रूरी है।

**अल्बत्ता यदि नेक कर्मों द्वारा मक़सद संसार प्राप्त करना हो तो बन्दे की नियत के आधार पर उसे सवाब या गुनाह मिलेगा।** जिस की तीन हालतें हैं : ① नेकी का मक़सद मात्र दुनिया प्राप्त करना हो; जैसे कोई व्यक्ति नमाज़ में इमामत मात्र पैसा हासिल करने के लिए करता हो तो ऐसा व्यक्ति गुनहगार करार पाएगा। नबी ﷺ ने फ़र्माया : “जिस ने ऐसा इल्म जिस से अल्लाह ﷻ की खुशी प्राप्त होती है मात्र दुनिया कमाने के लिए हासिल किया तो कियामत के दिन उसे जन्नत की हवा तक नसीब न होगी”। अबू दाऊद। ② नेकी का मक़सद अल्लाह की खुशी हासिल करने के साथ-साथ दुनिया प्राप्त करना भी हो; जैसे कोई व्यक्ति हज़्ज और व्यापार दोनों की नियत से हज़्ज करे; तो वास्तव में ऐसे व्यक्ति में ईमान और इज़्लास की कमी है; लिहाज़ा उसे उसके इज़्लास के बराबर सवाब मिलेगा। ③ नेकी का मक़सद मात्र

<sup>1</sup> नबी ﷺ ने फ़र्माया : “जिस व्यक्ति ने नेकी का इरादा किया पर उसे कर न सका तो अल्लाह तआला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उसने नेकी कर भी ली तो अल्लाह तआला उस के लिए दस नेकियों से लेकर सात सौ गुन्ने तक नेकियां लिख देता है और इस से भी कितने गुन्ने अधिक। और जिस व्यक्ति ने बुराई का इरादा किया पर उसे नहीं किया तो अल्लाह तआला उस के लिए पूरी एक नेकी लिख देता है, और यदि इरादे के बाद उस ने बुराई कर भी ली तो उस पर एक गुनाह लिखता है”। बुख़ारी तथा मुस्लिम। और आप ﷺ ने यह भी फ़र्माया कि : “इस उम्मत की मिसाल चार किसिम के लोगों की तरह है; एक वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ﷻ ने माल और इल्म से नवाज़ा, तो वह इल्म की रौशनी में अमल करते हुए अपने माल को मुनासिब जगहों में खर्च करता है, और दूसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷻ ने इल्म से नवाज़ा पर उसे माल अता न किया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी इस व्यक्ति जैसा धन होता तो मैं भी इसी की तरह उसे अल्लाह के रासते में खर्च करता, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया : इन दोनों को बराबर सवाब मिलेगा। और तीसरा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷻ ने माल से नवाज़ा पर उसे इल्म अता नहीं किया, तो वह अपने माल का हक़ अदा नहीं करता और उसे गलत जगहों में खर्च करता है, और चौथा व्यक्ति वह जिसे अल्लाह ﷻ ने न तो इल्म दिया न धन दिया, तो वह तमन्ना करते हुए कहता है : यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह बुराई की जगहों में खर्च करता। नबी ﷺ ने फ़र्माया : इन दोनों को बराबर गुनाह मिलेगा”। तिणमज़ी। इस हदीस से पता चला कि दूसरे और चौथे किसीम के लोगों को उनकी नियत का बदला मिला, जिस की तमन्ना करते हुए उन्होंने कहा था : “यदि मेरे पास भी धन होता तो मैं भी इसी की तरह कर्म करता”। चुनान्चि उन में से हर कोई अपनी नियत के बदले सवाब या गुनाह में अपने साथी का साझी होगया। इब्ने रजब रहे कहते हैं कि हदीस के इस जुम्ले : “वह दोनों सवाब में बराबर होंगे” का अर्थ यह है कि वे नेकी के असली सवाब में बराबर होंगे, न कि इज़ाफ़ी सवाब में; क्योंकि नियत करने वाले के बजाय मात्र कर्म करने वाले के सवाब में इज़ाफ़ा होगा। और यदि हर लिहाज़ से दोनों को बराबर माना जाए तो इस से लाज़िम आएगा कि कर्म करने वाले की तरह नियत करने वाले को भी दस गुना सवाब मिले, जो कि दलीलों के खिलाफ़ है।

अल्लाह ﷻ की खुशी हासिल करना हो, पर तन्वाह भी लेता हो ताकि नेकी पर कायम रहे; तो इसे बिना किसी कमी के पूरा सवाब मिलेगा। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “तुम जिस चीज़ पर उज़्रत लेते हो उनमें सब से अधिक उज़्रत लेने के लायक अल्लाह तआला की किताब है”। बुख़ारी।

**और यह जान रखो कि मुख़लस लोगों के भी कई एक दरजे हैं :** ① कमतर दरजा उनका है जो सवाब की उम्मीद से या अज़ाब से बचने की खातिर नेकी करें। ② बिचला दर्जा उनका है जो अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए और उसके आदेश का पालन करते हुए नेकी करें। ③ सब से बुलन्द दर्जा उनका है जो अल्लाह ﷻ से मुहब्बत, उस की बड़ाई, उसकी महानता और उस से डरते हुए नेकी करें। और सिद्दीको का दरजा है।

► **तौबा :** इन्सान पर हमेशा तौबा करते रहना वाजिब है। और इस से गलती का होजाना कोई बड़ी बात नहीं, नबी ﷺ ने फ़र्माया : “आदम की हर औलाद पापी है, पर उनमें बेहतर वे हैं जो बहुत अधिक तौबा करते रहते हैं”। तिर्मीजी। और नबी ﷺ ने यह भी फ़र्माया : “यदि तुम पाप न करोगे तो अल्लाह तुम्हें मिटा देगा और ऐसी क़ौम ले आएगा जो गुनाह करेगी, फिर उससे माफ़ी मांगेगी तो अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा”। मुस्लिम। तौबा करने में देरी करना, और गुनाह पर गुनाह करते जाना ग़लतत है। और शैतान की चाहत होती है कि इन्सान को सात बड़े जालों में से किसी एक जाल में फंसाए, यदि वह पहले में सफल नहीं हो पाता है तो दूसरे के लिए प्रयास करता है, ① उसका पहला जाल होता है उसे शिर्क और कुफ़्र में फंसाना, यदि उसमें सफल न हो पाया तो ② एतिकादी बिद्अत में फंसाना, और उसे नबी ﷺ और सहाब-ए-किराम ﷺ की इक्तिदा से वंचित कर देना, ③ यदि यह भी सम्भव न हो सका तो उसे बड़े पाप में, ④ नहीं तो छोटे पाप में फंसाना, ⑤ नहीं तो अधिक मात्रा में मुबाह काम करवाना, ⑥ और यदि इनमें भी सफल न होपाया तो अधिक नेकी वाले कर्म को छोड़वाकर कम नेकी वाले कर्म कराना, ⑦ नहीं तो अन्त में इन्सानों और जिन्नातों के शैतानों को उस पर मुसल्लत कर देना।

**पाप दो प्रकार के होते हैं:** ① बड़े पाप : जिसके करने पर संसार में हद्द लागू किया जाए, या आख़िरत में सज़ा की धमकी दी गई हो, या उसके करने वाले पर ग़ज़ब हो या ला'नत हो, या उससे ईमान का इन्कार किया गया हो। ② छोटे पाप : जो इनके अलावा हों। **लेकिन कुछ कारण ऐसे जिन से छोटे पाप भी बड़े बन जाते हैं?** उनमें अहम कारण हैं गुनाहों पर डटे रहना, या उन्हें बार बार करना, या उन्हें हकीर समझना, या उनके पाने पर गर्व करना, या उन्हें लोगों के सामने करना।

**और हर प्रकार के गुनाह से तौबा किया जा सकता है,** और पश्चिम से सूरज निकलने तक तौबा करने का समय बाकी है, या जाँकनी (प्राण निकलने की अवस्था) तक उसका समय

<sup>1</sup> अल्लाह तआला का फ़र्मान है मूसा ﷺ के बारे में : ﴿وَعَجَلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ﴾ “तेरी ओर जलदी इसलिए की कि तू खुश होजाए”। मूसा ﷺ ने मात्र आदेश का पालन करते हुए जलदी नहीं की बल्कि अल्लाह को खुश करने के लिए भी उन्होने ऐसा किया। और इसी प्रकार मां बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने में भी कमतर दर्जा यह है कि नाफ़रमानी के डर से उन से अच्छा बर्ताव किया जाए, बीच का दर्जा यह है कि उन की फ़र्माबदारी अल्लाह तआला का अनुकरण करते हुए उन के इहसान का बदला चुकाने के लिए की जाए, क्योंकि उन्होने ही बचपन में पाला पोषा, और दुनिया में आने का सबब बने, और उत्तम दर्जा यह है कि उन की फ़र्माबदारी अल्लाह के आदेश की बड़ाई करते हुए और उस से मुहब्बत करते हुए की जाए।

बाकी है। और तौबा करने वाला यदि अपने तौबा में सच्चा है तो उसके गुनाहों को नेकियों में बदल दिया जाता है, उसके पाप चाहे आकाश के किनारों तक क्यों न पहुँचे हों।

**और तौबा स्वीकार होने के लिए कुछ धर्तें हैं,** ① गुनाहों को छोड़ देना। ② पिछले गुनाहों पर पछतावा खाना। ③ भविष्य में न करने का पुख्ता इरादा करना। और यदि पाप का सम्बंध लोगों के हुक्क और अधिकार से हो तो उसे उन तक वापस लौटाना ज़रूरी है।<sup>9</sup>

**तौबा करने वाले लोग चार प्रकार के होते हैं :** ① एक वह व्यक्ति जो अपनी अन्तिम जीवन तक तौबा पर कायम रहे, और दोबारा पाप करने के बारे में सोचे तक भी नहीं, सिवाय कुछ लम्बियों के जिस से कि कोई भी व्यक्ति नहीं बच पाता, तो इस का नाम तौबा पर इस्तिफामत है, और ऐसे व्यक्ति को साबिक बिल्-खैरात अर्थात् नेकीयों में तरक्की करने वाला कहा गया है, और इस तौबा का नाम “नसूह” अर्थात् सच्चा और ख़ालिस तौबा है। और इस नफ़स को इत्मीनान वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ② दूसरा व्यक्ति वह जो बड़ी नेकियों पर कायम है, लेकिन बिना इरादे के अन्जाने में उस से कुछ गलतियाँ हो जाती हैं, जिन पर अपने आप को कोसता भी है, और भविष्य में पाप की ओर ले जाने वाले उन असबाब से बचने का पुख्ता इरादा करता है। और इस नफ़स को लौवामा अर्थात् निन्दा करने वाली आत्मा का नाम दिया गया है। ③ तिसरा व्यक्ति वह जो कुछ समय तक अपने तौबा पर कायम रहता है, फिर उस पर ख़ाहिश ग़ालिब आजाती है और कुछ पाप कर बैठता है। लेकिन साथ ही नेकी करना नहीं छोड़ता, बल्कि ख़ाहिश और शक्ति के बावजूद दूसरे गुनाहों से बचता है, और जब कभी एक दो बार पाप कर बैठतो तो उस पर अपने आप को कोसता भी है, और उस से तौबा करना चाहता है, तो इस आत्मा से पूछ-ताछ होगी, बल्कि तौबा करने में देरी के कारण इसका अन्जाम बड़ा खतरनाक होसकता है, क्योंकि तौबा किए बिना भी इस की मौत हो सकती है, जबकि हिसाब के दिन एतबार अन्तिम कर्मों का ही होगा। ④ चौथा व्यक्ति वह है जो कुछ समय तक अपने तौबा पर कायम रहने के बाद फिर से गुनाहों में लिप्त होजाता है, तौबे के बारे में सोचता तक भी नहीं है, और न ही अपने कर्तूत पर पछतावा खाता है, और यही वह आत्मा है जो बुराई का आदेश देती है। और ऐसे व्यक्ति पर बुरी मौत मरने का डर होता है।

► **सच्चाई :** सच्चाई दिल के सारे कर्मों का जड़ है, 6 मंज़ानी में इस का प्रयोग होता है : ① बात की सच्चाई। ② कसदो इरादे की सच्चाई अर्थात् (इख़्लास)। ③ पुरखे इरादे की सच्चाई। ④ इरादा पूरा करने की सच्चाई। ⑤ कर्म की सच्चाई। इस प्रकार कि बाहिरी कर्म भित्री कर्म अनुसार हो। ⑥ पुर्ण रूप से धर्म को अपनाने की सच्चाई। और यह सच्चाई का सब से उच्च

<sup>9</sup> रिवायत में आता है कि नबी ﷺ ने फ़र्माया : “अल्लाह तआला के पास रजिस्टर तीन प्रकार के होंगे, एक वह जिस की अल्लाह तआला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, दूसरा वह जिस में से अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, तीसरा वह जिसे कि अल्लाह तआला बिल्कुल मुआफ़ नहीं करेगा, तो वह रजिस्टर जिसे कि अल्लाह तआला मुआफ़ नहीं करेगा शिर्क का रजिस्टर होगा, अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : ﴿إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ﴾ “अवश्य जिस ने शिर्क किया अल्लाह के साथ तो अल्लाह ने उस पर जन्नत को ह़राम कर दिया और उस का ठिकाना जहन्नम है”। और वह रजिस्टर जिस की अल्लाह तआला कुछ भी पर्वा नहीं करेगा, वह है बन्दे का अपने आप पर अन्याय करना जो उस के और उस के रब के बीच हो, तो यदि अल्लाह तआला चाहेगा तो उसे मुआफ़ कर देगा, और वह रजिस्टर जिस में से अल्लाह तआला कुछ भी नहीं छोड़ेगा, वह बन्दों का आपस में एक दूसरे पर अत्याचार करना, तो अल्लाह तआला उन से लाज़िमी बदला दिलाएगा”। इस रिवायत को अहमद ने किया और इस में कम्ज़ोरी है।

तथा प्रसिद्ध स्थान है। जैसा कि डर, उम्मीद, बड़ाई, जुहद, रिज़ामन्दी, भरोसा, प्रेम और दिल के सारे कर्म में सच्चाई। तो जिस व्यक्ति में इन सारी चीज़ों में सच्चाई पाई जाती है, वह सिद्दीक़ है, इसलिए कि वह सच्चाई की अन्तिम सीमा तक पहुंचा हुआ है। और नबी ﷺ का फ़र्मान है : “तुम सच्चाई को लाज़िम पकड़ लो, क्योंकि सच्चाई भलाई का रास्ता दिखाता है, और भलाई जन्नत का रास्ता दिखाता है, और आदमी सदा सच्च बोलता रहता है, और सच्चाई के खोज में रहता है यहां तक कि अल्लाह तआला के पास सिद्दीक़ लिख दिया जाता है”। बुख़ारी और मुस्लिम।

और जिस व्यक्ति पर हक़ के बारे शंका होगया और उस ने नफ़सानी ख़ाहिश के बिना सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर से राहनुमाई चाही तो अधिकतर उसे राहनुमाई मिल जाती है। और यदि हक़ की राहनुमाई न मिल सके तो अल्लाह कहां वह मा'जूर माना जाता है।

सच्चाई का विपरित झूट है, और जूँही झूट दिल से जुबान की ओर बढ़ता है, उसे बर्बाद कर देता है, और इसी ओर अंगों की ओर बढ़ता है और उसे भी बर्बाद कर देता है जिस प्रकार कि जुबान की बातों को बर्बाद कर दिया था, फिर झूट का कब्ज़ा हो जाता है उस की बातों पर, उस के कर्मों पर और सारी अवस्था पर।

■ **महब्बत** : अल्लाह उस के रसूल और मोमिनों की महब्बत द्वारा ईमान का मीठास प्राप्त होता है, नबी ﷺ ने फ़र्माया : “जिस व्यक्ति में तीन आदतें हों तो उस ने उन के द्वारा ईमान का मीठास पालिया : ① पहला यह कि अल्लाह और उस के रसूल उस के पास बाकी सारे लोगों से अधिक प्रिय हों, ② दूसरा यह कि वह लोगों से अल्लाह की ख़ातिर महब्बत करता हो, ③ तीसरा यह कि वह कुफ़्र की ओर लौटना जब कि अल्लाह तआला ने उस से उस को बचा लिया है, इसी तरह ना पसन्द करता है जैसा कि आग में डाला जाना नापसन्द करता है”। बुख़ारी और मुस्लिम। चुनान्वि जब दिल में महब्बत का पौदा गाड़ दिया जाए, और इख़लास तथा नबी ﷺ की पैरवी द्वारा उस की सीचाई हो, तो अनेकों प्रकार के फल आते हैं, और अल्लाह की मर्ज़ी से यह फल सदा आते रहते हैं। **महब्बत की 4 किस्में हैं** : ① अल्लाह की महब्बत, जो कि ईमान की बुनियाद है। ② अल्लाह तआला के लिए महब्बत<sup>1</sup> और यह वाजिब है।

1 **दोस्ती और दुश्मनी के लिहाज़ से लोगों की तीन किस्में हैं** : ① जिन से ख़ालिस दोस्ती की जाए, ऐसी दोस्ती जिसमें दुश्मनी शामिल न हो, और यह मात्र ख़ालिस मोमिनों से होगी, जैसे अम्बिया और सिद्दीकीन से, और इनमें हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उनकी पत्नियाँ, उनकी बेटियाँ और सहाबए किराम ﷺ सूची में सब से ऊपर हैं। ② जिन से बिलकुल दोस्ती जायज़ नहीं, बल्कि उनसे बराअत की जाएगी। और यह हर प्रकार के काफ़िर मुशिरक और मुनाफ़िक़ हैं। ③ जिन से उनके गुणों के कारण दोस्ती की जाएगी और अवगुणों के कारण बराअत। और यह पापी मुसलमान हैं, जिनसे इनके ईमान के कारण दोस्ती की जाएगी, और इनके पाप के कारण बैर रखवा जाएगा। **और काफ़िरों से बराअत** इस प्रकार होगी कि उनसे बैर रखा जाए, उनसे सलाम करने में पहल न किया जाए, उनके सामने न तो झुका जाए और न ही उनसे भयभीत हुआ जाए, और उनके देश से हिजरत की जाए। **और मोमिनों से दोस्ती** इस प्रकार होगी कि यदि शक्ति हो तो मुस्लिम देश की ओर हिजरत की जाए, जान और धन से उनकी सहायता की जाए, उन पर आने वाली मुसीबतों पर दुःखी हुआ जाए, और उनके लिए भलाई पसन्द की जाए। **और काफ़िरों से दोस्ती की दो किस्में हैं** : ① ऐसी दोस्ती जिसके कारण व्यक्ति इस्लाम के दायरे से निकल जाता है। जैसे उनके धर्म के लिए उन से महब्बत करना। ② ऐसी दोस्ती जो कि बड़े पाप, हराम और मक़ूह के दायरे में आती है। जैसे संसारिक बुनियाद पर उन से महब्बत करना। लेकिन जिन काफ़िरों से लड़ाई न हो उनसे अच्छा बर्ताव करने में कोई आपत्ति नहीं है। जैसे उनके कम्ज़ोरों के साथ नरमी बरतना, तथा कृपा का प्रदर्शन करते हुए, डरते हुए नहीं, उनके साथ नरम बातें करना। तो अल्लाह तआला ने इसका आदेश दिया है **لَا يَسْتَأْذِنُ الْكُفْرُ وَاللَّيْنُ لَمْ يَغْتَبِ لَكُمْ فِي الْبَيْنِ وَلَا يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْكُمْ أَنْ تَرَوْهُ** **وَتَقْسَطُوا إِلَيْهِمْ** “जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उनके साथ अच्छा



③ अल्लाह तआला जैसी महबूबत : अल्लाह तआला की महबूबत में दूसरों को साझी करना, जैसा कि मुशिरकों का अपने देवताओं से महबूबत करना, तो यही असल शिर्क है। ④ फित्री महबूबत : जैसे माँ बाप, और बच्चों से महबूबत, खाने इत्यादि से महबूबत। और यह जायज़ है।

▶ **तवक्कुल** : मकसद प्राप्त करने के लिए और मक़ूह दूर करने के लिए शरई अस्बाब को अपनाते हुए दिल को अल्लाह की ओर फेर कर उसी पर भरोसा करने का नाम तवक्कुल है। चुनान्चि अस्बाब को न अपनाना अक्ल में कमी है और दिल को अल्लाह की ओर न फेरना यह तौहीद पर हमला है, किसी भी काम को करने से पहले तवक्कुल किया जाता है, जो कि विश्वास और यकीन का फलस्वरूप है। तवक्कुल की तीन किस्में हैं : ① **वाज़िब** : जिन चीज़ों के करने की ताकत अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को प्राप्त नहीं है, उनके बारे में मात्र अल्लाह पर भरोसा करना, जैसे : निरोग करना। ② **हराम** : इस की दो किस्में हैं। ① शिर्क अक्बर : सम्पूर्ण रूप से अस्बाब पर भरोसा करलेना कि उन्हीं के कारण हमें नफ़ा या नुक़सान होता है। ② शिर्क अस्ग़र : जैसे रोज़ी के बारे में किसी व्यक्ति पर भरोसा करलेना, सम्पूर्ण रूप से उसके प्रभाव का अक़ीदा न रखता हो लेकिन उसे सबब से बढ़कर समझता हो। ③ जायज़ : खरीदने और बेचने जैसी चीज़ में जिसकी इन्सान ताकत रखता हो, एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के ऊपर भरोसा करना। लेकिन यहां पर यह कहना जायज़ न होगा कि मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया फिर आप पर, बल्कि यूँ कहे : मैं ने आप को वकील बनाया।

▶ **शुक्र** : दिल में ईमान, जुबान पर ता'रीफ़ और अंगों द्वारा कर्म के रूप में बन्दे पर अल्लाह की नेमतों का असर प्रकट होने का नाम शुक्र है। जो कि स्वयं मक़सूद है, जबकि सब्र

सुलूक और एहसान करने, और न्याय वाला बर्ताव करने से अल्लाह तआला तुम्हें नहीं रोकता। और उनसे दुश्मनी और बैर रखने का भी आदेश दिया है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوِّيكُمْ أَوْلِيَاءَ تَلْقَوْنَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ﴾ "हे वे लोग जो ईमान लाये हो! मेरे और अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ कि तुम दोस्ती से उनकी ओर संदेश भेजो"। तो उनसे कीना और बैर रखने के साथ साथ उनके मामलों में उनके साथ न्याय किया जा सकता है। जैसा कि नबी ﷺ ने मदीना के यहूदियों के साथ किया।

1 किया अस्बाब अपनाना तवक्कुल के खिलाफ़ है? इस के कई रूप हैं : ① ऐसे फ़ाइदा की प्राप्ति के लिए प्रयास करना जो कि मौजूद नहीं है : और इस की तीन किस्में हैं : ① ऐसा सबब जो कि यकीनी है, जैसे बच्चा पाने के लिए निकाह करना, तो बच्चा पाने के लिए इस सबब को न अपनाना तवक्कुल नहीं बल्कि पागलपन है। ② जो कि यकीनी नहीं है, लेकिन आम तौर पर उन के बिना मक़सूद हासिल नहीं होता, जैसे बिना यात्रा के सामान के सिहरा का सफ़र करना, तो ऐसा करना तवक्कुल नहीं है, बल्कि सामान लेकर जाने का आदेश आया है, बल्कि नबी ﷺ ने हिज़्रत के समय स्वयं रास्ते का सामान लिया और एक गाइड भी साथ में रखवा। ③ ऐसे अस्बाब जो मक़सूद तक पहुंचा सकते हैं लेकिन उन पर भरोसा नहीं किया जासकता है, जैसे कोई अनेक रास्ते द्वारा जिविका प्राप्त करने के लिए प्रयास करे, तो यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, उमर ﷺ ने फ़र्माया : "तवक्कुल करने वाला वह है जो बीज को धर्ती में डालता है और अल्लाह पर भरोसा करता है"। ② जो चीज़ मौजूद उसे सुरक्षित करना : तो जिसे जिविका प्राप्त हो गया हो और वह उसे स्टोर कर रहा हो तो यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, खासकर जब कि वह बाल-बच्चे वाला हो, नबी ﷺ बनू नज़ीर की खजूर से बेचते थे और अपनी फैमिली के लिए साल भर का खाना बचा के रखते थे। बुखारी और मुस्लिम। ③ सबब द्वारा ऐसी मुसीबत को दूर करना जो अभी आई नहीं है, और यह तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, जैसे जिर: पहनना या ऊँट को भागने के डर से रस्सी से बांधे रखना, पर भरोसा सबब पर नहीं बल्कि मुसबिब (अल्लाह) पर करे, और उस के हर फैसले से राज़ी हो। ④ जो मुसीबत आ पड़ी है उसे दूर करने के लिए सबब अपनाना। और इस की तीन किस्में हैं : ① यकीनी हो, जैसा कि पानी पियास को बुझाता है, लिहाज़ा पानी न पीना तवक्कुल नहीं है। ② जो कि यकीनी न हो, जैसे पछना लगवाना, तो यह भी तवक्कुल के खिलाफ़ नहीं है, क्योंकि नबी ﷺ ने स्वयं उपचार कराया और उस का आदेश भी दिया। ③ जो कि वहमी हो, जैसे निरोग अवस्था में रोगी न होने के लिए दगवाना, तो यह परिपूर्ण तवक्कुल के खिलाफ़ है।

दूस्रों के लिए वसीला होता है, और इसका भी सम्पर्क दिल, जुबान और अंगों से होता है, और शुक्र का अर्थ होता है कि नेमतों का प्रयोग अल्लाह तआला की इत्ताअत के लिए की जाए।

■ **सब्र** : दुःख और तकलीफ़ पर गैरुल्लाह से शिकायत न करके अल्लाह पर भरोसा रखते हुए धैर्य करना। अल्लाह तआला का फ़र्मान है : ﴿ **إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ** ﴾ **“सब्र करने वालों को ही उनका पूरा-पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है”**।

और नबी ﷺ ने फ़र्माया : **وَمَنْ يَتَصَبَّرْ يُصَبِّرْهُ اللَّهُ وَمَا أُعْطِيَ أَحَدٌ عَطَاءً خَيْرًا وَأَوْسَعَ مِنَ الصَّبْرِ** **“और जो सब्र के लिए प्रयास करता है अल्लाह तआला उसे सब्र अता कर देता है, और किसी भी व्यक्ति को सब्र से अफ़ज़ल और बढ़कर कोई चीज़ नहीं दी गई”**।

और उमर رضي الله عنه का फ़र्मान है : “मुझ पर जो भी मुसीबत आई उस में अल्लाह तआला की ओर से चार नेमतें थीं; एक तो यह कि वह मेरे दीन में नहीं थी, दूसरी यह कि वह उस से बड़ी नहीं थी, तिस्री यह कि उस पर राज़ी होने से मैं महरूम नहीं हुआ, और चौथी यह कि मुझे उस पर सवाब की उम्मीद है”।

**और सब्र के कई एक दर्जे हैं** : कम्तर दर्जा : यह है कि बन्दा दुःख तकलीफ़ को ना-पसन्द करे पर किसी से उसका शिक्वा न करे। बीच का दर्जा : यह है कि अपनी तकदीर पर राज़ी होते हुए किसी से अपनी तकलीफ़ का शिक्वा न करे। उत्तम दर्जा : यह है कि मुसीबत पर अल्लाह तआला की ता'रीफ़ करे। और यदि मज़्लूम व्यक्ति ने अत्याचारी को श्रापा तो गोया उसने अपनी मदद चाही और अपना हक़ प्राप्त कर लिया और उसने सब्र नहीं किया।

**सब्र की दो किस्में हैं** : ① शरीरिक सब्र : हमें इसके बारे में यहां पर चर्चा नहीं करना है। ② नफ़सानी सब्र : दिल की ख़ाहिशात पर आत्मा द्वारा सब्र करे।<sup>9</sup>

**और इन्सान को दुनिया में जो भी चीज़ लाहिक़ होती है उसकी दो किस्में हैं** : ① या तो उसके इच्छा अनुसार हो तो इसमें भी अल्लाह का हक़ अदा करने के लिए सब्र की ज़रूरत है, ताकि उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और गुनाह के लिए उसका प्रयोग न करे।

② उसकी ख़ाहिश के खिलाफ़ हो, और इस की तीन किस्में हैं : ① अल्लाह तआला की इत्ताअत पर सब्र करना, जो कि उनमें से फ़र्ज़ अदा करने वाजिब है और नफ़ल अदा करने के लिए मुस्तहब है। ② अल्लाह तआला की नाफ़रमानी से दूर रहने के लिए सब्र करना, जो कि उनमें से हराम काम को छोड़ने के लिए वाजिब है, और मक़ूह को छोड़ने के लिए मुस्तहब है। ③ अल्लाह तआला की बनाई हुई तकदीर पर सब्र करना, और वाजिब है कि जुबान को शिक्वा करने से रोके रखे, दिल को तकदीर पर एतिराज़ करने तथा नाराज़ होने से रोके, और इसी प्रकार जिन चीज़ों से अल्लाह नाराज़ होता है उन से अंगों को रोके, जैसे मातम करना, कपड़े फाड़ना, चेहरा पीटना इत्यादि। और इस बारे में मुस्तहब यह है कि अल्लाह की बनाई हुई तकदीर से बन्दा राज़ी हो जाए।

<sup>1</sup> यदि पेट और लिंग सम्बन्धित चीज़ों पर सब्र किया जाए तो इसे : “इप्फ़त” कहते हैं, और यदि युद्ध में सब्र किया जाए तो इसे : “शुजाअत” कहते हैं। यदि गुस्सा पी लिया जाए तो इसे : “हिल्म” कहते हैं, यदि किसी चीज़ को छुपाने के लिए सब्र किया जाए तो इसे : “कितमाने सिरर” कहा जाता है। यदि जीवन की फ़ालतू सुख छोड़ने के लिए हो तो इसे : “जुहद” कहते हैं। और यदि मामूली सुख चैन छोड़ने के लिए हो तो इसे : “किनाअत” कहते हैं।



**इन दोनों व्यक्तियों में से कौन सर्वश्रेष्ठ है :** शुक करने वाला मालदार, या सब्र करने वाला फकीर? यदि धनी व्यक्ति अपने माल को अल्लाह के रास्ते में खर्च करता है, या अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए इकट्ठा करता है तो यह फकीर से उत्तम है, और यदि वह अधिक खर्च मुबाह चीजों में करता है तो फिर फकीर उत्तम है।

► **रिज़ामन्दी :** जो मिल जाए उसी को काफ़ी समझना और उस पर खुश रहना। किसी भी काम के होने के बाद रिज़ामन्दी की बात आती है, और अल्लाह तआला के फ़ैसले से राज़ी रहना यह सेवकों का उच्च मुक़ाम है, जो कि अल्लाह से महबूबत और उस पर भरोसा रखने का फल है। और यह बात भी स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआला से दुःख और मोसीबत को टालने की दुआ करना उस की तक्दीर पर रिज़ामन्दी के खिलाफ़ नहीं है।

► **खुशूअ :** आजिज़ी, इन्किसारी और नर्मता का नाम खुशूअ है, हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने कहा कि निफ़ाक़ वाले खुशूअ से बचो। लोगों ने पूछा क्या मतलब? तो उन्होंने जवाब दिया, मतलब यह है कि : शरीर से आजिज़ी प्रकट हो जब कि दिल पर उस का कोई प्रभाव न हो। और हुज़ैफ़ा رضي الله عنه ने ही कहा कि : तुम अपने धर्म में से सब से पहले खुशूअ को खो दोगे। और जिस इबादत के लिए खुशूअ अनिवार्य है तो उस इबादत का सवाब खुशूअ के आधार पर ही होगा, जैसे नमाज़ : नबी صلى الله عليه وسلم ने नमाज़ी के बारे में कहा कि उसे नमाज़ के सवाब का आधा, एक चौथाई, पांचवा हिस्सा, ... दसवां हिस्सा प्राप्त होता है, बल्कि बिल्कुल खुशूअ न पाए जाने के कारण वह पूरे सवाब से महरूम होजाता है।

► **रहमत की उम्मीद :** इस का विपरित ना-उम्मीदी है, और उम्मीद के सहारे नेकी करना डर के कारण करने से उत्तम है, क्योंकि उम्मीद द्वारा सेवक अल्लाह के बारा अच्छा गुमान रखता है। और अल्लाह तआला कहता है : “मैं अपने सेवक के गुमान अनुसार रहता हूँ”। मुस्लिम। और इस के दो दर्जे हैं : **उत्तम दर्जा** यह है कि बन्दा नेकी करे और सवाब की उम्मीद रखे। आइशा رضي الله عنها ने पुछा ऐ अल्लाह के रसूल! ﴿ **وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَاوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجَلَةٌ** ﴾ “और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं, और उनके दिल कपकपाते रहते हैं” यह डरने वाले वह हैं जो कि चोरी करते, बलात्कार करते, शराब पीत? तो आप صلى الله عليه وسلم ने फ़र्माया : सिद्दीक़ की बेटी यह नहीं हैं, बल्कि वह लोग हैं जो कि नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, सद्का करते हैं, और उन्हें डर होता है कि कहीं स्वीकार न हो। ﴿ **أُولَئِكَ يَسْعَوْنَ فِي الْحَيَاةِ** ﴾ “और यही हैं जो जलदी जलदी भलाइयां प्राप्त कर रहे हैं”। तिर्मीज़ी। और **कमतर दर्जा** : उस तौबा करने वाले पापी का है जो की रहमत के आस में है। अल्बत्ता ऐसा पापी जो कि पाप पर पाप किए जाता और तौबा के बारे में सोंचता तक भी नहीं और साथ अल्लाह की रहमत के आस में भी है, तो यह वास्तव में तमन्ना करना है, न कि उम्मीद रखना। और यह चीज़ बुरी है, जबकी उम्मीद लगाए रहना प्रशंसा के काबिल है। चुनान्चि मोमिन भलाई करते हुए भी डरता रहा, जबकि मुनाफ़िक़ बुराई करता रहा और स्वयं को सुरक्षित समझा।

► **डर :** किसी दुःख या तक्लीफ़ के पहुंचने का सोंच कर लाहिक़ होने वाला ग़म, यदि दुःख का पहुंचना निश्चत हो तो उसे ख़श्यत (डर) कहते हैं, जिसका विपरित शान्ति है, और यह उम्मीद के विपरित नहीं है, क्योंकि डर, भय के कारण पैदा होता है, जबकि उम्मीद चाहत के कारण जगती है, और इबादत में महबूबत, डर और उम्मीद का सन्गम ज़रूरी है, इब्ने कैयिम رحمه الله कहते हैं : अल्लाह की ओर लगने में दिल का उदाहरण चरा की तरह है, महबूबत उस

का सर है, और डर तथा उम्मीद उस के दोनों पर हैं, यदि दिल में भय अपना स्थान बना ले तो शहतों को जला कर रख देगा, और दुनिया के मोह को उस से दूर कर देगा।

**और वाजिबी डर वह है** जो फर्ज इबादतों के करने और हराम चीजों के छोड़ने पर आमादा करे। और **मुस्तहब डर वह है** जो मुस्तहब कामों के करने और मकूह कामों के छोड़ने पर आमादा करे, **और इस की कई एक किस्में हैं :** ① **वाजिब :** भित्री डर जिस का अल्लाह तआला के लिए होना वाजिब है, और किसी दूसरे इस प्रकार भय करना **बड़ा शिर्क** है, जैसा कि मुशिरकों के माबूदों (उपास्यार्यों) से डरना कि वे उन्हें किसी प्रकार की हानि न पहुँचा दें। ② **हराम :** लोगों के डर से किसी वाजिब काम को छोड़ देना या हराम काम करना। ③ **जायज़ :** फित्री डर जैसे भेड़िए इत्यादि से डरना।

④ **जुहद :** अपने आत्मा की चाहत को तुच्छ इच्छा के बजाए भलाई की ओर फेरना जुहद कहलाता है। और दुनिया की मोह से अपने आप को दूर रखना दिल तथा शरीर के लिए आराम-दायक है, और इस की चाहत में खोजाना सोंच तथा फिक्र को बढ़ावा देता है, दुनिया की चाहत हर बुराई की जड़ है, और उसे तुच्छ जानना हर नेकी का सबब है, और दुनिया के बारे में जुहद यह है कि आप उसे अपने दिल से निकाल बाहर करें, न कि अंगों द्वारा दूरी प्रकट करें और दिल में उसी की महबूबत बसी हो, यह जाहिलों का जुहद है, नबी ﷺ ने फर्माया : “अच्छे व्यक्ति के लिए अच्छा माल क्या ही सुन्दर है”। अहमद। **फकीर व्यक्ति का**

**माल के साथ पाँच अवस्था है :** ① माल को ना-पसन्द करते हुए और उस की परिशानियों में उलझने से बचते हुए उसे अपनाने से दूर भागे, और ऐसा व्यक्ति ज़ाहिद कहलाता है।

② माल प्राप्त होने पर खुश न होता हो, और नहीं उसे इतना ना-पसंद करता कि उस के कारण उसे तकलीफ हो ऐसा व्यक्ति राजी कहलाता है। ③ माल का होना न होने से अधिक महबूब हो, और उसे पसन्द भी करे, पर ऐसा नहीं कि उसे पाने के लिए मेहनत करता हो, बल्कि यदि मिल गया तो अपना ले, और उस पर खुश भी हो, और यदि पाने के परिश्रम करना पड़े तो उस से दूर रहे, और ऐसा व्यक्ति क़ानिअ कहलाता है। ④ निर्बस होने के कारण वह माल पाने की प्रयास न करता हो, वर्ना उस के भिन्न माल पाने की चाहत मौजूद हो, और यदि परिश्रम द्वारा भी उसे पा सकता हो तो उस के लिए प्रयास करना न छोड़े। और ऐसा व्यक्ति हरीस कहलाता है। ⑤ जिस माल को प्राप्त करने की प्रयास कर रहा हो उसे पाने के लिए मुत्तर् हो जैसे भूका और नंगा व्यक्ति, जिस के पास न तो खाना हो न कपड़ा। और ऐसा व्यक्ति मुत्तर् कहलाता है।

## एक गंभीर बात-चीत

नीचे की यह बात-चीत ऐसे दो व्यक्तियों के बीच हुई है जिन में से एक का नाम **अब्दुल्लाह** और दूसरे का नाम **अब्दुन्नबी** है, **अब्दुल्लाह** की भेंट जब पहली बार **अब्दुन्नबी** से हुई तो इस नाम से उसे कुछ अचंभा सा हुवा, और वह अपने दिल में सोचने लगा कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि कोई अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करे, चुनाँचे आश्चर्य करते हुए उसने **अब्दुन्नबी** से यह पूछा कि : क्या आप अल्लाह के सिवाय किसी और की पूजा करते है?

**अब्दुन्नबी** : कदापि नहीं, मैं तो ख़ालिस मुसलमान हूँ, मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ।

**अब्दुल्लाह** : फिर आप का यह कैसा नाम है? यह तो ईसाइयों जैसा नाम है, जो अपने नाम अब्दुल् मसीह रखते हैं, और उनके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं; क्योंकि वे ईसा عيسى عليه السلام को अपना उपास्य मानते हैं, और उनकी पूजा करते हैं।

आपका यह नाम जो भी सुनेगा उसके दिमाग में यही बात आएगी कि आप नबी के बन्दे हैं, और मुसलमान का आस्था अपने नबी ﷺ के बारे ऐसा कदापि नहीं है, बल्कि हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह यह अक़ीदा रखे कि नबी ﷺ अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन हमारे नबी ﷺ सब से उत्तम व्यक्ति हैं, और सारे रसूलों के सरदार हैं, हम अपना यह नाम तबरूक के लिए रखते हैं, और नबी की उस मर्यादे से जो अल्लाह के पास उन्हें प्राप्त है अल्लाह की नज़दीकी चाहते हैं, यही कारण है कि हम नबी ﷺ से उनके उसी मर्यादे के कारण जो उनके रब के पास उन्हें प्राप्त है शफ़ाअत चाहते हैं, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, मेरा एक भाई है उसका नाम **अब्दुल्-हुसैन** है, और मेरे पिता का नाम **अब्दुरसूल** है, इस तरह के नाम पुर्खों से चले आरहे हैं, और यह लोगों में प्रसिद्ध है, हमने अपने पुर्खों को इसी अक़ीदे और आस्थे पर पाया है, इसलिए आप को इस मामले में सख़्ती से काम नहीं लेना चाहिए क्योंकि धर्म आसान है।

**अब्दुल्लाह** : यह तो पहले से भी अधिक भयानक और भयंकर ग़लती है कि आप ग़ैरुल्लाह से ऐसी चीज़ मांगे जिसे देने पर अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को शक्ति प्राप्त न हो, चाहे जिससे यह चीज़ मांगी गई हो वह नबी हों, या उनसे कम दर्जे का बुजुर्ग या वली, जैसे हुसैन, या कोई और ही क्यों न हो। यह तौहीद और **“لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ”** के विरुद्ध है।

मैं आप से कुछ प्रश्न करूंगा ताकि आप पर मामले का भयानकपन और इस तरह के नाम रखने के बुरे परिणाम स्पष्ट होजाएं, इससे मेरा उद्देश्य मात्र सत्य की पैरवी और उसकी इत्तेबा'अू है, असत्य की स्पष्टता और उससे दूरी है, और भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना है, इसके सिवाय मेरा कोई और उद्देश्य नहीं। **وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْهِ التُّكْلَانُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ**

मैं आपके सामने अल्लाह तआला का यह फ़रमान पेश करता हूँ :

**﴿إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا﴾** “ईमान वालों का कहना यह होता है : जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह और उसका रसूल उनमें फैसला करदे तो वे कहते हैं हम ने सुना और मान लिया।”

और उसने यह भी फ़रमाया: **﴿فَإِن نَنزَعْنَهُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ﴾** “फिर यदि तुम किसी चीज़ में मतभेद कर बैठो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की ओर लौटाओ यदि तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो।”

**अब्दुल्लाह** : अभी आप ने कहा है कि आप अल्लाह को एक मानते और इस बात की गवाही देते हैं कि उसके सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, तो क्या आप हम से यह स्पष्ट करेंगे कि उसका मतलब क्या है?

**अब्दुन्नबी** : तौहीद यह है कि आप इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह आकाश और धरती का सृष्टा है, वही जीवित रखता है और मृत्यु देता है, वही पृथ्वी का मुदब्बिर और व्यवस्थापक है, और पूरी सृष्टि को वही जीविका प्रदान करता है।

**अब्दुल्लाह** : यदि यही तौहीद की तारीफ़ है तो इस तारीफ़ की रू से फिरऔन और अबू जहल इत्यादि सभी तौहीद परस्त होंगे; क्योंकि उनमें से कोई भी इन चीज़ों का जिन्हें आप ने अभी ज़िक्र किया है इन्कार नहीं करता था। फिरऔन जिसने अपने रब होने का दावा किया था, वह भी अल्लाह के अस्तित्व को मानता था, और यह भी स्वीकार करता था कि पृथ्वी का व्यवस्थापक अल्लाह ही है।

इसका प्रमाण अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : **﴿وَحَدِّثُوا بِهَا وَأَسْتَفِئْتَهَا أَنْفُسُهُمْ ظَلَمُوا وَعَلُوا﴾** **“उन्होंने इसका इन्कार किया हालांकि उनके दिल विश्वास कर चुके थे, मात्र उदंडता और घमंड के कारण।”**

इसका यह एतराफ़ उस समय खुल कर सामने आया जब वह डूबने लगा था।

तौहीद यह नहीं है, बल्कि वास्तव में वह तौहीद जिसकी वजह से रसूल भेजे गए, किताबें उतारी गईं और कुरैश से लड़ाई की गई वह इबादत और पूजा में अल्लाह को एक मानना है, इबादत एक ऐसा शब्द है जो अपने अर्थ में सारे ज़ाहिरी और बातिनी कथन और कर्म को इकट्ठा किए हुए है जिन्हें अल्लाह पसन्द करता है और जिन से खुश होता है। **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** में **إِلَهَ** के मान्ने ऐसे उपास्य के है, जिसके सिवाय किसी और की इबादत ठीक नहीं।

**अब्दुल्लाह** : क्या आपको इसकी जानकारी है कि धरती पर रसूलों को क्यों भेजा गया, जिन में सब से पहले रसूल नूह **عليه السلام** हैं?

**अब्दुन्नबी** : हाँ, रसूलों को इसलिए भेजा गया ताकि वे शिर्क करने वालों को मात्र अल्लाह की इबादत करने और गैरुल्लाह (जिन्हें वे अल्लाह की इबादत में साझी बनाते थे उन) की इबादत छोड़ देने की ओर बुलाएं।

**अब्दुल्लाह** : अच्छा आप यह बता सकते हैं कि नूह **عليه السلام** के समुदाय के शिर्क का कारण क्या था?

**अब्दुन्नबी** : मैं नहीं जानता कि इसका क्या कारण था।

**अब्दुल्लाह** : अल्लाह ने नूह **عليه السلام** को उनके समुदाय की ओर इसलिए भेजा कि उनके समुदाय ने अपने बुजुर्ग और नेक व्यक्ति : वद, सुवा'अ, यगूस, यऊक और नस्र के बारे में गुलू और सीमा पार किया था।

**अब्दुन्नबी** : क्या आपकी मुराद यह है कि वद, सुवा'अ, यगूस, यऊक और नस्र उनके समुदाय के बुजुर्ग और नेक लोगों के नाम हैं, सरकश काफ़िरो के नाम नहीं?

**अब्दुल्लाह** : हाँ, यह उनके उपास्यों के नाम हैं जिनकी वह लोग इबादत करते थे, और उन्हीं की आज्ञाकारी अरब-बासी भी कर रहे थे, यह वास्तव में उनकी क़ौम के नेक और परहेज़गार व्यक्तियों के नाम हैं, इसका प्रमाण उस हदीस में है जिसे इमाम बुख़ारी **رحمته الله** ने इब्ने अब्बास **رضي الله عنه** से रिवायत किया है कि : यह नूह **عليه السلام** के समुदाय के नेक व्यक्ति थे, जब यह मर गए तो शैतान ने इनकी क़ौम के दिलों में यह बात डाल दी कि तुम उनके मूर्ती बनाकर अपनी बैठकों में जिनमें तुम बैठते हो रख लो, और उन मूर्तियों के भी वही नाम रख लो जो उन नेक व्यक्तियों के थे, तो उन्हीं ने ऐसा ही किया, पर उन्हीं ने ऐसा उनकी पूजा करने के लिए

नहीं किया था, बल्कि मात्र इसलिए किया था कि इससे उनकी याद ताज़ा रहेगी, फिर जब यह लोग मर गए और ज्ञान भुला दिया गया तो उन मूर्तियों की पूजा होने लगी।

**अब्दुन्नबी** : यह तो अचंभे वाली बात है।

**अब्दुल्लाह** : क्या मैं इससे भी आश्चर्य-जनक बात न बताऊँ? आप यह भी जान लीजिए कि अन्तिम नबी मुहम्मद ﷺ को अल्लाह ने एक ऐसी कौम की ओर रसूल बनाकर भेजा, जो इबादत करते थे, हज्ज करते थे, दान-दक्षिना देते थे, लेकिन साथ-साथ अल्लाह की मख़्लूक़ात को अपने और अल्लाह के बीच वसीला और वास्ता बनाते थे, और कहते थे कि हम उनके द्वारा नज़दीकी चाहते हैं, अल्लाह के यहाँ हम फ़रिश्तों की, ईसा ﷺ की, और उनके अलावा दूसरे नेक व्यक्तियों की सिफ़ारिश चाहते हैं, तो अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को नबी बनाकर भेजा, ताकि आप उनके लिए उनके पिता इब्राहीम ﷺ के धर्म को दोबारा से जीवित करें, और उन्हें यह बताएं कि इस तरह का तर्क़ुब और आस्था मात्र अल्लाह का हक़ है, इसमें से ग़ैरुल्लाह के लिए कोई भी चीज़ जायज़ नहीं, अल्लाह ही अकेला पैदा करने वाला है, उसमें उसका कोई साझी नहीं, मात्र वही जीविका प्रदान करता है, उसमें भी उसके साथ कोई और शरीक नहीं।

और सातों आकाश और धरती और जो भी इनमें हैं सब उसके बन्दे, सेवक और दास हैं, सारी चीज़ें उसके अधीन हैं और वही उनका उपायकर्ता है, यहाँ तक कि वे सारे उपास्य भी जिन की वे पूजा करते थे वे भी यही स्वीकारते थे कि वे उसी की उपाय के अधीन हैं।

**अब्दुन्नबी** : यह तो बड़ी महत्व की बात है, इसका कोई प्रमाण भी है?

**अब्दुल्लाह** : हाँ, बहुत से प्रमाण हैं, उन्हीं में से अल्लाह का यह फ़रमान है :

﴿ قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَرَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا نُنْقِزُكَ مِنَ الْهَيْبَةِ ﴾

“आप कहिए कि कौन है जो तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी पहुँचाता है? या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा अधिकार रखता है? और कौन है जो ज़िन्दा को मरे हुए से निकालता है? और मरे हुए को ज़िन्दा से निकालता है? और कौन है जो सारे कामों की तद्वीर करता है? तो वे ज़रूर यही कहेंगे कि अल्लाह। तो उनसे कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?” और यह भी फ़मार्या:

﴿ قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ (٨٤) سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ (٨٥) قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝ (٨٦) سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا نُنْقِزُكَ مِنَ الْهَيْبَةِ ۝ (٨٧) قُلْ مَنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاغْتَابُوا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ (٨٨) سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ ۝ (٨٩) ﴾

“पूछिए तो सही कि धरती और उसकी सारी चीज़ें किसकी हैं, बताओ यदि तुम जानते हो? तुरन्त जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए कि फिर तुम नसीहत क्यों नहीं लेते? पूछिए कि सातों आकाशों का और बड़े अर्श का रब कौन है? वह लोग जवाब देंगे अल्लाह ही है, कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते? पूछिए कि सारी चीज़ों का अधिकार किस के हाथ में है? जो शरण देता और जिसके मुकाबले में कोई शरण नहीं दिया जाता यदि तुम जानते हो तो बतलादो? यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम किधर से जादू कर दिए जाते हो?”

मुशिरकीन हज्ज के तल्बिया में यह कहते थे: *لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ اللَّهُمَّ لَيْسَ لَكَ شَرِيكٌ لَكَ، الْإِلَهِيَّةُ هِيَ لَكَ تَمْلِكُهَا وَمَا مَلَكَ* हाज़िर हूँ, हे अल्लाह हाज़िर हूँ, तेरा कोई साझी नहीं सिवाय एक साझी के, जो तेरे ही लिए है तू ही उसका मालिक है, और उन चीज़ों का भी जिसका वह मालिक है।

इस इक्रार ने कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है कुरैश के मुशिरकीन को इस्लाम में प्रवेश न करा सका, बल्कि उनके खून और धन को मात्र इस चीज़ ने हलाल कर दिया कि वे अपने लिए फ़रिश्तों, नबियों और वलियों की सिफ़ारिश चाहते थे।

इसलिए हर तरह की दुआ, नज़र और कुर्बानी मात्र अल्लाह के लिए करना और मात्र अल्लाह ही से सहायता चाहना, और प्रत्येक किस्म की इबादत को मात्र उसी के लिए ख़ालिस करना ज़रूरी है।

**अब्दुन्नबी** : “अल्लाह के होने का इक्रार करना, और इस बात का इक्रार करना कि वही संसार में फेर-बदल करने वाला है”, आपके गुमान के अनुसार यदि यह तौहीद नहीं है, तो फिर तौहीद है क्या?

**अब्दुल्लाह** : जिस तौहीद के कारण रसूलों को भेजा गया, और जिसका मुशिरकों ने इन्कार किया, वह तौहीद मात्र एक अल्लाह तआला की इबादत करना है; तो किसी भी तरह की इबादत चाहे वह दुआ हो, या नज़र हो, या ज़ब्र करना, फ़र्याद करना, और सहायता मांगना वगैरह हो अल्लाह के सिवाय दूसरों के लिए नहीं की जासकती। और यही वह तौहीद है जिसका इक्रार आप **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** के द्वारा करते हैं; क्योंकि कुरैश के मुशिरकीन के नज़दीक **إِلَهٌ** वह है जिसका इन इबादतों द्वारा क़स्द किया जाए, चाहे वह फ़रिश्ता हो, या नबी हो, या वली हो, या पेड़ हो, या क़ब्र हो, या जिन्न हो, और उन्होंने **إِلَهٌ** का अर्थ पैदा करने वाला, रोज़ी देने वाला, या बन्दोबस्त करने वाला नहीं समझा, इसलिए कि वह यह जानते थे कि यह सारी चीज़ें मात्र अल्लाह की हैं, जैसा कि पीछे गुज़र चुका। और नबी **ﷺ** उनके पास कल्मे तौहीद **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** की दावत देने और उसके अर्थ को अपनी जीवन पर लागू करने के लिए आए थे न कि मात्र इसलिए कि जुबान से इस कल्मे को कह लें।

**अब्दुन्नबी** : गोया कि आप यह कहना चाहते हैं कि कुरैश के मुशिरकीन **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** के अर्थ को हमारे इस ज़माने के बहुत से मुसलमानों से अधिक जानते थे?

**अब्दुल्लाह** : हाँ, यह दुःख-दायक वास्तविकता है, और बड़े अफ़सोस की बात है कि जाहिल काफ़िर यह जानते थे कि इस कल्मे से नबी **ﷺ** की मुराद : इबादत को मात्र अल्लाह के लिए ख़ालिस करना है, और अल्लाह के सिवाय जिन जिन चीज़ों की पूजा की जाती है उन सब का इन्कार करना और उनसे अपनी बराअत ज़ाहिर करना है; क्योंकि जब आप **ﷺ** ने उनसे यह कहा कि तुम **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहो, तो उन्होंने जवाब में कहा : **أَجْعَلُ الْأِلَهَةَ إِلَهًا وَحِدًا إِنَّ هَذَا شَيْءٌ عَجَابٌ**

क्या इसने इतने सारे मा'बूदों (उपास्यों) का एक ही मा'बूद (उपास्य) कर दिया, वास्तव में यह बहुत ही अजीब बात है।

जबकि वह यह ईमान भी रखते थे कि अल्लाह संसार में फेर-बदल करने वाला है, तो तअज्जुब है इस्लाम के उन दावेदारों पर जिन्हें इस कल्मे का उतना भी अर्थ मालूम नहीं जितना कि जाहिल काफ़िरों को था। बल्कि वह समझता है कि इन हफ़ों को मात्र जुबान से इनके अर्थ का दिल में विश्वास रखे बिना अदा कर लेना ही काफ़ी है, और उनमें जो अपने आप को होशियार जानते हैं वह इसका अर्थ यह समझते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा पैदा नहीं करता, रोज़ी नहीं देता, और न ही बन्दोबस्त करता है, तो इस्लाम के ऐसे दावेदारों में कोई भलाई नहीं है जिन के मुकाबले में जाहिल काफ़िर **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** के अर्थ को अधिक बेहतर जानते हों।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता, मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह ही पैदा करता वही रोज़ी देता वही अकेले लाभ और हानि पहुँचाता इनमें उसका कोई साझी नहीं है, और यह कि स्वयं मुहम्मद **ﷺ** भी अपने लिए लाभ और हानि की शक्ति





नहीं रखते, और न ही अली عليه السلام हूसैन عليه السلام और अब्दुल् कादिर عليه السلام वगैरा, लेकिन मैं पापी हूँ, और इन नेक लोगों का अल्लाह के पास ऊँचा मकाम है और उन्हीं के द्वारा मैं अल्लाह के पास उनकी सिफ़ारिश चाहता हूँ।

**अब्दुल्लाह** : इसके जवाब में मैं आप से वही कहूँगा जो इस से पहले कह चुका हूँ, कि नबी عليه السلام ने जिन लोगों से लड़ाई की वे भी इन सारी चीज़ों को मानते थे, और यह भी मानते थे कि उन की मूर्तियाँ संसार में कोई हेर फेर नहीं करती हैं, वे मात्र उनसे सिफ़ारिश चाहते थे, जैसा कि हम कुरआनी प्रमाण द्वारा इस से पहले बता चुके हैं।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन वे आयतें तो उनके बारे में उतरी हैं जो मूर्तियों की पूजा करते थे, तो आप नबियों और नेक लोगों को मूर्तियों के जैसे कैसे बना सकते हैं?

**अब्दुल्लाह** : इस बात पर पहले इत्तिफ़ाक़ होचुका है कि कुछ मूर्तियों के नाम नेक लोगों के नाम पर रखे गए थे, जैसा कि नूह عليه السلام के ज़माने में हुवा, और काफ़िरों ने उनके द्वारा अल्लाह के नज़दीक मात्र सिफ़ारिश ही चाही, क्योंकि अल्लाह के नज़दीक उनका ऊँचा मक़ाम है, इसके प्रमाण में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ دُونِهِ أُولَٰئِكَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ﴾ और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवाय औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम उन की इबादत मात्र इसलिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह से करीब कर दें।

आप का यह कहना कि तुम वलियों और नबियों को बुत कैसे कह रहे हो? तो हम इस बारे में आप को यह बता देना चाहते हैं कि जिन काफ़िरों के पास अल्लाह के नबी भेजे गए उनमें ऐसे भी लोग थे जो वलियों को पुकारते थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَ اللَّهِ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا﴾ “जिन्हें यह लोग पुकारते हैं स्वयं वे अपने रब की कुर्बत की तलाश में रहते हैं कि उनमें कोई अधिक करीब होजाए, वह स्वयं उसकी रहमत की आशा रखते हैं, और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं।”

और उनमें से कुछ ईसा عليه السلام और उनकी माँ को पूकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَإِذ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَىٰ ابْنَ مَرْيَمَ ۗ أَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ﴾ “और वह समय भी याद करने के काबिल है जबकि अल्लाह फ़रमाए गा कि ऐ ईसा बिन मर्याम क्या तुम ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय मा'बूद (उपास्य) बना लो?”

और इसी तरह उनमें से कुछ फ़रिश्तों को पुकारते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ إِنَّا كَذَّبْنَاوَعْبَدُونَ﴾ “और जिस दिन अल्लाह तआला सभी को इकट्ठा करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या यह लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?”

इन आयतों पर ज़रा ध्यान दीजिए अल्लाह तआला ने उन्हें काफ़िर करार दिया जो मूर्तियों से मांगते थे, और इसी प्रकार बिना कोई फ़र्क किए उन्हें भी काफ़िर करार दिया जो नेक लोगों को पुकारा करते थे चाहे वे पुकारे जाने वाले अर्म्बिया हों, या फ़रिश्ते या औलिया। और नबी عليه السلام ने इसी कारण उन से जिहाद किया और इस बारे उनमें फ़र्क नहीं किया।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन हमारे और काफ़िरों में तो फ़र्क है, काफ़िर उन्हीं से फ़ाइदा चाहते हैं, जबकि मैं तो यह गवाही देता हूँ कि फ़ाइदा पहुँचाने वाला, नुक्सान पहुँचाने वाला और इन्तिज़ाम करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और हम यह चीज़ें मात्र उसी से चाहते हैं,

नेक लोगों को कुछ भी अधिकार प्राप्त नहीं है, हम तो उनसे मात्र यह चाहते हैं कि वे हमारे लिए अल्लाह से सिफ़ारिश कर दें।

**अब्दुल्लाह** : आप की यह बात ठीक काफ़िरो की बात जैसी है, दोनों में कुछ भी फ़र्क नहीं है, दलील के लिए अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْصُرُهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شَفَعُونَ عِنْدَ اللَّهِ﴾ और यह लोग अल्लाह के सिवाय ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उन्हें नुक़सान पहुंचा सके और न लाभ, और कहते हैं कि अल्लाह के पास यह हमारे सिफ़ारिशी हैं।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन मैं तो इनकी इबादत नहीं करता हूँ, मैं तो मात्र अल्लाह की इबादत करता हूँ, रहा उनसे फ़र्याद करना और उन्हें पुकारना तो यह इबादत तो नहीं है।

**अब्दुल्लाह** : मेरा आप से एक प्रश्न है, क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने मात्र अपनी इबादत आप पर फ़र्ज़ की है? और यह उसका आप पर हक़ है जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ﴾ “उन्हें इसके सिवाय कोई आदेश नहीं दिया गया कि मात्र अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को ख़ालिस रखें इब्राहीम इनीफ़ के दीन पर।”

**अब्दुन्नबी** : हाँ, उसने इसे मुझ पर फ़र्ज़ किया है।

**अब्दुल्लाह** : अल्लाह ने आप पर इख़्लास के साथ जो इबादत फ़र्ज़ की है उसे आप ज़रा स्पष्ट कर दें।

**अब्दुन्नबी** : मुझे आप की बात समझ में नहीं आई, फिर से स्पष्ट करें।

**अब्दुल्लाह** : मैं आप को बताता हूँ ध्यान दे कर सुनें, अल्लाह ﷻ का फ़रमान है :

﴿ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يَحِبُّ الْمُتَكَبِّرِينَ﴾ “तुम लोग अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ा कर भी और चुपके चुपके भी, वह (अल्लाह तआला) अवश्य उन लोगों को पसन्द नहीं करता जो सीमा पार कर जाएं।”

**तो क्या दुआ करना अल्लाह की इबादत है या नहीं?**

**अब्दुन्नबी** : क्यों नहीं, बल्कि यही इबादत का मज़ है, जैसा कि हदीस में आया है :

“(الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ)” “दुआ ही इबादत है।”

**अब्दुल्लाह** : जब आप ने यह स्वीकार कर लिया कि दुआ अल्लाह की इबादत है, और किसी ज़रूरत के लिए अल्लाह से डरते हुए और आशा रखते हुए आप ने दिन और रात में उसे ही पुकारा, और उसी ज़रूरत के लिए आप ने नबी, या फ़रिश्ता, या किसी नेक व्यक्ति को पुकारा जो अपनी क़ब्र में है, तो क्या आप ने इस इबादत में शिर्क नहीं किया?

**अब्दुन्नबी** : हाँ, यह तो मुझ से शिर्क हुवा। आप की यह बात तो बहुत स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह** : मैं आप को एक दूसरा उदाहरण देता हूँ : जब आप को अल्लाह तआला के इस क़ौल :

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَأَحْرَسْ﴾ “आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और उसी के लिए कुर्बानी किजिए।” के बारे में जानकारी होगई, और आप ने उस के आदेश का पालन किया और उसी के लिए कुर्बानी की, तो क्या आप की यह ज़बह और कुर्बानी अल्लाह ﷻ की इबादत मानी जाएगी?

**अब्दुन्नबी** : हाँ, यह तो इबादत है।

**अब्दुल्लाह** : तो यदि आपने अल्लाह के साथ किसी मख़्लूक के लिए भी ज़बह किया चाहे वह मख़्लूक नबी हो, या जिन्न, या कोई और, तो क्या आप ने इस इबादत में गैरुल्लाह को साझी नहीं बना लिया?

**अब्दुन्नबी** : निःसन्देह यह तो शिर्क है।

**अब्दुल्लाह** : मैं ने मात्र दुआ और ज़बह का उदाहरण दिया है, इसलिए कि जुबानी इबादतों में दुआ और बदनी इबादतों में ज़बह सबसे महत्वपूर्ण हैं, और मात्र इन्हीं दो चीज़ों का नाम इबादत नहीं है बल्कि नज़र, क़सम, पनाह मांगना और सहायता चाहना वगैरा भी इबादत हैं, और यह बताएं कि मुशिरकीन जिनके बारे में कुरआन उतरा क्या वे फ़रिश्ते, नेक लोगों और लात वगैरा की इबादत करते थे?

**अब्दुन्नबी** : हाँ, वे तो उनकी इबादत किया करते थे।

**अब्दुल्लाह** : मुशिरकीन जो उनकी इबादत किया करते थे, यह इबादत तो दुआ, ज़बह, इस्तिआजा (पनाह मांगना), इस्तिआना (मदद चाहना), और इल्लिजा के द्वारा ही तो थी, नहीं तो वे तो यह स्वीकार कर रहे थे कि वे अल्लाह के दास हैं, उस के अधीन हैं, और वही सारी चीज़ों का बन्दोबस्त करने वाला है, लेकिन सिफ़ारिश और जाह के लिए उन्होंने गैरुल्लाह को पुकारा, और यह चीज़ बिल्कुल स्पष्ट है।

**अब्दुन्नबी** : अच्छा अब्दुल्लाह साहब हमें यह बताएं कि क्या आप अल्लाह के रसूल की सिफ़ारिश का इन्कार करते और उससे बराअत करते हैं?

**अब्दुल्लाह** : नहीं भाई, बात ऐसी नहीं है, मैं न तो उसका इन्कार करता और न ही उस से बराअत करता हूँ, बल्कि उन पर मेरे मां बाप कुर्बान हों, वह तो महशर में सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश स्वीकार होगी, और हम उन की सिफ़ारिश की उम्मीद लगाए बैठे हैं, लेकिन शफ़ाअत मात्र अल्लाह के लिए है, जैसा कि उसका फ़रमान है : ﴿قُلْ لِلَّهِ الشَّفَعَةُ﴾ “कह दीजिए कि शफ़ाअत सभी अल्लाह के लिए है।”

नबी ﷺ की शफ़ाअत उस समय होगी जब अल्लाह इसकी अनुमति देगा, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾ “कौन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफ़ारिश कर सके?”

किसी के लिए भी उस समय तक शफ़ाअत नहीं की जाएगी जब तक कि अल्लाह उस व्यक्ति के बारे में शफ़ाअत की अनुमति न दे दे, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ أَرَادَ﴾ “वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते मगर जिस से अल्लाह खुश हो।”

और अल्लाह मात्र तौहीद ही से खुश होगा, जैसा कि उसने इर्शाद फ़रमाया:

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ﴾ “और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवाय कोई और धर्म चाहेगा तो अल्लाह उससे उसे स्वीकार नहीं करेगा, और वह आख़िरत में घाटा पाने वालों में से होगा।”

तो जब सारी की सारी शफ़ाअत का हक़ मात्र अल्लाह ही को है, और मात्र उसकी अनुमति के बाद ही शफ़ाअत की जाएगी, और नबी या कोई भी किसी के लिए शफ़ाअत उस समय तक नहीं करेंगे जब तक कि उस के लिए शफ़ाअत की अनुमति न दे दी जाए, और अल्लाह तआला मात्र तौहीद परस्तों के लिए ही अनुमति देगा, तो जब यह बात स्पष्ट होगई कि सारी की सारी शफ़ाअत मात्र अल्लाह तआला के लिए है तो मैं उसी से तलब करता हूँ, और यह दुआ कर रहा हूँ : ऐ अल्लाह! तू मुझे उनकी शफ़ाअत से महरूम न करना, ऐ अल्लाह! तू अपने रसूल को मेरा सिफ़ारिशी बनाना। और इस जैसी दूसरी दुआएं।

**अब्दुन्नबी :** हमारा इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि किसी व्यक्ति से ऐसी चीज़ मांगना जायज़ नहीं है जिसका वह मालिक न हो, और जबकि अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को शफ़ाअत अता किया है, तो आप उसके मालिक होगए, इसलिए मेरे लिए आप से शफ़ाअत तलब करना जायज़ हो गया क्योंकि आप उसके मालिक हैं, और यह शिर्क न होगा।

**अब्दुल्लाह :** हाँ, आप की यह बात उस समय दुरुस्त होती जब अल्लाह ने इससे रोका न होता, लेकिन अल्लाह ﷻ ने फ़रमाया: ﴿فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾ **“तो अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।”** और शफ़ाअत तलब करना दुआ है, और नबी ﷺ को जिसने शफ़ाअत अता की वह अल्लाह है, और उसी अल्लाह ने तुम्हें लोगों से किसी भी तरह की चीज़ तलब करने से रोका है, और एक दूसरी चीज़ यह भी है कि नबी के सिवाय दूसरों को भी शफ़ाअत अता की गई है, चुनांचे फ़रिश्ते भी शफ़ाअत करेंगे, बालिग़ होने से पहले जो बच्चे मर गए वे भी शफ़ाअत करेंगे, औलिया भी शफ़ाअत करेंगे, तो क्या अब आप यह कहेंगे कि अल्लाह ने इन सभी को शफ़ाअत अता की है इसलिए मैं इन सभी से शफ़ाअत तलब करूंगा? यदि आप का जवाब हाँ में है, तो गोया आप नेक लोगों की इबादत की ओर पलट गए जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में की है, और यदि जवाब इन्कार में है, तो आप का यह कहना कि : - अल्लाह ने उन्हें ﷺ शफ़ाअत अता की है, और हम आप ﷺ से वही चीज़ मांग रहे हैं जो आप को दी गई है - बातिल है।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन मैं अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता; क्योंकि सालेहीन से इल्तिजा करना शिर्क नहीं है।

**अब्दुल्लाह :** क्या आप इसे स्वीकार करते हैं कि अल्लाह ने शिर्क को हराम करार दिया है, इसे माफ़ नहीं करेगा, और इसकी हुर्मत ज़िना से भी बढ़कर है?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, मैं इसे मानता हूँ और यह अल्लाह के कलाम में स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह :** अभी आप ने अपने आप से उस शिर्क का इन्कार किया है जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया है, तो अल्लाह के वास्ते ज़रा आप मुझे बताएं तो सही कि वह कौनसा शिर्क है जिसे आप नहीं करते, और अपने आप से उसका इन्कार करते हैं?

**अब्दुन्नबी :** यह शिर्क मूर्तियों की पूजा है, उनकी ओर जाना, उन से मांगना और डरना है।

**अब्दुल्लाह :** मूर्ति पूजा का अर्थ क्या है? क्या आप ऐसा गुमान रखते हैं कि कुरैश के काफ़िरों का यह अक़ीदा था कि यह लकड़ियाँ, और पत्थर पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं, और जो उन्हें पुकारते हैं वे उनके कामों का इन्तिज़ाम कर देते हैं?! वे कदापि ऐसा अक़ीदा नहीं रखते थे।

**अब्दुन्नबी :** और मेरा भी अक़ीदा इस तरह का नहीं है, बल्कि मैं तो यह अक़ीदा रखता हूँ कि जिसने लकड़ी, या पत्थर, या कब्र पर बनी इमारत की ओर दुआ करने या ज़बह करने के लिए गया, और यह कहा कि यह हमें अल्लाह से करीब कर देंगे, और इनकी बर्कत से अल्लाह हमारी परेशानी दूर कर देगा, तो यही चीज़ें वास्तव में मूर्ति पूजा है।

**अब्दुल्लाह :** आप ने बिल्कुल ठीक कहाँ लेकिन यही सब कुछ आप कब्रों, उनकी जालियों और उन पर बनी इमारतों के पास करते हैं। और क्या आप ऐसा अक़ीदा रखते हैं कि शिर्क मात्र मूर्तियों के साथ खास है, और सालिहीन से दुआ करना और उन पर भरोसा करना शिर्क न होगा?

**अब्दुन्नबी :** हाँ, मेरा मक्सद यही है।



**अब्दुल्लाह** : फिर आप उन बहुत सारी आयतों के बारे में क्या कहेंगे जिन में अल्लाह ने नबियों, नेक लोगों और फ़रिश्तों का सहारा लेने को ह़राम ठहराया है, और ऐसा करने वालों को काफ़िर कहा है? जैसा कि स्पष्ट रूप से पहले मैंने इसका चर्चा किया है।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन जो लोग फ़रिश्तों और नबियों को पुकारते हैं, उन्हें इस पुकारने के कारण काफ़िर नहीं कहा गया, बल्कि उन्हें फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ, और ईसा عليه السلام को अल्लाह का बेटा कहने के कारण काफ़िर कहा गया है, और हम यह नहीं कहते हैं कि अब्दुल् कादिर अल्लाह के बेटे हैं और न ही यह कहते हैं कि ज़ैनब अल्लाह की बेटी हैं।

**अब्दुल्लाह** : अल्लाह की ओर संतान की निस्वत करना मुस्तक़िल कुफ़्र है, जैसा कि उसने फ़रमाया: ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝﴾ “**ऐ नबी عليه السلام कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है, उसने न तो किसी को जन्म दिया है, और न ही किसी से जन्म लिया है।**”<sup>1</sup> तो जिसने इन आयतों का इन्कार किया चाहे वह अन्तिम आयत का इन्कार करे या न करे तो उसने कुफ़्र किया। और अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया: ﴿مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذَا لُدُّوا إِذَا لُدُّوا ۚ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ﴾ “**न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया, और न उसके साथ और कोई मा'बूद (उपास्य) है, नहीं तो हर मा'बूद अपनी अपनी मख़्लूक को लिए फिरता, और हर एक दूसरे पर चढ़ दौड़ता।**”

तो अल्लाह तआला ने दोनों कुफ़्रों के बीच फ़र्क किया। और इसकी दलील यह भी है कि जिन लोगों ने लात जैसे नेक व्यक्ति से दुआ करके कुफ़्र किया उन्होंने लात को अल्लाह का बेटा नहीं माना था, और जिन्होंने जिन्नों की इबादत के द्वारा कुफ़्र किया उन्होंने भी जिन्नों को बेटा नहीं कहा था, और इसी तरह चारों मज्हब में मुर्तद के हुक्म में यह चर्चा करते हैं कि जिसने अल्लाह के लिए बेटा माना वह मुर्तद है, और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उसने कुफ़्र किया, तो फुक़हा भी इन दोनों किस्मों में फ़र्क करते हैं।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन अल्लाह तआला फ़रमाता है: ﴿الْآيَاتِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ “**याद रखो! अल्लाह के दोस्तों पर न कोई डर है और न ही वह ग़म्पीन होते हैं।**”

**अब्दुल्लाह** : हम भी यही कहते हैं और यही सत्य है, लेकिन उन की इबादत नहीं की जासकती, और हम मात्र अल्लाह के साथ उनकी इबादत करने और उन्हें साझी बनाने का इन्कार करते हैं, नहीं तो उन से महबूत करना, उनकी पैरवी करना और उनकी करामतों को स्वीकारना सब पर वाजिब है, और उनकी करामतों का वही लोग इन्कार करते हैं जो बिद्अती हैं, अल्लाह का दीन कमी बेशी से पवित्र है, वह ऐसी हिदायत है जो दो गुम्राहियों के बीच है, और ऐसा हक़ है जो दो बातिलों के बीच है।

**अब्दुन्नबी** : जिन लोगों के बारे में कुरआन उतरा वे لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ की गवाही नहीं देते थे, अल्लाह के रसूल को झुठलाते थे, दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करते थे, कुरआन को झुठलाते थे, और उसे जादू कहा करते थे, और हम यह गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, और मुहम्मद عليه السلام अल्लाह के रसूल हैं, कुरआन को सच्च मानते हैं, दोबारा ज़िन्दा किए जाने पर ईमान रखते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, तो फिर हमें आप उन जैसे कैसे ठहराते हैं?

<sup>1</sup> अहद वह हस्ती है जिसका कोई साझी नहीं, और हर ज़रूरत के लिए जिस की ओर जाया जाए उसे समद कहते हैं।

**अब्दुल्लाह** : लेकिन उलमा के बीच इस बारे में कोई दो राय नहीं है कि यदि किसी व्यक्ति ने कुछ चीजों में अल्लाह के रसूल की तस्दीक की और कुछ चीजों में उन्हें झुठलाया तो वह काफिर है, वह अब तक इस्लाम में प्रवेश नहीं किया, और इसी तरह यदि किसी ने कुरआन के कुछ हिस्से पर ईमान रखा और कुछ का इन्कार किया तो वह भी काफिर है, जैसे किसी ने तौहीद को तो स्वीकारा लेकिन नमाज़ का इन्कार किया, या तौहीद और नमाज़ को तो स्वीकारा लेकिन ज़कात वाजिब होने का इन्कार किया, या इन सारी चीजों को तो स्वीकारा लेकिन रोज़ा का इन्कार किया, या इन सारी चीजों को तो स्वीकारा लेकिन हज्ज का इन्कार किया, और नबी ﷺ के ज़माने में जब कुछ लोग हज्ज के लिए नहीं निकले तो उनके बारे में यह आयत उतरी :

﴿وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتِطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَنِّيْ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ﴾  
**“अल्लाह तआला ने लोगों पर जो उस की ओर रास्ता पा सकते हैं इस घर का हज्ज फर्ज कर दिया है, और जो कोई कुफ़ करे तो अल्लाह तआला (उससे बल्कि) सारी दुनिया से बे-परवाह है।”**

और यदि दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार करे तो इस बात पर इज्मा'अ (एकमत) है कि उसने कुफ़ किया, और इसीलिए अल्लाह तआला ने अपनी किताब में इसे स्पष्ट कर दिया है कि जिसने कुछ चीजों पर ईमान रखा और कुछ चीजों का कुफ़ किया वह निःसन्देह काफिर है, अल्लाह तआला का आदेश है कि पूरे इस्लाम को अपनाया जाए, और जिसने कुछ चीजों को अपनाया और कुछ को छोड़ दिया तो उसने कुफ़ किया, तो क्या आप इस बात को मानते हैं कि जिसने कुछ को अपनाया और कुछ को छोड़ा उसने कुफ़ किया?

**अब्दुन्नबी** : हाँ, हम इसे मानते हैं, और यह तो कुरआन में स्पष्ट है।

**अब्दुल्लाह** : तो जब आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने किसी चीज़ में रसूल की तस्दीक की, और नमाज़ के वाजिब होने का इन्कार किया, या सारी चीजों को स्वीकार किया लेकिन दोबारा उठाए जाने का इन्कार किया तो वह काफिर है, उसकी जान और माल हलाल है, सारे मतों (मस्लकों) का इस पर इत्तिफ़ाक़ है, और कुरआन ने इसे स्पष्ट भी कर दिया है जैसा कि ऊपर इसका चर्चा हो चुका, तो आप यह जान लीजिए कि नबी जो शरीअत लेकर आए उसमें तौहीद सब से बड़ा फ़रीज़ा है, और यह नमाज़, ज़कात और हज्ज से भी बढ़ कर है, तो भला यह कैसे हो सकता है कि इन्सान इन चीजों में से यदि किसी चीज़ का इन्कार करे तो वह काफिर हो जाए, और तौहीद जो कि सारे रसूलों का धर्म है उसे इन्कार करे तो काफिर न हो?! सुब्हानल्लाह! यह कितनी बड़ी जिहालत और नादानी है।

और सहाबए किराम رضي الله عنهم के बारे में ध्यान दे कर सोचो कि उन्होंने यमामा में बनू हनीफ़ा के लोगों से जिहाद किया, जबकि वे नबी ﷺ के ज़माने में इस्लाम ले आए थे, कल्मा **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ** को स्वीकार करते थे, नमाज़ पढ़ते थे और अज़ान देते थे।

**अब्दुन्नबी** : लेकिन वे मुसैलमा को नबी मानते थे, और हम यह कहते हैं कि मुहम्मद ﷺ के बाद कोई नबी नहीं है।

**अब्दुल्लाह** : लेकिन आप लोग अली رضي الله عنه या अब्दुल् कादिर जीलानी رضي الله عنه या नबियों या फ़रिश्तों के रुत्बे को धरती और आकाश के जब्बार के रुत्बे के बराबर पहुंचा देते हैं, जबकि यदि किसी ने किसी व्यक्ति के रुत्बे को नबी के बराबर कर दिया तो वह काफिर होगया, उसकी जान और माल हलाल होगए, कल्मा और नमाज़ उसे फ़ायदा नहीं देंगे, तो जो उन्हे अल्लाह तआला के रुत्बे तक पहुंचाए वह तो अवश्य काफिर होगया। और इसीलिए अली رضي الله عنه

ने उन्हें आग में जला दिया था जबकि वे इस्लाम का दावा करते थे, और वे अली عليه السلام के साथियों में से थे, सहाबए किराम से उन्होंने शिक्षा लिया था, लेकिन उन्होंने अली عليه السلام के बारे में वही अक्कीदा रखा जो आप लोग अब्दुल् कादिर वगैरा के बारे में रखते हैं, फिर सारे सहाबए किराम رضي الله عنهم ने उन के कत्ल और उनके काफिर होने पर कैसे इत्तिफाक कर लिया? क्या आप यह समझते हैं कि सहाबए किराम رضي الله عنهم मुसलमानों को काफिर कहा करते थे?! या आप इस भ्रम में हैं कि सैयद अब्दुल् कादिर जीलानी और इन जैसे लोगों के बारे में ऐसा अक्कीदा रखना हानिकारक नहीं, और अली عليه السلام के बारे में ऐसा अक्कीदा रखना कुफ्र है?

और यह बात भी कही जा सकती है कि पहले के लोग इसलिए काफिर ठहरे कि उन्होंने शिर्क के साथ-साथ, रसूल صلى الله عليه وسلم और कुरआन को झुठलाया, दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने वगैरा का इन्कार किया, तो फिर उस बात का क्या अर्थ है जिसे हर मस्लक के उलमा ने अपनी किताबों में बांधा है: (باب حكم المرتد) “**मुर्तद के हुक्म का बयान**”? मुर्तद वह मुस्लिम व्यक्ति है जो इस्लाम लाने के बाद फिर काफिर हो जाए, और उस बाब में बहुत सारी चीज़ों का चर्चा किया गया है जिन में से किसी भी एक को करना बन्दे को काफिर बना देता, और उसके खून और माल को हलाल कर देता है, यहाँ तक कि उन्होंने छोटी चीज़ों का भी चर्चा किया है, जैसा कि अल्लाह की नाराज़गी की बात को मुंह से निकालना, चाहे वह उसका अक्कीदा न रखता हो, या मज़ाक में उनका चर्चा करना, और इसी तरह से वे लोग भी हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने चर्चा करते हुए फरमाया:

﴿قُلْ يَا آللهُ وَآيُنُهُ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ نَسْتَهْرِئُونَ ﴿١٥﴾ لَا تَعْتَدُوا فَاذْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾ “**कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी निशानियां और उसके रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक के लिए रह गए हैं? अब तुम बहाना न बनाओ इसलिए कि ईमान लाने के बाद अवश्य तुम काफिर होगए।**”

तो यह लोग जिनके बारे में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह ईमान के बाद काफिर होगए, यह अल्लाह के रसूल के साथ ग़ज्वए तबूक में थे, और उन्होंने एक ऐसी बात कही जिसके बारे में वे कहते रहे कि हंसी मज़ाक में वे कहे थे।

और यहाँ उसका भी चर्चा कर देना अच्छा होगा जिसका चर्चा अल्लाह तआला ने बनू इस्राईल के बारे में किया है कि उन्होंने अपने इस्लाम, ज्ञान और तक्वा के होते हुए भी मूसा عليه السلام से कहा : ﴿أَجْعَلْ لَنَا إِلَهًا﴾ “**हमारे लिए भी एक ऐसा ही मा'बूद (उपास्य) बना दीजिए।**”

और कुछ सहाबए किराम رضي الله عنهم ने कहा : “हमारे लिए जाते अन्वात बना दीजिए” तो नबी صلى الله عليه وسلم ने कुसम खाकर कहा कि यह तो ठीक वही बात है जो बनू इस्राईल ने कही थी :

﴿أَجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ﴾ “**हमारे लिए भी एक मा'बूद (उपास्य) ऐसा ही बना दीजिए, जैसे उनके यह मा'बूद हैं।**”

**अब्दुन्नबी :** लेकिन बनू इस्राईल और इसी तरह वह लोग जिन्होंने अल्लाह के रसूल صلى الله عليه وسلم से ज़ाते अन्वात बनाने को कहा था इसके कारण काफिर नहीं हुए।

**अब्दुल्लाह :** इसका उत्तर यह है कि बनू इस्राईल और इस तरह जिन्होंने नबी صلى الله عليه وسلم से ज़ाते अन्वात बनाने का मुतालबा किया था उन्होंने ऐसा किया नहीं, और यदि ऐसा कर लिए होते तो काफिर हो जाते, और इसी तरह अल्लाह के रसूल ने जिन्हें ज़ाते अन्वात बनाने से रोका, यदि वे आप की बात न मानते और ज़ाते अन्वात बना लेते तो काफिर होजाते।

**अब्दुन्नबी :** लेकिन मेरे पास एक प्रश्न है, और वह है उसामा बिन ज़ैद का किस्सा कि जब उन्होंने एक لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहने वाले व्यक्ति को कत्ल कर दिया तो नबी صلى الله عليه وسلم उन पर नाराज़ हुए

और कहा कि : क्या उसके **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने के बाद भी तुम ने उसे क़त्ल कर दिया? और इसी तरह आप ﷺ का यह फ़रमान : **(أُمِرْتُ أَنْ أَقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ)** “**मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करूँ यहाँ तक कि वे **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने लगे।**” तो जो बात आप ने कही है और जो इन दोनों हदीसों में है, आप थोड़ी मेरी राहनुमाई करें कि दोनों को मैं इकट्ठा कैसे कर सकता हूँ?

**अब्दुल्लाह** : इस बात की जानकारी सब को है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने यहूदियों से जिहाद किया और उन्हें कैदी बनाया हालांकि वे **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** का इफ़्कार करते थे, और सहाबए किराम رضي الله عنهم ने बनू हनीफ़ा से जिहाद किया और वे भी **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** की गवाही दे रहे थे, और नमाज़ पढ़ रहे थे, यही हाल उनका भी था जिन्हें अली رضي الله عنه ने जलाया था, और आप स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि जिसने **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने के बाद भी दोबारा ज़िन्दा किए जाने का इन्कार किया उसने कुफ़्र किया और उसे क़त्ल करना जायज़ होगया। और यह भी स्वीकार करते हैं कि जिसने **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कहने के बाद भी इस्लाम के किसी रुक्न का इन्कार किया तो उसने कुफ़्र किया और उसे क़त्ल किया जाएगा। तो ज़रा सोचिए किसी फरई मस्अले का इन्कार करता है तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** उसे लाभ नहीं पहुँचा सकता, तो भला जब किसी बुनियादी मस्अले का इन्कार करेगा तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** उसे कैसे फ़ाइदा देगा?! और शायद आप ने इन हदीसों का मतलब नहीं समझा।

उसामा की हदीस का अर्थ यह है कि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को क़त्ल कर दिया जिसने इस्लाम का दावा किया यह समझ कर कि वह अपनी जान और माल की रक्षा की खातिर ऐसा कर रहा है, जबकि इस्लामी आदेश अनुसार किसी भी व्यक्ति को जो इस्लाम का दावा कर रहा है उसे क़त्ल करना ह़राम है यहाँ तक कि उसके ख़िलाफ़ कोई चीज़ स्पष्ट होजाए जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है : **﴿يَتَأَيُّمُ الَّذِينَ ءَامَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَيَّسُوا﴾** “**ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रास्ते में जा रहे हो तो छान बीन कर लिया करो।**”

तो आयत में यह प्रमाण है कि ऐसे लोगों से हाथ रोक लेना और उनकी छान बीन करना वाजिब है, और छान बीन करने के बाद यदि इस्लाम के ख़िलाफ़ किसी चीज़ का पता चले तो उसे अल्लाह तआला के कौल **﴿فَتَيَّسُوا﴾** की रौशनी में क़त्ल किया जाएगा, और यदि उसे क़त्ल करना जायज़ न होता तो छान बीन करने का कोई फ़ाइदा ही न होता।

और इसी तरह दूसरी हदीस का अर्थ भी यही है कि जिसने तौहीद और इस्लाम को ज़ाहिर किया उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा, लेकिन जब उससे इस्लाम के विरुद्ध कोई चीज़ ज़ाहिर होजाए तो उसका खून हलाल होजाएगा। और इसकी दलील यह है कि जिस रसूल ﷺ ने यह बात कही : **أَتَيْتُهُ بَعْدَ مَا قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ؟** यानी ‘उसामा! तुमने उसे ला इलाह इल्लल्लाह कहने के बाद भी क़त्ल कर दिया?’ और यह कही : **أُمِرْتُ أَنْ أَقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** यानी ‘मुझे लोगों से लड़ाई करने का हुक्म दिया गया है यहाँ तक कि वह कह दे: ला इलाह इल्लल्लाह।’ उसी रसूल ﷺ का ख़वारिज के बारे में यह भी कहना है : **فَأَيْنَمَا لَقَيْتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ** “जहाँ भी तुम उन्हें पाओ उन्हें क़त्ल कर दो।”

जबकि यह ख़वारिज लोगों में सब से अधिक इबादत और तस्बीह करने वाले थे, यहाँ तक कि सहाबए किराम इन की इबादतों के सामने अपनी इबादत को हेच समझते थे, और इन्होंने सहाबए किराम से ही इल्म सीखा था, लेकिन इसके बावजूद जब उनसे शरीअत की मुख़ालफ़त



ज़ाहिर हूँ तो उन्हें **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** के कहने, अधिक इबादत करने और इस्लाम का दावा करने ने कोई फ़ाइदा नहीं पहुँचाया।

**अब्दुन्नबी** : क़्यामत के दिन फ़र्याद के बारे में नबी करीम **ﷺ** से जो हदीस साबित है कि लोग आदम के पास आएंगे, फिर नूह के पास, फिर इब्राहीम, फिर मूसा, फिर ईसा **ﷺ** के पास और वे लोग मा'ज़रत कर देंगे, तो अन्त में नबी **ﷺ** के पास आएंगे, तो इससे पता यह चला कि गैरुल्लाह से इस्तिग़ासा (फ़र्याद) करना शिर्क नहीं है।

**अब्दुल्लाह** : मस्अला आप पर गडमड होगया है, ज़िन्दा और मौजूद व्यक्ति से ऐसी चीज़ का फ़र्याद करना जिसकी वह शक्ति रखता हो हम इसका इन्कार नहीं करते यह तो कुर्आन में साबित है : ﴿فَاسْتَعِذْ بِالَّذِي مِنْ شِعْبِئِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ﴾ **“उसकी कौम वाले ने उससे फ़र्याद की उसके खिलाफ़ जो उसके दुश्मनों में से था।”**

और जैसा कि इन्सान लड़ाई वगैरा में अपने साथियों से ऐसी चीज़ें मांगता है जिसकी वह शक्ति रखते हैं, हमने उस फ़र्याद का इन्कार किया है जो तुम इबादत के तौर पर औलिया के क़ब्रों पर या उनकी गैर हाज़िरी में करते हो, और उनसे ऐसी चीज़ें मांगते हो जिन्हें देने की शक्ति मात्र अल्लाह तआला ही को है, और लोग क़्यामत के दिन नबियों से जो फ़र्याद करेंगे, इसलिए करेंगे ताकि जल्द हिसाब होने के लिए वे अल्लाह से दुआ करें, ताकि जन्मती मौक़िफ़ की परेशानियों से छुटकारा पा लें, और यह तो दुनिया और आख़िरत दोनों जगह जायज़ है कि आप किसी नेक व्यक्ति के पास आएँ जो आप के साथ उठता बैठता हो, और उससे अपने लिए अल्लाह से दुआ करने की दरखास्त करें, जैसा कि सहाबए किराम नबी **ﷺ** की जीवन में किया करते थे, लेकिन मौत के बाद उन्होंने हर्गिज़ (कदापि) ऐसा नहीं किया, उन्होंने आप के क़ब्र के पास जाकर आप से सवाल नहीं किया, बल्कि सलफ़ सालिहीन ने क़ब्र के पास अल्लाह से दुआ करने से भी रोका है।

**अब्दुन्नबी** : आप इब्राहीम **ﷺ** के किरसे के बारे में क्या कहेंगे जब वह आग में डाले गए तो फ़ज़ा में जिब्रईल **ﷺ** उनके पास आए, और पूछा क्या आप को मेरी कोई ज़रूरत है? तो इब्राहीम **ﷺ** ने कहा : हमें आप की ज़रूरत नहीं है। तो यदि किसी से फ़र्याद करना शिर्क होता तो जिब्रईल **ﷺ** मदद के लिए अपने आप को कभी भी पेश न करते।

**अब्दुल्लाह** : यह सन्देह भी पहले वाले सन्देह की तरह ही है, और इस बारे में जिब्रईल के जिस असर का आपने उदाहरण दिया वह सहीह नहीं है, और यदि उसे सहीह भी मान लिया जाए तो वास्तव में जिब्रईल **ﷺ** ने उनके सामने एक ऐसी बात रखी थी जिस की उन्हें शक्ति थी, क्योंकि अल्लाह तआला का उनके बारे में फ़रमान है : ﴿عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَى﴾ **“उसे पूरी शक्ति वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है।”**

तो यदि अल्लाह तआला उन्हें यह आदेश दे देता कि वह इब्राहीम **ﷺ** की आग और उसके आस पास की धरती और पर्वत को पूरब या पश्चिम में कहीं लेजाकर फेंक दें तो वह ऐसा करने पर बेबस नहीं थे, और इसका उदाहरण उस धनी व्यक्ति जैसे है जो किसी ग़रीब को उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए कर्ज़ देने की पेशकश करे, तो वह अपनी ग़रीबी पर सब्र करे और माल लेने से इन्कार करदे यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे अपने फ़ज़ल से रोज़ी अता करदे, जिसमें किसी का थोड़ा सा भी एहसान न हो। तो आप इस की बराबरी इबादत में फ़र्याद और शिर्क के साथ कैसे कर सकते हैं?!

और मेरे भाई आप इस चीज़ को अच्छी तरह समझ लीजिए कि पहले ज़माने के वे मुशिरकीन जिनकी ओर नबी ﷺ को भेजा गया तीन कारणों से उनका शिर्क हमारे ज़माने के मुशिरकीन से कम्तर था :

**1** पहले के मुशिरकीन मात्र सुख के समय शिर्क किया करते थे, और दुःख के समय मात्र अल्लाह की इबादत किया करते थे, प्रमाण स्वरूप अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفَلَكِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴾ "तो यह लोग जब नौकों पर चढ़ते हैं तो अल्लाह तआला ही को पुकारते हैं, उसी के लिए इबादत को खालिस करके, फिर वह जब उन्हें भूमी पर बचा लाता है तो उसी समय शिर्क करने लगते हैं।

और दूसरी जगह फरमाया: ﴿ وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَاظِمٌ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَفَّارٍ كَفُورٍ ﴾

"और जब उन पर मौजें सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो वह खुलूस के साथ आस्था रख कर अल्लाह ही को पुकारते हैं, फिर वह जब उन्हें खुशकी की ओर बचा लाता है, तो कुछ उनमें से अपने वादे पर जमे रहते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार मात्र वही करते हैं जो वादे तोड़ने वाले और नाशुक्रे हों।"

तो मक्का के मुशिरकीन जिन से नबी ﷺ ने जिहाद किया, सुख के समय में अल्लाह को पुकारते थे, और उसके साथ दूसरों को भी शरीक करते थे, पर तंगी में मात्र अल्लाह को पुकारते थे, और अपने सरदारों को भूल जाते थे, लेकिन हमारे ज़माने के मुशिरकीन सुख और दुःख दोनों समय में गैरुल्लाह को पुकारते हैं, और जब वह अधिक तंगी में होते हैं तो या रसूलुल्लाह और या हुसैन इत्यादि के द्वारा दुआएं करते हैं। लेकिन कौन है जो इस वास्तविकता को समझे?

**2** पहले के लोग अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को पुकारते थे जो अल्लाह के मुकर्रबीन में से होते, या तो नबी होते, या वली, या फरिश्ता, या पत्थर और पेड़ जो अल्लाह की नाफरमानी नहीं करते बल्कि उसकी फर्माबर्दारी ही करते, और हमारे ज़माने के लोग ऐसे लोगों को भी पुकारते हैं जो सबसे बड़े पापी होते।

और जो नेक लोगों को अल्लाह के साथ साझी करने का आस्था रखे, या ऐसी चीज़ों को साझी करने का आस्था रखे जो नाफरमानी न करती हों, तो उसका शिर्क अवश्य उनके शिर्क से कम दरजे का होगा जो अल्लाह के साथ ऐसे लोगों को साझी करने का आस्था रखे स्पष्ट रूप से पापी हो।

**3** नबी ﷺ के ज़माने के सारे मुशिरकीन का शिर्क मात्र तौहीदे उलूहीयत (इबादत) में था, वे तौहीदे रुबूबीयत में शिर्क नहीं करते थे, बरखिलाफ हमारे ज़माने के मुशिरकीन के यह जिस तरह तौहीदे उलूहीयत में शिर्क करते हैं उसी तरह अधिकतर तौहीदे रुबूबीयत में भी शिर्क करते हैं, तो वह काएनात में तबीअत (NATURE) को ही मारने और जिलाने का व्यवस्थापक समझते हैं।

और शायद मैं अपनी बात को एक महत्वपूर्ण मसअले का चर्चा करके जो ऊपर की बातों से आसानी के साथ समझा जासकता है ख़तम करदूँ, और वह यह है कि इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि तौहीद का आस्था दिल में होना ज़रूरी है, और बन्दा जुबान से उसे स्वीकार करे और अंगों के द्वारा उसके अनुसार अमल करे। और यदि इनमें से कोई भी एक चीज़ नहीं पाई गई तो इन्सान मुसलमान नहीं रह जाता, यदि उसने तौहीद को जान लिया लेकिन उसके अनुसार अमल नहीं किया तो वह फिरऔन और इब्लीस जैसे धर्म का दुश्मन और काफ़िर है। और इस बारे में अधिकतर लोग गलती करते हैं, वे सत्य को स्वीकार करते हैं लेकिन कहते हैं कि हम इसके अनुसार अमल करने की शक्ति नहीं रखते, या कहते हैं कि हमारे देश या नगर

में ऐसा करना जायज़ नहीं, और उनकी बुराई से बचने के लिए उनकी मुवाफ़क़त ज़रूरी है। लेकिन बेचारे को पता नहीं कि अधिकतर कुफ़्र के अगुवाओं को सत्य का ज्ञान था, लेकिन कोई न कोई उज़्र पैदा करके उसे छोड़ा दिया, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿أَشْرَوْا بِعَايَةِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ “उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत कम दाम पर बेच दिया, और उसके रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।”

और जिसने देखावे के लिए तौहीद के अनुसार अमल किया लेकिन वह उसे समझता नहीं और न ही उस को दिल से मानता है तो वह मुनाफ़िक़ है। और वह काफ़िर से भी बुरा है, इसलिए कि उसके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿إِنَّ الْكٰفِرِيْنَ فِي الدَّرَكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ﴾ “मुनाफ़िक़ तो अवश्य जहन्नम के सब से नीचे के दर्जे में जाएंगे”

और जब लोगों की बातों पर ध्यान देंगे तो उस समय यह मस्अला स्पष्ट होजाएगा, आप उन में से कुछ को पाएंगे कि सत्य जानते हुए भी संसार में घाटे, मर्यादा तथा राज्य के कारण उसके अनुसार अमल नहीं करते जैसे कि कारून, हामान और फ़िरऔन ने किया।

और कुछ को आप ऐसा भी पाएंगे कि मात्र दिखावे के लिए अमल करते हैं, अपने अक़ीदा (आस्था) के बारे में उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं।

**अब आप के लिए ज़रूरी है कि आप कुरआन की दो आयतों को ध्यान देकर समझें :**

**पहली आयत :** वही है जिसका चर्चा ऊपर हो चुका है : ﴿لَا تَعْتَدُوا فَمَا كَفَرْتُمْ بِعَدَائِمِنكُمْ﴾

“तुम बहाने न बनाओ, अवश्य तुम अपने ईमान के बाद काफ़िर हो गए।”

आप ने जब यह जान लिया कि जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल के साथ मिलकर रूमियों से जिहाद किया, उनमें से कुछ एक कल्मा कहने के कारण काफ़िर करार पाए, जिसे उन्होंने हँसी मज़ाक़ में कहा था, तो इस के द्वारा आप पर यह बात स्पष्ट हो गई कि जो व्यक्ति मान मर्यादा और धन सम्पत्ति में कमी होने के डर से या किसी का लिहाज़ करते हुए कुफ़्र का शब्द मुख से निकालता है, या उसके अनुसार कर्म करता है, तो उसका पाप उस व्यक्ति के पाप से बढ़कर है जो कोई शब्द हँसी मज़ाक़ में बोल देता, क्योंकि ऐसा व्यक्ति आम तौर से दिल में उन शब्दों पर आस्था नहीं रखता है जिसे वह लोगों को हँसाने के लिए कहता है। रहा वह व्यक्ति जो किसी डर या किसी चीज़ की लालच में कुफ़्र के शब्द मुंह से निकालता है तो गोया कि उसने शैतान के वायदे : ﴿الشَّيْطٰنُ يَعدُّكُمْ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاۗءِ﴾ “शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है, और बेहयाई का आदेश देता है।”

को सत्य कर दिखाया। और उसके धमकावे : ﴿اِنَّمَا ذٰلِكُمْ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهُ﴾ “और यह शैतान है जो अपने दोस्तों से डराता है।”

से डरा। और रहमान के वायदे : ﴿وَاللّٰهُ يَعدُّكُمْ مَغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا﴾ “और अल्लाह तुम से अपनी माफ़ी और मेहबानी का वायदा करता है।”

की तस्दीक़ नहीं की। और जब्बार की सज़ा : ﴿فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ﴾ “तो तुम उनसे न डरो मुझ से डरो यदि तुम मोमिन हो।”

से नहीं डरा। तो आप स्वयं निर्णय करें ऐसा व्यक्ति रहमान के औलिया में से होने का इक्दार है, या शैतान के औलिया में से होने का?

**दूसरी आयत यह है :** ﴿مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمٰنِهٖۙ اِلَّا مَنۡ اُكْرِهٖۙ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمٰنِ وَلٰكِنۡ مَّنۡ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًاۙ فَعَلَيْهٖمۡ غَضَبٌۢ مِّنَ اللّٰهِ وَلَهُمْ عَذَابٌۭ عَظِيْمٌۭ﴾

“जो व्यक्ति अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ्र करे, सिवाय उसके जिसे मज्बूर किया जाए और उसका दिल ईमान से मुत्तुष्ट (संतुष्ट) हो, मगर जो लोग दिल से कुफ्र करें तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उन्हीं के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।”

अल्लाह तआला ने उन्हें लाचार नहीं जाना, सिवाय उन लोगों के जिन्हें विवश कर दिया गया हो, और उनका दिल ईमान से संतुष्ट हो, रहे उनके अतिरिक्त लोग तो वे अपने ईमान के बाद काफ़िर होगए, चाहे उन्होंने उसे किसी डर या लालच से किया हो या किसी का लिहाज़ रखते हुए, या अपने देश, बाल बच्चे, खानदान, या धन से मोह के कारण किया हो, या हँसी मज़ाक़ में किया हो, या कोई और उद्देश्य रहा हो, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे विवश कर दिया गया हो, लेकिन उसका दिल संतुष्ट हो इसलिए कि दिल के अक़ीदा पर किसी को विवश नहीं किया जा सकता है। और इस आयत में: ﴿ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ﴾

“यह इसलिए कि उन्होंने दनियावी जीवन से आख़िरत से अधिक प्रेम किया, अवश्य अल्लाह तआला काफ़िर लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता”

अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अज़ाब उनके अक़ीदा, या धर्म से अज्ञानता के कारण नहीं, बल्कि इस कारण होगा कि उन्होंने सांसारिक चीज़ों को धार्मिक चीज़ों पर तर्जीह (प्रधानता) दी।

अल्लाह आप को हिदायत दे, क्या इन सारे प्रमाणों को सुनने के बाद भी वह समय नहीं आया कि आप अपने पापों से तौबा करें, अल्लाह की ओर पलटें, और इन खुराफ़ात को छोड़ दें, क्योंकि जैसा कि आपने सुना मामला अधिक खतरनाक है, और इसका परिणाम बहुत ही भयंकर है।

**अब्दुन्नबी** : मैं अल्लाह की माफ़ी चाहता हूँ, उसकी ओर पलटता हूँ, और यह गवाही दे रहा हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई भी इबादत के लायक नहीं है, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह के सिवाय मैं जितनी चीज़ों की इबादत करता था उन सभी का इन्कार कर रहा हूँ, और अल्लाह से दुआ कर रहा हूँ कि वह मेरे पिछले पाप को माफ़ करदे, मेरे साथ नरमी, क्षमा और रहमत का मामला करे, और अपने से मिलने तक मुझे तौहीद और सत्य अक़ीदा पर साबित रखे। और उससे यह दुआ करता हूँ कि इस नसीहत पर आप को सवाब और पुण्य दे; क्योंकि धर्म नसीहत का नाम है, और आप ने मेरे नाम का जो इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब मिले, और अब मैंने अपना नाम **अब्दुन्नबी** से बदल कर अब्दुरहमान रख लिया। और मेरे अन्दर की पोशीदा बुराई पर जो आपने इन्कार किया उस पर भी आप को सवाब दे; क्योंकि यह ऐसा भ्रष्ट अक़ीदा था कि यदि उस पर मेरी मौत होजाती तो मैं कभी सफल नहीं हो पाता।

लेकिन अन्त में मेरी आप से एक मांग है कि आप मुझे ऐसी बुराईयों से अवगत कराएँ जिनके बारे में लोग गलतियों में पड़े हुए हैं।

**अब्दुल्लाह** : कोई बात नहीं। आप ध्यान से सुनिए।

★ किताब और सुन्नत के जिन प्रमाणों में इख़िलाफ़ हुआ है उनमें फ़िल्ना और तावील की खातिर इख़िलाफी चीज़ों की पैरवी से बचो, और वास्तव में उनकी जानकारी तो मात्र अल्लाह तआला ही को है। और उनके बारे में तुम्हारी भूमिका मज्बूत इल्म वालों के भूमिका की तरह हो जो इन मुतशाबिह प्रमाणों के बारे में कहते हैं : ﴿عَمَّا بِيَدِ كُلٍِّّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا﴾ “हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे रब की ओर से है”। और इख़िलाफी प्रमाणों के बारे में नबी

ﷺ का फ़रमान है : “जिनके बारे में शक हो उन्हें छोड़ कर वह कर्म करो जिनके बारे में शक न हो”। (अहमद और तिर्मिज़ी) और आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शक वाली चीज़ों से बचा उसने अपने धर्म और इज़्ज़त की हिफ़ाज़त की और जो शक वाली चीज़ों में पड़ा वह हराम में पड़ गया”। (बुख़ारी और मुस्लिम) और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया: “पाप वह है जो तुम्हारे सीने में खटके, और तू नापसन्द करे कि लोगों को इसकी जानकारी हो”। (मुस्लिम) और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया: “अपने दिल से पूछो, अपने नफ़्स से पूछो –तीन बार आप ﷺ ने कहा- नेकी वह है जिस पर दिल संतुष्ट हो, और पाप वह है जो दिल में लगे और सीने में खटके, अगरचे लोग तुम्हें फ़त्वा दें और फ़त्वा दें”।

★ ख़ाहीशात की पैरवी से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला ने इससे डराते हुए फ़रमाया:

﴿أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوْنَهُ﴾ “क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख़ाहीशात को अपना देवता बनाये हुए है”।

★ लोगों की राय और बाप-दादा के आस्थाओं पर तअस्सुब करने से बचो; क्योंकि यह इन्सान और हक़ के बीच रुकावट है। बल्कि हक़ तो मोमिन का खोया हुआ सामान है, जहाँ भी पा ले वह उसका अधिक हक़दार है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أُولَٰئِكَ نَبْغِضُ وَلَا نُبْغِضُ ۚ وَكُلٌّ فِي أَفْئِدَةٍ مَّرْكُومَةٍ﴾ “और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने बुजुर्गों (बाप-दादा) को पाया, अगरचे उनके बुजुर्ग बेवकूफ़ और भटके हुए हों”।

★ काफ़ि़रों का रूप अपनाने से बचो, इसलिए कि यह हर मुसीबत की जड़ है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिसने किसी कौम का रूप अपनाया वह उनमें से है”। (अबू-दाऊद)

★ ग़ैरुल्लाह पर भरोसा करने से बचो; क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَنْ يَتَّكِبْ عَلَىٰ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَتَّكِبْ عَلَيْهِ﴾ “और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह उसके लिए काफ़ी होगा”।

★ अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी के लिए किसी भी व्यक्ति की बात न मानो, नबी ﷺ का फ़रमान है : “अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी में किसी मख़्लूक की पैरवी जायज़ नहीं”।

★ अल्लाह तआला के बारे में बुरा सोचने से बचो; क्योंकि हदीसे कुद्सी में अल्लाह तआला का फ़रमान है : “मैं अपने बन्दों के गुमान के पास होता हूँ”। (बुख़ारी और मुस्लिम)

★ मुसीबत टालने या दूर करने के लिए कड़ा, छल्ला और धागा इत्यादि पहनने से बचो।

★ बुरी नज़र से बचने के लिए ता'वीज़ लटकाने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिसने कोई चीज़ लटकाई वह उसके सिपुर्द कर दिया गया”। (अहमद और तिर्मिज़ी)

★ पेड़, पत्थर, निशान और प्रासादों से तबरुक लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है।

★ किसी भी चीज़ से बद्-फ़ाली लेने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बद्-फ़ाली लेना शिर्क है, बद्-फ़ाली लेना शिर्क है”। (अहमद और अबू दाऊद)

★ जादूगरों और ज्योतिशियों की पुष्टि करने से बचो जो कि इल्मे-ग़ैब का दावा करते हैं, और राशिफल ज़ाहिर करते हैं, लोगों के लिए भलाई या बुराई की बातें करते हैं, इन बातों में उनकी पुष्टि करना शिर्क है; क्योंकि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी ग़ैब नहीं जानता।

★ बरसात बरसने की निस्वत नक्षत्रों की ओर करने से बचो; क्योंकि यह शिर्क है, बल्कि उसकी निस्वत अल्लाह तआला की ओर करो।

★ गैरुल्लाह की कसम खाने से बचो, जिसकी कसम खाई जा रही हो वह व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो; क्योंकि यह शिर्क है। हदीस शरीफ में आया है : **“जिसने गैरुल्लाह की कसम खाई उसने कुफ़ किया या शिर्क किया”**। (अहमद् और अबू दाऊद) जैसे कि नबी ﷺ की कसम खाना, या अमानत, या इज़्ज़त, या जीवन इत्यादि की कसम खाना।

★ ज़माने को, हवा को, या सूरज को, या ठंडी को, या गर्मी को गाली देने से बचो; क्योंकि यह वास्तव में अल्लाह तआला को गाली देना है जिसने उन्हें बनाया है।

★ दुःखी होने पर अगर मगर कहने से बचो; क्योंकि यह शैतान के दर्वाज़े को खोलता है, और अल्लाह की बनाई हुई तक्दीर पर आपत्ति जताने के बराबर भी है, लेकिन यह कहा करो, अल्लाह ने इसे मुक़द्दर किया और उसे जो मन्ज़ूर था उसने किया।

★ क़ब्रों को मस्जिद बनाने से बचो; क्योंकि उस मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती जिसमें क़ब्र हो, बुख़ारी और मुस्लिम में आइशा رضي الله عنها से रिवायत है, वह फ़रमाती हैं : अवश्य अल्लाह के रसूल ﷺ ने जाँकनी की अवस्था में फ़रमाया: **“अल्लाह यहूदियों और ईसाइयों पर लानत करे जिन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बनाली। आप ﷺ उनके कर्तूत से डरा रहे थे”**। आइशा رضي الله عنها फ़रमाती हैं कि यदि इसका डर न होता तो आप ﷺ की क़ब्र भी उभारी जाती। और आप ﷺ ने फ़रमाया: **“तुम से पहले जो लोग थे अपने नबियों और नेक लोगों की क़ब्रों को मस्जिद बना लेते थे, सो तुम क़ब्रों को मस्जिदें न बनाना, मैं तुम्हें इस से रोकता हूँ”**। (अबू-अवाना)

★ आप ﷺ से और नेक लोगों से वसीला पकड़ने के बारे में उन रिवायतों की पुष्टि करने से बचो जिनकी निस्वत झूठे लोग नबी ﷺ की ओर करते हैं; क्योंकि यह सारी रिवायतें गढ़ी हुई हैं, इन्हीं में से यह रिवायतें भी हैं : **“मेरे जाह-व-जलाल के माध्यम से वसीला पकड़ो; क्योंकि अल्लाह तआला के पास मेरा मर्यादा महान है”**। और यह रिवायत : **“जब तुम परीशानी में पड़ो तो क़ब्र वालों का सहारा लो”**। और यह रिवायत कि : **“अल्लाह तआला हर वली की क़ब्र के पास एक फ़रिश्ता नियुक्त कर देता है जो लोगों की हाजतें पूरी करता है”**। और यह रिवायत भी कि : **“यदि तुम पत्थर के बारे में भला सोचो तो वह तुम्हें लाभ देगा”**। इनके इलावा भी बहुत सी गढ़ी हुई झूठी रिवायतें हैं।

★ मीलादुन्नबी ﷺ, इस्रा और मे'राज और शबे-बरात इत्यादि के जश्न मनाने से बचो; क्योंकि यह सारी चीज़ें बाद की बनावटी हैं, जिनके करने की रसूलुल्लाह ﷺ से कोई दलील है, और न ही सहाब-ए-किराम ने किया है, जो कि हम से अधिक अल्लाह के रसूल से महबूबत करने वाले थे, और भलाई के कामों के लिए हम से ज़्यादा हरीस थे, और यदि इन्हें करना भी भलाई का काम होता तो वे हम से पहले कर गुज़रे होते।

## ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही

**لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** इस कलिमा के दो रुकन हैं, **1-अस्वीकृती** : गैरुल्लाह की इबादत का इनकार करना।

**2- स्वीकृती** : वास्तविक इबादत को मात्र अल्लाह ﷻ के लिए साबित करना। अल्लाह ﷻ का फर्मान है:

﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٦٠﴾ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٦١﴾﴾ और जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने पीता और अपनी कौम से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो। सिवाय उस ताकत के जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत भी करेगा। चुनान्वि मात्र इबादत करना काफी नहीं है बल्कि ज़रूरी है कि इबादत अल्लाह ﷻ के लिए ख़ालिस हो, और तौहीद उस समय तक लाभ-दायक नहीं हो सकता जब तक कि मात्र एक अल्लाह ﷻ की इबादत करने के साथ साथ शिर्क और मुश्रिकों से अलग न हुआ जाए।

और असर में आता है कि **ला-इलाहा इल्लल्लाह** जन्नत की कुंजी है, लेकिन क्या हर **ला-इलाहा इल्लल्लाह** कहने वाला व्यक्ति इसका हक़दार है कि उस के लिए जन्नत खोल दिया जाए? वस्ब बिन मुनबिह से पूछा गया : क्या **ला-इलाहा इल्लल्लाह** जन्नत की कुंजी नहीं है? तो उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं, लेकिन हर चाबी के दांत होते हैं, यदि दांत वाली चाबी लेकर आओगे तो तुम्हारे लिए ताला खुलेगा, नहीं तो नहीं।

और नबी ﷺ ने अग्निन्त हृदीसों में इस चाबी के दांत बयान किए हैं; आप ﷺ ने फरमाया: “जिस व्यक्ति ने इख़्लास के साथ **ला-इलाहा इल्लल्लाह** कहा”, “दिल में विश्वास रखते हुए कहा”, “अपने दिल से हक़ जानते हुए कहा”, तो इन हृदीसों में और इसी तरह की दूसरी हृदीसों में जन्नत में जाने के लिए यह शर्त लगाई गई कि **ला-इलाहा इल्लल्लाह** कहने वाला व्यक्ति उसका अर्थ जानता हो, मरने तक उस पर साबित रहा हो, और उसके अनुसार अपना जीवन बिताया हो।

दलीलों की रौशनी में उलमा ने **ला-इलाहा इल्लल्लाह** के कुछ शर्त बयान किए हैं, हर व्यक्ति में जिनका पाया जाना और उनके विरोधी चीज़ों से दूर रहना ज़रूरी है, ताकि यह कल्मा जन्नत की कुंजी बने, अपने कहने वाले को लाभ दे, और यह शर्तें ही इसके दांत हैं, जिनकी संख्या सात है:

**① इल्म (ज्ञान)**: प्रत्येक शब्द का एक अलग अर्थ होता है, इसी लिए **ला-इलाहा इल्लल्लाह** का अर्थ इस तौर पर जानना ज़रूरी है कि इन्सान से जहालत दूर होजाए, यह कल्मा गैरुल्लाह की इबादत को नकारता है, और इबादत को मात्र अल्लाह तआला के लिए साबित करता है, इसका अर्थ है : अल्लाह के सिवाय कोई भी सत्य मा'बूद (उपास्य) नहीं, अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ “(सिफ़ारिश के लायक वे हैं) जो सच बात को स्वीकार करें और उन्हें जानकारी भी हो”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस की मौत इस हालत में हुई कि वह जानता हो कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं तो वह जन्नत में दाख़िल होगया”। (मुस्लिम)

**② यकीन (विश्वास)** : आप को उसके अर्थ पर यकीन हो; क्योंकि शक, गुमान, दुबिधा और शक की इसमें कोई गुन्जाइश नहीं है, बल्कि पुख़ता यकीन ज़रूरी है। अल्लाह तआला ने मोमिनों की सिफ़त बयान करते हुए फ़रमाया: ﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا﴾ “ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लायें, फिर शक न करें, और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहें, (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे हैं”।

चुनाचि केवल जुबान से इक्रार करना काफी नहीं है, बल्कि दिल से विश्वास करना ज़रूरी है, यदि दिल में यकीन न हो तो यही निफ़ाक़ है, नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: “कलमाए शहादतैन के साथ जो व्यक्ति भी अल्लाह से मुलाकात करेगा, और उसे इस में शक न हो तो वह जन्नत में दाख़िल होगा”।

**3 क़बूल :** जब आप को इसके माने की जानकारी हो गई और उस पर यकीन भी हो गया, तो ज़रूरी है कि आप पर उसका छाप भी दिखाई दे, और वह इस तरह से कि इसके मुतालबे दिल और जुबान से आप को क़बूल हों, तो जिस ने तौहीद की दावत का इन्कार किया और उसे स्वीकार नहीं किया तो वह काफ़िर हो गया, चाहे उसका यह इन्कार घमण्ड, दुश्मनी और ह़सद के कारण ही क्यों न हो, और अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों के बारे में जिन्होंने घमण्ड करते हुए इसका इन्कार कर दिया फ़रमाया: ﴿إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ﴾ “ये वे लोग हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई मा'बूद नहीं, तो यह घमण्ड करते हैं”।

**4 इन्क़ियाद :** तौहीद के लिए पूरी ता'बेदारी हो, और यही वास्तव में हक़ीक़ी मज़बूती और ईमान की अमली नुमाइश है, जो कि अल्लाह तआला की शरीअत के अनुसार अमल करने और उसकी रोक़ी हुई चीज़ों से दूर रहने से पूरी होती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ عَنَقِبَةُ الْأُمُورِ﴾ “और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के ताबे करदे और वह है भी परहेज़गार, तो यकीनन उसने मज़बूत कड़ा थाम लिया, सभी कर्म का नतीजा अल्लाह की ओर है”। और यही कामिल ता'बेदारी है।

**5 सच्चाई :** لا-इलाहा इल्लल्लाह कहने वाला व्यक्ति अपनी बात में सच्चा हो, यदि किसी ने मात्र जुबान से कहा हो और उसका दिल इन्कारी हो तो वह मुनाफ़ि़क़ है, और इसकी दलील मुनाफ़ि़क़ीन की मज़म्मत में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है : ﴿يَقُولُونَ بِاللَّيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ﴾ “यह लोग अपनी जुबानों से वह बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है”।

**6 महब्बत :** मोमिन व्यक्ति इस कलमा से महब्बत करे, इसके मांग अनुसार अमल करना पसंद करे, और जो लोग इसके अनुसार अमल करते हैं उनसे महब्बत करे, बन्दे का अपने रब से महब्बत करने की निशानी यह है कि जो चीज़ें अल्लाह तआला को पसन्द हैं उन्हें वह महत्व दे चाहे वे उसकी चाहत के ख़िलाफ़ ही क्यों न हों, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दोस्ती रखते हैं उन से दोस्ती करे, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करते हैं उन से दुश्मनी करे, और अल्लाह के रसूल की पैरवी करे, उनके नक्शे क़दम को क़बूल करे, और उनका मार्ग-दर्शन स्वीकार करे।

**7 इख़्लास :** इस कलमा के इक्रार द्वारा उसकी चाहत मात्र अल्लाह तआला की खूशनुदी हो, अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ﴾ “उन्हें इसके सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध कर रखें इब्राहीम हनीफ़ के दीन पर।” और नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को जहन्नम पर ह़राम कर दिया जिसने لا-इलाहा इल्लल्लाह कहा और इसके द्वारा अल्लाह की खूशनुदी चाहता हो”।



## मुहम्मदुरसूलुल्लाह की गवाही

क़ब्र में मैयत का इम्तिहान होगा और उससे तीन प्रश्न किए जाएंगे, यदि उसने उनका उत्तर दे दिया तो सफल होगया नहीं तो हलाक होगया, और उनमें से एक प्रश्न यह होगा **مَنْ نَبِيُّكَ؟** **तेरा नबी कौन है?** इस प्रश्न का उत्तर वही व्यक्ति दे सकेगा जिसे अल्लाह ने संसार में इसके शराएत पूरी करने की तौफ़ीक़ दी होगी, मरते समय दीन पर साबित रखवा होगा, और क़ब्र में इल्हाम किया होगा, तो आख़िरत में भी यह उसके लिए लाभदायक होगा, जिस दिन माल और संतान लाभ न देंगे। यह हैं इसकी चार शर्तें :

**① जिन चीज़ों का आपने आदेश दिया है, उनमें आपकी इताअत करना :** क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें आपकी फ़र्माबदारी का हुक़्म दिया है, फ़रमाया: **مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ** **“उस रसूल की जो फ़र्माबदारी करे उसी ने अल्लाह की फ़र्माबदारी की”**। और फ़रमाया: **قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ** **“कह दीजिए यदि तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो स्वयं अल्लाह तुम से महब्बत करेगा”**। और जन्नत में दाख़िला आप **ﷺ** की इताअत पर निर्भर है, आप **ﷺ** ने फ़रमाया: **“मेरी उम्मत का हर कोई जन्नत में जाएगा सिवाय उसके जिसने जाने से इन्कार कर दिया, लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत में जाने से कौन इन्कार करेगा? तो आप **ﷺ** ने फ़रमाया: जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने (जन्नत में जाने से) इन्कार किया”**। (बुख़ारी) और जिसे आप **ﷺ** से महब्बत है, वह ज़रूर आप की फ़र्माबदारी करेगा, इसलिए कि इताअत महब्बत का फल है, और यदि कोई आप **ﷺ** की ताबेदारी के बिना आप से महब्बत का दावा करता है तो वह अपने दावे में झूटा है।

**② जिन चीज़ों की आपने ख़बर दी है उनमें आप की तस्दीक़ करना :** जिस व्यक्ति ने अपनी ख़ाहिश या हवस की बुन्याद पर आप **ﷺ** से साबित चीज़ों को झुटलाया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल को झुटलाया, क्योंकि आप **ﷺ** ग़लती और झूट से मासूम हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान है : **وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ** **“और न वह अपनी ख़ाहिश से कोई बात कहते हैं”**।

**③ जिन चीज़ों से आप ने रोका है उन से दूर रहना :** कबीर: गुनाह शिर्क और दूसरे बड़े और हलाक करने वाले गुनाहों से बचते हुए छोटे गुनाहों और मकरूह चीज़ों से बचना, चुनांचि अपने नबी **ﷺ** से मुस्लिम व्यक्ति की महब्बत जिस क़दर अधिक होगी उसी के बराबर उसका ईमान भी अधिक होगा, और जब उसका ईमान ज़्यादा होगा तो अल्लाह तआला नेकियों को उसके दिल में महबूब कर देगा, और कुफ़, फ़िस्क़ और गुनाह के कामों से घृणा पैदा कर देगा।

**④ और अल्लाह की इबादत उसी तरह हो जिस तरह खुद अल्लाह तआला ने अपने नबी की जुबानी मशख़'उ (शरीयत सम्मत) की है :** क्योंकि इबादत में अस्ल प्रतिबंध है, इसलिए अल्लाह के रसूल से जो चीज़ें साबित हैं उनके बजाए अल्लाह की इबादत करना जायज़ नहीं है, आप **ﷺ** ने फ़रमाया: **“जिस व्यक्ति ने कोई ऐसा काम किया जिसका हमने आदेश नहीं दिया है तो वह मर्दूद है”**।

**फ़ाइदा :** यह जान लो कि नबी **ﷺ** की महब्बत वाजिब है, और मात्र महब्बत काफ़ी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि वह तुम्हारी सारी चीज़ों से अधिक महबूब हों यहाँ तक कि तुम्हारी जान से भी; क्योंकि जो इन्सान किसी चीज़ से महब्बत करता है तो वह उसे और उसकी मुवाफ़क़त को तर्ज़ीह देता है, और आप की महब्बत में सच्चा वह व्यक्ति है जिस से महब्बत

की निशानी ज़ाहिर हो, वह आपका ताबेदार हो, कर्म में आपकी सुन्नत का पाबन्द हो, आपके आज्ञा का पालन करता हो, प्रतिबन्धित चीज़ों से बचता हो, कठिनाई और आसानी में खूशी और ग़मी में आप के स्वभावों को अपनाता हो, इसलिए कि इताअत और ताबेदारी महब्बत का फल है, और इसके बिना महब्बत सच्ची नहीं हो सकती।

**नबी ﷺ की महब्बत की बहुत सी निशानियाँ हैं,** उन निशानियों में से एक यह है कि अधिक से अधिक आपको याद किया जाए, आप पर दुरूद भेजा जाए, क्योंकि हबीब अपने महबूब का अधिक चर्चा किया करता है। एक निशानी यह भी है कि आप से भेंट करने का शौक हो, क्योंकि हबीब को अपने महबूब से मुलाकात की चाहत होती है। एक निशानी यह भी है कि जब आप का चर्चा हो तो आप की बड़ाई (ताज़ीम) और इज़्ज़त की जाए। इस्हाक़ عليه السلام कहते हैं : (आप ﷺ के बाद सहाबए कराम رضي الله عنهم जब भी आप का चर्चा करते तो उन पर रिक्कत तारी होजाती, उनके रौंगटे खड़े होजाते, और वे रोने लगते)। एक निशानी यह भी है कि आप से कीना रखने वालों से बुग़ज़ किया जाए, आप के दुश्मनों से दुश्मनी की जाए, और बिद्अतियों और मुनाफ़िकों से जो आप की सुन्नत की मुख़ालफ़त करते हैं उन से दूर रहा जाए। एक निशानी यह भी है कि आप ﷺ ने जिन लोगों से महब्बत की है उन से महब्बत की जाए वह चाहे अहले बैत हों, या आप की नेक पत्नियाँ हों, या मुहाजिर और अन्सार सहाबए कराम हों, और जो इन से दुश्मनी करे उस से दुश्मनी की जाए, इन्हें गाली देने वालों से बुग़ज़ रखवा जाए। और एक निशानी यह भी है कि आप के सुन्दर अख़्लाक की पैरवी की जाए, क्योंकि आप सारे लोगों से सुन्दर स्वभाव के मालिक थे, यहाँ तक कि आइशा رضي الله عنها ने कहा कि : आप कुर्आन के अमली नमूना थे। वही काम करते थे जिसका कुरआन ने आप को आदेश दिया था।

**नबी ﷺ के गुण :** आप सब से बहादुर थे, खास कर लड़ाई के मैदान में, आप करम नवाज़ थे, सब से बड़े दानी थे, खासकर रमज़ान के महीने में, लोगों के सब से बड़े ख़ैर-ख़ाह थे, रहम दिल थे, अपने लिए किसी से बदला नहीं लेते थे, लेकिन अल्लाह तआला के बारे में थोड़ी सी भी मुरौवत नहीं बरतते (सब से ज़्यादा सख़्त) थे, सन्जीदा मिज़ाज बा-वकार थे, कन्या से भी अधिक शरम करने वाले थे, अपने घर वालों के लिए सब से बेहतर थे, लोगों के लिए दयालु और मेहर्बान थे, --- और भी आप के बहुत से गुण थे।

ऐ अल्लाह तू हमारे नबी, उनके आल, उनकी पत्नियों, उनके साथियों और कियामत के दिन तक उनकी पैरवी करने वालों पर रहमतें और सलामतियाँ नाज़िल कर।

<sup>1</sup>नमाज़ इस्लाम का दूसरा रुकन है, जो तहारत के बिना स्वीकार नहीं होती, और तहारत पानी या मिट्टी से हासिल होती है।

**पानी की किस्में :** ① ताहिर (पवित्र) : जो कि स्वयं पाक हो और पाक करने वाला हो, यह पवित्र पानी नापाकी को दूर करता है, और गन्दगी को मिटा देता है।

② नजिस (अपवित्र) : थोड़ा पानी जिसमें नापाकी गिर गई हो, और यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने के कारण उसके औसाफ़ में से मज़ा या रंग या बू बदल गई हो।

**नोट :** पानी यदि अधिक मात्रा में हो तो नापाकी पड़ने से जब तक उसके तीनों औसाफ़ (मज़ा, रंग और बू) में से कोई वस्फ़ न बदल जाए नापाक नहीं होता है, लेकिन यदि पानी थोड़े मात्रा में हो तो मात्र नापाकी पड़ने से ही नापाक होजाता है, और पानी को अधिक उस समय माना जाएगा जब वह लगभग 210 लीटर से ज़्यादा हो।

**बर्तन :** सोना और चाँदी के बर्तन के सिवाय हर पवित्र बर्तन को प्रयोग में लाना जायज़ है, और यदि सोना और चाँदी के बर्तन में पानी रख कर तहारत हासिल की गई तो तहारत तो होजाएगी लेकिन साथ में उन्हें प्रयोग करने का गुनाह भी होगा, और काफ़िरों के पाक कपड़ों और बर्तनों को प्रयोग में लाना मुबाह (जायज़) है।

**मुर्दे का चमड़ा :** बिल्कुल अपवित्र है, और मुर्दे दो तरह के होते हैं : ① जिनका खाना हराम हो। ② जिन्हें खाया जाता हो लेकिन वह ज़बह न किए गए हों, तो जिन जानवरों को खाया जाता हो और उन्हें ज़बह न किया गया हो उनके चमड़ों को दबागत देने के बाद उन्हें गीली चीजों के बजाए सूखी चीजों में प्रयोग करना जायज़ है।

**इस्तिन्जा :** पेशाब और पाखाने के रास्ते से निकलने वाली गन्दगी को दूर करना, यदि पानी से दूर किया जाए तो इसे इस्तिन्जा कहते हैं, और यदि पत्थर और टिशु-पेपर इत्यादि से दूर किया जाए तो इसे इस्तिज्मार कहते हैं, अल्बत्ता इस्तिज्मार के लिए शर्त यह है कि वह पाक हो, मुबाह हो, सफ़ाई करने वाला हो, और उसे खाया न जाता हो, और तीन या उस से अधिक पत्थरों द्वारा हो। इस्तिन्जा या इस्तिज्मार हर निकलने वाली गन्दगी को दूर करने के लिए ज़रूरी है।

**कज़ाए हाजत** करने वाले व्यक्ति पर समय से अधिक अपवित्रता की स्थिती में रहना हराम है, इसी तरह पानी के घाट, आम रास्ते, साए के नीचे, फ़ल्दार पेड़ के नीचे और ख़ाली जगहों में और फज़ा में काबा की ओर चेहरा करके हाजत पूरी करना हराम है।

**और यह मकरूह** है कि शौचालय में ऐसी चीज़ लेकर प्रवेश करे जिसमें अल्लाह का ज़िक्र हो, और इसी तरह हाजत पूरी करते समय बात करना, सूराख इत्यादि में पेशाब करना, दाहने हाथ से शरम-गाह छूना, और शौचालय के अन्दर काबा की ओर चेहरा करके हाजत पूरी करना **मकरूह** है। और ज़रूरत के समय यह चीज़ें जायज़ हैं।

**और कज़ाए हाजत** करने वाले व्यक्ति के लिए यह मुस्तहब है कि पानी या पत्थर ताक़ (अद्वितीय) ले, और यह भी मुस्तहब है कि पहले सफ़ाई करे फिर पानी इस्तेमाल करे।

**मिस्वाक :** पीलू इत्यादि की नरम लकड़ी से मिस्वाक करना मुस्तहब है, जो कि नमाज़ से पहले, कुरआन पढ़ने और वुजू करते समय कुल्ली से पहले, सौ कर उठने के बाद, मस्जिद या घर में प्रवेश करते समय, और मुंह का मज़ा बदल जाने के समय सुन्नते मुअक़दा है।

<sup>1</sup>तहारत, सलात, ज़कात, सियाम और हज़्ज सम्बन्धित जो अहक़ाम ज़िक्र किए गए हैं यह इज्तिहाद की बुन्याद पर हैं, जिन्हें जमअ करने वाले ने अपने इल्म की रौशनी में राजिह समझा है, इस से इख़्तिलाफ़ भी किया जा सकता है, बहर हाल मुस्लिम व्यक्ति के लिए धर्म सम्बन्धित मसाइल में मशहूर उलमाए दीन जैसे अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ई और अहमद की इत्तिबाअ करनी चाहिए।

मिस्वाक करने और तहारत के समय दाएं ओर से शुरू करना मुस्तहब है, और यह भी मुस्तहब है कि गन्दगी को दूर करने के लिए बाएं हाथ का प्रयोग किया जाए।

**वुजू : वुजू के अर्कान :** ① चेहरे को धुलना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना इस में शामिल है, ② दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर दोनों केहनियों तक धुलना। ③ दोनों कानों समेत पूरे सर का मसह करना। ④ दोनों पैरों को टखनों समेत धुलना। ⑤ तर्तीब के साथ वुजू करना। ⑥ मुवालात अर्थात लगातार वुजू करना, इस तरह कि एक अंग को धोने के बाद दूसरे अंग को धोने में इतनी देर न की जाए कि पहला अंग सूख जाए।

**वुजू के वाजिबात :** वुजू से पहले बिस्मिल्लाह कहना, रात की नींद से सोकर उठने वालों के लिए पानी में हाथ डालने से पहले तीन बार उसे धो लेना।

**वुजू की सुन्नतें :** मिस्वाक करना। शुरू में दोनों हथेलियों को धुलना, चेहरा धुलने से पहले कुल्ली करना और नाक में पानी खींचना, जो व्यक्ति रोज़े से न हो उसके लिए कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते समय मुबालगा करना, घनी दाढ़ियों का खिलाल करना, उँगलियों का खिलाल करना, दाईं ओर से शुरू करना, अंगों को दुसरी और तीसरी बार धुलना, दाएं हाथ से नाक में पानी खींचना और बाएं हाथ से झाड़ना, अंगों को रगड़ना, वुजू पूरा करना, और सुन्नत से जो दुआ साबित है उसे पढ़ना।

**वुजू के अन्दर मकरूह चीज़ें :** ठंडे या गरम पानी से वुजू करना, एक अंग को तीन बार से अधिक धोना, अंगों से पानी छिड़कना, आँख का अन्दरूनी हिस्सा धुलना, अल्बत्ता वुजू के बाद तौलिया इस्तेमाल करना जायज़ है।

**नोट :** कुल्ली करने में पानी को मुंह के अन्दर घुमाना ज़रूरी है। और नाक में पानी डालते समय पानी को सांस के द्वारा खींचना ज़रूरी है, मात्र हाथ से डालना काफी नहीं है, इसी तरह झाड़ते समय सांस के द्वारा झाड़ना ज़रूरी है।

**वुजू का तरीका :** वजू का तरीका यह है कि : दिल से नियत करे, फिर “बिस्मिल्लाह” कहे, और अपने दोनों हाथों को कलाई तक तीन बार धोए, फिर तीन बार कुल्ली करे, और एक चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए, फिर पूरे चेहरे को (सर के बाल उगने की जगह से लेकर दोनों दाढ़ों और टुड्डी के निचले हिस्से तक लम्बाई में, और एक कान की जड़ से लेकर दूसरे कान की जड़ तक चौड़ाई में) तीन बार धोए, और दाढ़ी घनी हो तो उसका खिलाल करे, और यदि हल्की हो तो धोना ज़रूरी है, फिर दोनों हाथों को दोनों केहनियों तक तीन बार धोए, फिर सर का दोनों कानों समेत इस तरह मसह करे कि दोनों हाथों को सर के अगले हिस्से से गुज़ारते हुए गुद्दी तक लेजाए, फिर उन्हें सर के अगले हिस्से तक वापस ले आए, शहादत की दोनों उँगलियों को कान में डाल ले और अंगूठे से जाहिरी हिस्से का मसह करे, फिर दोनों पैरों को टखनों समेत तीन बार धोए। फिर दुआ पढ़े।

**नोट :** दाढ़ी यदि हल्की हो तो उस के नीचे का चमड़ा धुलना ज़रूरी है, और यदि घनी हो तो मात्र जाहिरी हिस्से को धोले।

**मोज़ों पर मसह करना :** मोज़े चाहे चमड़े के हों या धागा इत्यादि के, यदि वे ऊन के हैं तो उन्हें जौरब कहा जाता है, और मात्र छोटी नापाकी से तहारत के लिए ही इन पर मसह करना दुरुस्त है। जिस के लिए कुछ शर्तें हैं : ① मुकम्मल तहारत के बाद मोज़े पहने हों। ② पानी से तहारत हासिल की हो। ③ मोज़ा टखने के ऊपर तक हो। ④ दोनों मोज़े मुबाह (जायज़) हों। ⑤ और वह पाक चीज़ से बनाए गए हों।

**इमामा (पण्डी) :** कुछ शर्तों के साथ इमामा पर मसह करना जायज़ है : ① इमामा बांधने वाला व्यक्ति नर हो। ② आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो।

③ मसह छोटी नापाकी से तहारत के लिए कर रहा हो। ④ पानी से तहारत हासिल किया हो।

**दुपट्टा :** कुछ शर्तों के साथ दुपट्टे पर मसह करना जायज़ है : ① दुपट्टा औरत के सर पर हो। ② हलक के नीचे से उसे घुमाया गया हो। ③ मसह छोटी नापाकी से तहारत के लिए हो। ④ पानी से तहारत हासिल की हो। ⑤ आम तौर पर सर का जितना हिस्सा ढका जाता है उसे ढके हुए हो।

**मसह की मुद्त (अवधि) :** मुक़ीम के लिए एक दिन और एक रात, और मुसाफ़िर (यात्री) के लिए यदि उसकी यात्रा में नमाज़ क़स्र करना जायज़ हो (अर्थात् 85 कि० मि० का सफर हो) तो तीन दिन और तीन रात।

**मसह की शुरूआत :** पहनने के बाद पहली नापाकी के समय से यह मुद्त शुरू होगी। मुक़ीम के लिए अगले 24 घंटे तक के लिए, और मुसाफ़िर के लिए 72 घंटे तक के लिए।

**फ़ाइदा :** जिसने यात्रा के दौरान मसह किया फिर मुक़ीम हो गया, या इक़ामत (अवस्थान) के दौरान मसह किया फिर मुसाफ़िर होगया, या उसे मसह की शुरूआत के बारे में शक होगया तो वह मुक़ीम की तरह मसह करेगा।

**पलास्टर :** हड्डियों के उपचार के लिए जो पलास्टर बांधे जाते हैं उन पर मसह करने की कुछ शर्तें हैं : ① पलास्टर की उसे ज़रूरत हो। ② ज़रूरत से अधिक जगह पर पलास्टर न लगा हो। ③ मसह करने और बाकी अंगों को धुलने में मुवालात हो। पलास्टर या पट्टी ज़रूरत से अधिक हिस्से पर लगी है तो उसे हटा देना ज़रूरी है, लेकिन यदि नुक़सान का डर हो तो मसह करना काफ़ी होगा।

**मोज़ों पर मसह करने की मिक्दार :** पैर की उँगलियों से लेकर पिंडली तक मसह किया जाएगा। सारी उँगलियाँ खुली हों, और दाएं हाथ की उँगलियों से दाएं पैर का और बाएं हाथ की उँगलियों से बाएं पैर का मसह किया जाएगा।

**फ़ाइदे :** अफ़ज़ल यह है कि दोनों पैरों का मसह एक साथ किया जाए। मोज़े के नीचे या पीछे मसह करना सुन्नत के ख़िलाफ़ है, और मात्र उसी (निचले या पिछले हिस्से) पर मसह करना काफ़ी नहीं है। मसह करने के बजाए पैरों को धुलना और एक बार से अधिक मसह करना मक़ूह है। इमामा और दुपट्टा के अधिक हिस्से पर मसह करना वाजिब है।

**वुजू तोड़ने वाली चीज़ें :** ① पेशाब और पाखाने के रास्ते किसी चीज़ का निकलना चाहे वह पाक हो जैसे हवा और मनी या नापाक हो जैसे पेशाब और मजी। ② नींद और बेहोशी के कारण अक़ल का न होना, थोड़ी सी ऊँघ के अतिरिक्त जो बैठे बैठे अथवा खड़े खड़े आजाए, क्योंकि इस से वुजू नहीं टूटता। ③ पेशाब और पाखाने का अपने रास्ते के इलावः से निकलना। ④ पेशाब और पाखाने के सिवाय शरीर से किसी दूसरी नापाकी का अधिक मात्रा में निकलना, जैसे अधिक मात्रा में खून निकलना। ⑤ ऊँट का गोशत खाना। ⑥ बिना कपड़े वगैरः के हाथ से शरमगाह (इन्द्रिय) छूना। ⑦ मर्द और औरत का शहवत के साथ बिना कपड़े के एक दूसरे को छूना। ⑧ इस्लाम से फिर जाना। और जिसे पाक होने का विश्वास हो और नापाकी के बारे में शक हो, अथवा नापाकी के बारे में विश्वास हो और पाकी के बारे में शक हो तो वह विश्वास के अनुसार अमल करे, यही चीज़ बेहतर है।

**गुस्ले जन्नाबत :** 6 चीज़ों के कारण गुस्ल वाजिब होता है : ① सोने या जगने के अवस्था में मनी का निकलना पर पर जगने के अवस्था में लज़ज़त के साथ निकलना शर्त है। ② पुरुष

के लिंग का हश्फा (खतने में कटा हुआ हिस्सा) स्त्री के इंद्रिय में घुसना, चाहे मनी निकले या न निकले, ③ काफ़िर का इस्लाम लाना। ④ हैज़ (माहवारी) के खून ⑤ और निफ़ास (बच्चा जन्ने के बाद आने वाला खून) के खून से पाक होना। ⑥ मुस्लिम की मौत।

**गुस्ल के फ़रीज़े :** नहाने की नीयत से पूरे बदन पर पानी बहाना और मुंह और नाक में पानी डालना काफ़ी है। और 9 चीज़ों के द्वारा गुस्ल कामिल होता है : ① जनाबत से स्नान की नीयत करे। ② बिस्मिल्लाह कहे। ③ अपने दोनों हाथों को बर्तन में डालने से पहले तीन बार धोए। ④ संभोग के बाद की शरमगाह पर लगी गंदगी को धोए। ⑤ वुजू करे। ⑥ अपने सर पर तीन लप पानी डाले, और उन से बालों की जड़ों को भिगोए और बालों का खिलाल करे। ⑦ और पूरे शरीर पर पानी बहाए। ⑧ अपने दोनों हाथों से पूरे शरीर को मले। ⑨ और दाहिनी तरफ से शुरू करे।

**और किसी भी व्यक्ति को जब छोटी नापाकी होजाए तो उस के लिए तीन चीज़ें हराम होजाती हैं :** ① किसी आड़ के बिना मुसहफ़ को छुना। ② वुजू से रोकने वाले किसी उज्र के बिना फ़र्ज या नफ़ल नमाज़ पढ़ना। ③ का'बा का तवाफ़ करना।

**और यदि बड़ी नापाकी हो तो उपर्युक्त चीज़ों के साथ नीचे दर्ज की हुई चीज़ें भी हराम हो जाती हैं :** ④ क़ूर्आन पढ़ना। ⑤ और वुजू किए बिना मस्जिद में रुकना।

**और वुजू किए बिना** नापाकी के अवस्था में सोना मक़ूह है। और इसी तरह गुस्ल करने में अधिक पानी बहाना भी मक़ूह है।

**तयम्मूम :** तयम्मूम की शर्तें : ① पानी का न मिलना। ② तयम्मूम मुबाह और पाक मिट्टी द्वारा हो जिसके गर्द हों, और जो जला हुआ न हो।

**तयम्मूम के अर्कान :** पुरे चेहरे का मसह करना, और दोनों कलाईयों तक दोनों हाथों का मसह करना, सिलसिलावार करना और बिना देरी किए करना।

**तयम्मूम तोड़ देने वाली चीज़ें :** ① हर वह चीज़ जो कि वुजू को तोड़ने वाली हो। ② यदि तयम्मूम पानी न मिलने के कारण किया हो तो पानी का मिल जाना। ③ तयम्मूम को मुबाह करने वाली चीज़ का ख़तम होजाना। जैसे रोग के कारण तयम्मूम करने वाले का निरोग होजाना।

**तयम्मूम की सुन्नतें :** ① बड़ी नापाकी से तयम्मूम करते समय तर्तीब और मुवालात कायम रखना। ② अन्तिम समय तक के लिए देरी करना। ③ तयम्मूम के बाद वुजू की दुआएं पढ़ना।

**तयम्मूम में मक़ूह चीज़ :** एक बार से अधिक मिट्टी पर मारना।

**तयम्मूम करने का तरीका :** नियत करे फिर बिस्मिल्लाह कहे, और मिट्टी पर अपने दोनों हाथों से एक बार मारे, फिर हथेली के भीतरी हिस्से को अपने चेहरे और दाढ़ी पर फेरे, फिर अपने दोनों हथेलियों का मसह करे, दाईं के बाहरी हिस्से पर बाईं के भित्री हिस्से को फेरे, फिर बाईं के बाहरी हिस्से पर दाईं के भीतरी हिस्से को फेरे।

**नापाकी को दूर करना :** नापाकी दो तरह की होती है : ① ऐनी नापाकी : जिसे पाक करना सम्भव नहीं जैसे सूवर; उसे जितना भी नहलाया जाए वह पाक नहीं हो सकता। ② हुक्मी नापाकी : कपड़े और धर्ती इत्यादि जो कि असल में पाक हैं इन पर नापाकी का लग जाना।

आयान (सजीव तथा निर्जीव वस्तु) तीन तरह के होते हैं		हुक्म
जानवर :	नापाक	जैसे कुत्ता, सूवर, और इनकी शरीर से निकलने वाली चीजें। और वे सभी परिन्दे और पशु जिनके गोशत न खाए जाते हों और वे बिल्ली से बड़े हों। और इस तरह के मवेशी के पेशाब, गोबर, थूक, पसीना, मनी, दूध, रीट और कै सभी नापाक हैं।
	पाक	1) आदमी, इसका मनी, पसीना, थूक, दूध, रीट, बलाम, और स्त्री के शरमगाह की तरी, और इसी तरह इसके सभी अंग और सभी निकलने वाली चीजें सिवाय पेशाब पाखाना, मज़ी, वदी और खून के पाक हैं। 2) हर वह जानवर जिसका गोशत खाया जाता है, उसका पेशाब, गोबर, मनी, दूध, पसीना, थूक, रीट, कै, मज़ी और वदी पाक है। 3) जिससे बच पाना कठिन हो, जैसे गधा, बिल्ली और चूहा, तो इनके मात्र थूक और पसीना पाक हैं।
	मुर्दे	सभी मुर्दे नापाक हैं सिवाए आदमी की मैयत के, और मछली, टिड्डी, और उन जानवरों के जिनकी शरीर से खून न बहता हो, जैसे : बिच्छू, चीऊँटी, और मच्छर।
बे-जान चीजें	तो यह पाक हैं, जैसे धरती, पत्थर, पहाड़ इत्यादि। पर पिछली बेजान चीजें इस में शामिल नहीं हैं।	

**फ़ाएदे :** \* खून और पीप नापाक हैं, लेकिन नमाज़ इत्यादि के अवस्था में पाक जानवर का थोड़ा सा खून और पीप माफ़ है। \* दो चीजों के खून पाक हैं : मछली का खून, और जबह किए हुए जानवर के गोशत और नलियों में बाकी रह जाने वाला खून। \* ज़िन्दा जानवर से काटा हुआ गोशत, और खून और गोशत का लोथड़ा नापाक है। \* गन्दगी दूर करने के लिए नियत शर्त नहीं है, तो यदि वह वर्षा से धुल जाए तो पाक हो जाएगा। \* गन्दगी के छू लेने से या उस पर चलने से वुजू नहीं टूटता, हाँ शरीर और कपड़े में जिस जगह गन्दगी लगी है उस जगह को धुलना ज़रूरी है। \* गन्दगी की पाकी के लिए कुछ शर्तें हैं : ① उसे पाक पानी से धुला जाए। ② यदि वह निचोड़ा जा सकता हो तो पानी के बाहर उसे निचोड़ा जाए। ③ यदि गन्दगी मात्र धुलने से ख़तम न होती हो तो उसे खुर्चा जाए। ④ यदि कुत्ते की नापाकी हो तो सात बार धुला जाए और एक बार मिट्टी लगाकर।

**नोट :** \* धरती पर की नापाकी यदि बहने वाली हो तो उस पर मात्र पानी बहा देना काफी होगा यहाँ तक कि गन्दगी दूर हो जाए, और उसकी बदबू और रंग मिट जाए। और यदि पाखाना इत्यादि हो तो उसे और उसकी निशानी को दूर करना ज़रूरी है। \* यदि पानी के बिना गन्दगी दूर न हो सकती हो तो पानी द्वारा उसे दूर करना ज़रूरी है। \* यदि नापाकी की जगह की जानकारी न हो तो उसे धुला जाएगा यहाँ तक कि उसके धुल जाने का विश्वास हो जाए। \* जिस व्यक्ति ने नफल नमाज़ पढ़ने के लिए वुजू किया हो तो वह उससे फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ सकता है। \* सोने वाले व्यक्ति पर या जिसकी हवा निकल गई हो उस पर इस्तिन्जा करना वाजिब नहीं है; क्योंकि हवा पाक है, हाँ, यदि वह नमाज़ पढ़ना चाहता है तो उस पर वुजू करना फ़र्ज़ है।

## हैज़ और इस्तिहाज़ के मसाल

मसाल	हुकम
हैज़ आने की उम्र (आयु)	हैज़ आने कि कम से कम उम्र 9 वर्ष है, और अधिक की कोई सीमा नहीं है। और यदि 9 वर्ष से पहले खून आए तो वह इस्तिहाज़ा है। <sup>1</sup>
कम से कम हैज़ आने की मुदत (अवधि)	एक दिन और एक रात (24 घंटे) है, यदि इससे कम हो तो वह इस्तिहाज़ा है।
हैज़ आने की सर्वाधिक अवधि	15 दिन हैं, यदि 15 दिन से अधिक खून आए तो वह इस्तिहाज़ा है।
दो हैज़ के बीच पाकी की मुदत	13 दिन हैं, यदि 13 दिन पूरे होने से पहले खून आजाए तो वह इस्तिहाज़ा है।
अधिकतर औरतों के खून आने की मुदत	6 दिन या 7 दिन हैं।
अधिकतर औरतों के पाक रहने की मुदत	23 दिन या 24 दिन हैं।
क्या हमल (गर्भ) के बीच आने वाला खून हैज़ का खून है?	हामिला औरत को आने वाला खून, या <sup>2</sup> मटयालापन या <sup>3</sup> पीलापन इस्तिहाज़ा का खून है।
औरत को पाकी की जानकारी कब होती है?	औरतें दो तरह की होती हैं : ① यदि वह सफ़ेद लैसदार <sup>4</sup> चीज़ देखती हो तो उसके देखने के बाद। ② और यदि वह उसे नहीं देखती है तो शरमगाह का खून, मटयालापन और पीलापन से सूख जाने के बाद वह पाक होजाती है।
पाकी की अवस्था में औरत की शरमगाह से निकलने वाली तरी का क्या हुकम है?	यदि यह पतला या सफ़ेद लैसदार हो तो पाक है, और यदि यह खून हो या उसमें मटयालापन या पीलापन हो तो यह नापाक है और इन सब से वृजू टूट जाता है, और यदि यह निकलता रहे तो इस्तिहाज़ा है।
मटयालापन या पीलापन का क्या हुकम है?	यदि हैज़ के खून के साथ मिला हुवा हो चाहे पहले हो या बाद में तो यह हैज़ है, और यदि मिला न हो तो इस्तिहाज़ा है।
हैज़ के दिन पूरे होने से पहले पाक होजाने का क्या हुकम है?	यदि खून आना बन्द होजाए और औरत पवित्रता देखले तो वह पाक मानी जाएगी, चाहे उसके दिन पूरे न हुए हों।
हैज़ का समय से पहले आजाने या देर से आने का क्या हुकम है?	यदि उसमें हैज़ की निशानियां पाई जाती हों तो यह हैज़ का खून है, इस शर्त के साथ कि दो हैज़ों के बीच 13 दिन का अर्सा हो। नहीं तो इसे इस्तिहाज़ा माना जाएगा।
हैज़ की मुदत में कमी या बेशी होजाए तो इसका क्या हुकम है?	15 दिन तक उसे हैज़ माना जाएगा।
औरत को महीने भर या उससे भी अधिक खून आए तो इसका क्या हुकम है?	इसकी 3 स्थितियां हैं : ① जिसे खून आने के दिन और तारीख की जानकारी हो, लेकिन उसका खून एक ही तरह का हो। तो वह समय और दिन का एतिबार करेगी। ② जिसे तारीख की जानकारी हो लेकिन दिनों की जानकारी न हो, तो वह तारीख के हिसाब से 6 या 7 दिन तक हैज़ शुमार करेगी। ③ जिसे दिनों के बारे में जानकारी हो लेकिन तारीख की जानकारी न हो, तो वह हर हिज़्री महीने के शुरू के दिनों में से जितने दिन उसे आते थे हैज़ का दिन शुमार करेगी।

- 1 हैज़:** बिना किसी बीमारी या बच्चे की पैदाइश के तन्हस्ती के साथ हर महीने औरत से आने वाले खून का नाम हैज़ है।  
**इस्तिहाज़ा :** यह बीमारी का खून है जो बच्चे-दानी के नीचे की रंग से निकलता है, हैज़ और इस्तिहाज़ा में फर्क यह है कि :  
 ① हैज़ का खून लाल सियाही माएल होता है, और इस्तिहाज़ा का खून गहरा लाल होता है, गोया कि वह नक्सीर का खून हो। ② हैज़ का खून गाढ़ा होता है, कभी-कभार उसके टुकड़े भी होते हैं, और इस्तिहाज़ा का खून पतला होता है गोया कि वह घाव से बह रहा हो। ③ अधिकतर हैज़ के खून में बदबू होती है, लेकिन इस्तिहाज़ा का खून आम खून की तरह होता है। और हुकम के लिहाज़ से हैज़ के कारण यह सारी चीज़ें हराम होती हैं : सुहबत करना, इस अवस्था में तलाक देना, नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, तवाफ़ करना, कुर्आन पढ़ना, या उसे छूना और मस्जिद में बैठना इत्यादि।
- 2 कुद्र:** यह बहता हुवा गदले रंग का खून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।
- 3 सुफ़:** यह बहता हुवा पीला माएल खून है जोकि औरत की शरमगाह से निकलता है।
- 4 कस्सतुल बैजा'अु :** यह बहती सफ़ेद चीज़ है जो कि पवित्रता के समय औरत की शरमगाह से निकलती है। और यह कस्सा पवित्र है लेकिन इस से वुजू टूट जाता है।



## निफ़ास के मसाइल

मसाइल	हुक्म
बच्चा जनने के बाद खून का न आना।	ऐसी औरत पर निफ़ास वाली औरत का हुक्म लागू नहीं होगा। उस पर स्नान करना भी वाजिब न होगा, और न ही उसका रोज़ा टूटेगा।
स्त्री का बच्चा जन्म होने की निशानी देखना।	यदि उसे जन्म से काफी समय पहले दर्द के साथ खून और पानी आए तो ऐसे खून को निफ़ास नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा।
जन्म के समय निकलने वाले खून का हुक्म।	इसे निफ़ास का खून माना जाएगा, चाहे बच्चा आधा जन्मा हो, या जन्मा ही न हो, और उस पर इस बीच आने वाली नमाज़ की कज़ा नहीं है।
निफ़ास के दिन का शुमार कब से होगा?	मां के पेट से पूरे तौर पर बच्चे के निकल जाने के बाद से निफ़ास के दिन का शुमार होगा।
निफ़ास की कम से कम मुद्त (अवधि) क्या है?	कम से कम की कोई मुद्त नहीं है, इसी लिए यदि बच्चा जन्म होने के बाद से ही उसे खून न आए तो औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना वाजिब होगा, और वह 40 दिन पूरा होने का इन्तिज़ार नहीं करेगी।
निफ़ास की अधिक से अधिक मुद्त क्या है?	अधिक से अधिक मुद्त 40 दिन है, यदि 40 दिन से अधिक तक खून आए तो उसे निफ़ास नहीं माना जाएगा, बल्कि उस औरत पर स्नान करके नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ होगा, हाँ यदि वह समय उसके हैज़ आने का हो तो उसे हैज़ का खून माना जाएगा।
जिसने 2 या 2 से अधिक बच्चे जन्म दिए हों?	पहले बच्चे के जन्म के बाद से दिन शुमार किया जाएगा।
इस्काते हमल (गर्भ-पात) के बाद आने वाला खून?	यदि 80 दिन या उससे कम का गर्भ हो तो उसके बाद आने वाला खून, इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा, और 90 दिन के बाद गर्भ-पात हुआ हो तो उसके बाद आने वाला खून, निफ़ास का खून माना जाएगा। और यदि 80 और 90 दिन के बीच का गर्भ हो तो उसका ढांचा देखा जाएगा, यदि इन्सानी ढांचा तैयार होगया हो तो आने वाले खून को निफ़ास का खून माना जाएगा, नहीं तो इस्तिहाज़ा का खून माना जाएगा।
40 दिन से पहले पाक होजाए लेकिन दोबारा 40 दिन के अन्दर खून आना शुरू होजाए?	40 दिन के भीतर की पाकी को पाकी मानेगी और इस बीच स्नान करके नमाज़ पढ़ेगी, और यदि फिर दोबारा खून आजाए तो नमाज़ छोड़ देगी, यहाँ तक कि 40 दिन बीत जाए।

**नोट :** \* हैज़ और निफ़ास वाली स्त्री पर वह सारी चीज़ें हराम होंगी जो बड़ी नापाकी वालों पर हराम होती हैं। \* इस्तिहाज़ा वाली औरत पर नमाज़ पढ़ना वाजिब है। और वह हर नमाज़ के लिए वुजू किया करेगी। \* यदि कोई औरत सूरज डूबने से पहले हैज़ या निफ़ास के खून से पाक होजाए तो उसे उस दिन की जुह और अस्त्र की नमाज़ पढ़नी होगी। और यदि फ़ज़्र होने से पहले पाक होजाए तो उसे उस रात की मग़िब और इशा की नमाज़ पढ़नी होगी। \* नमाज़ का समय होजाने के बाद यदि किसी औरत को हैज़ आए तो उस पर उस नमाज़ की कज़ा नहीं है।

\* हैज़ या निफ़ास से पाकी के लिए स्नान करते समय बालों के जूड़ों को खोलना लाज़िम है, लेकिन जनाबत के गुस्ल के लिए खोलना वाजिब नहीं है।

\* इस्तिहाज़ा वाली औरत से सुहबत करना **मकरूह** है, लेकिन ज़रूरत के समय जायज़ है।

\* हैज़ का स्नान कर लेने के बाद इस्तिहाज़ा वाली औरत का हर नमाज़ के लिए वुजू करना वाजिब है, यहां तक कि खून आना रुक जाए।

\* हज़्ज और उम्र: के अर्कान पूरे करने के लिए, या रमज़ान के रोज़े पूरे करने के लिए औरत कोई ऐसी दवा प्रयोग कर सकती है जिस से कुछ समय के लिए हैज़ का खून न आए, लेकिन शर्त यह है कि उसे प्रयोग करने में कोई हानि न हो।

## इस्लाम में औरतों का मुकाम

ईमान और कर्म के आधार पर औरत और मर्द दोनों के दोनों अल्लाह तआला के पास सवाब और फ़ज़ीलत में बराबर हैं। नबी ﷺ का फ़र्मान है : « **إِنَّمَا النِّسَاءُ شَقَائِقُ الرَّجَالِ** » **“अवश्य औरतें मर्दों जैसी हैं”**। अबूदाऊद। औरतें अपने हक़ के लिए मांग कर सकती हैं, इसी प्रकार अन्याय के विरोध में आवाज़ भी उठा सकती हैं, क्योंकि शरीअत में औरतों और मर्दों को एक साथ ही ख़िताब किया गया है, हां कुछ चीज़ों में दोनों में फ़र्क़ है जो कि बहुत थोड़े हैं, और यह फ़र्क़ भी इन के जिसमानी ढांचे और शक्ति का एतिबार करते हुए किया गया है, अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : ﴿ **أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ** ۝ **“क्या वही न जाने जिस ने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी है”** 》 चुनान्वि औरतों का अलग मजाल है और मर्दों का मजाल अलग है।

बल्कि घर में रहते हुए भी औरतों को मर्दों के बराबर सवाब दिया गया है, अस्मा बन्ति यज़ीद से रिवायत है कि वह नबी ﷺ के पास आई, उस समय नबी ﷺ सहाबा ﷺ के साथ थे, उन्होंने ने कहा मेरे मां-बाप आप पर कुर्बान हों, मैं औरतों की ओर से सफ़ीर हूं, और मेरी जान भी आप पर कुर्बान हो, पुरब और पश्चिम में रहने वाली कोई भी ऐसी औरत नहीं है जो मेरे इस निकलने के बारे में सुनी हो या सुने मगर उस का विचार मेरी ही तरह का होगा, अल्लाह ने आप को मर्दों और औरतों की ओर हक़ के साथ भेजा है, सो हम ने आप पर और आप के मा'बूद पर जिस ने आप को भेजा है ईमान लाया, पर हम औरतें घिरी हुई हैं, आप मर्दों के घरों में बैठी हुई हैं, आप की खाहीशे पूरी करती हैं, आप के बच्चों का गर्भ उठाती हैं, और आप सारे मर्द जुम्आ, जमाअत, बीमारों की इयादत, हज्ज पर हज्ज करके, बल्कि इस से भी बढ़कर यह कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा हम पर फ़ज़ीलत दिए गए हैं, जबकि आप मर्द हज़्ज़ात जब हज्ज, उम्रा या जिहाद के लिए जाते हैं, तो हम ही आप के माल की हिफ़ाज़त करते हैं, आप के कपड़े सिलते हैं, आप के बच्चों को पालते हैं, तो ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अज़्रो-सवाब में आप के साझी नहीं हो सकते? रावी कहते हैं कि नबी ﷺ ने सहाबाए कराम की ओ अपना चिहरा किया और उन से पूछा : **“क्या तुम ने धर्म सम्बन्ध में इस से उत्तम प्रश्न किसी औरत से कभी सुना है?”** तो उन्होंने जवाब दिया ऐ अल्लाह के रसूल हमें ऐसा नहीं लगता था कि कोई औरत भी इस तरह का प्रश्न कर सकती है। फिर नबी ﷺ ने उस ख़ातून की ओर अपना चेहरा किया और फ़र्माया : **“ऐ ख़ातून! लौट जा, और अपने पीछे वालियों को बता दे कि तुम्हारा अपने पति के साथ उत्तम बर्ताव करना, उनकी खाहिशें पूरी कर देना, और उन की बातें मान लेना इन सभों के बराबर है”**। रावी कहते हैं कि वह ख़ातून ख़ूशी के मारे तक्वीर और तहलील करते हुए वापस लौटी। बैहकी। और इसी तरह कुछ औरतों ने आकर नबी ﷺ से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल मर्द हज़्ज़ात तो अल्लाह के रास्ते में जिहाद द्वारा फ़ज़ीलत में हम से काभी आगे बढ़ गए तो क्या हमारे लिए कोई ऐसा कर्म नहीं है जिस के द्वारा हम मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त कर सकें? तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : **“अपने घर के काम काज द्वारा तुम्हें मुजाहिदों जैसा सवाब प्राप्त होता है”**। बैहकी। बल्कि किसी करीबी औरत पर इहसान का शरीअत में बहुत महत्व है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : **“जिस ने अपनी दो बेटियों, या दो बहनों, या दो करीबी औरतों पर खर्च किया यहां तक कि अल्लाह ने उन के लिए बन्दोबस्त कर दिया या उन्हें मालदार कर दिया, और इस खर्च द्वारा उस ने सवाब की उम्मीद रखी हो तो यह दोनों उस के लिए जहन्नम से पर्दा होंगी”**। अहमद और तब्रानी।

## औरतों से संबन्धित कुछ आदेश

★ किसी ग़ैर महरम<sup>1</sup> मर्द का किसी अजनबी औरत के साथ तन्हाई में मिलना हराम है। नबी ﷺ ने फ़र्माया : **“महरम के बिना कोई मर्द किसी अजनबी औरत के साथ अकेला न हो”**। बुख़ारी और मुस्लिम।

★ औरत के लिए मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मुबाह है, पर यदि फितने का डर है तो मक्कूह है, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़र्माती हैं : **“औरतों ने जो कुछ कर रखा है, यदि नबी ﷺ ने इसे देखा होता तो मस्जिद आने से रोक देता, जिस प्रकार बनू इस्राईल की औरतें रोक दी गई थीं”**। बुख़ारी और मुस्लिम। और जिस प्रकार मर्दों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर अधिक सवाब मिलता है उसी प्रकार औरतों को घर में नमाज़ पढ़ने पर अधिक सवाब मिलता है। एक ख़ातून नबी ﷺ के पास आई और कहने लगी ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप के साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हूँ। तो आप ﷺ ने फ़र्माया : **“मैंने जान लिया कि तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हो, पर तेरा अपने घर के भित्री रूम में नमाज़ पढ़ना बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और बाहर के रूम में नमाज़ पढ़ना घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और घर की चहार दीवारी में नमाज़ पढ़ना अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है”**। अहमद। और आप ﷺ ने फ़र्माया : **“औरतों की बेहतर मस्जिद उनका घर है”**।

★ यदि साथ में सफ़र करने वाला महरम न हो तो औरतों पर हज्ज या उम्रा वाजिब नहीं है। और महरम के बिना उन के लिए यात्रा करना भी जायज़ नहीं है; नबी ﷺ का फ़र्मान है: **“महरम के बिना कोई औरत तीन रात से अधिक का सफ़र न करे”**। बुख़ारी और मुस्लिम।

★ औरतों के लिए क़ब्र की ज़ियारत करना और जनाज़ा के साथ चलना हराम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : **“क़ब्र की ज़ियारत करने वालियों पर अल्लाह ने लानत भेजी है”**। और उम्मे अज़तीया रिवायत करती हैं कि : **“हमें जनाज़ा के पीछे चलने से रोक दिया गया। पर सखती नहीं की गई”**। बुख़ारी और मुस्लिम।

★ औरत के लिए काले के सिवाय किसी भी कलर का बाल डाई करना जायज़ है, इस शर्त के साथ कि उस में निकाह का पैग़ाम देने वाले के लिए धोका न हो।

★ औरतों को मीरास में से हिस्सा देना वाजिब है, और उनसे मीरास रोक लेना हराम है, नबी ﷺ से मर्वी है कि आप ने फ़र्माया : **“जिस ने अपने वारिस का मीरास रोक लिया, अल्लाह कियामत के दिन जन्नत में उस का मीरास रोक लेगा”**। इब्ने माजा।

★ पती पर भलाई के साथ पत्नि के खाने पीने, पहन्ने और घर का खर्च उठाना वाजिब है। अल्लाह ﷻ का फ़र्मान है : **“हैसियत वाले को अपनी हैसियत से खर्च करना चाहिए और जिस पर उस की रोज़ी की तंगी की गई हो उसे चाहिए कि जो कुछ अल्लाह ने उसे दे रखा है उसी में से अपनी हैसियत अनुसार दे”** पर यदि वह पति वाली न हो तो उस के बाप या भाई या बेटे पर उस का खर्च उठाना वाजिब है। पर यदि उस का कोई करीबी मर्द नातेदार न हो सारे लोगों पर उस का खर्च उठाना मुस्तहब है; नबी ﷺ का फ़र्मान है : **“बेवा**

1 औरत के लिए महरम वह व्यक्ति है जिस से जीवन में कभी भी शादी करना जायज़ नहीं है, जैसे : बाप, दादा पदादा वगैरह, बेटे, पोते, परपोते वगैरह, भाई, भतीजे, भान्जे, चच्चा, मामू, ससूर, सौतेले बेटे, रिज़ाई बाप, बेटा और भाई, दामाद और मां का शौहर।

औरतों और गरीब लोगों पर खर्च करने वाले का सवाब अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है, या उस व्यक्ति के सवाब की तरह जो रात में कियाम करता है और दिन में रोज़ा रखता है”। बुख़ारी और मुस्लिम।

★ औरत अपने छोटे बच्चे के पालण-पोषण करने का हक़दार जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से शादी नहीं कर लेती। और जब तक बच्चा मां के पास है उस के पिता पर खर्च उठाना लाज़िम होगा।

★ औरत से सलाम करने में पहल करना मुसतहब नहीं है खासकर यदि वह जवान हो, या बुराई का डर हो।

★ प्रत्येक सप्ताह बग़ल का बाल उखाड़ना, नाभी के नीचे का बाल मुंडना, और नाखून काटना मुसतहब है, और चालीस दिन से अधिक तक छोड़े रखना मक़ूह है।

★ चेहरे और भौं के बाल को उखाड़ना ह़राम है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “अल्लाह ने लानत भेजी भौं बनाने वाली और बनवाने वालियों पर”। अबू-दाऊद।

★ **सो़ग मन्नाज़** : औरत पर शौहर के अलावा किसी दूसरे के लिए 3 दिन से अधिक सो़ग मनाना ह़राम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “किसी औरत के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो यह जायज़ नहीं कि पति कि सिवाय किसी दूसरे मैयत पर 3 दिन से अधिक सो़ग मनाए”। चुनान्वि शौहर पर 4 महीने 10 दिन सो़ग मनाना वाजिब है। सो़ग के दिनों में श्रंगार करना, खुशबू जैसे जाफ़रान लगाना, ज़ेवर पहनना, चाहे अंगूठी ही क्यों न हो, डिज़ाइन वाले रंगीन लाल, पीले कपड़े पहनना, मैहदी लगाना, मेक-अप करना, काला सुर्मा लगाना, या खुशबूदार तेल लगाना ह़राम है। सो़ग के दिनों में नाखून काटना, बाल उखाड़ना, और नहाना जायज़ है। ऐसी औरत पर किसी ख़ास रंग का जैसे काला कपड़ा पहनना वाजिब नहीं है। इद्त के दिनों में इसका उसी घर में रहना वाजिब है, जिस में शौहर की मृतयु के समय थी। बिना ज़रूरत के उस के लिए जगह बदलना ह़राम है। और इसी प्रकार बिना ज़रूरत के दिन में घर से बाहर भी न निकले।

★ बिना ज़रूरत औरत के लिए अपने सर का बाल मुंडवाना ह़राम है, काटना जायज़ है पर उस में मर्दों की नक़ाली न हो, क्योंकि ह़दीस में नबी ﷺ ने उन औरतों पर लानत भेजी है जो मर्दों का रूप धारती हैं। तिमिज़ी। और इसी प्रकार इस कटिंग में काफ़िर औरतों की भी नक़ाली न हो; क्योंकि ह़दीस में है : जिसने दूसरी क़ौम का रूप धारा तो उस की गिन्ती उसी में होगी। अबू-दाऊद।

★ औरत का घर से निकलते समय अपनी शरीर को ऐसी चादर से ढकना अनिवार्य है जिसमें निम्न शर्तें पाई जाती हों। ① पूरे शरीर को ढांपे हो। ② उसमें नक़शो-निगार न हो। ③ इतनी मोटी हो कि शरीर न दिखे। ④ तंग न हो। ⑤ उसमें खुशबू न लगी हो। ⑥ मर्दों के कपड़ों जैसा न हो। ⑦ काफ़िर औरतों के कपड़े की तरह न हो। ⑧ जिस के पहन्ने में शोहरत न हो। और ऐसा कपड़ा जिसमें इन्सान या जानवर का पिक़चर हो उसे पहन्ना, या उसे लटकाना या उसे दीवार इत्यादि का पर्दा बनाना या उसे बेचना जायज़ नहीं है।

★ दूसरों के सामने औरतों की शरीर का प्रदा तीन प्रकार का है : ① उस का शौहर उस के पूरे जिस्म को देख सकता है। ② औरतें और उस के महरम के लिए उस के जिस्म का मात्र उतना ही हिस्सा देखना जायज़ है जो साधारण तौर पर खुला रहता है। जैसे : चेहरा,

बाल, गर्दन, हाथ, बाजू और पैर इत्यादि। ③ अजनबी मर्दों के लिए उस के जिस्म के किसी भी हिस्से का देखना सिवाय ज़रूरत के जायज़ नहीं है, जैसे निकाह के ख़ितबे या इलाज इत्यादि के लिए। इस लिए कि औरत का असल फ़ितना उस के चेहरे में है, और फ़तिमा बिनति मुन्ज़िर फ़र्माती हैं : “हम मर्दों से अपने चेहरे को छुपाया करती थीं”। हाकिम। और आइशा फ़र्माती हैं : “हम अल्लाह के रसूल के साथ इहराम की हालत में थीं जब हमारे सामने से काफ़ले वाले गुज़रा करते थे, वह जब हमारे बराबरी में होते तो हम औरतों अपने दुपट्टे अपने सर से अपने चेहरे पर डाल लिया करती थीं, और जब वे आगे निकल जाते तो अपने चेहरे खोल लिया करती थीं”। अबू-दाऊद।

★ **इद्दत** : कई प्रकार की होती है। ① हामिला के लिए तलाक़ और शौहर की वफ़ात की इद्दत है बच्चा जन्म देना। ② जिस के शौहर की वफ़ात हो गई हो उस की इद्दत 4 महीने 10 दिन है। ③ जिस औरत को हैज़ आता हो उसकी तलाक़ की इद्दत तीन हैज़ है जो कि तीसरे हैज़ से पाक होने के साथ पूरी होजाती है। ④ जिसे हैज़ न आता हो उसकी इद्दत 3 महीने है। रजई तलाक़ की इद्दत गुज़ारने वाली औरत पर शौहर के घर ही में रह कर इद्दत पूरी करना वाजिब है, इस बीच शौहर के लिए उसके किसी भी अंग को देखना और अकेले में उसके साथ रहना जायज़ है, हो सकता है अल्लाह तआला उन दोनों के बीच सुलह करादे।

शौहर के यह कहने से कि मैं ने तुझे वापस लौटाया, या सुहबत करने से बीवी निकाह में लौट आती है, रजई तलाक़ हो तो लौटाने के लिए बीवी की रिज़ामन्दी ज़रूरी नहीं है।

★ औरत स्वयं अपनी शादी नहीं कर सकती है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस औरत ने भी वली की मर्जी के बिना शादी की तो उस का निकाह बातिल है”। अबू-दाऊद।

★ औरतों पर अपने बालों के साथ दूसरे बालों को जोड़ना, या जिस्म पर गोदाई गोदना हराम है, बल्कि यह बड़े गुनाहों में से है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “अल्लाह की लानत है बालों को जोड़ने और जोड़वाने वाली पर, और गोदना गोदने और गोदवाने वाली पर”। बुख़ारी और मुस्लिम।

★ औरतों पर अपने शौहर से बिना किसी सबब के तलाक़ मांगना हराम है, नबी ﷺ का फ़र्मान है : “जिस किसी औरत ने भी बिना किसी कारण के अपने पति से तलाक़ मांगा तो उस पर जन्नत की खुशबू हराम है”। अबू-दाऊद।

★ औरतों पर भलाई के साथ अपने पति की बात मानना वाजिब है, और खास कर बिछौना पर जाने के लिए। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “पति ने अपनी पत्नी को यदि बिस्तर पर बुलाया और वह आने से इन्कार कर दी, फिर पति ने गुस्से में रात गुज़ारी तो सवेरे तक फ़रिश्ते पत्नी पर लानत भेजते रहते हैं”। बुख़ारी और मुस्लिम।

★ औरतों पर यदि रास्ते में अजनबी मर्दों से मिलने की जानकारी हो तो उन पर खुशबू लगाना भी हराम है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “यदि औरत खुशबू लगाकर लोगों के बीच उसे सुंघाने के लिए गई तो वह इस इस प्रकार की है, अर्थात वेश्या है”। अबू-दाऊद।

## नमाज़

**अज्ञान और इक़ामत :** हज़र (मुक़ीम होने की हालत) में अज्ञान देना और इक़ामत कहना मर्दों पर फ़र्ज़ किफ़ायत है, पर यात्री और अकेले नमाज़ी के लिए सुन्नत है, और औरतों के लिए **मकरूह** है, और समय से पहले अज्ञान देना जायज़ नहीं है, मात्र फ़ज़्र की पहली अज्ञान आधी रात के बाद दे सकते हैं।

**नमाज़ की शर्तें :** 9 हैं : **1.** इस्लाम, **2.** अक़ल, **3.** तर्म्दज़ (पहचान), **4.** शक्ति हो तो पाकी हासिल करना, **5.** नमाज़ का समय होना, **जुह का समय** सूरज ढलने के बाद से हर चीज़ का साया उसके बराबर होने तक रहता है, **फिर अस्त्र का समय** शुरू होजाता है, और इसका इख़्तियारी समय हर चीज़ का साया उसके दुगना होने तक रहता है, फिर सूरज डूबने तक ज़रूरत का समय बाकी रहता है, **फिर मग़ि़ब का समय** शुरू होजाता है आसमान की लाली गायब होने तक, **फिर इशा का समय** शुरू होजाता है, और इस का इख़्तियारी समय आधी रात तक होता है, फिर फ़ज़्र उदय होने तक ज़रूरत का समय बाकी रहता है। और इसके बाद से **फ़ज़्र का समय** सूरज निकलने तक रहता है। **6.** शरमगाह को छुपाना<sup>1</sup> **7.** शक्ति भर शरीर, कपड़े और जा-ए-नमाज़ से नापाकी दूर करना। **8.** शक्ति भर का'बा की ओर चेहरा करना। **9.** दिल से नियत करना।

**नमाज़ के अर्कान :** 14 हैं : **1.** ताक़त हो तो फ़र्ज़ नमाज़ों में खड़ा होना। **2.** तक्बीरतुल् इहाम कहना। **3.** सुरतुल् फ़ातिहा पढ़ना। **4.** हर रक़अत में रुकुअ़ करना। **5.** रुकुअ़ से उठना। **6.** रुकुअ़ के बाद खड़े होकर एतिदाल करना। **7.** सात अंगों पर सज्दा करना। **8.** दोनों सज्दों के बीच बैठना। **9.** अन्तिम तशहहुद पढ़ना। **10.** अन्तिम तशहहुद के लिए बैठना। **11.** अन्तिम तशहहुद में नबी ﷺ पर दरूद भेजना। **12.** पहला सलाम। **13.** इन सभी अर्कान को इत्मीनान से करना। **14.** और इन्हें सिलसिलावार करना।

इन अर्कान को किए बिना नमाज़ सहीह नहीं होगी। और इन में से किसी भी एक रुकन को छोड़ देने या भूल से उस के छूट जाने के कारण नमाज़ बातिल होजाती है।

**नमाज़ के वाजिबात :** 8 हैं : **1.** तक्बीरतुल् इहाम के सिवाय बाकी सभी तक्बीरें। **2.** इमाम और अकेले नमाज़ी का **“समिअल्लाहु लिमन् इमिदह्”** कहना। **3.** रुकुअ़ से उठने के बाद **“रब्बना व लकल् इम्द्”** कहना। **4.** रुकुअ़ में एक बार **“सुब्हान रब्बियल् अज़ीम”** कहना। **5.** सज्दा में एक बार **“सुब्हान रब्बियल् आ'ला”** कहना। **6.** दोनों सज्दों के बीच **“रब्बिग़्फ़र्ली”** कहना। **7.** पहला तशहहुद। **8.** पहले तशहहुद के लिए बैठना। इन वाजिबात को यदि जान बूझ कर छोड़ दिया हो तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। और यदि भूल से छुट गए हों तो सज्द-ए-सह्व करना होगा।

**नमाज़ की सुन्नतें :** नमाज़ में पढ़े और किए जाने वाले बाकी कर्म हैं, जिन्हें जान बूझ कर भी छोड़ देने से नमाज़ बातिल नहीं होती। पढ़ी जाने वाली सुन्नतों का चर्चा नीचे किया जा रहा है : दुआ-ए-सना, अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ना। आमीन कहना, और इसे ज़ही नमाज़ों में ऊँची आवाज़ से कहना। सुरतु-ल्-फ़ातिहा के बाद दूसरी सुरतें मिलाना, ज़ही नमाज़ों में इमाम का ऊँची आवाज़ से पढ़ना, मुक़्तदी ऊँची आवाज़ से नहीं पढ़ सकता, पर

<sup>1</sup> इन्सान की शरमगाह और वह चीज़ जिस से उसे हया आए। सात साल के बच्चे पर दोनों शरमगाह का पर्दा है, और 10 के हो जाने पर नाफ़ से घुटने के बीच का पर्दा वाजिब है। और बालिगा आज़ाद औरत पर मुकम्मल पर्दा है सिवाय उसके चेहरे, दोनों हथेली और दोनों पैर के, इन्हें नमाज़ में ढाँपना मकरूह, परन्तु अजनबी मर्दों की मौजूदगी में इन्हें ढाँपना ज़रूरी है। अतः यदि नमाज़ या त्वाफ़ में उस के बाजू खुले हों तो उस की नमाज़ बातिल है, जो कि कबूल नहीं होगी। और नमाज़ के अलावा भी दोनों शरमगाहों का पर्दा सख्ती के साथ ज़रूरी है। तन्हाई और अन्धेरे में भी बिना ज़रूरत उन्हें खोलना मकरूह है।

अकेले पढ़ने वाले व्यक्ति को इख्तियार है। “रब्बना व लक-ल-हम्दु” के बाद “हम्दुन् कसीरन् तैइबन् मुबारकन् फ़ीहि मिल्अ-स-समावाति व मिल्अ-ल-अर्जि ...” अन्तिम तक पढ़ना। और रुकूअ और सज्दे में एक बार से अधिक तस्बीह पढ़ना, इसी तरह “रब्बिफ़िल्” एक बार से अधिक पढ़ना, और सलाम से पहले दुआएं पढ़ना। और की जाने वाली सुन्नतें यह हैं : तक्बीरतु-ल-इहाम के समय, रुकूअ करते समय, रुकूअ से उठते समय और पहले तशहहुद से खड़ा होने के समय रफ़उ-ल-यदैन करना, और कियाम के समय दाएं हाथ को बाएं हाथ पर रख कर छाती पर बांधना, दोनों पैरों के बीच दूरी रखना, सज्दे की जगह पर देखना, सज्दा करते समय धरती पर पहले दोनों घुटनों को फिर दोनों हाथों को, फिर पेशानी और नाक को रखना, और दोनों बाजूओं को पहलू से, और पेट को अपने दोनों जांघों से, और जांघों को दोनों पिन्डिलियों से दूर रखना, और दोनों घुटनों के बीच दूरी रखना, दोनों पैरों को खड़ा रखना, उँगलियों को काबे की ओर किए रखना, और दोनों हाथों को मोठे की बराबरी में रखना, उँगलियां समेटे रखना, पैरों के बल, दोनों हाथों से दोनों घुटनों पर सहारा लेते हुए खड़ा होना। दोनों सज्दों के बीच और पहले तशहहुद में बायां पैर बिछाकर उस पर बैठना और दायां पैर खड़ा रखना, और अन्तिम तशहहुद में बाएं पैर को दाएं पैर के नीचे से निकालना और ज़मीन पर बैठना। और दोनों सज्दों के बीच और इसी प्रकार तशहहुद में दोनों हाथों को फैलाकर दोनों जांघों पर रखना, उँगलियां मिलाए रखना। पर दाएं हाथ के किनारे वाली दोनों उँगलियों को समेटे रखे, और अंगूठे से बीच वाली उँगली के साथ गोल घेरा बनाए और शहादत की उँगली से अल्लाह की वहदानियत का इशारा करता रहे, और सलाम फेरते समय दाएं और बाएं ओर घूमे, पहले दाईं ओर से शुरू करे।

**सज्द-ए-सह्व :** यदि किसी मशरूअ ज़िक्र को भूल कर दूसरी जगह पढ़ दिया जैसे सज्दे में कुरआन पढ़ने लगा तो ऐसी स्थिति में सज्द-ए-सह्व करना मस्तून है, और यदि किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो सज्द-ए-सह्व करना मुबाह है, और यदि रुकूअ या सज्दा, या कियाम, या का'दा अधिक कर दिया या नमाज़ पूरी होने से पहले सलाम फेर दिया, या ऐसी गलती कर बैठा जिस से मतलब बदल जाए, या वाजिब छोड़ दिया, या नमाज़ के बीच ही उसे अधिक पढ़ लेने का शक हुवा तो उस पर सज्द-ए-सह्व करना वाजिब है, और जान बूझ कर वाजिब सज्द-ए-सह्व छोड़ देने से नमाज़ बातिल हो जाती है। और यदि चाहे तो सलाम से पहले या तो सलाम के बाद सज्द-ए-सह्व करे, और यदि सज्द-ए-सह्व करना भूल गया और समय भी अधिक हो गया तो फिर करने की ज़रूरत नहीं।

**नमाज़ का तरीका :** जब नमाज़ के लिए खड़ा हो तो क़िब्ले की ओर चेहरा करे, और “अल्लाहु अक्बर” कहे, यदि इमाम हो तो मुक्तदी को सुनाने के लिए ऊंची आवाज़ में तक्बीर कहे, तक्बीर कहते समय अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों तक उठाए, फिर दाईं हथेली से बाईं हथेली पकड़े और उसे अपने सीने पर बांध ले, और नज़र सज्दे की जगह पर गड़ाए रहे, पस्त आवाज़ में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे : “सुब्हानकल्लाहुम्म व बिह्मिदिक व तबारकस्मुक व तअाला जहुक व लाइलाह ग़ैरुक” फिर अऊजु बिल्लाह पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-ल-फ़ातिहा पढ़े, जहाँ नमाज़ों में इमाम के सक्तों में पढ़ना मुस्तहब है, फिर कोई और सूरत मिलाए, सवेरे की नमाज़ में तिवाले मुफ़स्सल पढ़ना, मग़्रिब में किसारे मुफ़स्सल और बाकी नमाज़ों में अवसाते मुफ़स्सल पढ़ना मुस्तहब है। तिवाले मुफ़स्सल सूरते “काफ़” से लेकर सूरते “अम्म” तक है, और अवसाते मुफ़स्सल “सूरतुज्जुहा” तक है, और “अन्नास” तक किसारे मुफ़स्सल है। फ़ज़्र की नमाज़ में और मग़्रिब और इशा की पहली दोनों रकअतों में इमाम ऊंची

आवाज़ में किराअत करे, और बाकी नमाज़ों में आवाज़ पस्त रखे। फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहे, तक्बीरतुल-इहराम में रफ़उ-ल्-यदैन करने की तरह रफ़उ-ल्-यदैन करे, और रुकुअ् में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर रखे, उँगलियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखे, फिर 3 बार **“सुब्हान रब्बिय-ल्-अज़ीम”** कहे, फिर **“समिअल्लाहु लिमन् इमिदह्”** कहते हुए सर उठाए, तक्बीरतु-ल्-इहाम में रफ़उ-ल्-यदैन करने की तरह रफ़उ-ल्-यदैन करे, जब सीधा खड़ा होजाए तो **“रब्बना व लक-ल्-हम्दु हम्दन् कसीरन् तैयेबन् मुबारकन् फीहि मिल्अ-स-समावाति व मिल्अ-ल्-अर्ज़ि व मिल्अ माबैनहुमा व मिल्अ मा शिअ्त मिन शैइ-म्-बा’द्”** पढ़े। फिर **“अल्लाहु अक्बर** कहते हुए सज्दे में जाए, और अपने दोनों बाजूओं को पहलू से, और पेट को दोनों रानों से हटाए रखे, और दोनों हाथों को कंधों की बराबरी में रखे, दोनों पैरों के किनारों को धरती से लगाए रखे, उँगलियों को काबे की ओर करे, और सज्दे में 3 बार **“सुब्हान रब्बिय-ल्-आअ़ला”** कहे, और चाहे तो दूसरी दुआएं भी मिलाए, फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहते हुए सर उठाए, और बायां पैर बिछा कर उस पर बैठे, और दायां पैर खड़ा रखे, और उँगलियों को काबे की ओर मोड़ ले, या दोनों पैरों को गाड़ ले और उँगलियां काबा की ओर मोड़ ले, और एड़ी पर बैठे, और 3 बार **“रब्बिग़िर्ली”** कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाए, **“वर्हम्नी, वज्बुनी, वर्फ़अनी, वर्जुकनी, वन्सुनी, वह्दिनी, व आफिनी, वअफ़ु अन्नी”**, फिर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे, फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहते हुए सर उठाए, और दोनों पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा होजाए, और पहली रकअत की तरह दूसरी रकअत पढ़े, दूसरी रकअत पढ़ कर तशहहूद के लिए बैठे जिस तरह दोनों सज्दों के बीच में बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर रखे, और दाएं को दाएं जांघ पर, किनारे की दोनों उँगलियों को मोड़ले, और अंगूठे और बीच वाली उँगली का गोल घेरा बनाले, और शहादत की उँगली से इशारा करता रहे, और तह्नीयात पढ़े : **“अत्तहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैक ऐयुहन्नबियु व रह्मतुल्लाहि व बरकातुह्, अस्सलामु अलैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन्, अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुह्”**। फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहते हुए तीसरी रकअत के लिए उठे, और रफ़उ-ल्-यदैन करे, और चौथी रकअत के लिए उठते हुए रफ़उ-ल्-यदैन न करे, पहली रकअत ही की तरह तीसरी और चौथी रकअत भी पढ़े, लेकिन इन्में दूसरी सूरतें न मिलाए, और न ही आवाज़ उंची करे, फिर अन्तिम तशहहूद के लिए तवरूक करके बैठे, बायां पैर बिछाकर उसे दाएं पैर के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को गाड़े रखे, और धरती पर बैठे, मात्र अन्तिम तशहहूद में तवरूक करना सुन्नत है, फिर तह्नीयात पढ़े, फिर सलात पढ़े : **“अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुहम्मद्, कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद्, अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मदिं-व्व-अ़ला आलि मुहम्मद्, कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद्,”** और **“अल्लाहुम्म इन्नी अज़्जु बिक मिन् अज़ाबिल्क़ब्रि व अज़ाबिन्नारि व फिलति-ल्-मह्या वल्माति व शरिं-ल्-मसीहिद्ज्जालि”** और दूसरी दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है, फिर दोनों ओर सलाम फेरे, दाएं ओर चेहरे को करते हुए **“अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह्”** कहे और इसी तरह बाएं ओर करते हुए भी। और सलाम के बाद यह दुआएं पढ़े।<sup>1</sup>

<sup>1</sup> तीन बार **“अस्तिफ़िरुल्लाह्”** कहे, फिर पढ़े : **“अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्त या ज़ल्जलालि व-ल्-इक्राम्, लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहु-ल्-मुल्कु व लहु-ल्-हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् कदीर्, ला हौल व ला क़वत**



**रोगी की नमाज़ :** यदि रोगी को खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से बीमारी बढ़ जाने का डर हो, या वह खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की शक्ति न रखता हो, तो बैठ कर नमाज़ पढ़े, यदि इस की भी शक्ति न रखता हो पहलू के बल नमाज़ पढ़े, और यदि यह भी सम्भव न हो तो पीठ के बल लेट कर नमाज़ पढ़े।

और यदि रुकु'अ और सज्दा करने की शक्ति न हो तो इशारा से रुकु'अ और सज्दा करे, और ज़रूरी है कि छूटी हुई नमाज़ों की कज़ा करे। और यदि बीमारी के कारण नमाज़ों को अपने अपने समय पर पढ़ने की शक्ति न रखता हो तो जुह और अस्त्र की नमाज़ इकट्ठा कर के जुह या अस्त्र के वक्त में और इसी तरह मग़िब और इशा की नमाज़ इकट्ठा कर के मग़िब या इशा के समय में पढ़ सकता है।

**मुसाफ़िर की नमाज़ :** यदि मुसाफ़िर की यात्रा की दूरी लगभग 80 कि० मी० से अधिक हो, और उस का सफ़र मुबाह हो तो उस के लिए अफ़ज़ल यह है कि 4 रक्'अत वाली नमाज़ों को कस्र कर के 2 रक्'अत पढ़े, वैसे 4 रक्'अत भी पढ़ना जायज़ है। और यदि वह यात्रा के बीच किसी जगह 4 दिन (20 नमाज़) से अधिक ठहरना चाहता हो तो वहाँ पहुँच कर कस्र किए बिना नमाज़ें पूरी पढ़े। और यदि उस ने मुक़ीम की इमामत में नमाज़ पढ़ी, या जाएकियाम (निवासस्थान) की भूली हुई नमाज़ उसे यात्रा के बीच याद आई या इस के बरख़िलाफ़ तो इन सभी अवस्था में उसे नमाज़ पूरी पढ़नी होगी।

**जुम्आ की नमाज़ :** जुम्आ की नमाज़ जुह की नमाज़ से अफ़ज़ल है, जो कि जुह के अलावा मुस्तक़िल एक नमाज़ है, न कि जुह की कस्र नमाज़ है, इसलिए इसे 4 रक्'अत पढ़ना जायज़ नहीं, और न ही जुह की नियत से पढ़ने से यह नमाज़ होती है, इसी तरह इसे अस्त्र की नमाज़ के साथ इकट्ठा करके पढ़ना भी जायज़ नहीं है, चाहे इकट्ठा करने का सबब मौजूद ही क्यों न हो।

**वित्र की नमाज़ :** वित्र की नमाज़ सुन्नत है, जिसका समय इशा से लेकर फ़जर उदय होने तक रहता है, इस की कम से कम संख्या 1 रक्'अत है, और अधिक 11 रक्'अत है, प्रत्येक 2 रक्'अत के बाद सलाम फेरना अफ़ज़ल है, 2 सलाम के साथ 3 रक्'अत पढ़ना यह अदना (न्यूनतम) कमाल है, इन्में पहली रक्'अत में सुरतुल् आ'ला, दूसरी में सुरतुल् काफ़िरून, और तीसरी में सुरतुल् इज़्लास पढ़ना मस्नुन है। रुकु'अ के बाद हाथ उठाकर कुनूत पढ़ना मुस्तहब है, औश्र ऊंची आवाज़ में दुआ करे चाहे अकेले ही क्यों नमाज़ न पढ़ रहा हो।

**जनाज़ की नमाज़ :** मुस्लिम मैयत को नहलाना, उसे कफ़न देना, उस पर जनाज़ की नमाज़ पढ़ना, उसे कंधा देना, और उसे दफ़न करना फ़र्जे क़िफ़ायः है, पर जंग में शहीद होने वाले मैयत को नहलाया नहीं जाएगा, और न ही उसे दूसरे कपड़ों में कफ़न दिया जाएगा, बल्कि उसे खून में ही लत-पत दफ़न कर दिया जाएगा, हाँ उसकी नमाज़े जनाज़ः पढ़ना जायज़ है। मर्द को 3 सफ़ेद चादरों का कफ़न दिया जाएगा, और औरतों को 5 सफ़ेद चादरों का, एक तहबंद होगा, दूसरा दुपट्टा, तीसरी कमीज़ होगी और बाकी दो चादरों में उसे लपेटा जाएगा।

इल्ला बिल्लाह, लाइलाह इल्लल्लाहु व ला ना'अबुदु इल्ला इय्याहु लहु-न्-ने'मतु व लहु-ल्-फ़ज़्लु व लहु-स्-सनाउ-ल्-हसनु लाइलाह इल्लल्लाहु मुख़िलसीन लहुदीन व लौ करिह-ल्-काफ़िरून, अल्लाहुम्म ला मानिअ लिमा आ'अतैत व ला मु'अतिअ लिमा मन'अत व ला यन्फ़उ ज-ल्-जदि मिनक-ल्-जद्द" फ़न्न और मग़िब की नमाज़ के बाद इन दुआओं के साथ साथ 10 बार "लाइलाह इल्लल्लाहु व्हदहू ला शरीक लहु लहु-ल्-मुल्कु व लहु-ल्-हम्दु युह्यी व युमीतु व हुव अला कुल्लि शैइन् कदीर्" कहे, फिर 33 बार सुब्हानल्लह, 33 बार अल्लहुमु लिल्लाह, 33 बार अल्लाहु अक्बर और एक बार. "लाइलाह इल्लल्लाहु व्हदहू ला शरीक लहु लहु-ल्-मुल्कु व लहु-ल्-हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन् कदीर्" कहे। फिर आयतु-ल्-कुसी पढ़े, फिर

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾, और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾, और ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ पढ़े, फ़न्न और मग़िब के बाद इन तीनों सूरतों को तीन तीन बार दोहराए।

**नमाज़े जनाज़:** के लिए इमाम का मर्द के सीने के सामने और औरत के शरीर के बीच हिस्से में खड़ा होना सुन्नत है, जनाज़: की नमाज़ में 4 तक्बीर कहे, प्रत्येक तक्बीर के साथ रफ़उ-ल्-यदैन करे, पहली तक्बीर के बाद अऊजु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ कर पस्त आवाज़ में सूरतु-ल्-फ़ातिहा पढ़े, फिर दूसरी तक्बीर कहे और दरूद पढ़े, फिर तीसरी तक्बीर कहे और मैयत के लिए दुआएं करे, फिर चौथी तक्बीर के बाद थोड़ी देर रुके और सलाम फेरे। कब्र को एक वित्ता से ऊँची करना, उसे गच करना, उसे चूमना, धूँ देना, उस पर लिखना बैठना या चलना सब कुछ हराम है। इसी तरह कब्रों पर चिरागां करना, उसका त्वाफ़ करना, उस पर मस्जिद बनाना, या मस्जिद में दफ़न करना हराम है। और कब्रों पर बने कुर्बों को ढा देना वाजिब है।

★ शब्दों द्वारा ता'ज़ियत करना मना नहीं है, बल्कि इस तरह के शब्दों द्वारा ता'ज़ियत करना जायज़ है : **“आ'अज़मल्लाहु अज़क व अहसन अज़ाअक व ग़फ़र लिमैयितिक”**। और काफ़िर की ता'ज़ियत में कहे : **“आ'अज़मल्लाहु अज़क व अहसन अज़ाअक”**।

★ जिसे यह जानकारी हो कि मरने के बाद उसके घर वाले उस पर नौहा करेंगे उस के लिए वाजिब है कि नौहा न करने की वसीयत करे, नहीं तो उनके रोने धोने के कारण उसे अज़ाब दिया जाएगा।

★ इमाम शाफ़ई رحمته الله फ़रमाते हैं : ता'ज़ियत के लिए बैठना मकरूह है, चुनान्वि मैयत के घर वालों का ता'ज़ियत के लिए आने वालों की खातिर किसी जगह बैठने के बजाए अपनी अपनी ज़रूरतों के लिए चले जाना उत्तम है, चाहे वे मर्द हों या औरतें हों।

★ मैयत के घर वालों के लिए खाना बनाना सुन्नत है, और मैयत के घर वालों के यहाँ खाना खाना मकरूह है, और यह भी मकरूह है कि उनके पास इकट्ठा होने वालों के लिए खाना बनाया जाए।

★ यात्रा किए बिना मुस्लिम व्यक्ति की कब्र की ज़ियारत मस्नून है, काफ़िर की कब्र की ज़ियारत मुबाह है, और काफ़िर को भी मुस्लिम की कब्र की ज़ियारत से नहीं रोका जाएगा।

★ कब्रिस्तान में आने वालों के लिए यह कहना सुन्नत है : **“अस्सलामु अलैकुम दार कौमिम्मोमिनीन, - या कहे : अह्लदियारि मिनल्मोमिनीन - व इन्ना इन शा-अल्लाहु बिकुम ल लाहिकून, यहमुल्लाहुल् मुस्तकिदमीन मिन्ना वल् मुस्ता'ख़िरीन, नस्अलुल्लाहु लना व लकुमुल्आफ़ियः, अल्लाहुम्म ला तहिम्ना अज़हुम, व ला तफ़ितन्ना बा'दहुम, वग़िफ़र लना व लहुम”**। मुमिनों की जमाअत तुम पर शान्ति हो, और इन्शाअल्लाह अवश्य हम भी तुम से मिलने वाले हैं, अल्लाह हमारे पहले और पिछलों पर रहम करे, अल्लाह तआला से हम अपने लिए और तुम्हारे लिए माफ़ी चाहते हैं, ऐ अल्लाह उनके अज़ से हमें मद्दम न करना, और उनके बाद हमें परीक्षा में न डालना, और हमें और उन्हें क्षमा कर दे।

**ईदैन की नमाज़ :** ईदैन की नमाज़ फ़र्जे किफ़ायः है, और इसे अदा करने का समय चाशत की नमाज़ का समय है, यदि इसकी जानकारी सूरज ढलने के बाद हुई हो तो दूसरे दिन सवेरे इस की कज़ा करेंगे, और इसकी भी अदा करने की शर्तें जुम्आ की तरह हैं सिवाए दोनों खुत्बों के, ईदगाह में ईद की नमाज़ से पहले या बाद में नफ़ल पढ़ना मकरूह है। ईद की नमाज़ पढ़ने का तरीका यह है कि दो रक्'अत नमाज़ पढ़ी जाए, इमाम पहली रक्'अत में तक्बीरतुल्इहाम के बाद अऊजुबिल्लाह पढ़ने से पहले 6 अधिक तक्बीरें कहे, और दूसरी रक्'अत में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़ने से पहले 5 अधिक तक्बीरें कहे, हर तक्बीर के साथ रफ़उल् यदैन करे फिर अऊजुबिल्लाह पढ़े, फिर ऊँची आवाज़ में सूरतुल्फ़ातिहा पढ़े, पहली रक्'अत में

सूरतुल्फातिहा के बाद सब्बिहिस्म रब्बिकल्आ'ला और दूसरी रक्'अत में सूरतुल्गाशियः पढ़े। सलाम फेरने के बाद जुम्आ की तरह दो खुत्बा दे, लेकिन इन दोनों खुत्बों के बीच अधिकतर तक्बीर कहना मस्नून है, ईद की नमाज़ नफ़ल नमाज़ की तरह पढ़ना भी सही है; इसलिए कि अधिक तक्बीरें कहना और उनके बीच ज़िक्र करना सुन्नत है।

**कुसूफ़ की नमाज़** : सूरज या चाँद गहन की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इसका समय गहन लगने से लेकर समाप्त होने तक रहता है, यदि गहन ख़तम होजाए तो इसकी कज़ा नहीं की जाएगी। यह नमाज़ 2 रक्'अत पढ़ी जाएगी, इमाम पहली रक्'अत में ऊँची स्वर में सूरतुल्फातिहा और दूसरी लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकू'अ करे, फिर समिअल्लाह कहते हुए खड़ा होजाए, रब्बना व लकल् हम्द पढ़ने के बाद सज्दा न करे बल्कि फिर सूरतुल्फातिहा और दूसरी लम्बी सूरत पढ़े, फिर लम्बा रुकू'अ करे, फिर रुकू'अ से उठे, फिर दो लम्बे सज्दे करे, फिर दूसरी रक्'अत पहली रक्'अत की तरह पढ़े, फिर तशहहुद् पढ़े और सलाम फेरे, और यदि मुक्तदी पहले रुकू'अ के बाद आकर मिला हो तो उसकी वह रक्'अत नहीं होगी।

**इस्तिस्का की नमाज़** : जब अकाल पड़ जाए, और वर्षा न बरसे तो उस समय वर्षा के लिए इस्तिस्का की नमाज़ पढ़ना सुन्नत है, इस नमाज़ को पढ़ने का समय, इसका तरीका और इसके अहकाम ईद की नमाज़ की तरह हैं, फ़र्क इतना है कि नमाज़ के बाद मात्र एक खुत्बा है, जिसमें स्थिति बदल जाने के लिए नेक फ़ाल लेते हुए चादर पलटना सुन्नत है।

**\* नफ़ल नमाज़ें** : यह साबित है कि नबी ﷺ हर दिन फ़र्ज़ नमाज़ के अतिरिक्त 92 रक्'अत नफ़ल नमाज़ें पढ़ा करते थे। जो इस प्रकार थीं : फ़ज़्र से पहले 2 रक्'अत, जुहर से पहले 8 रक्'अत, और बाद में 2 रक्'अत, मग़िब के बाद 2 रक्'अत, और इशा के बाद 2 रक्'अत।

**\* निषिद्ध समय** : कुछ ऐसे समय हैं जिन में नमाज़ पढ़ना या सज्दा इत्यादि करना मना है :

① फ़ज़्र से सूरज निकलने तक और उसे निकल कर एक नेज़ा बराबर ऊँचा होने तक।  
② जब सूरज बीच आकाश में आजाए यहाँ तक कि वह ढल जाए।  
③ अम्र की नमाज़ के बाद से सूरज डूबने तक। पर ऐसे समय में सबब वाली नमाज़ें पढ़ना जायज़ है। जैसे तहीयतुल् मस्जिद, त्वाफ़ की 2 रक्'अत, फ़ज़्र की 2 सुन्नत, जनाज़ा की नमाज़, वुजू की 2 रक्'अत, और सज्दए तिलावत एवं शुक़।

**\* मस्जिदों के अहकाम** : ज़रूरत के हिसाब से मस्जिदें बनाना वाजिब है, अल्लाह तआला के यहाँ मस्जिदें सब से महबूब जगहें हैं, इनमें गाना, ताली बजाना, ढोल बजाना, हराम कविता पढ़ना, मर्दों का औरतों के साथ गडमड होना, सुहबत करना, ख़रीदना और बेचना हराम है और ऐसे व्यक्ति (ख़रीदने-बेचने वाल) के बारे में यह कहना जायज़ है : अल्लाह तुम्हारे सौदे में फ़ायदा न दे, इसी तरह किसी खोई चीज़ को तलाश करना हराम है, और ऐसे व्यक्ति के बारे में यह कहना जायज़ है, अल्लाह तुम्हारी वह चीज़ न लौटाए। इसमें ऐसे बच्चों को शिक्षा देना जो हानिकारक न हों मुबाह है, इसी तरह निकाह पढ़ाना, फैसला करना, मुबाह कविता पढ़ना, इतिकफ़ करने वाले व्यक्ति के लिए और दूसरों के लिए भी सोना, मेहमान और रोगी व्यक्ति के लिए रात बिताना मुबाह है। इन्हें शोर-शराबे, लड़ाई झगड़े, फुजूल बातें, बुरी बात करने और बिना ज़रूरत रास्ता बनाने से बचाना मस्नून है। और इनमें सांसारिक फुजूल बातें करना मकरूह है, इनके कारपेट, झूमर या लाइट इत्यादि को शादी विवाह या ताज़ियत की मज्लिस में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

## ज़कात

**ज़कात के माल :** चार तरह के मालों में ज़कात फ़र्ज़ है : ① चरने वाले चौपायों और पशुओं में। ② ज़मीन की उपज में। ③ नगदी में (सोना चाँदी और करेन्सी नोट में)। ④ व्यापारिक सामान में।

**ज़कात वाजिब होने की शर्तें :** जब तक 5 शर्तें न पाई जाएं ज़कात फ़र्ज़ नहीं होगी : ① इस्लाम। ② आज़ादी। ③ (माल का) निसाब को पहुँचना। ④ पूरी तरह से माल का मालिक होना। ⑤ एक साल बीतना सिवाए ज़मीन की उपज के।

**चौपायों और पशुओं की ज़कात :** मवेशियों और पशुओं की तीन किस्में हैं 1- ऊँट। 2- गाय-बैल। 3- और बकरी।

**इनमें ज़कात फ़र्ज़ होने की दो शर्तें हैं :** 1- वह पूरे साल या साल के अधिकतर दिनों में चर कर अपना पेट भरते हों। 2- वह दूध और नस्ल की बढ़ोतरी के लिए हों, निजी काम (जैसे: खेती-बाड़ी अथवा बोझ ढोने) के लिए न हों। यदि वे व्यापार के लिए हैं तो व्यापारिक सामान की तरह उनकी ज़कात निकाली जाएगी।

**ऊँट की ज़कात इस प्रकार है :**

संख्या	1 - 4	5 - 9	10 - 14	15 - 19	20 - 24	25 - 35	36 - 45	46 - 60	61 - 75	76 - 90	91 - 120
उसकी ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 बकरी	2 बकरियाँ	3 बकरियाँ	4 बकरियाँ	1 बित्ते मखाज़	1 बित्ते लबून	1 हिक्का	1 जज़्आ	2 हिक्का	2 जज़्आ

जब ऊँट 120 से अधिक हो जाएं तो हर 50 पर 1 हिक्का, और हर 40 पर 1 बित्ते लबून देने होंगे।

**बित्ते मखाज़ :** एक साला ऊँटनी को कहते हैं। **बित्ते लबून :** दो साला ऊँटनी को।

**हिक्का :** तीन साला ऊँटनी को। और **जज़्आ :** चार साला ऊँटनी को कहते हैं।

**गाय की ज़कात इस प्रकार है :**

संख्या	1-29	30 - 39	40 - 59
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 तबी'अु या तबी'आ	1 मुसिन्न या मुसिन्ना

जब गायें 60 या उस से अधिक हो जाएं तो हर 30 पर 1 तबी'अु, और हर 40 पर 1 मुसिन्ना देने होंगे।

**तबी'अु :** एक साला बछड़ा को कहते हैं। **तबी'आ :** एक साला बछिया को। **मुसिन्नु :** दो साला बछड़ा को। **मुसिन्ना :** दो साला बछिया को कहते हैं।

**बकरी की ज़कात इस तरह से है :**

संख्या	1 - 39	40 - 120	121 - 200	201 - 399
ज़कात	कोई ज़कात नहीं	1 बकरी	2 बकरियाँ	3 बकरियाँ

जब भेड़ और बकरी 400 या उस से अधिक हो जाएं तो हर 100 पर एक बकरी है। और ज़कात में न अन्डू लिया जाए, न बूढ़ा जानवर लिया जाए, न ऐब वाला और न वह जो बच्चा पोस रही हो और न गाभिन और न कीमती ली जाएगी।

जज़्अु उस भेड़ के बच्चे को कहते हैं जो 6 महीने पूरे कर चुका हो। और सनी उस बकरी को कहते हैं जो एक साल पूरा कर चुकी हो।

**ज़मीन की उपज में ज़कात :** ज़मीन से उपजने वाले सभी अनाजों और फलों में तीन शर्तों के साथ ज़कात वाजिब है : ① पहली शर्त यह है कि वह मापी और तौली जा सकती हो, और जमा करके रखी जा सकती हो, जैसे अनाज में से गेहूँ और जौ इत्यादि, और फल में से अंगूर और खजूर इत्यादि। रही ज़मीन से उपजने वाली वह चीज़ें जो मापी न जाती हों और न जमा करके रखी जा सकती हों, जैसे साग और सब्ज़ी और इस तरह की दूसरी चीज़ें तो इसमें ज़कात नहीं है। ② दूसरी शर्त यह है कि वह निसाब को पहुँच रही हों, अर्थात् 653 किलो ग्राम हों या इस से अधिक। ③ तीसरी शर्त यह है कि वह ज़कात के फ़र्ज़ होने के समय उस की मिलकियत हो। ज़कात फलों में वाजिब उस समय होती है जब वह पक कर लाल या पीले होगए हों, और अनाजों में उस समय जब दाने सख्त होगए हों।

और ज़मीन की उन उपज में जिनकी सिँचाई बिना मेहनत और परेशानी उठाए हुई हो, वर्षा और नहर के पानी इत्यादि द्वारा तो उस में (10%) दसवां हिस्सा ज़कात है, रही वह ज़मीनें जो मेहनत और परेशानी से सैराब की गई हों रहट, गधों या ऊँटों द्वारा तो उनमें (5%) बीसवां हिस्सा वाजिब है। रही वह ज़मीनें जिसकी सिँचाई में कुछ दिन मेहनत करनी पड़ी हो और कुछ दिन बिना मेहनत किए हुई हो तो उसी के हिसाब से अनाज की ज़कात निकालेंगे।

**कीमती धातुओं की ज़कात :** जो कि दो तरह की हैं : नगदी की ज़कात की दो किस्में हैं :

① सोना। यदि यह 85 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। ② चाँदी। यदि यह 595 ग्राम से कम हो तो इसमें ज़कात नहीं है। और नगदी रूपये पैसों में भी उस समय तक ज़कात वाजिब नहीं है जब तक कि वह इन दोनों में से किसी एक की कीमत तक न पहुँच जाएं। और इनकी ज़कात की मिक़दार (2.5%) चालीसवां हिस्सा है।

और जो ज़ेवर औरत के प्रयोग में हो उस में ज़कात नहीं है, पर जो किराए के लिए हो या उन्हें पूंजी के तौर पर सुरक्षित किया गया तो उन में ज़कात है।

औरतों के लिए सोने और चाँदी के वह सभी ज़ेवर जायज़ और मुबाह हैं जो आम तौर से पहने जाते हों। बर्तन में थोड़ी सी चाँदी का प्रयोग भी मुबाह है, और उसका थोड़ा सा प्रयोग अंगूठी या चश्मा इत्यादि के रूप मर्दों के लिए भी मुबाह है। पर बर्तन में सोना लगाना हराम है, पर कपड़े के बटन और दाँत की सिलाई के लिए इसका थोड़ा सा प्रयोग मर्दों के लिए जायज़ है इस शर्त के साथ कि इस में औरतों की मुशाबहत न हो।

और जिस व्यक्ति के पास माल घटता बढ़ता रहता हो, और प्रत्येक माल की ज़कात साल पूरे होने पर निकालना कठिन हो तो ऐसा व्यक्ति साल में एक दिन नियुक्त कर ले, और उस दिन जितने धन का मालिक हो 2.5 उसकी ज़कात निकाले, अगरचे कुछ माल पर साल न बीते हों, और जिसकी फिक्स तन्खाह हो या उसने घर वगैरः किराए पर दिए हों लेकिन इससे कुछ बचता न हो तो उसमें ज़कात नहीं है चाहे कितने ही अधिक क्यों न हों। और यदि कुछ बचता हो तो साल पूरे होजाने पर उस की ज़कात निकाले। नहीं तो साल में एक दिन ख़ास करले और उस दिन अपने माल की ज़कात निकाले।

**कर्ज़ का हुक़्म :** जिस व्यक्ति का किसी मालदार के जिम्मे कर्ज़ हो, या ऐसा माल हो जिसे छुड़ा लेना सम्भव हो, तो जब इन्हें अपने क़ब्जे में करले तो इन पर पिछले सभी सालों की ज़कात फ़र्ज़ होगी, चाहे कितने ही साल क्यों न बीत गए हों, और यदि अपने क़ब्जे में लेना उसके लिए सम्भव न हो, जैसे कर्ज़ किसी ऐसे व्यक्ति के जिम्मे हो जिसका दीवालिया हो गया

हो, तो जब तक वह उसे पा न ले, उस पर ज़कात नहीं, और जब पा ले तो मात्र उसी साल की ज़कात होगी, पिछले सालों की नहीं, चाहे जितने साल ही क्यों न बीत चुके हों।

**तिजारती सामान की ज़कात :** तिजारती सामान में ज़कात नहीं जब तक कि उसमें 4 शर्तें न पूरी हो जाएं : ① पहली यह कि सामान उसके कब्जे में हो। ② दूसरी यह कि मिलकीयत व्यापार की नियत से हो। ③ तीसरी यह कि उस सामान का दाम निसाब के बराबर हो, अर्थात् 20 मिसकाल सोने या 200 दिर्हम चाँदी के बराबर हो। ④ चौथी यह कि उस पर पूरा एक साल बीत चुका हो। तिजारती सामान में जब यह चारों शर्तें पाई जाएं तो उनकी कीमत में ज़कात निकाली जाएगी, और यदि उसके पास तिजारती सामान में सोना और चाँदी दोनों हों तो सामान की कीमत के साथ सोना और चाँदी दोनों की कीमतें जोड़ी जाएंगी, और निसाब पूरा करने में दोनों का लिहाज़ किया जाएगा। जब तिजारती सामान को स्वयं प्रयोग करने की नियत करले जैसे कपड़े हों या घर इत्यादि जिन्हें स्वयं प्रयोग करने की नियत करले तो उनमें ज़कात नहीं है, और यदि उसके बाद उनमें फिर व्यापार की नियत करले तो नियत के फिरने के दिन से साल पूरा करे फिर ज़कात दे।<sup>1</sup>

**सद्क़ए फ़ित्र :** सद्क़ए फ़ित्र हर मुसलमान व्यक्ति पर वाजिब है, बशर्तेकि वह ईद के दिन अपने और अपने बाल बच्चों के खाने पीने से अधिक माल का मालिक हो, सद्क़ए फ़ित्र की मात्रा एक व्यक्ति की तरफ से चाहे वह मर्द हो या औरत 2.25 किलो है, जिसे उस खाने की चीजों में से दिया जाएगा जिसे आम तौर पर शहर में खाया जाता हो, और जिस व्यक्ति पर अपना सद्क़ए फ़ित्र लाज़िम है उस पर हर उस व्यक्ति की ओर से भी सद्क़ए फ़ित्र लाज़िम है जिसकी ईद के दिन उस पर जिम्मादारी है बशर्तेकि वह उतने माल का मालिक हो जिसे वह उसकी ओर से दे सके। और सद्क़ए फ़ित्र का ईद के दिन नमाज़ से पहले निकालना मुस्तहब है, और ईद की नमाज़ से देर करना जायज़ नहीं है, और ईद से एक या दो दिन पहले निकालना भी जायज़ है, और कई लोगों का सद्क़ए फ़ित्र एक व्यक्ति को देना जायज़ है, इसी तरह एक व्यक्ति का सद्क़ए फ़ित्र भी कई एक लोगों को देना जायज़ है।

**ज़कात निकालने का समय :** ज़कात निकालने की यदि शक्ति हो तो उसके वाजिब होने के समय से निकालने में देरी करना जायज़ नहीं है, और छोटे बच्चे और पागल व्यक्ति की ओर से उस का वली ज़कात निकालेगा। लोगों को दिखा कर ज़कात निकालना और स्वयं उसे बांटना मस्नून है, ज़कात निकालने के लिए नियत शर्त है, आम सद्क़ा की नियत से बांटा गया माल ज़कात की ओर से काफ़ी नहीं है, चाहे पूरा ही माल सद्क़ा में क्यों न बांट दिया हो, और उत्तम यह है कि देश के ही फ़कीरों में उस की तक्सीम हो। और किसी कारण बस देश से बाहर भेजना भी जायज़ है, धन यदि निसाब के बराबर हो तो अगले साल की ओर से भी ज़कात निकालना जायज़ है।

**ज़कात के हक्दार :** ज़कात के हक्दार 8 हैं : ① फुकरा ② मसाकीन। ③ आमिलीन : इससे मुराद हुकुमत के वह कर्मचारी हैं जिनकी हुकुमत को ज़कात की वसूली और तक्सीम में ज़रूरत पड़ती हो। ④ मुवल्लफ़तुल कुलूब : यह वह लोग हैं जो अपने कबीलों के सरदार

<sup>1</sup> तिजारती सामान का निसाब 85 ग्राम सोने की कीमत है, या 595 ग्राम चाँदी की कीमत है। और ज़कात निकालते समय इनमें से कम का एतबार करेगा।

और अमीर हों, जिन्हें देने से उनकी बुराई से बचना, या उनकी ईमान की मज़बूती, या मुसलमानों से उन्हें दूर करना मक्सूद हो, या ज़कात न देने वालों से ज़कात की वसूली में उनसे सहायता की उम्मीद की जाती हो। 5 रिक़्ाब : इससे मुराद मुक़ातिबीन (ऐसे दास जो अपने मालिकों से तय किया हुआ माल देकर आज़ादी के लिए समझौता कर चुके हों) और खरीद कर आज़ाद किए जाने वाले गुलाम हैं। 6 ग़ारिमीन : अर्थात् : कर्ज़दार (ऋणी)। 7 फ़ी सबीलिल्लाह, अल्लाह के रास्ते में 8 इब्नु-स्सबील, हाजतमंद यात्री। ज़रूरत के अनुसार इन सारे लोगों में ज़कात तक्सीम की जाएगी, पर कर्मचारी को उसके काम की उज़्रत के बराबर दिया जाएगा चाहे वह धनी ही क्यों न हो। हाकिम ने यदि रिज़ामन्दी से या जबरदस्ती ज़कात ली तो वह काफ़ी है, ज़कात लेने में उस ने चाहे न्याय किया हो या अन्याय। यदि ज़कात का माल काफ़िर, दास, धनी, और जिसका खर्चा उस पर लाज़िम है, और बनू हाशिम को देता है तो काफ़ी नहीं होगा। इसी तरह अज्ञानता में यदि किसी ऐसे व्यक्ति को ज़कात दे जो कि उस का हक्दार नहीं फिर उसे जानकारी हो जाए तो यह भी काफ़ी नहीं है, पर यदि किसी को फ़कीर समझ कर दिया और वह धनी निकला तो यह काफ़ी होजाएगी।

**नफ़ल सद्का :** अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : “मृत्यु के बाद इन्सान को जो कर्म और नेकी पहुँचती है, यह वह शिक्षा है जिस की उसने ता’लीम दी और फैलाया, या नेक संतान है जिन्हें उसने छोड़ा, या मुस्हफ़ है जिसका उसने वारिस बनाया, या मस्जिद है जो उसने बनाई, या घर है जिसे उसने यात्रीयों के लिए बनाया, या नहर है जिसकी उसने खोदाई कराई, या सद्का है जिसे उसने अपने जीवन में स्वस्थ अवस्था में निकाला, तो मौत के बाद यह चीज़ें उसे पहुँचेंगी”। (इब्ने माज)

## रोज़ा

रमज़ान के रोज़े हर अकलुमंद और बालिग़ मुसलमान पर जो रोज़ा रखने की शक्ति रखता हो फ़र्ज़ है, सिवाय ऐसी औरत के जिसे माहवारी या निफ़ास का खून आरहा हो। बच्चा यदि रोज़ा रख सकता है तो उसे भी रोज़ा रखने का हुक्म दिया जाएगा ताकि उसे उसकी आदत पड़ सके। रमज़ान के आने की जानकारी के 2 तरीके हैं : ❶ रमज़ान का चाँद दिखाई देना। जिसके लिए एक भरोसेमंद मुस्लिम व्यक्ति की गवाही काफी है जो कि शरीअत का मुकल्लफ़ हो। ❷ शाबान के महीने का पूरे 30 दिन का होजाना। यह बात स्पष्ट रहे कि हर दिन सुबहे सादिक निकलने से लेकर सूरज डूबने तक रोज़ा वाजिब रहता है, और फ़र्ज़ रोज़ों के लिए फ़ज़्र से पहले ही नियत करना ज़रूरी है।

**रोज़े को फ़ासिद कर देने वाली चीज़ें :** ❶ पत्नि से सम्भोग करना : इससे रोज़े की कज़ा और कफ़्फ़ारः दोनों लाज़िम आता है। कफ़्फ़ारः : एक गुलाम (दास) आज़ाद करना है, जिसके पास गुलाम न हो तो लगातार दो महीने रोज़े रखे, और जो रोज़े रखने की शक्ति न रखता हो वह 60 ग़रीबों को खाना खिलाए, और जो उसकी भी शक्ति न रखता हो तो उस पर कुछ नहीं। ❷ औरत को चुम्मा लेने, छूने, या बार बार देखने से मनी का निकलना, या ग़लत तरीके से वीर्य-पात करना। ❸ जानबूझ कर खा पी लेना, यदि भूल कर खाया पिया हो तो रोज़ा सहीह है। ❹ शरीर से खून निकालना : चाहे सिंगी के कारण हो, या किसी बीमार की सहायता करने के लिए खून दान करने के कारण। परन्तु थोड़ा खून जो जांच के लिए निकाला गया हो, या ऐसा खून जो बिना इरादे के निकल आया हो जैसे नक्सीर इत्यादि तो इससे रोज़ा फ़ासिद नहीं होता। ❺ जानबूझ कर उल्टी करना।

यदि गले में गर्द चला जाए, या कुल्ली करते और नाक में पानी खींचते हुए गले में पानी पहुंच जाए, या सोंचने के कारण या सोते समय मनी निकल आए, या बिना इरादे के खून निकल आए या उल्टी होजाए तो इससे रोज़ा नहीं टूटता।

और जो व्यक्ति रात समझ कर खा-पी ले फिर दिन निकल आए तो उस पर रोज़े की कज़ा है, और जिसे सुबहे सादिक के होने में शक हो और खा-पी ले तो उसका रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा। और यदि सूरज डूबने में शक हो और खा-पी ले तो उस पर उस रोज़े की कज़ा लाज़िम होगी।

**मुफ़्तिरीन (रोज़ा न रखने वाली) के अहक़ाम :** बिना किसी उज़्र के रमज़ान के रोज़े न रखना हराम है, पर हैज़, और निफ़ास वाली औरतों पर रोज़ा तोड़ना वाजिब है, और उस व्यक्ति पर जिसे किसी को बचाने के लिए रोज़ा तोड़ने की ज़रूरत हो। और मुबाह यात्रा की अवस्था में यदि रोज़ा रखना कष्ट-दायक हो तो ऐसे मुसाफ़िर के लिए रोज़ा तोड़ देना मस्नून है। और ऐसे मुक़ीम के लिए भी रोज़ा तोड़ना मुबाह है जिसने दिन में सफ़र किया हो। इसी तरह गर्भवती और दूध पिलाने वाली औरत को अपने या अपने शिशू के बारे में डर हो तो उस के लिए भी रोज़ा न रखना मुबाह है। और इन सभों पर मात्र छूटे हुए रोज़ों की कज़ा है, पर गर्भवती और दूध पिलाने वाली स्त्री ने यदि मात्र शिशू पर डर के कारण रोज़ा तोड़ा हो तो वे हर दिन के बदले रोज़े की कज़ा के साथ साथ एक मिस्कीन को खाना भी खिलाएंगी।

और जो बूढ़ापे या ऐसी बीमारी के कारण जिस से निरोग होने की आशा न हो रोज़ा न रखता हो वह हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना खिलाए, और इन पर रोज़ों की कज़ा नहीं है।

और जो किसी उज़्र के कारण कज़ा में देरी करे यहाँ तक कि दुसरा रमज़ान आजाए तो उस पर मात्र कज़ा है, और यदि बिना किसी उज़्र के उसने कज़ा करने में कोताही की यहाँ तक कि



दूसरा रमज़ान आगया तो कज़ा के साथ साथ हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना भी खिलाए। और यदि किसी उज़्र के कारण उसने कज़ा करने में देरी की यहाँ तक उसकी मृत्यु हो गई तो उस पर कुछ भी नहीं है, और यदि बिना उज़्र के न रखा तो उस की ओर से हर दिन के बदले एक ग़रीब को खाना खिलाया जाएगा, परन्तु यदि वह रोज़े नज़र के हों, या रमज़ान के छूटे हुए रोज़े हो जिनकी कज़ा में कोताही हुई हो तो उसकी ओर से उसके करीबी लोगों के लिए यह रोज़े रखना सुन्नत है। और हर नज़र पूरी करना उस की ओर से नेकी है।

और यदि किसी ने किसी उज़्र के कारण रोज़ा नहीं रखवा और अभी दिन में कुछ समय बाकी ही था कि उसका उज़्र ख़तम होगया तो ऐसे व्यक्ति पर लाज़िम होगा कि दिन के बाकी समय में खाने, पीने, और सम्भोग करने से रुके रहे, और यदि दिन में काफ़िर इस्लाम ले आए, या हैज़ वाली औरत हैज़ से पवित्र हो जाए, या रोगी निरोग होजाए, या यात्री वापस आजाए, या बच्चा बालिग़ होजाए, या पागल ठीक होजाए और यह रोज़े की हालत में न हों तो इन पर रोज़ों की कज़ा लाज़िम है चाहे बचे हुए समय को रोज़ा रख कर ही क्यों न बिताए हों। और रमज़ान में जिस के लिए रोज़ा तोड़ देना मुबाह हो वह नफ़ली रोज़ा रमज़ान में नहीं रख सकता।

**नफ़ली रोज़े :** सब से अफ़ज़ल एक दिन रोज़ा रखना और एक दिन इफ़तार करना है, फिर सोमवार और जुम्रात के दिन का रोज़ा है, फिर हर महीने 3 दिन का रोज़ा है, और इसमें अफ़ज़ल ऐयामे बीज़ अर्थात चाँद के हिसाब से 13,14 और 15 तारीख़ का रोज़ा है। और मुहर्रम और शाबान महीने के अधिकतर दिनों का रोज़ा रखना, आशूरा (अर्थात 10 मुहर्रम) का रोज़ा, अरफ़ा का रोज़ा और शव्वाल के 6 रोज़े रखना मस्तून् है। पर मात्र रजब का रोज़ा रखना, या मात्र जुम्आ या सनीचर का रोज़ा रखना, या शक के दिन रोज़ा रखना जैसे 30 शाबान का रोज़ा जिस दिन चाँद निकलने के बारे में शक हो, तो यह सारे रोज़े मक़ूह हैं। और ईद और बक्रईद के दिन और इसी तरह अय्यामे तश्कीक अर्थात 11,12, और 13 ज़िल्हिज्जा को रोज़ा रखना हराम है, पर जो हज्जे तमत्तु'अ या किरान के कुर्बानी के बदले रोज़ा रख रहा है तो उस के लिए अय्यामे तश्कीक में रोज़ा रखना मुबाह है।

### ज़रूरी बातें :

★ जिसे बड़ी नापाकी लगी हो, जैसे जुन्बी, और हैज़ और निफ़ास वाली औरत जब वे फ़ज़्र से पहले पाक हो जाएं तो उनके लिए फ़ज़्र की अज़ान के बाद नहाना और नहाने से पहले सहरी खा लेना जायज़ है, और इनका रोज़ा सहीह है।

★ रमज़ान में औरत के लिए नेकी के कामों में मुसलमानों के साथ साझी रहने के इरादे से ऐसी दवा लेना जिस से उसकी माहवारी कुछ दिनों के लिए रुक जाए जायज़ है, परन्तु शर्त यह है कि वह उसके लिए हानिकारक न हो।

★ रोज़ेदार के लिए थूक या खकार यदि मुंह के अन्दर हो तो उसे निगल जाना जायज़ है।

★ नबी ﷺ का फ़रमान है : “मेरी उम्मत के लोग बराबर भलाई में रहेंगे जब तक वह इफ़तार में जलदी करेंगे, और सहरी में देर करेंगे”। अहमद। और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया: “धर्म उस समय तक ग़ालिब रहेगा जब तक लोग इफ़तार करने में जलदी करेंगे; क्योंकि यहूदी और नसरानी देरी करते हैं” (अबू दाऊद)

★ इफ़तार के समय दुआ करना मुस्तहब है, नबी ﷺ का फ़रमान है : “रोज़ा खोलने के समय रोज़ेदार की दुआ लौटाई नहीं जाती”। और इफ़तार के समय जो दुआएं साबित हैं उनमें

से एक दुआ यह है : “**جَهَبْ جَمُودَ وَبَلِّغْ لِي الْوَسْطَى وَبَارِكْ لِي فِي سَائِرِ الْأَشْيَاءِ**” “पियास बुझ गई, रंगें तर हो गई, और यदि अल्लाह ने चाहा तो सवाब साबित हो गया”।

★ सुन्नत यह है कि इफ्तार रोटब खजूर से हो, यदि रोटब खजूर न मिल सके तो सुखी खजूर ही काफी है, और यदि वह भी न मिले तो पानी से इफ्तार करे।

★ रोज़ेदार के लिए मुनासिब यह है कि रोज़े की हालत में सुरमा लगाने और आँख या कान में डरॉपस डालने से बचे, विरोध से निकलने के लिए इससे बचना बेहतर है। और यदि दवा डालना ज़रूरी हो तो ऐसा कर लेने में कोई आपत्ति नहीं, चाहे दवा का मज़ा उसकी हलक तक पहुंच जाए फिर भी उसका रोज़ा सहीह होगा।

★ सहीह कौल की रू से रोज़े की अवस्था में किसी भी समय मिस्वाक करना सुन्नत है।

★ रोज़ेदार के लिए मुनासिब यह है कि वह गीबत, चुगलखोरी, और झूट जैसी बुरी आदतों से बचे और यदि कोई उसे गाली दे या बुरा भला कहे तो उससे कह दे कि मैं रोज़े से हूँ। और वह अपनी जुबान और दूसरे अंगों को बुराई से बचाकर ही अपने रोज़े की सुरक्षा कर सकता है। इस बारे में नबी ﷺ की हदीस है : “जिस ने झूठी बात कहना, और उसके बमोजिब कर्म करना न छोड़ा तो अल्लाह तआला को उसके भूके और प्यासे रहने की कोई ज़रूरत नहीं है”।

★ जिसे खाने पर दावत दी गई हो और वह रोज़े से हो तो दावत देने वाले के लिए दुआ करे, और यदि रोज़े से न हो तो उस के साथ खाए।

★ शबे क़द्र साल भर की रातों में सब से महत्वपूर्ण रात है। जिसे रमज़ान की अन्तिम दस रातों में प्राप्त किया जा सकता है, 27 की रात में इसे प्राप्त करने की सम्भावना अधिक होती है। इस एक रात्री में कर्म करना एक हजार महीने में कर्म करने से बेहतर है, इस की कुछ निशानियाँ हैं : इसके सवेरे सूरज सफ़ेद निकलता है जिस में अधिक चमक नहीं होती। कभी ऐसा भी होता कि मुस्लिम व्यक्ति को इसकी जानकारी नहीं हो पाती है, ताकि वह रमज़ान में अधिक इबादत करने की प्रयास करे, ख़ासकर अन्तिम दस रातों में, और किसी भी रात को कियाम किए बिना बीतने न दे, और यदि जमाअत के साथ तरावीह पढ़ी हो तो मुकम्मल तरावीह समाप्त होने से पहले न निकले ताकि उसके लिए पूरी रात का कियाम लिख दिया जाए।

★ नफ़ल रोज़े की नियत करने के बाद उसे पूरा करना वाजिब नहीं मस्नून है। और यदि जानबूझ कर भी उसे तोड़ दे तब भी कोई आपत्ति नहीं है, और इस की क़ज़ा भी नहीं है।

★ इबादत की ख़ातिर अक़लमंद, मुसलमान व्यक्ति का मस्जिद को लाज़िम पकड़ लेना एतिकाफ़ कहलाता है। इस के लिए शर्त यह है कि मु'अ्तकिफ़ (एतिकाफ़ करने वाला) बड़ी नापाकी से पाक हो, और मस्जिद से मात्र ज़रूरी हाजतों के लिए ही बाहर निकले, जैसे खाने के लिए, शौचालय जाने के लिए, या वाजिबी स्नान के लिए आदि। बिना ज़रूरत के निकलने से, या बिबी से सम्भोग करने से एतिकाफ़ बातिल होजाता है। साल में किसी भी समय एतिकाफ़ करना मस्नून है, रमज़ान में एतिकाफ़ करने पर अधिक ज़ोर दिया गया है, ख़ासकर अन्तिम दस दिनों में। एतिकाफ़ कम से कम एक घंटे का होना चाहिए। मुस्तहब यह कि 24 घंटे से कम का न हो। औरत अपने पति की अनुमति के बिना एतिकाफ़ न करे, मुतकिफ़ इबादत और ताअत में अपने आप को व्यस्त रखे। अधिक मुबाह चीज़ें करने से बचे, इसी तरह बिना ज़रूरत की चीज़ों से दूर रहे।

## हज्ज तथा उम्रा

हज्ज और उम्रा जीवन में एक बार फर्ज है, इनके फर्ज होने की शर्तें नीचे लिखी गई हैं :

① इस्लाम। ② अक्ल (बुद्धि)। ③ बुलूग़त। ④ आज़ादी। ⑤ का'बा तक पहुँचने की इस्तिता'अत : इस्तिता'अत का अर्थ यह है कि रास्ते का खर्च और सवारी उसके पास हो। और जिसने इस फ़रीज़ा को अदा करने में कोताही की यहाँ तक की उसकी मौत होगई तो उसके माल से इतनी रक़म निकाल ली जाएगी जिस से हज्ज और उम्रा अदा हो सके। काफ़िर और पागल का हज्ज और उम्रा सहीह नहीं होगा, और बच्चे और गुलाम का हज्ज और उम्रा करना सहीह है पर यह उनके लिए काफ़ी नहीं होगा अर्थात् बच्चे को बालिग़ होने और गुलाम को आज़ाद होने के बाद दोबारा हज्ज और उम्रा करना पड़ेगा, तभी उनसे इस फ़रीज़े की अदाएंगी होगी, और जो व्यक्ति हज्ज करने की शक्ति न रखता हो उसका भी हज्ज करना सहीह है, और जो किसी दूसरे की ओर से हज्ज करे और स्वयं अपनी ओर से उसने हज्ज न किया हो तो उसका हज्ज दूसरे की ओर से न होगा बल्कि उस के फ़रीज़े की अदाएंगी होगी।

**इस्लाम :** इस्लाम बाँधने का इरादा करने वाले व्यक्ति के लिए मुस्तहब है कि वह नहाए, और खुशबू लगाए, और सिले हुए कपड़े उतार कर लुंगी और चादर पहन ले, जो सफ़ेद और साफ़-सुथरे हों, यदि मात्र उम्रा की नियत हो तो "लब्बैक अल्लाहुम्म उम्रतन्" कहे, या मात्र हज्ज की नियत हो तो "लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन्" कहे, और यदि हज्ज और उम्रा दोनों की नियत हो तो "लब्बैक अल्लाहुम्म हज्जन् व उम्रतन्" कहे, और यदि उसे डर हो कि रास्ते में उसे रोक लिया जाएगा, तो यह कहकर शर्त लगाए "फ़इन हबसनी हाबिसुन फ़महिल्ली हैसु हबस्तनी"। कि यदि मुझे कोई रोकावट पेश आगई तो जहाँ मुझे यह रोकावट आएगी वहीं हलाल होजाउंगा।

और उसे इसका अधिकार है कि हज्ज की तीनों किस्मों तमत्तु'अ, इफ़ाद और क़िरान में से जो चाहे करे, पर सब से अफ़ज़ल हज्जे तमत्तु'अ है, और उसका विवरण इस प्रकार है कि हज्ज के महीने में उम्रा का इस्लाम बाँधे, और उम्रा करके इस्लाम खोल दे, और हलाल होजाए, फिर उसी साल के हज्ज का इस्लाम बाँधे, और हज्जे इफ़ाद यह है कि मात्र हज्ज का इस्लाम बाँधे, और क़िरान यह है कि हज्ज और उम्रा दोनों का इस्लाम एक साथ बाँधे, या उम्रा का इस्लाम बाँधे फिर तवाफ़ करने से पहले उसमें हज्ज को भी शामिल करले, और जब वह अपनी सवारी पर सीधा बैठ जाए तो तल्बिया पूकारे और कहे : "लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल् हम्द वन्नेअमत लक वलमुल्क ला शरीका लक "हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ तेरा कोई साझी नहीं, हाज़िर हूँ, तारीफ़, प्रशंसा और ने'मत और बादशाहत तेरी ही है, तेरा कोई साझी नहीं।" और इसे बहुत ज़्यादा और ऊँची आवाज़ से पढ़ना मुस्तहब है, पर औरतें आहिस्ता पढ़ें।

**इस्लाम की अवस्था में मज्नु'अ (निषिद्ध) चीज़ें :** यह पूरे नौ हैं : ① बाल काटना। ② नाखुन काटना। ③ मर्द के लिए सिला हुवा कपड़ा पहनना, परन्तु उसके पास लुंगी न हो तो पाजामा पहन सकता है, और यदि जूते न हों तो मोज़े पहन सकता है पर उसे काट दे ताकि टखने से नीचे होजाए। और उसके कारण उसे कोई फ़िदया नहीं देना होगा। ④ मर्द के लिए सर ढांपना, और चूँकि दोनों कान भी सर ही का हिस्सा हैं इसलिए उन्हें भी खुला रखना ज़रूरी है। ⑤ अपने जिस्म और कपड़े में खुशबू लगाना। ⑥ जंगल के ऐसे पशुओं का शिकार करना जिनका गोश्त खाना जायज़ है। ⑦ निकाह करना (निकाह करना हराम है पर इसमें कोई फ़िदया नहीं)। ⑧ सेक्स (खाहिश) के साथ बीवी के बदन को छूना और इसका फिदया यह है कि उस पर एक बक्री की कुर्बानी लाज़िम होगी, या 3 दिन का रोज़ा रखना या 6 मिस्कीन को खाना खिलाना। और उसका हज्ज सहीह होगा। ⑨ सम्भोग करना, यदि यह तहल्लुले अब्वल से पहले

हो (अर्थात् दस तारीख के चार कामों में से किसी भी दो काम को करने से पहले हो) तो उसका हज्ज फ़ासिद हो जाएगा, पर इस फ़ासिद हज्ज को पूरा करना उसके लिए वाजिब होगा, और आने वाले साल उसकी कज़ा उस पर लाज़िम होगी, और एक ऊँट जबह करके उसे मक्का के ग़रीबों में बांटना होगा, और यदि तहल्लुले अब्वल के बाद हो तो उसे एक ऊँट जबह करना होगा, और तन्दूम से इहराम बांध कर फिर से मोहरिम होकर मक्का आकर तवाफ़ करना पड़ेगा, और यदि उसने उम्रा में सम्भोग किया है तो उसका उम्रा फ़ासिद हो जाएगा, और उसे दम के रूप में बक्री जबह करनी होगी, और उस उम्रे की कज़ा करनी होगी। हज्ज और उम्रा को सम्भोग के अतिरिक्त कोई और चीज़ फ़ासिद नहीं करती।

और औरत मर्द ही की तरह है सिवाय इसके कि उसका इहराम उसके चेहरे में भी होगा, और वह सिला हुवा कपड़ा भी पहनेगी, पर वह बुर्क'अ, निकाब और दस्ताने नहीं पहन सकती है।

**फ़िद्या :** फ़िद्ये दो प्रकार के हैं : ① एक वह है जिसमें उसे अधिकार प्राप्त है : यह बाल मुंडाने, या खुशबू लगाने, या नाखून काटने, या सिर ढांपने, या सिला हुवा कपड़ा पहनने का फ़िद्या है, इस स्थिती में उसे अधिकार प्राप्त है कि वह या तो 3 दिन का रोज़ा रखे, या 6 ग़रीबों को खाना खिलाए हर एक को आधा सा'अु अर्थात् 1.5 किलो दे, या एक बक्री जबह करे। और शिकार का फ़िद्या उसी तरह का पशु है जिस तरह के पशु का उसने शिकार किया है। ② दूसरी सिलसिलावार है : और यह हज्जे तमत्तु'अ और किरान करने वाले का फ़िद्या है, उस पर (कुर्बानी के तौर पर) एक बक्री लाज़िम होती है, यदि बक्री न मिल सके तो हज्ज के दिनों में वह 3 दिनों का रोज़ा रखेगा और 7 दिन के रोज़े हज्ज से लौटने के बाद रखेगा। और सम्भोग करने का फ़िद्या एक ऊँट है यदि न कर सके तो उसपर हज्जे तमत्तु'अ करने वाले की तरह रोज़े हैं। और जो भी फ़िद्या होगा वह हरम के फ़कीरों और ग़रीबों के लिए होगा, या जो खाना खिलाए जाएंगे, वह मात्र हरम के फ़कीरों और ग़रीबों को खिलाए जाएंगे।

**मक्का में दाखिला (प्रवेश) :** हाजी जब खानए का'बा में प्रवेश करे तो जो जिक्र मस्जिदों में प्रवेश करते समय की जाती है करे, फिर यदि वह हज्जे तमत्तु'अ का इहराम बांधे हो तो उम्रा का तवाफ़ करे, और यदि मुफ़िद या कारिन हो तो तवाफ़े कुदूम करे, और अपनी चादर से इज्तिबा'अु करे, इस तरह से कि चादर के बीच के हिस्से को अपने दाएं कन्धे के नीचे करे और उसके दोनों कोनों को बाएं कन्धे पर डाल ले, और शुरू हज़्रे अस्वद से करे, और **بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ** बिस्मिल्लाह वल्लाहु अक्बर कह कर उसे छूए या चूमे ले, या उसकी ओर इशारा करे, और ऐसा हर फेरे में करे लेकिन मात्र **اللَّهُ أَكْبَرُ** अल्लाहु अक्बर कहे, फिर खानए का'बा को अपनी बाईं तरफ़ करके उसके सात फेरे लगाए, और पहले तीन फेरों में हज़्रे अस्वद से हज़्रे अस्वद तक रमल करे और बाकी चार फेरों में आम चाल चले, और जब रुकने यमानी के सामने हो तो उसे छुए उसे न तो चूमे और न ही उसकी ओर इशारा करे, और रुकने यमानी और हज़्रे अस्वद के बीच **رَبَّنَا إِنِّي أَسْأَلُكَ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ** "हे हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे, और आखिरत में भलाई दे और हमें जहन्नम की आग से बचा" पढ़े, और इन सारे फेरों में जो चाहे दुआ करे, फिर मकामे इब्राहीम के पीछे जाकर 2 रक्'अत नमाज़ पढ़े, इन दोनों रक्'अतों में सूरतुल् फ़ातिहा पढ़ने के बाद पहली रक्'अत में सूरतुल् काफिरून और दूसरी रक्'अत में सूरतुल् इख़्लास पढ़े, फिर ज़म्ज़म का पानी पीए और उसे अपने सर पर भी डाले, फिर हज़्रे अस्वद के पास वापस आकर यदि आसानी से छू सकता हो तो उसे छूए, फिर मुल्लजम के पास जो हज़्रे अस्वद और का'बा के दर्वाजे के बीच है दु'आ करे, फिर सफ़ा की ओर जाए और सफ़ा पहाड़ी पर चढ़े, और कहे : **"अब्दु बिमा बदअल्लाहु बिह"** और यह आयत पढ़े :

**إِنَّا الصَّفَا وَالْمَرْوَةُ مِنْ سَعَاءِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ وَأَعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ حَرَامًا فَإِنَّا اللَّهُ سَاءَ رُكُوعًا عَلَيْهِ**

तकबीर और तह्लील करे, और का'बा की ओर चेहरा करके दोनों हाथ उठाकर दु'आ करे, फिर उतरे और ग्रीन (हरी) लाइट आने तक आम चाल चले, फिर वहाँ से दूसरी ग्रीन लाइट आने तक दौड़े, फिर आम चाल चले यहाँ तक कि मर्व: आजाए, और मर्व: पर भी वैसे ही करे जैसे सफ़ा पर किया था, पर आयत न पढ़े, फिर मर्व: से उतरे और चलने की जगह में चले और दौड़ने की जगह में दौड़े, इस तरह वह सात फेरे पूरे करे, (सफ़ा से मर्व: जाना एक फेरा हुवा और मर्व: से सफ़ा आना दूसरा फेरा)। फिर अपने बाल कटवाए या मुंडवाए, मुंडवाना अफ़ज़ल है, लेकिन हज्जे तमत्तु'अ करने वाले व्यक्ति के लिए बाल कटाना अफ़ज़ल है ताकि बाकी बाल को हज्ज के बाद मुंडवाए। पर हज्जे क़िरान और इफ़्राद करने वाले सई करने के बाद हलाल नहीं होंगे, बल्कि वह ईद के जमर-ए-क़बा की रम्य करने के बाद हलाल होंगे। और औरत के अह्काम मर्द ही की तरह हैं, पर वह तवाफ़ और सई में रमल नहीं करेगी।

**हज्ज का तरीका :** और जब यौमुत्तर्विया अर्थात आठवीं जिल्हज्जा आए तो जिसने अपना इह्राम खोल दिया हो वह मक्का में अपने डेरे से ही फिर से इह्राम बांधे, और मिना में नौवीं की रात बिताने के लिए मिना जाए, नौवीं तारीख को जब सूरज निकल आए तो चाशत के समय अरफ़ा के लिए निकल पड़े, और जब सूरज ढल जाए तो जुह और अमन की नमाज़ एक साथ क़म्र करके पढ़े, अरफ़ा के अन्दर कहीं भी ठहर सकता है सिवाय वादिए उरना के, और अरफ़ा में ज़्यादा से ज़्यादा यह दुआ करे : **"لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ"**  
**"लाइलाह इल्लल्लाहु व्हदहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन् कदीर"**। सूरज डूबने तक बराबर दुआ करता रहे, तौबा करे, और अल्लाह से अपना नाता जोड़े, फिर सूरज डूबने के बाद मुज्दलिफ़ा के लिए निकले, आराम और शान्ति के साथ चले, बराबर तल्बिया पढ़ता रहे, और अल्लाह का ज़िक्र करता रहे, और जब मुज्दलिफ़ा पहुंच जाए तो मग़िब और इशा क़म्र करके दोनों एक साथ पढ़े, मुज्दलिफ़ा में रात बिताए, और फ़ज़्र की नमाज़ फ़ज़्र निकलते ही ग़लस में पढ़े, और मुज्दलिफ़ा ही में रह कर दु'आ करता रहे, यहाँ तक कि जब ख़ूब उजाला होजाए, तो सूरज निकलने से पहले ही मिना के लिए निकल पड़े, और जब वादिए मोहसिसर में पहुंचे तो यदि होसके तो उसे तेज़ी से पार करे, यहाँ तक कि मिना आकर सबसे पहले जम्रए अक़बा की रम्य करे, सात छोटी छोटी कंकरियां अंगूठे और शहादत की उंगली के किनारे में रखकर (एक एक करके) मारे और हर कंकरी के साथ **अल्लाहु अक़बर** कहे, औश्र रम्य करते समय हाथ उठाए। स्पष्ट रहे कि मात्र वही कंकरी शुमार की जाएगी जो हौज़ में गिरेगी चाहे वह उठे हुए खम्बे को लगे या न लगे, और रम्य शुरू करने के साथ ही तल्बिया पुकारना बन्द करदे, फिर अपने हृदय के जानवर की कुर्बानी करे, फिर अपना सर मुंडवाए या सर के बाल कटवाए पर मुंडवाना अफ़ज़ल है, और रम्य और हलक़ करने के साथ ही वे सारी चीज़ें उसके लिए हलाल हो जाएंगी जो इह्राम के कारण हराम होगई थीं, सिवाय औरतों के, और इसे तहल्लुले अव्वल कहा जाता है, फिर हाजी मक्का आए और तवाफ़े इफ़ाज़ा करे, यह वह फ़र्ज़ तवाफ़ है जिससे हज्ज पूरा होता है, फिर यदि वह हज्जे तमत्तु'अ कर रहा है या यदि उसने क़िरा और इफ़्राद करने की सूरत में तवाफ़े क़ुदूम के साथ सई न की हो तो सफ़ा और मर्व: की सई करे, और इस तवाफ़ के साथ सारी चीज़ें उसके लिए हलाल हो जाएंगी यहाँ तक कि औरत भी हलाल हो जाएगी, और इसे तहल्लुले सानी कहा जाता है, फिर वह लौट कर मिना जाए और अय्यामे तश्रीक़ (11,12 और 13) की रातें वाजिबी तौर पर मिना में बिताए, और इसके दिनों में सूरज ढलने के बाद जमरात को कंकरी मारे, हर जम्रे को सात कंकरियां मारे, आरम्भ जम्रए ऊला से करे, और ख़ान-ए-का'बा को सामने करके कंकरियां मारे, फिर आगे बढ़े और वहाँ रुक कर अल्लाह से दुआ करे, फिर बीच वाले जम्रा के पास आए, और उसे भी उसी तरह कंकरियां

मारे, और रुक कर दुआ करे, फिर ज़म्रए अक्बा को कंकरियां मारे और वहाँ से चल पड़े उसके पास दुआ करने के लिए न रुके, फिर दूसरे दिन भी इसी तरह कंकरियां मारे, फिर यदि वह पहले दो ही दिन में मिना से जाना चाहे तो सूरज डूबने से पहले निकल जाए, और यदि बारहवीं तारीख़ का सूरज डूब जाए और वह मिना ही में है तो मिना में 13 की रात बीताना ज़रूरी होगा, और तेरहवीं को भी जमरात को कंकरियां मारे, यदि उसने निकलने का इरादा कर लिया हो लेकिन रास्ते में भीड़ के कारण मिना के सीमा से बाहर न निकल सका हो तो निकलने में कोई हरज नहीं, चाहे वह सूरज डूबने के बाद ही क्यों न निकले, हज्जे किरान करने वाले को भी वही सब कुछ करना पड़ेगा जो हज्जे इफ़ाद करने वाला करता है, अलग से कोई काम उस पर नहीं है, सिवाय इसके कि मुफ़िद् पर हद्द नहीं है और कारिन और मुतमत्ति'अ पर हद्द का जानवर ज़बह करना है, और जब वापस घर जाना चाहे तो ख़ान-ए-का'बा का त्वाफ़ किए बिना न जाए, ताकि उसका अन्तिम काम का'बा का त्वाफ़ हो, और यदि त्वाफ़े विदा'अ के बाद किसी व्यापार में लग जाए तो वापसी के समय फिर से त्वाफ़े विदा'अ करे, और जो बिना त्वाफ़े विदा'अ किए निकल गया हो तो यदि वह करीब हो तो वापस लौट कर त्वाफ़ करे, फिर वापस लौटे, और यदि दूर निकल गया हो तो उस पर दम लाज़िम होगा, पर हैज़ और निफ़ास वाली औरत पर त्वाफ़े विदा'अ नहीं है, वह बिना त्वाफ़े विदा'अ किए वापस जा सकती हैं।

**हज्ज के 4 रुक़्त हैं :** ① इहराम (हज्ज में दाखिले की नियत करना) ② अफ़ा में ठहरना। ③ त्वाफ़े ज़ियारत करना, इसे त्वाफ़े इफ़ाज़ा भी कहते हैं। ④ हज्ज की सई करना।

**और हज्ज के 7 वाजिबात हैं :** ① मीक़त से इहराम बांधना। ② अफ़ा में सूरज डूबने तक ठहरना। ③ मुज्दलिफ़ा में रात बिताना, यह वुजूब आधी रात के बाद तक है। ④ मिना में अय्यामे तश्रीक़ (11.12 और 13 जिल्हज्जा) की रातें बिताना। ⑤ जमताजत्रात को कंकरियां मारना। ⑥ बाल मुंडवाना या कटवाना। ⑦ त्वाफ़े विदा'अ करना। ⑧ और मुतमत्ति'अ तथा कारिन के कुर्बानी करना।

**उम्रा के 3 रुक़्त हैं :** ① इहराम (उम्रा में दाखिले की नियत करना) ② उम्रा का त्वाफ़ करना। ③ उम्रा की सई करना।

**और इसके 2 वाजिबात हैं :** ① मीक़त से इहराम बांधना। ② बाल कटवाना या मुंडवाना। जिसने किसी रुक़्त को छोड़ दिया तो जब तक उसे अदा न करले उसका हज्ज पूरा नहीं होगा, और जिसने किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दम द्वारा उसकी तलाफी होजाएगी, और जिसने किसी सुन्नत को छोड़ दिया तो उस पर कोई तावान नहीं है।

**त्वाफ़ सहीह होने की 13 शर्तें हैं :** 1- इस्लाम। 2- अक्ल। 3- ख़ास नियत। 4- त्वाफ़ का समय होना। 5- जिसे शक्ति हो उस के लिए शरमगाह को ढांपना। 6- पवित्र होना, बच्चों के लिए पवित्रता शर्त नहीं है। 7- पुर्ण विश्वास के साथ 7 चक्कर पूरा करना। 8- का'बा को बाईं ओर करके त्वाफ़ करना, और जिन चक्करों में भूल होगई उन्हें फिर से दोहराना। 9- पीठ पीछे की ओर न लौटना। 10- ताक़त रखने वाले के लिए चलना। 11- लगातार चक्कर लगाना। 12- मस्जिदे-हराम के भीतर से त्वाफ़ करे। 13- हजरे अस्वद से त्वाफ़ शुरू करना।

**त्वाफ़ की सुन्नतें :** हजरे अस्वद को छूना और उसे चूमना। छूते समय तकबीर कहना, रुकने यमानी को छूना, दाएं कन्धे के नीचे से चादर निकालना, त्वाफ़ के समय दुआ और ज़िक़र करना, का'बा से करीब होना, त्वाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम के पीछे 2 रक़अत नमाज़ पढ़ना।

**सई की 9 शर्तें हैं :** ① इस्लाम। ② अक्ल। ③ नियत। ④ लगातार करना। ⑤ ताक़त रखने वाले के लिए चलना। ⑥ सात चक्कर पूरे करना। ⑦ पूरे सफ़ा और मर्वा के बीच चक्कर लगाना। ⑧ सहीह त्वाफ़ के बाद सई करना। ⑨ पहला चक्कर सफ़ा से शुरू करना और सातवां चक्कर मर्वा पर ख़तम करना।



**सई की सुन्नतें :** छोटी और बड़ी नापाकी से पवित्र होना, शरमगाह का पर्दा करना, सई के बीच जिफ्र और दुआ करना, चलने की जगह पर चलना और दौड़ने की जगह पर दौड़ना, सफा और मर्वा पर चढ़ना, तवाफ के तुरन्त बाद सई करना।

**नोट :** उसी दिन रम्य करना अफज़ल है, यदि अगले दिन तक के लिए लेट कर दिया, या हर दिन की रम्य को अन्तिम दिन के लिए लेट कर दिया तो भी रम्य हो जाएगी।

**कुर्बानी :** कुर्बानी करना मुवक़दा सुन्नत है, कुर्बानी करने वाले व्यक्ति पर ज़िल्हिज्जा का महीना शुरू होने से लेकर कुर्बानी करने तक बाल, नाखुन, या चमड़ा में से कुछ काटना हराम है।

**अकीका :** अकीका करना सुन्नत है, जन्म के सातवें दिन लड़के की ओर से दो बक्रियां ज़बह की जाएंगी और लड़की की ओर से एक। सातवें दिन बच्चे का बाल काटना और उसके बराबर चाँदी सदका करना मस्तून है। और उसी समय उसका नाम भी रखवा जाएगा। अल्लाह तआला के यहाँ सब से पसन्दीदा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुरहमान है, अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों के नामों के शुरू में अब्द जोड़ कर नाम रखना जैसे : अब्दुन्नबी, अब्दुरसूल आदि हराम है। यदि एक ही समय अकीका और कुर्बानी पड़ जाए तो एक दूसरे की ओर से काफ़ी होगा।

**हज्ज के कर्मों का खुलासा इस प्रकार है :**

इफ़ाद	किरान	तमत्तु'अ	हज्ज और इस्राम की तलबिया की शुरुआत	फिर	फिर	फिर	8 तारीख़ को जुह से पहले	9 तारीख़ को सूरज निकलने के बाद	सूरज डूबने के बाद	कुर्बानी के दिन 10 तारीख़ को फ़ज्र के बाद से इश्शाक से पहले तक	11, 12 के दिन, तथा 13 का दिन लेट करने वाले के लिए	वापसी के समय	
लबैक हज्जन्	लबैक उम्रान् व हज्जन्	लबैक उम्रान् मुतमत्तिअन् बिहा इलल् हज्ज	तवाफ़े क़दूम करना	हज्ज की सई करना	उम्रा का तवाफ़ करना	उम्रा की सई करना	बाल कटाना और पूरी तरह हलाल होजाना	मक्का से इहाँ बांधना और मिना जाना	मिना जाकर जम्रए अक्बा को कंकरियां मारना	कुर्बानी करना	कुर्बानी करना	सूरज डलने के बाद पहले छोटे जम्रएत को फिर बीच वाले को फिर जम्रए अक्बा को कंकरियां मारना	तवाफ़े विदाअ करना जो कि हैज़ अथवा निफास वाली औरत पर वाजिब नहीं है
तवाफ़े क़दूम करना	हज्ज की सई करना	इस्राम की हालत में रहना	मिना जाना	अफ़ा जाना और वहाँ जुह और अम्र की नमाज़ इकट्ठी करके जुह के समय में पढ़ना फिर दुआ के लिए फ़ारिग होजाना	मूज्जलिफ़ा लौटना और वहाँ पहुंचते ही मशिब और इशा की नमाज़ पढ़ना, आधी रात तक वहाँ रुकना, और फ़ज्र के बाद तक रुकना मस्तून है	मिना जाकर जम्रए अक्बा को कंकरियां मारना	कुर्बानी करना	बाल कटवाना या मुंडवाना, फिर तवाफ़े इफ़ाजा करना, रम्य, हल्फ़ और तवाफ़ में से किसी दो को करने से पहला तहल्लूल हासिल होजाता है और तीनों को करने से दूसरा तहल्लूल	सूरज डलने के बाद पहले छोटे जम्रएत को फिर बीच वाले को फिर जम्रए अक्बा को कंकरियां मारना	तवाफ़े विदाअ करना जो कि हैज़ अथवा निफास वाली औरत पर वाजिब नहीं है			

**\* फ़ाइदा :** मस्जिदे नबवी में प्रवेश करने वाला व्यक्ति पहले २ रकअत तहीयतुल् मस्जिद पढ़े फिर आप ﷺ की मुबारक क़ब्र के पास आए, आप के चेहरए मुबारक की ओर अपना चेहरा करे पीठ का'बा की ओर हो, और दिल आप की अज़मत से भरा हुवा हो गोया कि वह आप ﷺ को देख रहा हो : फिर इन शब्दों में सलाम कहे : "अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाह" यदि अधिक बढ़ाए तो बेहतर है। फिर दाईं ओर एक हाथ जितना बढ़े, और कहे: "अस्सलामु अलैक या अबा बक्रिसिद्दीक" "अस्सलामु अलैक या उमरल् फ़ारुक़, अल्लाहुम्मज्जिहिमा अन नबीएहिमा व अनिल् इस्तामि ख़ैरन्" फिर का'बा की ओर चेहरा कर ले और हुज़्रा उस की बाईं ओर हो और दुआ करे।

## विभिन्न लाभदायक बातें

★ **गुल्हाह** : अनेक चीजों के द्वारा गुनाह मिटाए जाते हैं, जैसे सच्ची तौबा, बख्शिश की तलब, नेक काम, परेशानियों द्वारा परीक्षा, सदका, दूसरे व्यक्ति की दुआ, फिर भी यदि कुछ पाप बाकी रह गए, और अल्लाह तआला ने उन्हें माफ न किए तो कब्र में, या कियामत के दिन या जहन्नम की आग में पापी को सज़ा दी जाएगी यहाँ तक कि वह गुनाहों से पवित्र होजाए, फिर वह जन्नत में जाएगा यदि उस की मौत तौहीद पर हुई हो, और यदि कुफ़, शिर्क या निफ़ाक पर मौत हुई हो तो जहन्नम उसका दाइमी ठिकाना होगा। **इन्सान पर गुनाहों के प्रभाव कई एक रूप में पड़ते हैं** : दिल पर उस का प्रभाव यह होता है कि वह दिल में बेचैनी और अंधेरापन का कारण बनता है, वह उसे रुसवा करता, रोगी बना देता, और अल्लाह तआला से दूर कर देता है। दीन पर भी इस का प्रभाव पड़ता है और इन चीजों के साथ साथ उसे इत्ताअत से महरूम कर देता, और नबी, फ़रिश्ते और मोमिनों की दुआ से उसे वंचित कर देता है। जीविका भी प्रभावित होती है, व्यक्ति को वह रोज़ी से महरूम कर देता, उस से नेमत का ख़ातिमा कर देता, और धन दौलत की बर्कत को मिटा देता है। व्यक्तिगत प्रभाव यह पड़ता है कि व्यक्ति की उम्र की बर्कत को मिटा देता, कठोर जीवन का वारिस बनाता, और मामले को कठिन बना देता है। कर्मों को स्वीकार होने से रोक देता, सूसाइटी की अमन व शान्ति को ख़तम कर देता, महंगाई लाता है, हाकिमों और शत्रुओं को मुसल्लत कर देता है, और आसमान से वर्षा को रोक देता है इत्यादि।

★ **ग़म** : दिल की राहत और खुशी और उस से ग़मों का दूर होना हर व्यक्ति की चाहत होती है, और इसी द्वारा उसे उत्तम जीवन प्राप्त होता है, इसे हासिल करने के लिए कई एक धार्मिक, फ़ित्री और व्यवहारिक कारण हैं, जो मात्र मोमिनों के लिए एकत्रित हो सकते हैं, इनमें से कुछ का चर्चा किया जा रहा है : ① अल्लाह तआला पर ईमान लाना। ② उसके आदेशों को बजा लाना, और निषिद्ध वस्तुओं से बचना। ③ वचन, कर्म और नेकी द्वारा मख़्लूक पर एहसान करना। ④ काम काज करते रहना या धार्मिक अथवा सांसारिक ज्ञान की प्राप्ति में व्यस्त रहना। ⑤ भविष्य या अतीत के बारे में चिन्ता न करना, बल्कि अपने रोज़ाना के कामों में व्यस्त रहना। ⑥ अधिक मात्रा में अल्लाह का ज़िक्र करना। ⑦ अल्लाह की ज़ाहिरी और बातिनी नेमतों का चर्चा करना। ⑧ अपने से कमतर व्यक्ति की ओर देखना, सांसारिक जीवन में जो हम से बेहतर है उन पर ध्यान न देना। ⑨ ग़म के अस्बाब को दूर करने के लिए प्रयास करना, और खुशी के अस्बाब को प्राप्त करना। ⑩ ग़म दूर करने के लिए नबी ﷺ जो दुआएं करते थे उनके द्वारा अल्लाह की पनाह चाहना। ★ **फ़ाइदा** : इब्राहीम अल्ख़व्वास कहते हैं : ५ चीजें दिल के लिए इलाज हैं : ध्यान देकर कुर्आन पढ़ना, पेट का ख़ाली होना, कियामुल्लैल करना (तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना), रात के अन्तिम पहर में रोना गिड़गिड़ाना, और नेक लोगों के साथ बैठना।

★ जब कोई व्यक्ति किसी परीशानी का शिकार हो और अपने दुःख को हल्का करना चाहता हो तो उसे बड़ा समझ कर उसके सवाब के बारे में सोचे, और उससे भी बड़ी परीशानी में पड़ने का गुमान करे।

★ **ज़िकाह** : ऐसा व्यक्ति जिस की ख़्वाहिश नार्मल हो जिस से उसे ज़िना का डर न हो तो उसके लिए शादी करना मस्नून है, और जिसके भीतर ख़्वाहिश ही न हो उसके लिए शादी करना मुबाह है। पर जिसे ज़िना में पड़ जाने का डर हो तो उसके हक़ में शादी करना वाजिब है, जिसे वाजिबी हज़्ज पर भी तर्ज़ीह दी जाएगी। औरतों को देखना हराम है, इसी तरह शहवत भरी नज़र से बड़ी उम्र की औरत और अम्रद को भी देखना हराम है।



**निकाह की शर्तें :** ① शौहर और बीवी की ता'ईन। अतः यदि किसी के पास एक से अधिक बेटियां हों तो उसका यह कहना सही नहीं होगा कि मैंने तुम्हारा निकाह अपनी एक बेटी से कर दिया। ② अकल्मन्द बालिग़ शौहर की रिज़ामन्दी, और इसी तरह आज़ाद बालिगा लड़की की रिज़ामन्दी। ③ वली का होना, अतः औरत का स्वयं अपनी शादी कर लेना सही नहीं है। और न ही वली के अलावा किसी दूसरे मर्द को उसकी शादी कराने का इख्तियार है। हाँ उस सूरत में जबकि वली किसी कुपव मर्द से शादी करने में बाधा डाले (तो जायज़ है)। वली की तर्तीब इस प्रकार है : बाप, फिर दादा, फिर उससे ऊपर की पीढ़ी, फिर बेटा, फिर पोता, फिर उससे नीचे की पीढ़ी, फिर सगा भाई फिर अल्लाती भाई, फिर सगा भतीजा ... इत्यादि। ④ शहादत, दो नेक, अकल्मन्द और बालिग़ मर्द की गवाही ज़रूरी है। ⑤ शौहर और बीवी के निकाह में किसी बाधा दायक कारण का न पाया जाना। जैसे दूध, या नसब या शादी का रिश्ता जो इस निकाह के हुराम होने के कारण हों।

**निकाह हुराम ठहराने वाली चीज़ें :** ① जिन के कारण हमेशा के लिए निकाह करना हुराम होता। और ये कई प्रकार के हैं : ① नसब के कारण हुराम होने वाली औरतें : मां, दादी और उनके ऊपर की पीढ़ी। बेटी, पोती और इनके नीचे की पीढ़ी। और सारी बहनें उनकी बेटियां, पोतियां और नवासियां। और सारी भतीजियां, उनकी बेटियां, पोतियां और नवासियां और उन से नीचे की पीढ़ी। और फूफ़ी और मौसी और उन की ऊपर की पीढ़ी। ② दुध के कारण हुराम होने वाली औरतें। जो औरतें नसब के कारण हुराम होती हैं वह सारी दुध पीने के कारण भी हुराम ठहरती हैं, यहाँ तक की शादी के रिश्ते में भी इसका एतिबार होता है। ③ शादी के रिश्ते के कारण हुराम होने वाली औरतें : सास, बीवी की दादी और नानी ...और बीवी की बेटी और उस से नीचे की पीढ़ी। ④ जिन के कारण एक सीमित सीमा तक निकाह करना हुराम होता है। और ये दो प्रकार के हैं : ① निकाह में एक ही समय में दो को इकट्ठा करना, जैसे एक ही समय में दो बहनों से निकाह करना। या उसकी फूफ़ी अथवा मौसी से निकाह करना। ② किसी ख़तम होजाने वाली आरिज़ी चीज़ के कारण, जैसे किसी की बीवी से शादी करना।

**\* फ़ाइदा :** मां बाप को यह हक़ हासिल नहीं है कि लड़के को किसी ऐसी लड़की के साथ शादी के लिए मजबूर करें जिसे वह चाहता न हो। इस मामले में लड़के पर उनकी फ़र्माबर्दारी भी ज़रूरी नहीं है, और न ही इस के कारण वह नाफरमान माना जाएगा।

**\* त़लाक़ :** हैज़, या निफ़ास या ऐसी पाकी की अवस्था में जिसमें बीवी से संभोग किया हो त़लाक़ देना हुराम है, पर दे देने की सूरत में त़लाक़ हो जाएगी। बिना कारण के त़लाक़ देना मकरूह है। और कारण बस मुबाह है। और जिसे निकाह के कारण हानि पहुँच रहा हो उस के लिए मस्नून है। त़लाक़ के मामले में वालिदैन की फ़र्माबर्दारी वाजिब नहीं है। और जो व्यक्ति त़लाक़ देना चाहता हो उस पर एक से अधिक त़लाक़ देना हुराम है, और यह भी वाजिब है कि ऐसी पाकी में त़लाक़ दे जिसमें उसने संभोग न किया हो। एक त़लाक़ देकर छोड़ दे यहाँ तक कि इद्दत पूरी होजाए। जिस औरत की त़लाक़ रजड़ हो (अर्थात जिस त़लाक़ के बाद लौटाना सम्भव हो) उस पर इद्दत पूरी होने से पहले शौहर के घर से निकलना या शौहर का घर से निकालना हुराम है। मात्र नियत करने से त़लाक़ नहीं होती बल्कि उसे शब्दों द्वारा बोलना वाजिब है।

**\* क़सम :** क़सम पर क़फ़ारा वाजिब होने के लिए 4 शर्तें हैं : ① क़सम का इरादा किया हो, यदि बिना इरादे के क़सम खाई हो तो वह क़सम नहीं है। बल्कि उसे लग़वे यमीन कहते हैं : जैसे बात करते समय (क़सम से, अल्लाह क़सम आदि) कहना। ② क़सम भविष्य के किसी

ऐसी चीज़ के बारे में खाई गई हो जिस का होना संभव हो। अतः यदि अतीत के बारे में अज्ञानता में क़सम खाई हो, या स्वयं को सही समझ कर खाई हो, या जानबूझकर झूठी क़सम खाई हो (इसे यमीने गुमूस कहते हैं जो कि बड़ा पाप है) या भविष्य के बारे में स्वयं को सही समझ कर क़सम खाई हो परन्तु मामला उलटा हो जाए तो इन सभी का शुमार क़सम में नहीं होता। ③ अपनी मर्जी से क़सम खाई हो, क़सम खाने के लिए उसे मज्बूर न किया गया हो।

④ क़सम में हानिस होजाए, अर्थात् जिस चीज़ के न करने की क़सम खाई थी उसे कर ले, या करने की क़सम खाई थी परन्तु उसे न करे। और जिस व्यक्ति ने क़सम खाई हो और साथ ही साथ इन-शाअल्लाह भी कहा हो तो 2 शर्तों की बिना पर उस पर कफ़ारा वाजिब नहीं होता : ① क़सम के साथ ही इन-शाअल्लाह कहा हो। ② इन-शाअल्लाह द्वारा क़सम की ता'लीक़ मक्सूद हो, जैसे कहे :अल्लाह की क़सम इन-शाअल्लाह।

जिस व्यक्ति ने किसी चीज़ की क़सम ली हो लेकिन भलाई उस के विपरीत में हो तो सुन्नत यह है कि क़सम का कफ़ारा दे और भलाई वाला कर्म करे।

**क़सम का कफ़ारा :** क़सम का कफ़ारा है 10 ग़रीब को खाना खिलाना, हर ग़रीब को आधा सा'अ अर्थात् 1.5 किलो अनाज देना। या 10 ग़रीब को कपड़ा पहनाना। या एक गर्दन आज़ाद करना। यदि इनमें से किसी की भी शक्ति न हो तो लगातार 3 दिन के रोज़े रखना। और जिसने खाना खिलाने या कपड़ा पहनाने की ताक़त रखने के बावजूद रोज़े रखे हों तो उसका ज़िम्मा बरी नहीं होगा। हानिस होने से पहले या बाद में कफ़ारा देना जायज़ है। और जिसने किसी एक चीज़ पर एक बार से अधिक क़सम खाई हो तो उनकी ओर से मात्र एक कफ़ारा दे देना काफी है। यदि मामला अलग अलग हो तो उनका कफ़ारा भी अलग अलग होगा।

\* **नज़र :** नज़र की किस्में : ① मुल्लक़ नज़र : जैसे यह कहे : यदि मैं निरोग हो गया तो अल्लाह के लिए नजर दूँगा। फिर चुप होजाए और किसी ख़ास चीज़ की नज़र न माने तो निरोग होजाने पर क़सम का कफ़ारा देना होगा। ② गुस्सा और लिजाज की नज़र : नज़र को मश्रूत करना किसी चीज़ से रोकने या उसके करने पर, जैसे यह कहना : यदि मैं ने तुझ से बात की तो मेरे ऊपर पूरे साल का रोज़ा है। इसका हुक्म ये है कि : उसे उस काम के करने, या बोलने पर क़सम का कफ़ारा देने का इख़्तियार है। ③ मुबाह नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए कपड़ा पहनना है। इसका हुक्म यह है कि उसे कपड़ा पहनने या क़सम का कफ़ारा देने का इख़्तियार है। ④ मकरूह नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए अपनी बीवी को तलाक़ देना है। इसका हुक्म यह है कि इस काम को न करे और क़सम का कफ़ारा दे दे, यदि कर दे तो कफ़ारा नहीं है। ⑤ गुनाह वाली नज़र : जैसे यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए चोरी कना है। इसका हुक्म यह है कि ऐसे काम को करना हराम है, इसलिए क़सम का कफ़ारा दे। यदि कर दिया तो पापी है और उस पर कफ़ारः नहीं है। ⑥ नेकी करने की नज़र : जैसे अल्लाह की नज़दीकी प्राप्त करने के मक़सद से यह कहे : मेरे ऊपर अल्लाह के लिए यह नमाज़ पढ़ना है। यदि किसी चीज़ के साथ उसे मशरूत किया हो जैसे रोगी का निरोग होना, तो यदि शर्त प्राप्त होजाए तो उस कर्म को करना वाजिब है, और यदि किसी चीज़ के साथ मशरूत न किया हो तो हर अवस्था में उसे करना वाजिब है।

\* **रिज़ाअत :** दूध पिलाने के सबब वह सारे रिश्ते हराम हो जाते हैं जो नसब के कारण होते हैं। पर 3 शर्तों के साथ : ① बच्चा जन्म होने के कारण दूध आरहा हो, न कि किसी दूसरी वजह से। ② बच्चे ने पैदाइश से 2 साल के भित्र दूध पिया हो। ③ विश्वासनिय रूप से उस ने 5 रज़अत या उस से अधिक दूध पिया हो। रज़अत का अर्थ यह कि बच्चा

छाती को मुंह में लगाकर दूध पिए और अपने से छोड़ दे। रिज़ाअत के कारण खर्चा देना या विरासत साबित नहीं होती।

★ **वसीयत** : जिस पर दूसरे का ऐसा हक हो जिसका कोई प्रमाण न हो तो मृत्यु के पश्चात उसकी अदायगी की वसीयत करना वाजिब है। और जिस के पास अधिक धन हो उस पर पाँचवा हिस्सा धन सद्का करने की वसीयत करना मुस्तहब है। चुनांचि ग़रीब नातेदार के लिए वसीयत करे जो कि वारिस न हो। नहीं तो आम ग़रीब, अलिम और नेक व्यक्ति के लिए वसीयत करे। और फ़कीर व्यक्ति का जिसके वारिस मौजूद हों वसीयत करना मक़ूह है, हाँ यदि वे धनी हों तो फिर मुबाह है। और किसी अजनबी व्यक्ति के लिए एक तिहाई से अधिक की वसीयत करना हराम है। इसी तरह वारिस की खातिर थोड़े से धन की भी वसीयत करना हराम है, यदि मौत के बाद बाकी वरसा अनुमति दे दें तो वसियत नाफिज़ की जा सकती है। वसीयत करने वाले व्यक्ति द्वारा इन शब्दों के कहने से वसीयत बातिल होजाती है : मैं ने अपनी वसीयत लौटाली, या उसे बातिल कर दिया। या उसे बदल दिया या इसी तरह के दूसरे शब्द।

**वसीयत के आरम्भ में ये लिखना मुस्तहब है** : बिस्मिल्लाहिररह्मानिररहीम हाज़ा मा औसा बिही फुलानुन् अन्नहु यशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू, व अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू, व अन्नल् जन्नत हक्कू, व अन्नन्नार हक्कू, व अन्नस्साअत आतियल्लारैब फीहा, व अन्नल्लाह यब्असु मन् फिल्कुबूरू, व ऊसी मन् तरक्तु मिन् अह्ली अय्यत्तकुल्लाह व युस्लिहू जात बैनिहिम्, व युतीउल्लाह व रसूलहू इन् कानू मुअमिनीन्, व ऊसीहिम बिमा औसा बिही इब्राहीमु बनीहि व याअकूब : ﴿يَبْنِي إِنْ أَلَّهَ أَصْطَفَىٰ لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ﴾

★ नबी ﷺ पर दरूद भेजते समय, एक के बजाए दरूद और सलाम दोनों भेजना मुस्तहब है, केवल नबी के अलावा पर दरूद नहीं भेजा जाएगा, इसलिए अबू बक्र सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम या अलैहिस्सलाम नहीं कहा जाएगा, और ऐसा करना मकरूह तन्ज़ीही है, पर नबियों के साथ में उन पर दरूद भेजना जायज़ है, जैसा कि इन शब्दों में दरूद भेजना : अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद् व अला आलि मुहम्मद् व अस्हाबिही, व अज्वाजिही व जुरीयतिहू। और सहाबा, ताबिईन, उन के बाद आने वाले अलिमों, अबिदों और सारे नेक लोगों के लिए रज़ियल्लाहु अन्हु, या रहिमहुल्लाहू कहना मुस्तहब है। चुनांचि अबू हनीफ़ा, मालिक, शाफ़ई और अहमद रज़ियल्लाहु अन्हुम्, या रहिमहुमुल्लाहू कहा जाएगा।

★ **ज़बह** : जानवर का गोशत खाने के लिए उन्हें ज़बह करना वाजिब है। जानवर में इन 3 शर्तों का पाया जाना ज़रूरी है : ① जिसका गोशत खाना मुबाह हो। ② जो इन्सान के बस में हो। ③ खुशकी में रहने वाला जानवर हो। और ज़बह की 4 शर्तें हैं : ① जबह करने वाला अक़लमन्द हो। ② छूरी तेज़ हो, जो कि हड्डी और दांत की न हो, क्योंकि इन दोनों से ज़बह करना जायज़ नहीं है। ③ गला, और दोनों में से किसी एक रग का कटना। ④ ज़बह के लिए हाथ हिलते समय बिस्मिल्लाह कहना। यदि बिस्मिल्लाह कहना भूल जाए तो कोई आपत्ति की बात नहीं है। बिस्मिल्लाह के साथ अल्लाहु अक्बर भी कहना मस्नून है।

★ **शिकार** : जिस जानवर का शिकार किया जाना हो उसके लिए 3 शर्तें हैं : ① उसका गोशत खाना हलाल हो। ② बिदकना उसकी फ़ित्रत हो। ③ और जो बस में न आए। और 4 शर्तों के साथ शिकार करना जायज़ है : ① शिकारी व्यक्ति में ज़बह करने की अहलियत हो। ② शिकार करने का आला ऐसा हो जिससे ज़बह करना जायज़ हो। और वह तेज़ धारदार बर्छ या तीर या इस तरह का कोई दूसरा आला हो। और यदि शिकारी जानवर जैसे बाज़ या कुत्ता द्वारा शिकार कर रहा हो तो उस जानवर का शिक्षित होना ज़रूरी है। ③ शिकार करने के

इरादे से तीर वगैरा फेंकी गई हो। यदि बिना इरादे के शिकार होजाए तो उसे खाना हलाल नहीं है। ④ तीर वगैरा फेंकते हुए या शिकारी जानवर दौड़ाते हुए बिस्मिल्लाह कहना वाजिब है। इसमें भूल माफ़ नहीं है; इसलिए बिस्मिल्लाह किए बिना जिस जानवर का शिकार किया गया हो उसका गोश्त खाना हुराम है।

★ **खाना** : इससे मुराद हर खाई और पी जाने वाली चीज़ है। यदि इन में 3 शर्तें पाई जाती हों तो इनका खाना हलाल है : ① खाना पाक हो। ② खाना में कोई नुकसान न हो। ③ और वह गन्दा न हो।

हर नापाक खाना जैसे खून और मुर्दार हुराम है, और जिसमें हानि हो जैसे ज़हर, और गन्दी चीज़ें जैसे : गोबर, मूत, ढील, पिस्सू, और भूमि स्थल के जानवरों में से गधा, और फाड़ खाने वाले जानवर जैसे शेर, चीता, भेड़ीया, तेंदुवा, कुत्ता, सूवर, बन्दर, बिल्ली, और लौमड़ी सिवाय बिज्जू के, और पंजा द्वारा आक्रमण करने वाले पक्षी जैसे उकाब (गरुड़), बाज़, सक्क, बाशक, शाहीन, चील, उल्लू, और गन्दगी खाने वाले पक्षी जैसे गिध, रख़म, सारस, और हर वह पक्षी जिसे अरब वासी नापसंद करते हों जैसे चम्मादड़, चूहा, बिर्नी, मक्खी, पतिंगा, हुदहुद, साही और सांप यह सब के सब हुराम हैं। और प्रत्येक प्रकार के कीड़े मकूड़े, चूहा, गुब्रैला, छिपकिली। और हर वह चीज़ जिसे मारने का शरीअत ने आदेश दिया है जैसे बिच्छू या उसे मारने से रोका है जैसे चिंवटी। या जो दो जानवरों से जन्म लिए हों जिसमें एक का खाना हलाल है और दूसरे का खाना हुराम है जैसे सिम्अ अर्थात भेड़िया से बिज्जू का जन्म लेने वाला बच्चा तो यह भी हुराम है। पर यदि दो ऐसे जानवरों से जन्म लिया हो जिन्हें खाना मुबाह है जैसे नील-गाय और घोड़े से जन्म लेने वाला खच्चर तो यह हुराम नहीं है। और इनके अतिरिक्त जो पशु हैं वह हलाल हैं जैसे भेड़, बक्रा, ऊँट, गाय और घोड़ा, और जंगली जानवर जैसे ज़राफ़ा, खर्गोश, वबर (बिल्ली से छोटी डील का एक जानवर), यर्बूअ (चूहा समान एक जानवर जिस की अगली टांगें छोटी, पिछली बड़ी, और पोंछ लम्बी होती है), गोह और हिरन। और पक्षी यों में शतुर मुर्ग, मुर्गा मुर्गी, मोर, तोता, कबूतर, गौरैया, बतख, मुर्गाबी और समुन्दर की सम्पूर्ण पक्षियाँ। और समुन्दरी जानवर सिवाय मेंडक, शर्प और घड़ियाल के। और जिस खेती या फल पर नापाक पानी पटाया गया हो, या खाद डाला गया हो, तो उस की उपज को खाना जायज़ है यदि उस में गन्दगी या उस की बदबू का प्रभाव न हों। और कोइला, मिट्टी या गारा को खाना मकरूह है, इसी प्रकार बिना पकाए कच्ची पियाज़ और लहसुन खाना मकरूह है, और यदि भूक के कारण मज्बूर होगया तो जान बचाने के लिए कुछ भी खा सकता है।

★ काफ़िरोँ के तेहवारों में जाना या उन पर उन्हें मुबारकबादी देना, और सलाम करने में पहल करना हुराम है। और यदि वे हमें सलाम करें तो जवाब में “व अलैकुम” कहना वाजिब है। उनकी और इसी तरह बिद्अतियों की स्वागत के लिए खड़ा होना हुराम है। उनसे मुसाफ़हा करना मकरूह है, परन्तु उनकी ताज़ियत करना, या बीमारपुरसी करना धार्मिक मसलहत की खातिर जायज़ है।

अल्लाह तआला की सुन्नतों पर ध्यान रखने वाले व्यक्ति को इस बात की जानकारी बहुत अच्छी तरह है कि परीक्षा अल्लाह तआला की कौनी कद्री सुन्नत है, उसका फरमान है :

﴿ **“और हम किसी न किसी तरह ज़रूर तुम्हारा परीक्षा लेंगे, शत्रु के डर से, भूक प्यास से, माल तथा जान और फलों की कमी से, और सब करने वालों को खुशख़बरी दे दीजिए।”** और जो व्यक्ति इस भ्रम में है कि नेक लोगों का परीक्षा नहीं होता तो वह उसकी गलती है, बल्कि परीक्षा तो ईमान की निशानी है। नबी ﷺ से पूछा गया : “वह कौन व्यक्ति है जिसका परीक्षा सब से अधिक होता?” तो आप ﷺ ने फरमाया: “अम्बिया, फिर नेक लोग, फिर अच्छे अच्छे लोग। इन्सान का परीक्षा उसके धर्म (दीन) के आधार पर होता है, यदि उसके धर्म में मज़बूती है तो उसका परीक्षा अधिक होता है, और यदि उसके दीन में कमी है तो उसका परीक्षा हल्का होता है”। और यह बन्दे से अल्लाह तआला की महब्वत की निशानी है, नबी ﷺ का फरमान है : “अल्लाह तआला जब किसी कौम से महब्वत करता है तो उनका परीक्षा लेता है”। (अहमद और तिर्मिज़ी) इसी तरह यह उसके लिए भलाई चाहने की निशानी है, नबी ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह जब अपने बन्दे के लिए भलाई चाहता है तो वह उसे संसार में सज़ा दे देता है, और जब बुराई चाहता है तो उसकी सज़ा को रोके रखता है ताकि कियामत के दिन पूरा बदला ले”। (तिर्मिज़ी) और परीक्षा गुनाहों के लिए कफ़ारा है चाहे थोड़ा ही क्यों न हो, जैसा कि नबी ﷺ ने फरमाया: “जिस मुस्लिम व्यक्ति को भी तक्लीफ़ पहुँचती है, चाहे काँटा चुभे या उस से बड़ी मुसीबत में मुब्तला हो, तो अल्लाह तआला उसके ज़रीए उसके गुनाहों को मिटा देता है, जिस तरह पेड़ अपने पत्तों को झाड़ देता है”। (बुख़ारी एवं मुस्लिम) चुनांचि मुसीबत में ग्रस्त व्यक्ति यदि नेक है तो परीक्षा उसके पिछले गुनाहों के लिए कफ़ारा है, या उसके दर्जे में बुलंदी का कारण है, और यदि पापी है तो यह उसके गुनाहों के लिए कफ़ारा है और उसके भयानकपन को याद दिलाने का ज़रीआ है। अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿ **“खुशकी और तरी में फ़साद फैल गया लोगों के कुर्मों के कारण; इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फल अल्लाह तआला उन्हें चखा दे, अधिक सम्भव है कि वे रुक जाएं”**।

**परीक्षा की किस्में :** भलाई द्वारा परीक्षा, जैसे धन की बढ़ौतरी। बुराई द्वारा परीक्षा, जैसे डर, भय, भूक, धन दौलत की कमी, अल्लाह तआला का फरमान है : ﴿ **“हम परीक्षा के लिए तुम में से प्रत्येक को बुराई तथा भलाई में डालते हैं”**। और बीमारी और मौत का शुमार भी इसी में होता है, जिसका बड़ा कारण हसद के कारण लगने वाली नज़र और जादू है। नबी ﷺ का फरमान है : “अल्लाह की कज़ा और क़द्र के बाद मेरी उम्मत के अधिकतर लोगों की मौत नज़र लगने के कारण होगी”। (तयालसी)

**जादू और नज़र से बचाव :** बचाव इलाज से बेहतर है, इसलिए बचाव के कारणों को अपनाना ज़रूरी है, कुछ महत्वपूर्ण कारणों का चर्चा नीचे किया जा रहा है : \* तौहीद द्वारा नफ़्स को शक्ति पहुँचाना, यह ईमान रखते हुए कि संसार में हेर फेर करने वाला मात्र अल्लाह तआला है, और अधिक नेकी के काम करना। \* अल्लाह तआला के बारे में उत्तम धारणा रखना, और उसी पर भरोसा करना, किसी बदलाव के कारण बीमारी या बूरी नज़र का वहम न करना, क्योंकि वहम स्वयं एक रोग है। <sup>1</sup> \* जिस व्यक्ति के बारे में जादूगर होना या बुरी नज़र वाला होना मशहूर हो

<sup>1</sup> डाक्टरस और विशेषक लिखते हैं कि सेक्स सम्बन्धित बिमारियां वहम के कारण होती हैं। वास्तव में बीमारी नहीं होती।

उससे दूर रहना बचाव के तौर पर न कि उससे डर कर। \* किसी अच्छी भली चीज़ को देख कर अल्लाह का ज़िक्र करना और बर्कत की दुआ करना। नबी ﷺ का फ़रमान है : “जब तुम में से किसी को अपनी नफ़्स या धन, या अपने भाई की कोई चीज़ पसन्द आजाए, तो वह बर्कत की दुआ करे, क्योंकि नज़र सत्य है”। बर्कत की दुआ यह है : “बारकल्लाह” (अल्लाह तआला बर्कत अता करे)। इस जगह “तबारकल्लाह” कहना सहीह नहीं है। \* बचाव के कारणों में से यह भी है कि सवेरे मदीनतुन्नबी ﷺ की सात अज्वा ख़जूरें खाए। \* अल्लाह तआला की ओर लौटना, उस पर भरोसा करना, उसके बारे में अच्छी धारणा रखना, नज़र और जादू से उसकी पनाह में आना, और सवेरे शाम अज़्कार और मुऔविज़ात की पाबन्दी करना,<sup>1</sup> अल्लाह तआला के इरादे से 2 चीज़ों के कारण इन अज़्कार के प्रभाव में कमी बेशी होती है : ① इस बात पर ईमान रखना कि यह अज़्कार हक़ और सत्य हैं, और अल्लाह तआला के इरादे से लाभ-दायक हैं। ② जुबान से कहे, कान धरे रहे, और दिल को हज़िर रखवे; क्योंकि यह दुआ है और गाफ़िल लापर्वाह दिल की दुआ स्वीकार नहीं होती। जैसा कि नबी ﷺ से प्रमाणित है।

**अज़्कार और मुऔविज़ात के समय** : सवेरे के अज़्कार फ़ज़्र की नमाज़ के बाद कहे जाएंगे, और शाम के अज़्कार अस्म की नमाज़ के बाद, और यदि भूल जाए तो जिस समय याद आजाए ज़िक्र कर ले।

**नज़र इत्यादि लगने की निशान्ती** : मेडीकल और शरई रुक्या के बीच कोई विरोध नहीं है, चुनांचि कुर्आन जिस्मानी और रूहानी रोगों के लिए शिफ़ा है, और जब इन्सान जिस्मानी बीमारी से निरोग हो, तो उसकी शारीरिक बदलाव आम तौर पर रियाही दर्द के रूप में होता है, चेहरे का पीला पड़ जाना, अधिक मात्रा में पेशाब या पसीना आना, ख़ाहिश कम हो जाना, किनारों में गर्मी ठंडी या चुभन होना, दिल धड़कना, कंधों और पीठ के नीचे दर्द का घूमना, रात में नींद न आना, डर या गुस्सा के कारण ग़ैर फ़ित्री तनाव पैदा होना, बहुत डिकार आना, लम्बी सांस लेना, तन्हाई पसंद करना, सुस्ती होना, सोने की चाहत करना, और दूसरी स्वास्थ से जुड़ी परेशानियां जो किसी बीमारी के कारण न हों। और बीमारी की शक्ति और कमज़ोरी के लिहाज़ से यह सारी निशानियां या इन में से कुछ पाई जाती हैं।

मुस्लिम व्यक्ति का मज्बूत दिल और ईमान वाला होना ज़रूरी है, वह वसवसों से अपने आप को दूर रखवे, मात्र इस तरह की किसी बदलाव के कारण स्वयं को रोगी होने के भ्रम में न डाले, क्योंकि भ्रम का इलाज करना सब से कठिन है, और कभी कभार ऐसा भी होता है कि कुछ लोगों के अन्दर इस तरह के बदलाव पाए जाते हैं लेकिन वह निरोग होते हैं, और कभी इस तरह के बदलाव का कारण जिस्मानी रोग होता है, और कभी इसका कारण ईमान की कमज़ोरी होती है, जैसे सीने की तंगी, ग़मी, सुस्ती, तो ऐसे व्यक्ति पर वाजिब है कि अल्लाह तआला से अपना सम्पर्क जोड़े।

**यदि बीमारी नज़र लगने के कारण हो तो अल्लाह के कृपा से इन दो में से किसी एक के द्वारा उसका इलाज सम्भव है :**<sup>2</sup> ① यदि बुरी नज़र वाले व्यक्ति की जानकारी हो जाए तो उसे स्नान करने का आदेश दो और इस पानी से या जिस पानी को उसने पिया है उस बचे हुए पानी से स्नान करो

<sup>1</sup> देखिए सवेरे-सांझ की दुआएं।

<sup>2</sup> नज़र लगना। जिन्न की ओर से पहुंचने वाली तकलीफ़ है जो अल्लाह तआला की अनुमति से नज़र लगने वालों को पहुंचती है, जब कि शैतान के होते समय उसे देख कर कोई खुश होता है, और नज़र से बचाने वाला कोई सबब भी नहीं होता, जैसे नमाज़ और ज़िक्र इत्यादि। और इस की दलील नबी ﷺ की हदीस है : “नज़र लगना हक़ है”। बुख़ारी। और दूसरी रिवायत में है : “नज़र के अन्दर शैतान और इन्सान का हसद मौजूद होता है”। अहमद। आँख स्वयं तकलीफ़ नहीं पहुंचाती पर इसे ऐन (नज़र) इस लिए कहा गया है कि इस के द्वारा सिफ़त ब्यान की जाती है, वर्गना अंधे की भी नज़र लग जाती है।

और उसे पीओ। <sup>1</sup> <sup>2</sup> और यदि उस व्यक्ति की जानकारी न हो सके तो शिफा के लिए रुक्या, दुआ और पछना का सहारा लो।

**और यदि बीमारी जादू <sup>2</sup> होने के कारण हो तो अल्लाह की कृपा से इनमें से किसी एक के द्वारा उसका इलाज सम्भव है :** <sup>1</sup> जादू के स्थान की उसे जानकारी होजाए, तो मुऔवज़तैन (सूरतु-ल्-फलक़ और सुरतु-न्-नास) पढ़ते हुए उसके बंधन को खोल दे, फिर उसे जला दे। <sup>2</sup> कुरआनी आयतों के द्वारा दम करके खासकर मुऔवज़तैन, सूरतुल् बक्र: और दूआएं पढ़ कर।

<sup>3</sup> शुन्न: करे, और यह दो प्रकार के हैं, <sup>1</sup> यदि जादू का खात्मा जादू द्वारा किया जाए, और इससे छुटकारे के लिए जादूगर का सहारा लिया जाए तो यह तरीका हराम है। <sup>2</sup> दूसरा शुन्न: जायज़ है, और इसका तरीका यह है कि बैर की 7 पत्ती ले, उसे पीस दे, फिर उस पर तीन तीन बार सूरतु-ल्-काफिरून, सुरतु-ल्-इख्लास, सूरतु-ल्-फलक़ और सुरतु-न्-नास पढ़े, फिर उसे पानी में डाल दे, फिर उसे पीए और उससे स्नान करे, अल्लाह की मर्ज़ी से शिफा मिलने तक इस अमल को बार बार करता रहे।

<sup>4</sup> जादू को निकाल फेंके, यदि जादू पेट में है तो इस्हाल वाली चीजों के द्वारा उसे निकाले, और यदि पेट के अलावा किसी दूसरे स्थान पर है तो पछना<sup>3</sup> द्वारा उसे निकाल बाहर करे।

**रुक्या अर्थात् शरई झाड़-फूंक :** इसकी शरतें : <sup>1</sup> रुक्या कुरआनी आयतों और शरई दुआओं के द्वारा किया जाए। <sup>2</sup> रुक्या अरबी भाषा में किया जाए, दूसरी भाषा में दुआ करना जायज़ है। <sup>3</sup> यह आस्था और अक़ीदा रखा जाए कि स्वयं रुक्या का प्रभाव नहीं होता, बल्कि अल्लाह तआला शिफा देता है।

और उसके अधिक प्रभाव की खातिर शिफा की नियत से और इन्सान एवं जिन्नात की हिदायत की नियत<sup>4</sup> से कुरआन पढ़ना चाहिए; क्योंकि कुरआन हिदायत एवं शिफा के लिए नाज़िल हुआ है। और जिन्न को क़तल करने की नियत से कुरआन न पढ़े, हाँ यदि इसके बिना उसका निकलना असम्भव हो तो ऐसा कर सकता है।

**राक़ी अर्थात् रुक्या करने वाले व्यक्ति के लिए शरतें :** <sup>1</sup> मुस्लिम हो, नेक और मुत्तकी हो, और जिस क़दर वह नेक होगा उतना ही अधिक उसके रुक्या का प्रभाव होगा। <sup>2</sup> रुक्या करते समय सच्चाई के साथ अल्लाह तआला की ओर ध्यान लगाए रहे, इस तरह कि दिल जुबान के मुवाफ़िक़ हो, और उत्तम यह है कि इन्सान स्वयं अपने को रुक्या करे, क्योंकि दूसरे व्यक्ति का दिल आम तौर पर व्यस्त होता है, और इसलिए भी कि उसकी हज़त और परेशानी का अन्दाज: उसकी तरह दूसरा व्यक्ति नहीं लगा सकता, और अल्लाह तआला ने परेशान हाल व्यक्ति की दुआ स्वीकार करने का वचन दिया है।

<sup>1</sup> जिस की नज़र लगी हो उस की बची हुई कोई भी चीज़ जैसे पानी या खाने का बकाया, या छूई हुई चीज़ का बकाया लें और उसे पानी में डाल कर उस से बीमार व्यक्ति को नहलाएं और कुछ को पिलाएं।

<sup>2</sup> गांठ लगाने, फुंकने या भनभनाने का अमल है जिससे मसहूर के शरीर, दिल या अक़ल पर असर पड़ता है, और यह हक़ है, चुनाच्चि कुछ जादू जान ले लेता है, कुछ बीमार कर देता है, कुछ पति को पत्नि से सम्भोग करने से रोक देता है, कुछ दोनों के बीच जुदाई करा देता है, और इस में से कुछ शिर्क और कुफ़्र होता तो कुछ की गिन्ती कबीर: गुनाह में होता।

<sup>3</sup> नबी ﷺ ने फ़र्माया : “सब से उत्तम इलाज पछना लगाना है”। और इस द्वारा अल्लाह तआला ने लिंग की कितनी बिमारीयों से शिफा दिया, और इसी प्रकार नज़र और जादू के कारण होने वाले केन्सर से भी शिफा बख़्शा।

<sup>4</sup> दीन की ओर दावत, भलाई के कर्म करने और बुराई से रुकने की नियत से कुरआन पढ़ना, और इस नियत से कुरआन पढ़ने का असर बहुत ज़्यादा है, अख़्तिर बहुत जल्द जिन्न इस से प्रभावित होजाता है और अपनी बुराई रोगी से रोक लेता है, इस के बर ख़िलाफ़ यदि क़तल की नियत से पढ़ा जाए तो सर्कशी पर उतर आता है, और रोगी और पढ़ने वाले दोनों को हानी पहुंचाता है। नबी ﷺ का फ़र्मान है : “अल्लाह तआला नर्म है और नर्मी को पसन्द करता है, और नर्मी पर वह चीज़ें अज़ा करता है जो कि कठोरता के कारण नहीं देता”। मुस्लिम।

**मर्की अर्थात जिस व्यक्ति को रुक्या किया जा रहा है उस के लिए शर्तें :** ① मुस्तहब है कि वह नेक और मोमिन हो, और जिस क़दर वह नेक होगा उसी क़दर उसे लाभ होगा। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿ وَنَزَّلَ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴾  
 “यह कुरआन जो हम उतार रहे हैं मोमिनों के लिए तो सरासर शिफ़ा और रहमत है, हाँ अत्याचारियों को सिवाय हानि के और कोई फ़ायदा नहीं होता”। ② शिफ़ा के लिए सच्चे दिल के साथ अल्लाह की ओर ध्यान लगाए रहे। ③ शिफ़ के लिए जल्दी न करे, क्योंकि रुक्या दुआ है, और यदि उसने जल्दी मचाई तो सम्भव है कि स्वीकार न हो, नबी का फ़रमान है : “तुम में से किसी की दुआ उस समय तक स्वीकार होती है जब तक वह जल्दी न मचाए, यह न कहे मैंने दुआ की परन्तु वह स्वीकार नहीं हुई”। (बुख़ारी एवं मुस्लिम)

**रुक्या के तरीके :** ① हल्की थुकथुकाहट के साथ रुक्या करना। ② बिना थुकथुकाहट के रुक्या करना। ③ उँगली पर थुक लगाना, फिर उसमें मिट्टी मिलाना, और दर्द की जगह को उस से छूना। ④ दर्द की जगह पर हाथ फेरे और रुक्या करे।

**कुछ आयतों और हदीसों जिन्हें से रोगी को रुक्या किया जाए :** सूरतु-ल-फातिहा :

﴿ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴾  
 ﴿ ءَامَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا يَفْرِقُونَ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴾ (٣٥) لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لِطَآئِفَةٍ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴾  
 ﴿ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴾  
 ﴿ يَنْفِقُونَ مِمَّا حَبِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَءَامِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِنْ عَذَابِ أَلِيمٍ ﴾  
 ﴿ وَنَزَلَ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴾<sup>1</sup>

1 आयतु-ल-कुर्सी : “अल्लाह तआला ही सत्य माबूद है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़िंदा और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊँघ आए न नींद। उसकी मिलकियत में ज़मीन और आस्मान की तमाम चीज़ें हैं। कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने सिफ़ारिश कर सके, वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है, और वह उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता (घेरा) नहीं कर सकते मगर जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी की वुसूअत (परिधि) ने ज़मीन व आस्मान को घेर रखा है। और अल्लाह तआला उनके हिफ़ाज़त से न थकता और न उकताता है। वह तो बहुत बुलंद और बहुत बड़ा है।” {सूरह अलबकरा: २५५}

2 सूरतु-ल-बक्र: की आखिरी दोनों आयतें : “रसूल ईमान लाया उस चीज़ पर जो उसकी तरफ़ अल्लाह तआला की ओर से उतरी और मुमिन भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह तआला और उसके फ़रिशतों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए, उसके रसूलों में से किसी में हम तफ़रीक नहीं करते। उन्होंने कह दिया कि हमने सुना और इताअत (अनुकरण) की। हम तेरी बख़्शिश (क्षमा) तलब करते हैं ऐ हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है। अल्लाह तआला किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता। जो नेकी वह करे वह उसके लिए और जो बुराई वह करे वह उस पर है। ऐ हमारे रब! अगर हम भूल गए हैं या ग़लती की हो तो हमें न पकड़ना। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताक़त न हो, और हमसे दरगुज़र फ़रमा, और हमें बख़्शा दे, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िरों की क़ौम पर ग़ल्बा प्रदान कर।” {सूरह अलबकरा: २८५-२८६}

3 “अल्लाह तआला उनसे अनुकरीब किफ़ायत करेगा, और वह ख़ूब सुनने वाला और जानने वाला है।” {सूरह अलबकरा: १३७}

4 “ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह के बुलाने वाले का क़हा मानो, उस पर ईमान लाओ तो अल्लाह तुम्हारे गुनाह बख़्शा देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा।” {सूरह अलअहक़ाफ़: ३१}



3 وَإِذَا مَرَضَتْ فَهِيَ بِشَفِيَةٍ 2 أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ 4  
 5 قَلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءً 4 وَشِفَى صُدُورِ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ  
 6 فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَى مِنْ فُطُورٍ 6 لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ 8  
 8 وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَرِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ  
 9 وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ إِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾ فَغَلِبُوا  
 10 هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صَبْرِينَ  
 11 قَالُوا يَمُوسَى إِمَّا أَنْ تَلْقَى وَإِمَّا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى ﴿١٧﴾ قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا جِبَاهُهُمْ وَعَصَبُهُمْ يَخِيلُ إِلَيْهِ مِنْ  
 12 سِحْرِهِمْ أَنهَا تَسْعَى ﴿١٦﴾ فَأَوْحَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةَ مُوسَى ﴿١٧﴾ فَلَمَّا لَا تَخَفُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ﴿١٨﴾ وَالْقُرْآنُ مَا فِي  
 10 يَمِينِكَ تَلْقَفُ مَا صَنَعُوا إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سِحْرٌ وَلَا يَفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى  
 11 ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ  
 12 فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى  
 13 فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى  
 14 لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَبَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا  
 15 هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ

1 “यह कुरआन जो हम उतार रहे हैं मोमिनो के लिए तो सरासर शिफा और रहमत है, हाँ अत्याचारियों को सिवाय हानि के और कोई फायदा नहीं होता।” {सुरतु बनी इस्राईल: ८२}

2 “या यह लोगों से हसद करते हैं उस पर जो अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से उन्हें दिया है।” {सूरतुनिसा: ५४}

3 “और जब मैं बीमार पड़ जाऊँ तो मुझे शिफा अता फरमाता है।” {सूरतुशुअरा: ८०}

4 “और मुसलमानों के कलीजे ठंडे करेगा।” {सूरतुतौबा: १४}

5 “आप कह दीजिए कि यह तो ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफा है।” {सूरतु फुसिलत: ४४}

6 “अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तू देखता कि अल्लाह के डर से वह पस्त होकर टुकड़े टुकड़े हो जाता।” {सूरह अलहश्र: २१}

7 “दोबारा (नज़्रें डाल कर) देख ले क्या कोई शिगाफ (चीर) भी नज़र आ रहा है?” {सूरह अलमुल्क: ३}

8 “और करीब है कि काफिर अपनी तेज़ निगाहों से आपको फुसला दें, जब कभी कुरआन सुनते हैं और कह देते हैं यह तो ज़रूर दीवाना है।” {सूरह अलकलम: ५१}

9 “और हमने मूसा (عليه السلام) को हुक्म दिया कि अपनी लाठी डाल दीजिए! सो लाठी का डालना था कि उसने उसके सारे बने बनाए खेल को निगलना शुरू किया। पस हक़ ज़ाहिर हो गया और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा। पस वह लोग इस मौके पर हार गए और खूब ज़लील होकर फिरे।” {सूरह अलआराफ: ११७-११६}

10 “कहने लगे कि ऐ मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जायें। जवाब दिया कि नहीं तुम ही पहले डालो। अब तो मूसा (عليه السلام) को यह ख़याल गुज़रने लगा कि उनकी रसियाँ और लकड़ियाँ उनके जादू के ज़ोर से दौड़ भाग रही हैं। पस मूसा (عليه السلام) ने अपने दिल ही दिल में डर महसूस किया। हमने फरमाया: कुछ डर न कर, यकीनन तू ही ग़ालिब और बरतार (बढ़ कर) रहेगा। और तेरे दायें हाथ में जो कुछ है उसे डाल दे कि उनकी तमाम कारीगरी को निगल जाए, उन्होंने जो कुछ बनाया है यह सिर्फ़ जादूगरों के करतब हैं, और जादूगर कहीं से भी आए कामियाब नहीं होता।” {सूरतु ताहा: ६५-६६}

11 “फिर अल्लाह ने अपनी तरफ़ से तस्कीन (शांति) अपने नबी पर और मुमिनो पर उतारी।” {सूरतुतौबा: २६}

12 “पस अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ से तस्कीन (शांति) उस पर नाज़िल फरमा कर उन लश्करो से उसकी मदद की जिन्हें तुमने देखा ही नहीं।” {सूरतुतौबा: ४०}

13 “सो अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर और मुमिनो पर अपनी तरफ़ से तस्कीन (शांति) नाज़िल फरमाई, और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक्वे (संयम) की बात पर जमाए रखा।” {सूरह अलफहः २६}

14 “यकीनन अल्लाह तआला मुमिनो से खुश हो गया जबकि वह दरख्त (वृक्ष) तले तुझसे बैअत कर रहे थे, उनके दिलों में जो था उसे उसने मालूम कर लिया और उन पर सुकून व इत्मीनान नाज़िल फरमाया और उन्हें करीब की फतह इनायत फरमाई।” {सूरह अलफहः १८}

15 “वही है जिसने मुसलमानों के दिलों में सुकून डाल दिया, ताकि अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें।” {सूरह अलफहः ४}

सूरतु-ल्-काफिरून सूरतु-ल्-इक्लास सूरतु-ल्-फलक सूरतु-न्-नास और यह आयतें

और यह हदीसें :

“أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ رَبِّ ل-أ-ش-ل-अ-ज़ीम, ऐयशियक” 7 बार।

“أَعِيذُكَ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَةٍ” 3 बार।

बिकलिमातिल्लाहिताम्म: मिन कुल्ले शैतानिन व हम्म: व मिन कुल्ले ऐनिन् लाम्म:” 3 बार।

“اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ أَذْهِبِ الْبَاسَ وَأَشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُعَادِرُ سَقَمًا” 3 बार।

“اللَّهُمَّ اذْهِبْ عَنْهُ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصْبَهَا” 1 बार।

“حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ” 7 बार।

“بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُؤْذِيكَ وَمِنْ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ، اللَّهُ يَشْفِيكَ بِسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ” 3 बार।

दुःख दर्द की जगह तुम अपने हाथ को रखो और 3 बार “बिस्मिल्लाह” कहो और 7 बार यह दुआ पढ़ो : “أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَحْدُ وَأَحَادِرُ” 7 बार।

**नोट :**

① आइन् (बूरी नज़र वाले) के बारे में प्रसिद्ध खुराफ़ात की पुष्टि करना जायज़ नहीं है। जैसा कि उस का पेशाब पीना या यह कहना कि यदि उसे जानकारी होजाए तो इसका प्रभाव नहीं होगा।

② किसी व्यक्ति को बूरी नज़र से बचाने के लिए चमड़े की ता'वीज़ पहनाना, या उसे कंगन या डोरे वगैरः का हार पहनाना जायज़ नहीं है। नबी ﷺ का फ़रमान है : “जिस ने कोई चीज़ लटकाई तो वह उस के हवाले कर दिया जाता है”। (तिर्मिज़ी) और यदि कुरआनी ता'वीज़ हो तो इसके बारे में मतभेद है, परन्तु इससे दूर रहना ही बेहतर है।

③ बूरी नज़र से बचने के लिए माशाअल्लाह, तबारकल्लाह लिखने, या तलवार, या छूरी, या आँख वगैरः का फोटो बनाने, या गाड़ी में कुरआन रखने, या घरों में कुरआनी आयतों का कुत्बा लटकाने का कोई फ़ाइदा नहीं है, इस से बुरी नज़र टाली नहीं जा सकती बल्कि ऐसा करना हराम ता'वीज़ के चपेट में भी आ सकता है।

④ रोगी पर वाजिब है कि रुक़्या स्वीकार होने पर विश्वास रखे, और शिफ़ा के लिए जल्दी न मचाए, यदि उस से यह बात कही गई होती कि निरोग होने के लिए जीवन भर दवा खाना है तो उसे उकताहट न होती, जबकि कुछ ही दिनों के रुक़्या से वह उकता जाता है, हालांकि हर हर्फ़ की तिलावत के बदले उसे एक नेकी मिलती है, और नेकी भी दस गुना इज़ाफ़ा के साथ, लिहाज़ा वह दुआ करे, अल्लाह से माफ़ी मांगे, और अधिक सद्का करे; क्योंकि इन चीज़ों से भी शिफ़ा प्राप्त की जाती है।

⑤ इज्तिमाई रूप में पढ़ना सुन्नत के ख़िलाफ़ है, इसके बारे में आई हुई रिवायत ज़ईफ़ है, और इसी तरह रुक़्या की ख़ातिर मात्र कैसेट द्वारा तिलावत सनना भी सहीह नहीं है, क्योंकि इसमें नियत नहीं हो पाती है; जबकि राक़ी के लिए नियत शर्त है। और निरोग होने तक बारबार रुक़्या करना

मस्नून है, परन्तु परेशानी होती हो तो कम मात्रा में करे ताकि उकताहट न हो। और यह बात भी ध्यान में रहे कि किसी आयत या दुआ को बिना प्रमाण के खास संख्या में पढ़ना जायज़ नहीं है।

⑥ कुछ निशानियां ऐसी होती हैं जिन से रुक़्या की खातिर राकी का कुरआन के बजाए जादू से सहारा लेने की पुष्टि होती है; लिहाज़ा ऐसे व्यक्ति की जाहिरी दीनदारी से धोके में न आना, वह रुक़्या को कुरआन द्वारा आरम्भ तो करता है लेकिन बीच में ही पटरी बदल लेता है, वह लोगों को धोके में रखने के लिए मस्जिद भी जाया करता है, उनके सामने अधिकतर ज़िक्र भी करता है, मगर यह मात्र दिखलावा होता है; लिहाज़ा ऐसे लोगों से होशियार रहना।

**जादूगरों और ज़रबाज़ों की निशानियां :** \* रोगी से उसका नाम या उसकी मां का नाम पूछना; क्योंकि नाम की जानकारी का प्रभाव इलाज पर नहीं पड़ता है। \* रोगी का कपड़ा मांगना, जैसे उसकी बनियान या कुर्ता आदि। \* कभी वह रोगी से किसी खास प्रकार का जानवर जिन के लिए ज़बह करने की मांग करता है। और कभी कभार उसी जानवर के खून को रोगी के शरीर पर लगाता है। \* ऐसे तलासिम लिखना या पढ़ना जो समझ में न आएँ और न ही उनका कोई अर्थ हो। \* रोगी को ऐसी तावीज़ देना जिसमें खानों के अन्दर हर्फ और नम्बर लिखे गए हों, जिसे हिजाब कहा जाता है। \* रोगी को कुछ समय के लिए अंधेरे रूम में अकेले रहने का आदेश देना, और इसे हज़्बा बोलते हैं। \* रोगी को कुछ समय के लिए पानी छूने से रोक देना। \* दफ़न करने के लिए रोगी को कोई चीज़ देना, या जलाकर धूँई लेने के लिए कागज़ देना। \* रोगी की कुछ ऐसी निजी बातें बताना जिसके बारे में रोगी के सिवा कोई दूसरा न जानता हो, या उसके कुछ कहने से पहले उसके नाम गाँव और बीमारी के बारे में बताना। \* मात्र रोगी के आने, या उस से टेलीफोन द्वारा बात करने, या उस की चिट्ठी पढ़ने से रोगी की हालत का अन्दाज़: लगाना।

⑦ अहले सुन्नत का मज़हब यह है कि जिन्नात इन्सान पर सवार हो जाते हैं, जैसा कि उसका चर्चा कुर्आन की इस आयत में है :

﴿الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَخِرَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ﴾ "सूद खाने वाले लोग उसी तरह खड़े होंगे जिस तरह शैतान का छूया हुआ मद्होश व्यक्ति खड़ा होता है।" इस आयत के बारे में मुफ़सिरीन का इज्मा'अ है कि आयत में मस्स से मुराद शैतानी दीवानापन है जो इन्सान पर शैतान के सवार होने के कारण तारी होता है।

**जादू :** जादू मौजूद है, और कुरआन और हदीस द्वारा इसका प्रभाव साबित है, यह हराम है, और बड़े गुनाहों में इसका शुमार है, नबी ﷺ का फ़रमान है : " सात हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचो, लोगों ने पूछा : यह गुनाह कौन से हैं? तो आप ने फ़रमाया: "अल्लाह के साथ शिर्क करना, और जादू ...". बुख़री और मुस्लिम। और अल्लाह तआला का फ़रमान है : ﴿وَلَقَدْ عَلَّمُوا لَمَنْ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ﴾ और वे अवश्य यह जानते हैं कि उसे अपनाने वाले का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। और इस की दो किस्में हैं : गाँठ लगा कर और फूंक कर जादूगर का मस्हूर (जिसे जादू किया गया हो) को तकलीफ़ पहुंचाने के लिए शैतान को प्रयोग करना। ऐसी दवाएं जो मस्हूर के शरीर, अकल, इरादे और मैलान को प्रभावित करे, और इसे सर्फ़ और अत्फ़ कहाजाता है, चुनान्वि इस के कारण मस्हूर को ऐसा लगने लगता कि यह चीज़ पलट गई, या हिल रही है, या चल रही है इत्यादि। तो पहली किस्म शिर्क है इसलिए कि शैतान उस समय तक जादूकर की नहीं मानता जब तक कि वह शिर्क न करे, और दूसरी किस्म हलाकत में डालने वाला बड़ा गुनाह है, और यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की अनुमती से होती है।

## दुआ

सारी मख्लूक अल्लाह की और उन नेमतों और कृपाओं का मुहताज है जो अल्लाह के पास हैं, और अल्लाह सब से बेनियाज़ है, वह किसी का भी मुहताज नहीं, उसने अपने बन्दों पर दुआ वाजिब किया है। उसका फ़रमान है : “**मुझ को पुकारो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से (अर्थात् मुझे पुकारने से) सर्कशी करेंगे वह जल्द ही अपमानित होकर जहन्नम में पहुंच जाएंगे**”। और नबी ﷺ ने फ़रमाया : “**जो व्यक्ति अल्लाह से नहीं मांगता है तो अल्लाह उससे नाराज़ हो जाता है**”। इसके साथ यह भी जान लीजिए कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के सवाल से खुश होता है, और आजिज़ी और मिन्नत करने वालों को पसन्द करता और उन्हें अपने करीब कर लेता है, सहाबए किराम इस वास्तविकता को अच्छी तरह जानते थे, इसी लिए वह छोटी से छोटी चीज़ भी अल्लाह तआला से मांगते थे। और किसी मख्लूक के सामने मांगने के लिए हाथ नहीं फैलाते थे, और ऐसा मात्र इस कारण था कि उनका सम्बन्ध अपने रब से था, वह उसके करीबी थे, और वह उनका करीबी था, और जब बात ऐसी थी तो क्योंकि ऐसा न होता, अल्लाह तआला का फ़रमान है : “**ऐ नबी! जब मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें, तो मैं करीब हूँ**”।

अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ की बहुत अहमियत है, दुआ अल्लाह के नज़दीक सर्वाधिक सम्मानित है, दुआ कभी कभी कज़ा को भी फेर देती है, और मुसलमान की दुआ ज़रूर स्वीकार की जाती है, बशर्तेकि दुआ कबूल किए जाने के अस्बाब पाए जाएं और कोई चीज़ उसे कबूल होने से न रोके, और उसे तीन बातों में से कोई न कोई एक चीज़ ज़रूर दी जाती है, जैसा कि तिर्मिज़ी और अहमद की रिवायत है : “जो भी मुस्लिम व्यक्ति ऐसी दुआ करता है जिसमें गुनाह और रिश्ते तोड़ने की बात न हो तो अल्लाह तआला उसे तीन में से एक चीज़ अता करता है : या तो उसकी मांगी हुई चीज़ उसे दुनिया ही में दे दी जाती है। या आखिरत में ज़खीरा के तौर पर उसके लिए इकट्ठा कर देता है। या उसी की तरह कोई मुसीबत उस से टाल देता है” सहाबए किराम ने कहा : फिर तो हम अधिक से अधिक दुआ किया करें, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह उस से भी अधिक देने वाला है”।

**दुआ की किस्में** : दुआ की दो किस्में हैं : ① दुआए इबादत, जैसे नमाज़, रोज़ा। ② दुआए हाज़त और तलब।

**आम्राल की आपस में एक दूसरे पर फज़ीलत (श्रेष्ठता)** : क्या कुरआन पढ़ना अफज़ल (श्रेष्ठ) है या ज़िक्र व अज़्कार या दुआ? उत्तर : कर्मों में सब से उत्तम कर्म कुरआन मजीद की तिलावत है, फिर ज़िक्र व अज़्कार, फिर दुआ, यह एक इज्माली जवाब है, और कभी-कभार कम-तर चीज़ कुछ साधनों के कारण अपने से श्रेष्ठ से भी उत्तम होजाती है, जैसे अरफ़ा के दिन की दुआ कुरआन की तिलावत से उत्तम है, और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद हृदीसों में आए हुए ज़िक्र व अज़्कार करना कुरआन की तिलावत से उत्तम है।

**दुआ स्वीकार होने के अस्बाब** : दुआ कबूल होने के दो साधन हैं :

① **जाहिरी अस्बाब** : जैसे दुआ से पहले सद्का, वुजू और नमाज़ जैसी कोई नेक काम करना, या किब्ला की तरफ चेहरा करके दुआ करना, या दोनों हाथों को उठाकर दुआ करना, या दुआ से पहले अल्लाह तआला की ऐसी तारीफ़ करना जिसका वह हक्दार है, या उसके अस्माए हुस्ना व सिफ़ाते उला (ऐसे नामों और गुणों) से दुआ करना जो दुआ की जाने वाली चीज़ के मुनासिब हों, जैसे जन्नत मांगने की दुआ हो तो गिड़गिड़ा कर उसकी रहमत और कृपा के माध्यम से दुआ करे, और किसी अपराधी पर बद्-दुआ हो तो उसके नामों में रहमान और रहीम के बजाए जब्बार, क़हहार, और अज़ीज़ इत्यादि नामों से दुआ करे। इसी तरह इन जाहिरी साधनों में से यह भी हैं : दुआ के आरम्भ, बीच और अन्त में नबी पर दस्द भेजना,

गुनाहों को स्वीकारना, अल्लाह की नेमतों पर उसका शुक्रिया अदा करना, फज़ीलत के प्रमाणित समय को ग़नीमत जानना, जो कि बहुत हैं, जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है।

**\* रात और दिन में :** रात में पिछले पहर की दुआ जिस समय अल्लाह तआला संसार वाले आकाश पर उतरता है। इसी तरह अज़ान और इक़ामत के बीच की दुआ, वुजू के बाद, सज्दे में, नमाज़ में सलाम से पहले और सलाम के बाद, कुर्आन ख़तम करते समय, मुर्ग के बाँग के समय, यात्रा के समय की दुआ, मज़्लूम तथा परीशान हाल की दुआ, वालिदैन की अपनी औलाद के लिए दुआ, मुस्लिम व्यक्ति का अपने भाई के लिए दिल की गहराई से की जाने वाली दुआ, और युद्ध में से लड़ते समय की दुआ। **\* सप्ताह में :** जुम्आ के दिन की दुआ, और खास कर अन्तिम पल में की जाने वाले दुआ। **\* महीने में** रम्ज़ान में सहरी और इफ़तार के समय की दुआ, शबे कद्र की दुआ, अरफ़ा के दिन की दुआ। **\* पवित्र स्थान** पर की जाने वाली दुआ : मस्जिदों में की जाने वाली दुआ, का'बा, और खासकर मुल्लजम और मक़ामे इब्राहीम के पास की दुआ, सफ़ा और मर्वा पर, और हज़्ज के दिनों में अरफ़ात, मुज्दलिफ़ा, और मिना की दुआ, और ज़मज़म पीते समय की दुआ .... इत्यादि।

**② अन्दरूनी (भीत्री) अस्बाब :** जैसे दुआ से पहले सच्चे दिल से सच्ची तौबा करना, किसी की नाहक ली हुई चीज़ लौटा देना, खाने, पीने, पहनने, और रिहाइश इत्यादि में पवित्रता का ध्यान देना, और इनके लिए हलाल कमाई प्रयोग करना, अधिकतर नेकी और फ़र्माबदारी के काम करना, हराम चीज़ों से बचना, और शक और शहवत वाली चीज़ों से दूर रहना। **और दुआ करते समय :** दिल हाज़िर करके अल्लाह की ओर ध्यान देना, अल्लाह पर भरोसा करना, उससे आशा करना, और उसी की ओर पनाह पकड़ना, उसके सामने गिड़गिड़ाना, मिन्नत करना, अपने सारे काम उसी के हवाले करना, और दूसरों की ओर से ध्यान हटाकर उसी की तरफ़ ध्यान स्थिर करना, और दुआ कबूल होने का विश्वास रखना।

**दुआ के कबूल होने से रोकने वाली चीज़ें :** कभी-कभार इन्सान दुआ करता है परन्तु उसकी दुआ कबूल नहीं होती, या देरी से कबूल होती है, इसके भी बहुत से कारण हैं जिनमें से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है : **\* दुआ में अल्लाह के साथ किसी दूसरे को साझी करना।** **\* बिला वजह की तफ़सील करना,** जैसे जहन्नम की गर्मी, उसकी तंगी, और उसके अन्धेरो से पनाह मांगना, जबकि मात्र जहन्नम से पनाह मांगना काफी है। **\* मुसलमान का अपने ऊपर या नाहक किसी दूसरे को शाप देना।** **\* पाप और नातेदारी तोड़ने की दुआ करना।** **\* दुआ को चाहत पर छोड़ना,** जैसे यूँ कहना : ऐ अल्लाह यदि तेरी चाहत हो तो मुझे माफ़ कर। या इस तरह के शब्दों द्वारा दुआ करना। **\* दुआ स्वीकार होने में जल्दी करना,** जैसे यह कहना कि मैंने दुआ की लेकिन मेरी दुआ कबूल नहीं हुई। **\* थक और उकता कर दुआ करना छोड़ देना।** **\* बिना मन के लापर्वाही के साथ दुआ करना।** **\* जल्दबाज़ी और अल्लाह के सामने बे-अदबी के साथ दुआ करना,** नबी करीम ﷺ ने एक व्यक्ति को नमाज़ में दुआ करते सुना, उसने न तो अल्लाह का प्रशंसा किया और न ही नबी ﷺ पर दरूद भेजा, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: उसने जल्दबाज़ी से काम लिया, फिर आप ﷺ ने उसे बुलाया और उससे फ़रमाया : **“जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो पहले अल्लाह की तारीफ़ और सना करे, फिर नबी ﷺ पर दरूद भेजे, फिर जो चाहे दुआ करे”**। (अबू दाऊद और तिर्मिज़ी) **\* किसी ऐसी चीज़ की दुआ करना जिसका फैसला होचुका है :** जैसे हमेशा दुनिया में रहने की दुआ करना। **\* इसी तरह दुआ में काफ़ियादार मुसज्जअ इबारत का कष्ट करना :** अल्लाह तआला का फ़रमान है : **“तुम अपने रब से दुआ किया करो गिड़गिड़ाकर भी और चुपके चुपके**

भी वास्तवमें अल्लाह तआला ऐसे लोगों को नापसन्द करता है जो सीमा पार कर जाएं”। और इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने फरमाया : “सजअ और काफिया बन्दी देखो तो उससे बचो, क्योंकि मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ और आपके साथियों رضي الله عنهم को उससे बचते हुए ही पाया है”। (बुखारी) ★ और बहुत ऊँची और बहुत धीमी आवाज़ में दुआ करना। अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافُتَ بِهَا ﴾ “ न तो तू अपनी नमाज़ बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ और न ही एकदम धीमी”। आइशा رضي الله عنها फरमाती हैं कि यह आयत दुआ के बारे में उतरी है।

**मुस्तहब है कि आदमी इस तरतीब के साथ दुआ करे :** ① पहले अल्लाह तआला की तारीफ़ करे। ② फिर नबी ﷺ पर दरूद भेजे। ③ फिर अपने पाप से तौबा करे, और उन्हें स्वीकार करे। ④ अल्लाह की नेमतों पर उसका शुक्रिया अदा करे। ⑤ फिर जामे’अ और नबी ﷺ से प्रमाणि दुआओं द्वारा दुआ करे। ⑥ नबी ﷺ पर दरूद भेज कर दुआ ख़तम करे।

### कुछ अहम दुआएं

दुआ की मुनासबत	नबी <small>صلی الله علیه و آله وسلم</small> की दुआएं :
सोने से पहले और बाद की दुआ	यह दुआ पढ़ कर सोएँ : « بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أُمُوتُ وَأَحْيَا » <b>“बिस्मिल्लाहुम्म अमूतो व अह्या”</b> । <sup>1</sup> और जगने के बाद यह दुआ पढ़ें : « الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَالْإِيَّاهُ النَّشُورُ » <b>“अल्हम्दु लिल्लाहिल्लाज़ी अह्याना बा’द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर”</b> । <sup>2</sup>
जो व्यक्ति नींद में घबरा जाए	« أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ عَذَابِهِ وَعِقَابِهِ، وَمَنْ شَرَّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ، وَأَنْ يَحْضُرُونَ » <b>“अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहिताम्माति मिन् गुज़बिही, व मिन् शरि इबादिही, व मिन् हमज़ातिशयातीनि व ऐयहज़रुन्”</b> । <sup>3</sup>
जब सपना देखे	“जब तुम में से कोई व्यक्ति अच्छा सपना देखे तो यह अल्लाह की ओर से है, इसलिए इस पर अल्लाह की तारीफ़ करे, और लोगों को इसे बताए, और यदि अप्रिय सपना देखे तो उस की बुराई से पनाह मांगे, और इसे किसी को न बताए; तो वह उसे हानि नहीं पहुंचा सकता”।
घर से बाहर निकलते समय	« بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ » <b>“बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाहि ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह”</b> । <sup>4</sup> « اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَضَلَّ أَوْ أَضِلَّ، أَوْ أُرْزَلَ أَوْ أُرْزَلَ، أَوْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلِمَ، أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ » <b>“अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक अन् अज़िल्ल औ उज़ल्ल, औ अज़िल्ल औ उज़ल्ल, औ अज़्लिम औ उज़्लम, औ अज़हल औ युज़हल अलैय्य”</b> । <sup>5</sup>
मस्जिद में प्रवेश करते समय	मस्जिद में प्रवेश करते समय पहले अपना दायां पैर बढ़ाए और कहे : بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ <b>अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मग़िर्ली जुनुबी वफ़तह ली अब्बाब रहमतिक”</b> । <sup>6</sup>
मस्जिद से निकलते समय	मस्जिद से निकलते समय पहले अपना बायां पैर निकाले और कहे : بِسْمِ اللَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ فَضْلِكَ <b>अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मग़िर्ली जुनुबी वफ़तह ली अब्बाब फ़ज़्लिक”</b> । <sup>1</sup>

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरे नाम के साथ मरता और जीता हूँ)

<sup>2</sup> (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने हमें मारने के बाद जीवित किया और उसी की ओर पलट कर जाना है)

<sup>3</sup> (अल्लाह के परिपूर्ण कलिमात की पनाह में आता हूँ उस के क्रोध से, उस के बन्दों की बुराई से, और शैतान के वस्वसों से और इस बात से कि वे मेरे पास आएँ)।

<sup>4</sup> (अल्लाह के नाम के साथ घर से बाहर निकलता हूँ, मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, उस की तौफ़ीक़ के बिना न तो कुछ करने की शक्ति है और न ही किसी चीज़ से बचने की ताक़त है)।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ इस बात से कि मैं गुम्राह हो जाऊँ या मुझे गुम्राह किया जाए, या मैं फिसल जाऊँ या मुझे फिसलाया जाए, या मैं अत्याचार करूँ या मुझ पर अत्याचार हो, या मैं जिहालत करूँ या मुझ पर जिहालत की जाए)।

<sup>6</sup> (अल्लाह के नाम के साथ मैं प्रवेश करता हूँ, और सलामती हो अल्लाह के रसूल पर, ऐ अल्लाह मेरे पाप माफ़ कर दे, और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे)।

नौ विवाहित के लिए	« بَارَكَ اللهُ لَكَ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ » «बारकल्लाह लक, व बारक अलैक, व जमअ बैनकुमा फी खैर»। <sup>2</sup>
जिस ने मुर्ग की बाँग या गधे की रीक सुनी	जब तुम गधे की रीक सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह चाहे क्योंकि उस ने शैतान देखा है, और जब मुर्ग की बाँग सुनो तो अल्लाह से उस का फज़ल चाहे; क्योंकि उसने फरिश्ता देखा है”। “जब रात में कुत्ते की भूंक या गधे की रीक सुनो तो अल्लाह की पनाह चाहे ...”।
“मैं तुम से अल्लाह के लिए मुहब्बत करता हूँ” के जवाब में	अनस <small>رضي الله عنه</small> बयान करते हैं एक व्यक्ति नबी <small>ﷺ</small> के पास था कि एक दूसरा व्यक्ति वहाँ से गुज़रा तो उस ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल मैं अवश्य इस से मुहब्बत करता हूँ, तो नबी <small>ﷺ</small> ने कहा : “क्या तुम ने उसे बताया है?”। उस ने कहा नहीं। आप ने फरमाया: “उसे बता दो”। तो उस के पीछे गया और कहा : “इन्नी उहिब्बुक फिल्लाह” मैं अल्लाह के लिए तुझ से मुहब्बत करता हूँ। तो उस ने जवाब दिया : “अहब्बकल्लाहल्लज़ी अहबवान्नी लहू”। अल्लाह तुझ से मुहब्बत करे जिस के लिए तू ने मुझ से मुहब्बत की है।
किसी को जब छीक आए	“जब तुम में से किसी को छीक आए तो कहे : “अल्हम्दु लिल्लाह” (सारी प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है)। और उस का भाई या साथी उसे कहे : “यर्हमुकल्लाह” (अल्लाह तुझ पर दया करे)। और “यर्हमुकल्लाह” के जवाब में छीकने वाला व्यक्ति कहे : “यह्दीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुमु” अल्लाह तूझे हिदायत दे और तेरी हालत को बेहतर कर दे। और जब किसी काफिर व्यक्ति को छीक आए और वह “अल्हम्दु लिल्लाह” कहे, तो उस के जवाब : “यर्हमुकल्लाह” न कहे बल्कि : “यह्दीकुमुल्लाहु” कहे।
परीशानी की घड़ी में	« لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ » “लाइलाह इल्लल्लाहल्लअज़ीमल्लहलीम, लाइलाह इल्लल्लाह रब्बुलअर्शिल्लअज़ीम, लाइलाह इल्लल्लाह रब्बुस्समावाति व रब्बुलअजि, व रब्बुलअर्शल्लकरीम”। <sup>3</sup> “अल्लाह अल्लाह रब्बी ला उश्कि बिही शैआ” <sup>4</sup> « يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ » “या हैयू या कैय्यूमु बिरह्मतिक अस्तगीसु” <sup>5</sup> « سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ » “सुब्हानल्लाहिल्लअज़ीम” <sup>6</sup>
दुश्मन पर श्राप	« اللَّهُمَّ مُزِلَّ الْكِتَابِ وَمُجْرِئِ السَّحَابِ سَرِيعِ الْحِسَابِ أَهْرَمَ الْأَحْرَابِ، اللَّهُمَّ أَهْرَمُهُمْ وَزَلَّزَلَهُمْ » “अल्लाहुम्म मुज़िल्लिल्किताबि मुज़्रिल्लिल्सहाबि इत्ज़िमिल्लअहज़ाब, अल्लाहुम्मत्ज़िज़्महुमु व ज़ल्लिज़ल्हुमु”। <sup>7</sup>
हूँ तू तू तू तू तू	जो व्यक्ति रात में नींद से जगे और पढ़े : لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللهِ وَلا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلا حَوْلَ وَلا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ “लाइलाह इल्लल्लाह वदहू ला शरीक लहू, लहल्हुमुल्कु व लहल्हुमुद्द व हव अला कुल्लि शैइन् कदीर सुब्हानल्लाहि, वल्हुमुद्द लिल्लाहि, व लाइलाह इल्लल्लाह, वल्लाह अक्बर, व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह”। <sup>8</sup> फिर “अल्लाहुम्मग़िफ़ीलती” कहे : “हे अल्लाह मुझे बख़्शा दे”। या दूआ करे तो उसकी दूआ कबूल कर ली जाती है। और यदि वृजु करके नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ स्वीकार होती है।

<sup>1</sup> (अल्लाह के नाम के साथ मैं बाहर निकलता हूँ, और सलामती हो अल्लाह के रसूल पर, ऐ अल्लाह मेरे पाप माफ़ कर दे, और मेरे लिए अपने फज़ल के दरवाज़े खोल दे)।

<sup>2</sup> (अल्लाह तेरे लिए बर्कत करे और तुझ पर बर्कत करे और तुम दोनों को भलाई के साथ इकट्ठा करे)।

<sup>3</sup> (अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, महान माफ़ करने वाला है, अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, महान अर्श का रब है, अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, आकाशों का, धरती का और करीम अर्श का रब है)।

<sup>4</sup> (अल्लाह अल्लाह मेरा रब है मैं उस के साथ किसी चीज़ को साझी नहीं बनाता)।

<sup>5</sup> (ऐ जिन्दा और सभों को धामने वाले! मैं तेरी रहमतों द्वारा फ़र्याद करता हूँ)।

<sup>6</sup> (महान अल्लाह प्रत्येक प्रकार के ऐब से पाक है)।

<sup>7</sup> (ऐ अल्लाह! बादल को चलाने वाले, किताब को उतारने वाले, जल्द हिसाब करने वाले, जमाअतों को पराजित कर, ऐ अल्लाह! तू उन्हें पराजित कर, और उन्हें हिला कर रख दे)।

<sup>8</sup> “अल्लाह के सिवाय कोई भी सच्चा इबादत के लायक नहीं, उसका कोई साझी नहीं, उसीके लिए राज है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह सभी चीज़ों पर ताक़त रखने वाला है, मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ, अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, नहीं है कुछ करने कि ताक़त और किसी चीज़ से बचने की शक्ति मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से।”

<b>जब मुआमलः कठिन हो जाए</b>	«اللَّهُمَّ لَا سَهْلَ إِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَأَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ إِذَا شِئْتَ سَهْلًا» <sup>1</sup> «अल्लाहुम्म ला सहल इल्ला मा जअल्लहू सहला, व अन्त तजअल्लहज्जन् इज़ा शिअत सहला”।
<b>कर्ज़ की अदाइगी के लिए</b>	«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَضَلَمِ الدَّيْنِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ» <sup>2</sup> «अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनलु हम्मि वलु हजनि, वलअजज़ि वलु कसलि, वलु ज़बि वलु बुख्लि, व ज़लइहैनि, व ग़लबतिरिज़ालि”।
<b>शौचालय जाते समय</b>	जब शौचालय में जाने का इरादा करे तो कहे : «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ» <sup>3</sup> «अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनलखुबूसि वलु ख़बाइसि”। और बाहर निकल कर कहे : «عُفْرَانِكَ» <sup>4</sup> “गुफ़ानक”।
<b>नमाज़ में वसवसा आए तो</b>	“वह एक शैतान है जिसे खन्ज़ब कहा जाता, जब तुम्हें इसका इहसास हो तो इससे अल्लाह की पनाह चाहो, और अपनी बाईं ओर 3 बार धुको”।
<b>मूझे</b>	«اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَأَوَّلَهُ وَأَخْرَهُ وَعَلَانِيَتَهُ وَسِرَّهُ» <sup>5</sup> «अल्लाहुम्मग़िर्ली ज़न्बी कुल्लहू दिक्कहू व जिल्लहू व औवलहू व आखिरहू, व अलानियतहू व सिरहू”। «سُبْحَانَكَ رَبِّي وَحَمْدُكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي» <sup>6</sup> “सुब्हानक रब्बी व बिहमिदकल्लाहुम्मग़िर्ली”। «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَمِعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لَا أَحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَيَّ نَفْسِكَ» <sup>7</sup> «अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिरिज़ाक मिन् सख़तिक, व बिमुआफ़ातिक मिन् उक्बुतिक, व अऊज़ु बिक मिन्क, ला उहसी सनाअन् अलैक अन्त कमा अस्नैत अला नफिसक”।
<b>सज्द तिलावत</b>	«اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ أَمَنْتُ وَلَكَ أَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَسَوَّقَ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ» <sup>8</sup> «अल्लाहुम्म लक सजदतू व बिक आमन्तू व लक अस्तमन्तू, सजद वज्ही लिल्लज़ी ख़लकहू व सौवरहू व शक्क सम्अहू व बसरहू तबारकल्लाहू अह्सनुल्ख़ालिकीनु”।
<b>दुआए सना</b>	«اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا نَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي بِالْمَاءِ وَالطَّلْحِ وَالْبَرَدِ» <sup>9</sup> «अल्लाहुम्म बाइद् बैनी व बैन ख़तायाय कमा बाअत बैनल् मशिकि वल् मश्रिबि, अल्लाहुम्म नक्किनी मिन् ख़तायाय कमा युनक्स्सौबुल् अब्यजु मिनहनसि, अल्लाहुम्मग़िसल्नी बिल्माए वस्सल्जि वल् बरद्”।
<b>नमाज़ के अन्त में</b>	«اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ فَاعْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَأَرْحَمِي إِنَّكَ أَنْتَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ» <sup>10</sup> «अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तू नफ़सी ज़ल्मन् कसीरन् व ला यग़िफ़रुज़ज़न्ब इल्ला अन्त फ़ग़िर्ली मग़िफ़रतमिन् इन्दिक्, वर्हम्नी इन्न्क अनतल् गुफ़ूरर्हीम्”।
<b>नमाज़ के बाद</b>	«اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَتُشْكُرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ» <sup>1</sup> «अल्लाहुम्म अइन्नी अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इबादतिक”। «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَدَابِ الْقَبْرِ» * «अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल्कुफ़ि वल् फ़कि व अज़ाबिल्कब्रि”। <sup>2</sup>

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह! वही चीज़ आसान है जिसे तू सहज कर दे, और यदि तू चाहता है तो कठिन को आसान कर देता है)।

<sup>2</sup> (ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फिक्र और गुम से, और आजिज़ हो जाने और सुस्ती से, और डरपोकन और बखीली से, और कर्ज़ के चढ़ जाने और लोगों के गालिब हो जाने से)।

<sup>3</sup> ऐ अल्लाह मैं जिन्नों और जिन्नियों से तेरी पनाह में आता हूँ।

<sup>4</sup> (तेरी माफ़ी चाहता हूँ)।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह मेरे छोटे बड़े, पहले पिछले, और खुले छूपे सारे पाप माफ़ कर दे)।

<sup>6</sup> (ऐ मेरे रब! तू पाक है और अपनी तारीफ़ के साथ है, ऐ अल्लाह मुझे माफ़ कर दे)।

<sup>7</sup> (ऐ अल्लाह! मैं तेरे गुस्से से तेरे राज़ी होने की पनाह चाहता हूँ, और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह चाहता हूँ, और मैं तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ, मैं पूरी तरह तेरी तारीफ़ नहीं कर सकता, तू उसी तरह है जिस तरह तूने स्वयं अपनी तारीफ़ की)।

<sup>8</sup> (ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए सज्दा किया, तुझ पर ईमान लाया, तेरा फ़र्माबर्दार हुवा, मेरे चेहरे ने उस हस्ती के लिए सज्दा किया जिस ने उसे पैदा किया, और उस की सूरत बनाई, और कान तथा आँख के सूराख बनाए, बर्कत वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है)।

<sup>9</sup> (ऐ अल्लाह! मेरे और मेरे पाप के बीच दूरी कर दे जिस तरह तूने पूरब और पश्चिम के बीच दूरी की है, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे पाप से साफ़ सुथरा करदे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल से साफ़ा सुथरा किया जाता है, ऐ अल्लाह! मुझे पानी से, बरफ से और ओले से धुल दे)।

<sup>10</sup> (ऐ अल्लाह! मैं ने अपने ऊपर बहुत अधिक अत्याचार किया, और मात्र तू ही है जो गुनाहों को माफ़ करता है, तो तू मुझे अपनी ख़ास माफ़ी से बख़्श दे, और मुझ पर दया कर, अवश्य तू ही बख़्शने वाला दयालू है)।



<b>भलाई करने वाले के लिए</b>	जिस के साथ भलाई की गई और उस ने भलाई करने वाले व्यक्ति को : "जज़ाकल्लाह ख़ैरनु" (अल्लाह तुझे बेहतर बदला दे) कहा, तो उस ने बढ़चढ़ कर उस की प्रशंसा की। और दूसरा व्यक्ति भी "व जज़ाक" या "व इय्याक" (और तुझे भी) कह कर जवाब दे।
<b>जब वर्षा देखे</b>	«اللَّهُمَّ سَيِّبْنَا نَافِعًا» 2 बार या 3 बार, «مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللَّهِ وَرَحْمَتِهِ» 4 "मूतिर्ना बिफज़िल्ललाहि व र्हमतिही"
<b>जब आंषी चले</b>	«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ» 5 "अल्लाहम्म इन्नी अस्अलुक खैरहा व खैर मा फ़ीहा व खैर मा उर्सिलत बिही, व अऊज़ु बिफ मिन् शर्रिहा व शर्रि मा फ़िहा व शर्रि मा उर्सिलत बिही"
<b>जब चाँद देखे</b>	«اللَّهُمَّ أَهْلَهُ عَلَيْنَا بِالْيَمِينِ وَالْإِيمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ، هِلَالِ خَيْرٍ وَرُشْدٍ، رَبِّي وَرَبِّكَ اللَّهُ» 6 "अल्लाहुम्म अहिल्लहू अलैना बिल्अमिन् वल्ल इमानि वस्सलामति वल्ल इस्लामु, हिलालु ख़ैरिनु व रुशद रब्बी व रब्बुकल्लाह" 6
<b>जब यात्री को विदा करे</b>	«أَسْتَوْدِعُ اللَّهَ دِينَكَ وَأَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيمَ عَمَلِكَ» 7 "अस्तौदिउल्लाह दीनक व अमानतक व ख़वातीम अमलिक" 7 और यात्री उस के लिए यह दूआ करे: «أَسْتَوْدِعُكَ اللَّهُ الَّذِي لَا تَضِيْعُ وَدَائِعُهُ» 8 "अस्तौदिउकमुल्लाहल्लज़ी ला तज़ीउ वदाइउहू"
<b>जब कोई अच्छी या बुरी चीज़ देखे</b>	नबी ﷺ जब कोई अच्छी चीज़ देखते तो यह कहते : «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ» 9 "अल्हम्दुलिल्ललाहि-ल्लज़ी बि-निअमतिही ततिम्मु-स्सालिहात" 9 और यदि कोई नापसन्दीद: चीज़ देखते तो कहते : «الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ» 10 "अल्हम्दुलिल्ललाहि अला कुल्लि हालु" 10
<b>ज़िज़ा की हज़ु</b>	«اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ» 11 «سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ * وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ» 12 «اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالْقَوِيَّ، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَىٰ، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيقَةُ فِي الْأَهْلِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعَثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْظَرِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ» 13 "अल्लाहू अक्बर, अल्लाहू अक्बर, अल्लाहू अक्बर सुब्हानल्लज़ी सख़्खर लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक्किनीन, व इन्ना इला रब्बिना लमुन्कलिबुनु" 11 अल्लाहम्म इन्ना नस्अलुक फ़ी सफ़रिना हाज़ल्लिबिर् वत्तक्वा व मिनल्ल अमलि मा तर्ज़ा अल्लाहम्म हव्विनु अलैना सफ़रना हाज़ा वत्वि अन्ना बो'अदह, अल्लाहम्म अन्तस्साहिबु फ़िस्सफ़र वल्लख़लीफ़तु फ़िल्ल अह्लु, अल्लाहम्म इन्नी अऊज़ु बिफ मिन् वा'असाइस्सफ़र व कआबतिल्ल मन्ज़र, व सुइल्ल मुन्कलब फ़िल्ल मालि वल्ल अह्लु" 13 और जब वापस लौटते तो यह इज़ाफ़ा करते : «أَيُّوْنَ تَائِيوُنْ غَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ» 12 "आयिबुन तायिबुन आबिदुन लिर्ब्विना हामिदुन" 12

1 (ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र, शुक्र और अच्छी इबादत पर मेरी सहायत कर)।

2 (ऐ अल्लाह! कुफ़, ग़रीबी, और क़द्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ)।

3 (ऐ अल्लाह! लाभ-दायक वर्षा बना)।

4 (अल्लाह के फ़ज़ल और उस की दया से बारिश हुई)। और जो चाहे दुआ करे; क्योंकि वर्षा के समय की दुआ क़बूल होती है।

5 (ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस की भलाई का, और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है, और उस चीज़ की भलाई का जिस के साथ यह भेजी गई है, और तेरी पनाह में आता हूँ इस की बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इस में है, और उस चीज़ की बुराई से जिस के साथ यह भेजी गई है)।

6 (ऐ अल्लाह! तू इसे हमारे लिए निकाल शान्ति, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ, भलाई और हिदायत का चाँद, मेरा और तेरा रब अल्लाह है)।

7 (मैं तेरे धर्म, तेरी अमानत, और तेरे कर्मों के ख़ातमे को अल्लाह के हवाले करता हूँ)।

8 (मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के हवाले की गई चीज़ बर्बाद नहीं होती)।

9। सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस की नेअमत द्वारा नेकियां पूरी होती हैं।

10 हर हाल में अल्लाह ही के लिए सम्पूर्ण प्रशंसा है।

11 (अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, अल्लाह सब से महान है, पाक है वह हस्ती जिसने इसे हमारे काबू में किया हालांकि हम इसे काबू में लाने वाले न थे, और हम अपने रब की ओर लौटने वाले हैं, ऐ अल्लाह हम अपनी इस यात्रा में तुझ से नेकी और तक्वा का सवाल करते हैं, और उस कर्म का जिसे तू पसंद करे, ऐ अल्लाह! हमारी यह यात्रा हम पर आसान कर दे, और इस की दूरी हम से तह कर दे, ऐ अल्लाह! तु ही यात्रा में साथी और घर वालों को देख-रेख करने वाला है, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ यात्रा की कठिनाई से, धन और घर वालों में देखने की बुराई से, और नाकाम लौटने की बुराई से)।

12 (हम वापस लौटने वाले तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने रब की हम्द करने वाले हैं)।

सप्तमः	<p>اللَّهُمَّ اسَلِّمْتْ نَفْسِي إِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ وَالْحُجَاتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ وَرَغَبَةٌ وَإِلَيْكَ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنَاجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ أَمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ</p> <p>“अल्लाहुम्म अस्लाम्तु नफ़सी इलैक, व फव्वज्तु अम्री इलैक, व अल्जा'अतु ज़ही इलैक, रख्तन् व रख्तन् इलैक, ला मल्जअ व ला मन्जा मिनक इल्ला इलैक, आमन्तु बिकिताबिकल्लज़ी अन्ज़लत व नबीय्यिकल्लज़ी अर्सलत”<sup>1</sup></p> <p>“अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अत्अमना व सकाना व कफाना व आवाना फकम्मिन् ला काफिय लहू व ला मु'अवीय”<sup>2</sup></p> <p>“اللَّهُمَّ كِنِي أَجَابَكَ يَوْمَ تَبْأَسُ إِبَادَكَ”<sup>3</sup></p> <p>اللَّهُمَّ كِنِي أَجَابَكَ يَوْمَ تَبْأَسُ إِبَادَكَ</p> <p>سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّي بِكَ وَصَعْتُ جَنِّي وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكَتْ نَفْسِي فَأَغْفِرْ لَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ</p> <p>“सुब्हानकल्लाहुम्म रब्बी बिक वज़अतु जन्बी व बिक अर्फ़उहू. इन् अम्सक्त नफ़सी फ़र्गिफ़र लहा व इन् अर्सलतहा फ़हफ़ज़हा बिमा तहफ़ज़ बिही इबादकस्सालिहीन्”<sup>4</sup></p>
सप्तमः	<p>اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا، وَفِي لِسَانِي نُورًا، وَفِي سَمْعِي نُورًا، وَفِي بَصِيرِي نُورًا، وَمَنْ فَوْقِي نُورًا، وَمَنْ تَحْتِي نُورًا، وَعَنْ يَمِينِي نُورًا، وَعَنْ شِمَالِي نُورًا، وَمِنْ أَمَامِي نُورًا، وَمَنْ خَلْفِي نُورًا، وَاجْعَلْ فِي نَفْسِي نُورًا، وَأَعْظِمْ لِي نُورًا، وَعَظِّمْ لِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا، وَاجْعَلْ لِي نُورًا، اللَّهُمَّ أَعْظِمْ نُورًا، وَاجْعَلْ فِي عَضْبِي نُورًا، وَفِي لَحْيِي نُورًا، وَفِي ذِي نُورًا، وَفِي شَعْرِي نُورًا، وَفِي بَشْرِي نُورًا</p> <p>“अल्लाहम्मज्जअल् फी कल्बी नूरन्, व फी लिसानी नूरन्, व फी सई नूरन्, व फी बसरी नूरन्, व मिन् फौकी नूरन्, व मिन् तहती नूरन्, व अन् यमीनी नूरन्, व अन् शिमाली नूरन्, व मिन् अमामी नूरन्, व मिन् खल्फी नूरन्, वज्जअल् फी नफ़सी नूरन्, व आअज़िम् ली नूरन्, व अज़िज़िम् ली नूरन्, वज्जअल् ली नूरन्, वज्जअल्नी नूरन्, अल्लाहम्म आ'अतिनी नूरन्, वज्जअल् फी असबी नूरन्, व फी लहमी नूरन्, व फी दमी नूरन्, व फी शा'अरी नूरन्, व फी बशरी नूरन्”<sup>5</sup></p>
दुआ	<p>जब तुम में से कोई किसी चीज़ का इरादा करे तो फर्ज के सिवाय 2 रकअत नमाज़ पढ़े फिर यह दुआ पढ़े :</p> <p>اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ، وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلَامُ الْغُيُوبِ، اللَّهُمَّ فَإِن كُنْتَ تَعْلَمُ هَذَا الْأَمْرَ ( ثُمَّ نَسِيَهُ بَعِيْنِيهِ ) خَيْرًا لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي - أَوْ قَالَ: عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ - فَاقْدِرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ، وَإِن كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي - أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ - فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْني عَنْهُ وَاقْدِرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِي بِهِ</p> <p>“अल्लाहुम्म इन्नी अस्तखीरोक बि-इल्मिक, व अस्तविदरुक बिकुदरतिक, व अरअलुक मिन् फज़्लिक, फइन्नक तविदरु व ला अविदरु, व ता'अलमु व ला आ'अलमु, व अन्त अल्लामुल् गुयुबु, अल्लाहुम्म फइन् कुन्त ता'अलमु हाजल्अम्र (अपने मुआमलः का चर्चा करे) खैरल्ली फी दीनी व मआशी, व आकिबति अम्री, या कहा : आजिलि अम्री व आजिलिही फ़दुहु ली व यस्सिहु ली सुम्म बारिक ली फ़ीहि, व इन कुन्त ता'अलमु अन्न हाजल्अम्र शरुल्ली फी दीनी व मआशी, व आकिबति अम्री, या कहा : फी आजिलि अम्री व आजिलिही फ़सिफ़हु अन्नी वसिफ़नी अन्ह वक़्दर लियल् खैर हैसु कान, सुम्म रज्जिनी बिही”।<sup>6</sup></p>

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान को तेरा वफ़ादार बनाया, और अपना काम तेरे इवाले किया, और अपना चेहरा तेरी ओर फेर लिया, तुझ से डरते हुए और तेरी चाहत रखते हुए, न शरण है और न ही तुझ से भागने की जगह मगर तेरी ही ओर, मैं तेरी उतारी हुई किताब और भेजे हुए नबी पर ईमान लाया)।

<sup>2</sup> (सारी तारीफ़ें उस हस्ती के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया, और हमारे लिए काफ़ी हुवा, और हमें ठिकाना दिया, कितने ऐसे हैं जिन के लिए कोई काफ़ी नहीं और न ही कोई ठिकाना देने वाला)।

<sup>3</sup> (ऐ अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को दोबारा जिन्दा करना मुझे अपने अज़ाब से बचाना)।

<sup>4</sup> (ऐ अल्लाह मेरे रब! तू हर प्रकार के ऐब से पाक है, तेरे नाम के साथ मैं ने अपना पहलू को रखवा और तेरे ही नाम के साथ उदाता हूँ, यदि तूने मेरी जान निकाल ली तो उसे माफ़ करना और यदि वापस कर दी तो उन चीज़ों से उस की सुरक्षा करना जिन से अपने नेक बन्दों की सुरक्षा करता है)। अपने दोनों हाथों में थुकथुकाते और कुल् अज़ज़ु बिर्बिल फ़लक़, और कुल् अज़ज़ु बिर्बिन्नास् पढ़ते, और पूरे शरीर पर हाथ फेरते। इसी तरह हर रात को सोने से पहले अलिफ़ लाम मीम सज्दा, और सूरतुल् मुल्क पढ़ कर सोते थे।

<sup>5</sup> (ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर (रौशनी) कर दे, मेरी जुबान में नूर कर दे, मेरे कानों में नूर कर दे, मेरी आँखों में नूर कर दे, मेरे ऊपर नूर कर दे, मेरे नीचे नूर कर दे, मेरे दाएं ओर नूर कर दे, मेरे बाएं ओर नूर कर दे, मेरे आगे नूर कर दे, मेरे पीछे नूर कर दे, मेरी जान में नूर कर दे, मेरे लिए नूर को महान कर दे, मेरे लिए नूर कर दे, और मुझे नूर कर दे, ऐ अल्लाह! मुझे नूर अता कर, मेरे पड़ों में नूर कर दे, मेरे गोशत में नूर कर दे, मेरे खून में नूर कर दे, मेरे बाल में नूर कर दे, और मेरे चमड़े में नूर कर दे)।

<sup>6</sup> हे अल्लाह! मैं तेरे इल्म की बर्कत से तुझ से भलाई चाहता हूँ, और तेरी शक्ति का वास्ता देकर तेरी मदद चाहता हूँ, और तेरे बड़े फज़ल (कृपा) का सवाल करता हूँ, क्योंकि तू शक्तिमान है, मैं शक्तिवाला नहीं, तू (अच्छा और बुरा) सब जानता है, मैं नहीं जानता,

<p>दुआ के लिए मैया के लिए</p>	<p>« اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ، وَوَسِّعْ مَدْخَلَهُ، وَاعْسَلِهِ بِالْمَاءِ وَالْحَلِجِّ وَالْبَرَدِ وَتَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا تَقَيَّتِ الْقَوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ، وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ. »</p> <p>अल्लाहम्मगिफ्र लहू वर्हम्ह, व अफिही व'अफ्र अनह, व अक्रिम नुजलहू, व वरिस'अ मुदखलहू, वगिसलहू बिल्माए वरिसलजि वल्बरद, व नक्किही मिनलखताया कमा नक्कैतस्सौबलअब्यज मिनहनसि, व अब्दिलहू दारन् खैरन् मिन् दारिही, व अह्लन् खैरन् मिन् अहिलही, व जौजिन् खैरन् मिन् जौजिही, व अदिखलहूजन्नः, व अद्वज्हु मिन् अजाबिल्कब्रि व अजाबिन्नार।<sup>1</sup></p>
<p>गम और फिक्र दूर करने की दुआ</p>	<p>जब भी किसी व्यक्ति ने गम और फिक्र लाहिक होने पर यह कहा :</p> <p>« اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَإِبْنُ عَبْدِكَ وَأَبْنُ أُمَّتِكَ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ مَا ضُيِّقُ فِي حُكْمِكَ عَذْلٌ فِي قَضَائِكَ أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمِّيَتْ بِهِ نَفْسُكَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ اسْتَأْذَنْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي وَنُورَ صَدْرِي وَجَلَاءَ حُزْنِي وَذَهَابَ هَمِّي. إِلَّا أَذْهَبَ اللَّهُ هَمَّهُ وَحُزْنَهُ وَأَبْدَلَهُ مَكَانَهُ فَرَحًا. »</p> <p>“अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुक्, वबु अब्दिक, वबु अमतिक, नासीयती बियदिक, माजिन् फिय्या हुक्मुक्, अद्लुन् फिय्या कजाउक्, अरअलुका बिकुल्लिस्मिन् हुवा लक्, सम्मैत बिही नफसक्, औ अल्लम्तहू अहदन् मिन् खल्लिक, औ अन्जल्लहू फी किताबिक, अविस्ताअूसर्त बिही फी इल्मिलौबि इन्दक्, अन् तज्जअलल कुर्आना रबीआ कल्बी, व नूरा सद्दी, व जिलाआ हुज्नी, व जहाबा हम्मी।<sup>2</sup></p>

और तू गैब (छुपी हुई बातों) को खूब जानने वाला है, हे अल्लाह यदि तू जानता है कि यह काम (फिर जिस काम के लिए इस्तिखारः कर रहा है उसका नाम ले) मेरे लिए मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज से, -या यूं कहा कि : मेरी दुनिया और आखिरत के लिहाज से- बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए मुकद्दर करदे, और इसे पाना मेरे लिए आसान कर दे, और मुझे इसमें बर्कत दे, और यदि तू जानता है कि यह काम मेरे लिए बुरा है, मेरे धर्म, मेरी जीविका, और मेरे परिणाम के लिहाज से, -या यूं कहा कि: मेरी दुनिया और आखिरत के लिहाज से- तो इस काम को मुझ से फेर दे, और मुझे इससे बचाले, और भलाई जहाँ भी हो उसे मेरे लिए मुकद्दर करदे, और मुझे उस पर खुश करदे।

<sup>1</sup> (ऐ अल्लाह! इसे बख्श दे, इस पर दया कर, इसे अफियत दे, इसे मुआफ़ कर दे, और इस की मेहमानी प्रतिष्ठा के साथ कर, और इस के जाने की जगह चौड़ी कर दे, और इसे पानी, बर्फ और ओलों के साथ धो दे, और इसे गुनाहों से इस प्रकार साफ़ कर दे जिस प्रकार तूने सफ़ेद कपड़े को मैल से साफ़ किया, और इसे इस के घर के बदले उत्तम घर, घरवालों के बदले उत्तम घरवाले, और बीवी के बदले उत्तम बीवी अता कर, और इसे जन्नत में दाखिल कर, और इसे कब्र के अज़ाब और आग के अज़ाब से पनाह दे”

<sup>2</sup> (ऐ अल्लाह! मैं तेरा बन्दा, तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बान्दी का बेटा हूँ, तेरा आदेश मुझ पर लागू होता है, मेरे बारे में तेरा फैसला इन्साफ़ वाला है, मैं तुझ से तेरे हर उस ख़ास नाम द्वारा सवाल करता हूँ जो तूने स्वयं अपना नाम रखवा है, या उसे अपनी किताब में नाज़िल किया है, या उसे अपनी मख़लूक में से किसी को सिखाया है, या अपने इल्मुल्-ग़ैब में उसे छिपाने को बर्तरी दी है, कि तू कुर्आन को मेरे दिल की बहार, और मेरे सीने का प्रकाश, और मेरे ग़म को दूर करने वाला, और मेरे फिक्र को ले जाने वाला बना दे।)

## लाभ-दायक व्यापार

अल्लाह तआला ने हमें अपनी सारी सृष्टि पर फ़ज़ीलत दी है, बोलने जैसी ने'मत को हमारे लिए खास किया, जुबान को बोलने का माध्यम बनाया, जो एक ऐसा उपहार है जिसका प्रयोग भलाई और बुराई दोनों में हो सकता है, अतः जो इसका इस्तिमाल भलाई के लिए करेगा तो उसे इस संसार में नेक बख्ती प्रदान करेगी, और जन्नत में ऊँचे दरजे पर फ़ाइज़ करदेगी और जो बुराइयों में इसे प्रयोग करेगा तो यह उसे दुनिया और आख़िरत में तबाही और बरबादी के खड्डे में गिरा देगी। और कुरआन मजीद की तिलावत के बाद सर्व-श्रेष्ठ चीज़ जिससे समय को लाभ-दायक काम में इस्तिमाल किया जा सकता है वह है अल्लाह तआला का ज़िक्र।

**ज़िक्र की फ़ज़ीलत** : ज़िक्र के विषय में बहुत सारी हदीसों चर्चित है, इन्हीं में से नबी ﷺ का यह इर्शाद है : “क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बेहतर कर्म की ख़बर न दूं ...और आप ﷺ ने फ़रमाया : **“ जो व्यक्ति अपने रब का ज़िक्र करता है और जो ज़िक्र नहीं करता उसकी मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा व्यक्ति जैसी है”**। बुख़ारी और हदीसे कुद्सी में है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है : **“أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي يَوْمَ إِذَا ذَكَرَنِي فَإِنِ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ”** **“मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक होता हूँ, और मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है, यदि वह अपने दिल में मुझे याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ, और यदि वह मुझे किसी सभा में याद करता है तो मैं उसकी सभा से बेहतर सभा में उसे याद करता हूँ, और यदि वह मेरी ओर एक बित्ता करीब होता है, तो मैं उस से एक हाथ करीब होता हूँ”**। (बुख़ारी) और आप ﷺ ने यह भी इर्शाद फ़रमाया:

**“مُفَرِّدُونَ، قَالُوا: وَمَا الْمُفَرِّدُونَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: الدَّاكِرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالدَّاكِرَاتُ. نِيكَلُ غَ، لَوِغُوْ نَ پُؤُछ : हे अल्लाह के रसूल! मुफ़रिदून कौन लोग हैं? आप ने फ़रमाया: वह मर्द और वह औरतें जो बहुत अधिक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं”**। (मुस्लिम)

और आप ﷺ ने एक सहाबी को वसीयत करते हुए फ़रमाया: **“لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ.”** **“ तेरी जुबान अल्लाह के ज़िक्र से हमेशा तर रहे”**। (तिर्मिज़ी इत्यादि)

**सवाब की बढ़ौतरी** : जिस तरह कुरआन मजीद की तिलावत के सवाब में बढ़ौतरी होती है उसी तरह नेक कर्मों के सवाब में भी बढ़ौतरी होती है। और ऐसा दो चीज़ों के कारण होता है : **①** दिल में मौजूद ईमान, इख़्लास, महबूत और उसके मातिहत चीज़ों के कारण। **②** ज़िक्र के बारे में दिल के व्यस्त रहने और सोचने के कारण, केवल जुबान के द्वारा उच्चारण करके नहीं। और यही कर्म जब कामिल हो तो इसके द्वारा अल्लाह तआला गुनाहों को सिरे से मिटा देता है, और उन पर अमल करने वाले को भरपूर सवाब देता है, और जितना यह कम होता है उसी हिसाब से उसके सवाब में भी कमी आती है।

**ज़िक्र के कुछ फ़ायदे** : शैखुल इस्लाम अल्लामा इब्ने तैमिया رحمته الله ने फ़रमाया: दिल के लिए ज़िक्र मछली के लिए पानी के समान है, तो जब मछली को पानी से निकाल दिया जाए तो उसका क्या हाल होगा?

★ ज़िक्र अल्लाह की मुहबूत, उस से नज़दीकी, उसकी खुशी, उसके मुराक़बे, उससे डरने, और उसकी ओर पलटने का वारिस बनाता है, और उसकी इताअत पर सहायता करता है।



- ★ ज़िक्र दिल से सोंच फ़िक्र को दूर करता है, खूशी लाता है, दिल को ज़िन्दगी बख़शता है, और उसे शक्ति और सफ़ाई अता करता है।
- ★ दिल में एक रिक्त स्थान होता है जिसे अल्लाह का ज़िक्र ही भरता है, और कठोरपन तथा सख़ती होती है जिसे ज़िक्र ही पिघलाता और नरम करता है।
- ★ ज़िक्र दिल के लिए शिफ़ा और दवा है, शक्ति और ऐसा स्वाद है जिस जैसी कोई स्वाद नहीं, और लापर्वाही इस की बीमारी है।
- ★ ज़िक्र में कमी निफ़ाक़ की निशानी है, और बढ़ौतरी ईमानी शक्ति और अल्लाह से सच्ची मुहब्बत की दलील है; क्योंकि जो जिस से मुहब्बत करता उसका अधिक चर्चा किया करता है।
- ★ बन्दा जब खुश-हाली में अल्लाह का ज़िक्र करता है, तो अल्लाह उसे तंगी में याद रखता है, ख़ासकर मौत और उस की परीशानी के समय।
- ★ ज़िक्र सबब है अल्लाह के अज़ाब से नजात का, शन्ति के उतरने, रहमत के ढांपने, और फ़रिश्तों की बख़्शिश का।
- ★ ज़िक्र द्वारा जुबान ग़ीबत, चुगली, झूट और दूसरी मक़रूह और हराम चीज़ों से सुरक्षित रहती है।
- ★ ज़िक्र आसान इबादत है, सब से श्रेष्ठ और उत्तम है, और वह जन्नत का पौदा है।
- ★ ज़िक्र ज़ाकिर के चेहरे को हैबत, मिठास और ताज़गी का लिबास पहनाता है, और यह संसार, क़ब्र और आख़िरत में रौशनी है।
- ★ ज़िक्र ज़ाकिर पर अल्लाह तआला की रहमत और फ़रिश्तों की दुआ को वाजिब करता है, ज़िक्र करने वालों के द्वारा अल्लाह फ़रिश्तों पर फ़ख़्र करता है।
- ★ सबसे बेहतर कर्म करने वाले वे हैं जो उस कर्म में सब से अधिक ज़िक्र करने वाले हों, चुनान्वि सब से बेहतर रोज़ेदार वह है जो रोज़े की अवस्था में सब से अधिक ज़िक्र करता है।
- ★ ज़िक्र मुश्किल को सहज बनाता है, सख़्त को आसान करता है, परीशानी को हल्का करता है, रोज़ी लाने का सबब बनता है, और शरीर को शक्ति प्रदान करता है।
- ★ ज़िक्र शैतान को भगाता है, उसे रुस्वा और ज़लील करता है।

## सवेरे-सांझ की दुआएं

क्र	विर्द	संख्या और समय	प्रभाव और फ़ज़ीलत
1	आयतुल् कुर्सी <sup>1</sup>	सवेरे सांझ, सोने से पहले और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद	शैतान ऐसे व्यक्ति के करीब नहीं होता और यह जन्नत में जाने का सबब है।
2	सूरतुल् बक्र: की अन्तिम दोनों आयतें <sup>2</sup>	सांझ को और सोने से पहले।	हर प्रकार की बुराई से सुरक्षित रखती हैं।
3	सूरतुल् इख़्लास, सूरतुल् फ़लक और सूरतुन्नास।	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को।	हर चीज़ से बचाती है।
4	بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ “बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्ह मज़स्मिही शैयुन् फ़िल् अर्ज़ि व ला फ़िस्समा” अर् व हुवस्समीउल् अज़ीम”। <sup>3</sup>	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को।	अचानक उसे कोई मुसीबत नहीं आएगी, और न ही कोई चीज़ उसे नुकसान पहुँचाएगी।
5	أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التّٰمَاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ “अउज़ु बिकलिमातिल्लाहिताम्माति मिन् शर्रि मा ख़लक्”। <sup>4</sup>	3 बार सांझ को, और जब किसी जगह पड़व डाले।	उन जगहों को हर तरह की बुराई से सुरक्षित कर देगी।
6	حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ “इस्बियल्लाहु लाइलाह इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल् अर्शिल अज़ीम”। <sup>5</sup>	7 बार सवेरे और 7 बार सांझ को।	दनिया और आख़िरत के गुमों से नजात का ज़रीआ है।
7	رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا “रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन्, व बिल्इस्लामि दीनन्, व बिमुहम्मदिन् ﷺ नबीया”। <sup>6</sup>	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को।	अल्लाह पर यह हक़ है कि वह उसे राज़ी कर दे।
8	اللّٰهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النّٰشُورُ “अल्लाहुम्म बिक अस्बहना व बिक अम्सैना व बिक नह्या व बिक नमूत् व इलैकनुशूर” और शाम को कहे : اللهم بك أمسينا وبك أصبحنا وبك نحيا وبك نموت وإليك المصير “अल्लाहुम्म बिक अम्सैना व बिक अस्बहना व बिक नह्या व बिक नमूत् व इलैकल् मसीर” <sup>8</sup>		सवेरे सांझ इसे करने पर उभारा गया है।

1 **اللّٰهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ** (100)

2 **ءَامَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ ءَامَنَ بِاللّٰهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا تَفِرُّ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ (39) لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا أَوْرَاقَنَا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ**

<sup>3</sup> शुरू अल्लाह के नाम से जिसके नाम के साथ धरती और आकाश में कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुँचा सकती और वह सुने वाला जानने वाला है।

<sup>4</sup> अल्लाह तआला के परिपूर्ण कलाम की पनाह में आता हूँ उस चीज़ की बुराई से जिन्हें उस ने पैदा किए हैं।

<sup>5</sup> मेरे लिए अल्लाह काफी है, उसके सिवाय कोई सत्य इबादत के लायक नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया, और वह महान अर्थ का रब है।

<sup>6</sup> (मैं अल्लाह पर राज़ी हूँ उस के रब होने में, इस्लाम पर दीन होने में, और मुहम्मद ﷺ पर नबी होने में)।

<sup>7</sup> (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ सांझ किया, और तेरे नाम के साथ हम ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ हम मरेंगे, और तेरी ही ओर उठ कर जाना है)।

<sup>8</sup> (हे अल्लाह! तेरे नाम के साथ हम ने सांझ किया, और तेरे नाम के साथ सवेरा किया, और तेरे नाम के साथ हम ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ हम मरेंगे, और तेरी ही ओर लौट कर जाना है)।

9	<p>أصبحنا على فطرة الإسلام، وكلمة الإخلاص، ودين نبينا محمد ﷺ وملة أبينا إبراهيم ﷺ حنيفاً مسلماً وما كان من المشركين</p> <p>“अस्बह्ना अला फित्रतिल् इस्लाम्, व कलिमतिल् इख्लासु, व दीने नबीयिना मुहम्मद ﷺ व मिल्लतिल् अबीना इब्राहीम इनीफम् मुस्लिमँव व मा कान मिनल् मुश्किन्”<sup>1</sup></p>	सवेरे	नबी ﷺ यह दुआ किया करते थे।
10	<p>اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بَأْسٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحَدِّكَ لَا شَرِيكَ لَكَ فَالْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ</p> <p>“अल्लाहुम्म मा अस्बह बी मिन् ने’अमतिन् औ बिअहदिमिन् खल्किक् फमिन्क वह्दक ला शरीक लक, फलकल्हम्दु व लकश्शुक।<sup>2</sup></p>	सवेरे सांझ	उसने उस दिन और रात का शुक्रिया अदा कर दिया।
11	<p>اللَّهُمَّ إِنِّي أَصْبَحْتُ أَشْهَدُكَ وَأَشْهَدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ وَأَنْبِيَاءَكَ وَجَمِيعَ خَلْقِكَ بِأَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ</p> <p>“अल्लाहुम्म इन्नी अस्बह्तु उशिहदुक् व उशिहदु इमलत अशिक व मलाइकतक व अम्बियाअक व जमीअ खल्किक् बिअन्नक अन्तल्लाहु लाइलाह इल्ला अन्त व अन्न मुहम्मदन् अब्दुक व रसूलुक”<sup>3</sup></p> <p>और शाम में “इन्नी अस्बह्तु” के बदले “इन्नी अम्सैतु” कहे।</p>	4 बार सवेरे और 4 बार सांझ को।	जिस ने 4 बार कहे तो अल्लाह उसे जहन्नम से आजाद कर देगा।
12	<p>اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَ وَأَنْ أَقْتَرَفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا أَوْ أُجْرَهُ إِلَى مُسْلِمٍ</p> <p>“अल्लाहुम्म फातिरस्समावाति वल् अर्जि अग़िलमल् ग़ैबि वशहादति रब्ब कुल्लि शैइन् व मलीकहु अशहदु अल्लाइलाह इल्ला अन्त, अउजु बिक मिन् शरि नफ़सी व मिन शरिशैतानि व शिकिही, व अन् अक्तरिफ अला नफ़सी सूअन् औ अजुरहू इला मुस्लिम्”<sup>4</sup></p>	सवेरे सांझ और सोते समय।	शैतान के वस्वसों से बचाता है।
13	<p>اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجَبِينِ وَالْبَخْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلْبَةِ الدِّينِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ</p> <p>“अल्लाहुम्म इन्नी अउजु बिक मिनल् हम्मि वल् हज़नि, व अउजु बिक मिनल् अज्जि वल् कसलि, व अउजु बिक मिनल् जुबि वल् बुख्लि, व अउजु बिक मिन ग़लबतिदैनि व क़हिरिजालि।”<sup>5</sup></p>	1 बार सवेरे और 1 बार सांझ को	उसका ग़म और चिन्ता समाप्त हो जाती है और कर्ज़ पूरा हो जाता है।

<sup>1</sup> (हम ने इस्लामी नेचर, कल्मए इख्लास, अपने नबी मुहम्मद ﷺ के धर्म, और अपने बाप इब्राहीम इनीफ मुस्लिम की मिल्लत पर सवेरा किया, और वह मुश्किं में से नहीं थे)।

<sup>2</sup> और शाम में “मा अस्बह बी” के बदले “मा अम्सा बी” कहे। (हे अल्लाह मुझ पर या तेरी मख्लूक में से किसी पर जिस नेमत ने भी सवेरा किया वह मात्र तेरी ओर से है, तू अकेला है तेरा कोई साझी नहीं, अतः तेरे ही लिए प्रशंसा और तेरे ही लिए शुक्र है)।

<sup>3</sup> (हे अल्लाह मैं ने इस हाल में सवेरा किया कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ, और तेरा अर्थ उठाने वालों को, तेरे फ़रिश्तों को, तेरे नबियों को और तेरी सारी मख्लूक को गवाह बनाता हूँ कि तू ही सत्य उपास्य है, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, और अवश्य मुहम्मद तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं)।

<sup>4</sup> (हे अल्लाह! आकाश और धरती को पैदा करने वाले, छुपी हुई और खुली हुई को जानने वाले, हर चीज़ के प्रभु और मालिक, मैं गवाही देता हूँ के तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अपने नफ़स की बुराई से, और शैतान की बुराई से और उस के शिक से, और इस बात से कि मैं अपने नफ़स पर बुराई करूँ, या किसी मुस्लिम से बुराई करूँ)।

<sup>5</sup> (हे अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फ़िक्र और ग़म से, और तेरी पनाह चाहता हूँ आजिज़ होजाने और सुस्ती से, और तेरी पनाह चाहता हूँ डरपोकन और बख़ीली से, और तेरी पनाह चाहता हूँ कर्ज़ के चढ़ जाने और लोगों के ग़ालिब हो जाने से)।

14	<p>اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ، وَوَعْدِكَ، مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي؛ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ."</p> <p><b>"अल्लाहुम्म अन्त रब्बी लाइलाह इल्ला अन्त ख़लक़्तनी व अना अब्दुक व अना अल्ला अह्दिक व वाअ्दिक मस्ततअनु, अउजु बिक मिन् शरि मा सनअनु अबूओ लक बिने'अमतिक अलैय्य व अबूओ बिज़न्बी, फग़िर्ली फइन्हू ला यग़िफ़रुजुनुब इल्ला अन्त"</b><sup>1</sup></p>	यह सैयिदुल इस्तिफ़ार कहलाता है। सवेरे सांझ	जिस ने इस पर विश्वास रखते हुए दिन में कहा और उसी दिन उस की मौत होगई, या रात में कहा और उसी रात उस की मौत होगई तो वह जन्मती है।
15	<p>يا حي يا قيوم برحمتك أستغيث أصلح لي شأني كله ولا تكلني إلى نفسي طرفة عين</p> <p><b>"या हैयु या कैयुम बिरह्मतिक अस्तगीसु व ला तकिल्नी इला नफ्सी तरफ़त ऐन"</b> (ऐ अल्लाह जिन्दा रहने वाले और काएनात के निगरां, मैं तेरी ही दया के माध्यम से फ़र्याद करता हूँ, मेरे सारे काम दुरुस्त करदे, एक पलक झपकने के बराबर मुझे मेरे इवाले न कर)।</p>	सवेरे सांझ	नबी ﷺ ने फातिमः को इसकी वसीयत की।
16	<p>اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ</p> <p><b>"अल्लाहुम्म आफिनी फी बदनी, अल्लाहुम्म फी समई, अल्लाहुम्म आफिनी फी बसरी, अल्लाहुम्म इन्नी अउजु बिक मिनल् कुफ़ि वल् फ़कि, अल्लाहुम्म इन्नी अउजु बिक मिन् अज़ाबिल् कब्रि, लाइलाह इल्ला अन्त"</b><sup>2</sup></p>	3 बार सवेरे और 3 बार सांझ को	नबी ने इन शब्दों द्वारा दुआ़ा किए हैं।
17	<p>اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي، اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيْ وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي وَأَعُوذُ بِعَظْمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي</p> <p><b>"अल्लाहुम्म इन्नी अरअलुकल् आफ़ियत फी दीनी व दुन्याय व अहली व माली, अल्लाहुम्मस्तुर औराती व आमिन् रौआती, अल्लाहुम्मफ़ज़नी मिन् बैन यदैय्य व मिन् ख़ल्फ़ी, व अन् यमीनी व अन् शिमाली व मिन् फ़ौकी व अउजु बिअज़मतिक अन् उग़्ताल मिन् तहती"</b><sup>3</sup></p>	सवेरे सांझ	नबी ﷺ सवेरे सांझ इन शब्दों द्वारा दुआ़ा करना नहीं भूलते
18	<p>سبحان الله وبحمده عدد خلقه، ورضا نفسه، وزنة عرشه، ومداد كلماته</p> <p><b>"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, अदद ख़ल्किही, व रिज़ा नफ़िसही, व ज़िनत अर्शिही, व मिदाद कलिमातिही"</b><sup>4</sup></p>	3 बार सवेरे	फ़ज़्र से जुह तक ज़िक्र के लिए बैठे रहने से बेहतर है।

<sup>1</sup> (हे अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवाए कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, तूने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैं अपनी ताकत भर तेरे प्रतिज्ञा और तेरे वादे पर जमा हूँ, और अपने किए हुए अमल की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ, मैं उन उपहारों को स्वीकार करता हूँ जो तूने मुझ पर कीं, और मैं अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूँ, तो तू मुझे माफ़ फ़रमा दे अवश्य तेरे सिवाए कोई गुनाहों को माफ़ करने वाला नहीं)।

<sup>2</sup> (हे अल्लाह मुझे मेरी शरीर में चैन दे, मेरे कानों में चैन दे, ऐ अल्लाह मुझे मेरी आंखों में चैन दे, हे अल्लाह मैं कुफ़्र और फ़क़्र से तेरी पनाह चाहता हूँ, और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ, तेरे सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं)।

<sup>3</sup> (हे अल्लाह मैं तुझ से अपने धर्म अपनी दुन्या, अपने घर वाले और अपने माल में चैन का सवाल करता हूँ, हे अल्लाह! मेरी पर्दा वाली वस्तुओं पर पर्दा डाल, और मेरी घबराहटों को शान्त रख, हे अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरी दाई ओर से और बाई ओर से, और मेरे ऊपर से मेरा सुरक्षा कर, और इस बात से तेरी महानता की पनाह चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ)।

<sup>4</sup> (हम अल्लाह की पवित्रता उस की तारीफ़ के साथ करते हैं, उसकी मख़्लूक (सृष्टि) की संख्या बराबर, और उसकी नफ़स की खुशी के अनुसार, और उसके अर्श के वज़न के बराबर, और उसके शब्दों की लिखाई के बराबर)।



## महान सवाब वाले कथन और कर्म

क्र.	श्रेष्ठ कथन और कर्म	सुन्नत द्वारा प्रमाणित सवाब, नबी <small>ﷺ</small> ने फरमाया:
1	<p style="color: red; font-weight: bold;">"لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ، لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ" कहने का सवाब</p>	जो व्यक्ति एक दिन में 100 बार "लाइलाह इल्लल्लाह् वद्वद्हु ला शरीक लह्, लह्लल्मुल्क़् व लह्लह्लम्दु व ह्व अला कुल्लि शैइन् कदीर"। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्ति रखने वाला है- कहेगा उसे दस गुलाम (दास) आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा, उसके लिए 100 नेकियां लिखी जाएंगी, और उसके 100 पाप मिटा दिए जाएंगे, और यह ज़िक्र उसके लिए सांझ तक शैतान से बचने का साधन होगा, और कोई भी व्यक्ति उससे अधिक फ़ज़ीलत वाला कर्म लेकर नहीं आया, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उससे अधिक ज़िक्र किया।
2	<p style="color: red; font-weight: bold;">سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ कहने का सवाब</p>	जो "सुब्हन्ल्लाहिल्लअज़ीम व बिहम्दिही"। -महान अल्लाह पाक है अपनी तारीफ़ों और खुबियों के साथ- कहेगा उसके लिए जन्नत में एक खजूर का पौदा गाड़ा जाएगा।
3	<p style="color: red; font-weight: bold;">(سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ) कहने का सवाब</p>	जो व्यक्ति सवेरे सांझ 100 बार "सुब्हन्ल्लाहि व बिहम्दिही"। -अल्लाह हर प्रकार के ऐब से पाक है, अपनी तारीफ़ों और खुबियों के साथ- कहेगा तो उसके पाप माफ़ कर दिए जाएंगे अगरचे वे समुन्दर की झाग के बराबर हों, और क़ियामत के दिन कोई उससे अफ़ज़ल अमल लेकर नहीं आएगा, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उसी के बराबर या उससे अधिक कहा हो। "दो कर्म हैं, जो जुबान पर हलके हैं, तराजू में भारी हैं, और रहमान को बहुत प्यारे हैं, "सुब्हन्ल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हन्ल्लाहिल्लअज़ीम"। -अल्लाह पाक है अपनी तारीफ़ों और खुबियों के साथ, अल्लाह पाक है बड़ाइयों वाला-
4	<p style="color: red; font-weight: bold;">لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ कहने का सवाब</p>	"ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह्"। - अल्लाह की सहायता के बिना न कुछ करने की शक्ति है और न ही किसी चीज़ से बचने के ताक़त- जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।
5	<p style="color: red; font-weight: bold;">जन्नत का सवाल और जहन्नम से पनाह</p>	"जो व्यक्ति तीन बार अल्लाह से जन्नत का सवाल करता है तो जन्नत कहती है : ऐ अल्लाह इसे जन्नत में दाख़िल करदे, और जो व्यक्ति तीन बार जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहता है : ऐ अल्लाह इसे जहन्नम में न डालना"।
6	<p style="color: red; font-weight: bold;">मज्लिस का कफ़ारा व अतूबु इलैक</p>	जो व्यक्ति किसी ऐसी सभा में बैठे जिस में बेकार की बातें अधिक हो गईं तो उस मज्लिस से उठने से पहले "सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक, अशहदु अल्लाइलाह इल्ला अन्त, अस्तिफ़िरुक, व अतूबु इलैक"। कह ले, "हे अल्लाह तू पाक है अपनी सारी तारीफ़ों के साथ, नहीं है कोई सच्चा इबादत के लायक मगर तू ही, और मैं तुझी से माफ़ी चाहता हूँ, और तेरी ही तरफ़ पलटता हूँ" तो उससे उस सभा में जो भी गलतियां हुई हैं माफ़ कर दी जाएंगी।
7	<p style="color: red; font-weight: bold;">सुरतलू कहफ़ की कुछ आयतें याद करने का सवाब</p>	जिसने सुरतलू कहफ़ से शुरू की 10 आयतें याद की वह दज्जाल से सुरक्षित रहेगा।
8	<p style="color: red; font-weight: bold;">नबी <small>ﷺ</small> पर दरुद भेजने का सवाब</p>	जो व्यक्ति मुझ पर एक बार दरुद भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें उतारता है, और उसके दस गुनाह माफ़ फ़रमा देता है, और उसके दस दर्जे ऊँचा कर देता है, और एक रिवायत में है उसके लिए दस नेकियां लिख दी जाती हैं।
9	<p style="color: red; font-weight: bold;">क़ुरआन की कुछ सूरतें और आयतें पढ़ने का सवाब</p>	जिस व्यक्ति ने दिन और रात में 50 आयतें पढ़ी तो वह गाफ़िलों में नहीं लिखा जाएगा, और जिस ने 100 आयत पढ़ी तो वह क़ानितीन में लिखा जाएगा, और जिस ने 200 आयत पढ़ी तो क़ियामत के दिन क़ुरआन उस से लड़ेगा नहीं, और जिस ने 500 पढ़ी तो उस के सवाबों का ख़ज़ाना लिख दिया जाएगा। "जो व्यक्ति सवेरे-सांझ दस बार <small>قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ</small> पढ़ेगा तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा"। "कुल हवल्लाह् अहद् एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है"।
10	<p style="color: red; font-weight: bold;">मुअज़्ज़िन का सवाब</p>	"मुअज़्ज़िन की आवाज़ को पेड़, ढेला, पत्थर, जिन्नात और इन्सान जो भी सुनते हैं वे (क़ियामत के दिन) उसके लिए गवाही देंगे"। "क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन सब से लम्बी गर्दन वाले होंगे"।

11	अज्ञान के बाद की द्रुआ और उसका सवाब	जिस व्यक्ति ने अज्ञान सुन कर यह द्रुआ पढ़ी : <b>“अल्लाहम्म रब्ब हाज़िहिद्दा’अवतित्ताम्मति वससलातिल् काइमति आति मुहम्मदनिस्त्वसीलत वल् फ़ज़ीलत वब्अस्हु मक़ामम्मह्मूदनिल्लज़ी वअत्तहू”</b> । (ऐ अल्लाह इस कामिल द्रुआ और हमेशा कायम रहने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद ﷺ को वसीलः (जन्त के दर्जे में से एक दर्जे का नाम है जो मात्र नबी ﷺ के लिए खास है) और फ़ज़ीलत (वह ऊँचा मक़ाम जो नबी को ख़ुसूसियत के साथ सारी सृष्टि पर प्राप्त होगा) अता फ़र्मा, और आप को मक़ामे मह्मूद पर फ़ाइज़ कर, जिसका तूने वादा किया है) तो क़ियामत के दिन उसके लिए मेरी शफ़ाअत हलाल होजाएगी।
12	अच्छी तरह से वुजू करने का सवाब	जिस व्यक्ति ने वुजू किया और अच्छे से वुजू किया तो उसके बदन से गुनाह निकल जाते हैं, यहाँ तक कि उसके नाख़ुनों के नीचे से भी।
13	व्रजू के बाद की दुआ।	तूम में से जो व्यक्ति भी कामिल व्रजू करे, फिर यह द्रुआ पढ़े : <b>“अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाह व अन्न मुहम्मदनु अब्दुल्लाहि व रसूलह”</b> । (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं) तो उसके लिए जन्त के सभी दरवाज़े खोल दिए जाएंगे वह जिससे चाहे प्रवेश करे।
14	वुजू के बाद दो रकअतें पढ़ना	जो भी व्यक्ति वुजू करता है, और अच्छी तरह वुजू करता है, और दिल और चेहरे से ध्यान लगाकर दो रकअतें नमाज़ पढ़ता है तो उसके लिए जन्त वाजिब होजाती है।
15	मस्जिद की तरफ ज़्यादा चलकर जाने का सवाब	जो जमाअत वाली मस्जिद की तरफ़ जाए तो आते जाते जितने भी क़दम उठाता है, उनमें से एक के बदले एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है और दूसरे के बदले उसके लिए एक नेकी लिख दी जाती है।
16	जुम्ह की तैयारी और उस के लिए जल्दी जाना	जो व्यक्ति जुम्ह के दिन अपनी पत्नि को नहाने का सबब बने, और नहाए, और सवेरे चल कर मस्जिद जाए, सवारी पर न जाए, और इमाम से करीब बैठे, और ध्यान से खुत्वा सुने, और कोई गलत काम न करे, तो हर क़दम के बदले उसे एक साल के रोज़े और एक साल के क़ियाम का सवाब मिलेगा। जो व्यक्ति भी जुम्ह के दिन नहाए, शक्ति भर पाकी हासिल करे, अपने तेल में से तेल लगाए, या अपने घर का खुशबू लगाए, फिर मस्जिद के लिए निकले और दो लोगों के बीच फ़र्क न डाले, फिर जितना लिख्वा हो नमाज़ पढ़े, फिर जब इमाम खुत्वा दे तो चुप रहकर सुने, तो उस के इस जुम्हा और अगले जुम्हा के बीच का गुनाह माफ़ कर दिया जाएगा।
17	40 दिन तक इमाम के साथ तकबीरे तहरीमा न छूटने का सवाब	जिस व्यक्ति ने अल्लाह तआला के लिए 40 दिन तक जमाअत से नमाज़ पढ़ी इस तरह से कि उस ने इमाम के साथ तकबीरे तहरीमा पाई तो उसके लिए दो चीज़ों से आज़ादी लिख दी जाती है, एक जहन्नम से आज़ादी और दूसरी निफ़ाक़ से आज़ादी।
18	फ़र्ज़ नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने का सवाब	जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से 27 दर्जे बेहतर हैं।
19	इशा और फ़ज़्र को जमाअत के साथ पढ़ने का सवाब।	जिस व्यक्ति ने जमाअत के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी तो उसने जैसे आधी रात क़ियाम किया (अल्लाह की इबादत में नमाज़ पढ़ता रहा) और जिसने फ़ज़्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ी तो उसने जैसे पूरी रात क़ियाम किया।
20	नमाज़ में पहली सफ़ में हाज़िर रहने की फ़ज़ीलत	यदि लोग उस फ़ज़ीलत को जान लें जो अज्ञान देने और पहली सफ़ में है, तो फिर उसे पाने के लिए वह कुर्आ-अन्दाज़ी के बिना कोई चारा न पाएँ तो अवश्य वह उस पर कुर्आ-अन्दाज़ी करें।
21	रातिबा सुन्नतों की पाबन्दी का सवाब।	जो व्यक्ति फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावः हर दिन 12 रकअत नफ़ल नमाज़ पढ़ता है, तो उसके लिए जन्त में एक घर बना दिया जाता है : 4 रकअतें ज़ुह से पहले और 2 रकअतें उसके बाद, 2 रकअतें मग़्रिब के बाद, 2 रकअतें इशा के बाद, और 2 रकअतें फ़ज़्र की नमाज़ से पहले।
22	अधिक नफ़ल नमाज़ पढ़ने और	“अधिक सज्दे करना लाज़िम करलो, क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सज्दे करते हो, हर सज्दे के बदले वह तुम्हारा एक दर्जा ऊँचा कर देता है, और तुम्हारा एक गुनाह

	उन्हें छुपाकर पढ़ने का सवाब	माफ़ कर देता है”। “व्यक्ति का लोगों की नज़र से हट कर अधिक नफ़ल नमाज़ पढ़ना, लोगों की नज़रों के सामने पढ़ी जाने वाली नमाज़ से 25 दर्जे उत्तम है”।
23	फ़ज़्र की दो रकअत सुन्नत, और फ़र्ज़ की फ़ज़ीलत	फ़ज़्र की दो रकअत सुन्नतें संसार और इसमें पाई जाने वाली चीज़ों से बेहतर है। “जिस ने फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ी तो वह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में है”।
24	चाशत की नमाज़ का सवाब	तुम में से हर व्यक्ति इस हालत में सवेरा करता है कि उसके हर जोड़ पर सद्का होता है, तो हर बार “सुब्हानल्लाह” कहना सद्का है, और हर बार “अल्हम्दुलिल्लाह” कहना सद्का है, और हर बार “लाइलाह इल्लल्लाह” कहना सद्का है, और हर बार “अल्लाहु अक्बर” कहना सद्का है, नेकी का हुक्म देना सद्का है, और बुराई से रोकना सद्का है, और इन सारी चीज़ों के बदले चाशत की 2 रकअत नमाज़ काफ़ी हो जाती है।
25	अपने नमाज़ की जगह में बैठ कर ज़िक्र करने का सवाब।	फ़रिश्ते तुम्हारे उस व्यक्ति के हक़ में द्रआ करते रहते हैं जब तक कि वह अपनी नमाज़ पढ़ने की जगह पर बैठा रहे, बशर्तकि उसका वज़ू न टूटे, फ़रिश्ते द्रआ में कहते हैं : ऐ अल्लाह! उसे माफ़ करदे, ऐ अल्लाह! उस पर दया कर।
26	बाजमाअत फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ने के बाद सूरज निकलने तक ज़िक्र करना फिर 2 रकअत नमाज़ पढ़ना	जिस ने बाजमाअत फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ी फिर सूरज निकलने तक बैठे ज़िक्र करता रहा, फिर 2 रकअत नमाज़ पढ़ी तो उस के लिए हज़्ज और उम्र: का सवाब मिलेगा पूरा पूरा पूरा।
27	जो रात में क्याम करने के लिए जगे और अपने घर वालों को जगाए	जो रात में जगा और अपनी बीवी को जगाया और दोनों ने एक साथ 2 रकअत नमाज़ पढ़ी तो बहुत अधिक अल्लाह को याद करने वाले मर्दों और औरतों में लिख दिए जाते हैं।
28	जिस ने रात में नमाज़ पढ़ने की नियत की परन्तु नींद नहीं खुलि	जिस व्यक्ति की भी रात में नमाज़ की आदत होती है, परन्तु उस पर नींद ग़ालिब आ जाए तो अल्लाह तआला उस के लिए नमाज़ का सवाब लिख देता है, और उस की ये नींद सद्का हो जाती है।
29	कहने का सवाब	“लाइलाह इल्लल्लाह व्हदहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु यूह्यी व यूमीतु व हुब हैयनु ला यमूतु बि यदिहिल खैरु व हुव अला कुल्लि शैइनु कदीर”। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, वही जिलाता है और वही मारता है, और वह जिन्दा है मरेगा नहीं, उसी के हाथ हर प्रकार की भलाई है, इस द्रआ के पढ़ने से अल्लाह तआला पढ़ने वाले के लिए एक लाख नेकी लिख देता है, एक लाख गुनाह मिटा देता है, और एक लाख उस के दर्जे बुलन्द कर देता है”।
30	फ़र्ज़ नमाज़ के बाद कहने की फ़ज़ीलत	जो व्यक्ति हर नमाज़ के बाद 33 बार “सुब्हानल्लाह” 33 बार “अल्हम्दुलिल्लाह” और 33 बार “अल्लाहु अक्बर” कहे, और “लाइलाह इल्लल्लाह व्हदहू ला शरीक लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइनु कदीर”। -अल्लाह के सिवाय कोई सत्य उपास्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है, और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्ति रखने वाला है- कह कर 100 की गिन्ती पूरी करे, तो उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे, अगरचे वे समुन्दर के झाग के बराबर हों।
31	आयतुल क़र्सी पढ़ने का सवाब	जिस व्यक्ति ने हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल क़र्सी पढ़ी तो उसे जन्नत में जाने से कोई चीज़ रोक नहीं सकेगी सिवाय मौत के।
32	बीमार की तीमार-दारी करने का सवाब	जो मुसलमान किसी मुसलमान रोगी की सवेरे के समय तीमार-दारी करता है तो सांझ तक 70 हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए खैर की दुआ करते हैं, और यदि सांझ को मिलने जाता है तो सवेरे तक 70 हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं, और जन्नत में उसके लिए चुने हुए फल होते हैं।
33	पिड़ित व्यक्ति को देख कर यह द्रआ करे	जिस ने किसी पिड़ित व्यक्ति को देख कर यह द्रआ की : (अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब्तलाक बिही, व फ़ज़ज़लनी अला कसीरिम्-मिम्मनु खलक तफ़ज़ीला) अर्थात : “सारी तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे उस मुसीबत से बचाए रखवा जिस में तुझे मुब्तला किया, और अपनी बहुत सी मख़्लूक पर मुझे फ़ज़ीलत बख़्शी” तो उस पर वह मुसीबत नहीं आएगी।

34	<b>दुःखी की ता'ज़ियत का सवाब</b>	“जिस व्यक्ति ने किसी दुःखी की ता'ज़ियत की तो उसे उसी की तरह सवाब मिलेगा।” “जो मोमिन व्यक्ति भी किसी मुसीबत में अपने भाई की ता'ज़ियत करता है तो अल्लाह उसे करामत के जोड़ों में से पहनाएगा।”
35	<b>जनाज़े की नमाज़ पढ़ने और मैयत दफन करने तक साथ रहने का सवाब</b>	“जो व्यक्ति किसी के जनाजे में मौजूद रहा यहाँ तक कि जनाजे की नमाज़ पढ़ ली गई तो उसके लिए एक क़ीरात सवाब है, और जो व्यक्ति मैयत दफन किए जाने तक मौजूद रहा, उसके लिए दो क़ीरात सवाब है, पूछा गया : क़ीरात क्या है? तो जवाब मिला : दो बड़े पहाड़ों की तरह।” इब्ने उमर <small>رضي الله عنه</small> कहते हैं : हम ने बहुत अधिक क़ीरात खो दिए।
36	<b>अल्लाह के लिए मस्जिद बनाने की फ़ज़ीलत</b>	“जिस ने अल्लाह के लिए मस्जिद बनाई चाहे वह पक्षी के घोंसले ही की तरह क्यों न हो, तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा।”
37	<b>अल्लाह के रास्ते में खर्च करने का सवाब</b>	“कोई ऐसा दिन नहीं है जिस में बन्दा सवेरा करता है मगर उस में दो फ़रिश्ते नाज़िल होता है, उनमें से एक कहता है : ऐ अल्लाह तू खर्च करने वाले को अच्छा बदला दे, और दूसरा कहता है : ऐ अल्लाह जिस ने हाथ रोक रखा है उसको बर्बाद कर दे।”
38	<b>सद्का</b>	सद्का किसी माल को घटाता नहीं है, और माफ़ करने के कारण अल्लाह तआला इज़्ज़त और प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, और जो व्यक्ति अल्लाह के लिए झुकता है तो अल्लाह उसे उँचाई और बुलन्दी अता करता है। एक दिहम लाख पर भारी होगया, लोगों ने पूछा : अल्लाह के रसूल! ऐसा कैसे हुवा? आप <small>ﷺ</small> ने फ़रमाया: एक व्यक्ति के पास दो दिहम था जिस में से एक दिहम सद्का कर दिया, और एक के पास बहुत अधिक धन था वह अपने धन के एक किनारे गया जिस में से एक लाख सद्का किया। “जो मुस्लिम व्यक्ति भी कोई पौदा गाड़ता है, या खेती करता है, जिस में चरा, इन्सान या जानवर खा लेते हैं तो वह उस के लिए सद्का होजाता है।”
39	<b>बिना किसी फ़ायदे के कर्ज़ देने की फ़ज़ीलत</b>	जो मुसलमान व्यक्ति किसी मुसलमान को दो बार कर्ज़ दे तो यह उसके लिए एक बार सद्का करने के बराबर है।
40	<b>तंगहाल पर सबर करना</b>	जिस व्यक्ति ने किसी कंगाल को मुहलत दी तो कर्ज़ की अदाइगी का समय आने से पहले तक हर दिन के बदले सद्का मिलता है, और समय होजाने के बाद यदि मुहलत दे तो हर दिन के बदले दोगुना सद्का मिलता है।”
41	<b>अल्लाह के रास्ते में एक दिन रोज़ा रखने का सवाब</b>	जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में एक दिन का रोज़ा रखेगा तो अल्लाह तआला उस एक दिन के बदले उसके चेहरे को जहन्नम से 70 वर्ष (के फासले जितनी) दूरी पर करदेगा।
42	<b>हर महीने में तीन दिन के रोज़े, अरफ़ा का रोज़ा और आशूरा के रोज़े का सवाब</b>	“हर महीने तीन दिन रोज़ा रखना, उम्र भर रोज़ा रखने की तरह है।” और अरफ़ा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया? तो आप ने फ़रमाया: पिछले और अगले वर्ष के गुनाहों का कफ़ारा: होता है, और आशूरा (दस मुह्र्रम) के रोज़े के बारे में पूछा गया? तो आप ने फ़रमाया : पिछले वर्ष के गुनाहों का कफ़ारा होता है।”
43	<b>शबवाल के 6 रोज़ों का सवाब</b>	“जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े रखे, उसके बाद शबवाल के 6 रोज़े रखे तो यह साल भर रोज़ा रखने जैसे है।”
44	<b>इमाम के साथ अन्त तक तरावीह पढ़ने का सवाब</b>	“अवश्य जिस व्यक्ति ने इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी यहाँ तक कि वह लौट जाए तो उस के लिए पूरी रात का क़ियाम शुमार किया जाता है।”
45	<b>रमज़ान में उम्र: करने का सवाब</b>	रमज़ान में उम्र: करने का सवाब हज़्ज के बराबर है, या मेरे साथ हज़्ज करने के बराबर है। “और जिसने का'बा का सात चक्कर त्वाफ़ किया और त्वाफ़ की दो रक़अत नमाज़ पढ़ी तो उसे गर्दन आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है।”
46	<b>मक़बूल हज़्ज का सवाब</b>	“जिस व्यक्ति ने हज़्ज किया, और उस ने हज़्ज में गाली नहीं बके और न कोई गुनाह के काम किए तो वह हज़्ज से वापस होता उस दिन की तरह जिस दिन उस की मां ने उसे जन्म दिया था।” “और स्वीकार्य हज़्ज का सवाब तो जन्नत ही है।”

47	ज़ल्हिज़्जा के पहले अश्ना में नेकी करने का सवाब	कोई भी ऐसा दिन नहीं जिस में नेकी करना अल्लाह को इन दस दिनों में नेकी करने से ज़्यादा पसंदीदा हो, सहाबा ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना भी नहीं, मगर हाँ कोई व्यक्ति अपनी जान और माल ले कर निकला और कुछ भी लेकर वापस न आया।”
48	कुर्बानी	“सहाबाए किराम ने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल! यह कुर्बानी क्या है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: यह तुम्हारे पिता इब्राहीम की सुन्नत है, उन्होंने कहा : इस में हमें क्या सवाब मिलेगा? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: प्रत्येक बाल के बदले एक नेकी मिलेगी, उन्होंने पूछा : उन का क्या हुक्म है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: प्रत्येक ऊनी बाल के बदले एक नेकी मिलेगी।
49	आलिम का सवाब और उस की फज़ीलत	“आलिम की फज़ीलत आबिद पर उसी तरह है जिस तरह मेरी फज़ीलत तुम में से एक कम्तर व्यक्ति पर है।” फिर अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: “अवश्य अल्लाह, उस के फ़रिश्ते, आकाश वाले, धरती वाले, यहाँ तक कि चिंवटी अपनी बिल में और मछली भी लोगों को भलाई की शिक्षा देने वाले के लिए रहमत की दुआ करते है”।
50	सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगने का सवाब	जिस व्यक्ति ने सच्चाई के साथ शहादत की मौत मांगी तो अल्लाह उसे शहीदों के मुक़ाम पर पहुँचा देगा, चाहे उस की मौत अपने बिछौने पर ही क्यों न हुई हो।
51	अल्लाह के डर से रोने और पहरा देने का सवाब	दो तरह की आँखों को जहन्नम की आग नहीं छूएगी, उस आँख को जो अल्लाह के डर से रोई, और उस आँख को जिस ने रात अल्लाह के रास्ते में पहरादारी में गुज़ारी।
52	कुछ काम न करने पर जन्नत में बिना हिसाब-किताब प्रवेश करना	नबी ﷺ को सपना में सारी उम्मतें दिखाई गईं, आपने अपनी उम्मत को देखा कि उनमें से 70 हजार ऐसे लोग हैं जो बिना हिसाब-किताब के जन्नत में दाखिल किए जाएंगे, उन्हें कोई अज़ाब नहीं होगा, और यह वह लोग होंगे, जो न दागकर इलाज कराते हैं, न झाड़-फुंक कराते हैं, न बुरा-शगून लेते हैं, और मात्र अपने रब पर भरोसा रखते हैं।
53	जिनके नाबालिग बच्चों की मृत्यु होगई हो	जिस मुसलमान के तीन बच्चों की मृत्यु जवानी से पहले हो जाए, तो अल्लाह तआला इसको इन बच्चों पर अपनी रहमत की बर्कत से जन्नत में ले जाएगा।
54	आँख खोने पर सब्र करने का सवाब	“अवश्य अल्लाह तआला ने फ़रमाया: जब मैं ने अपने बन्दे का परीक्षा उस की दोनों प्रिय चीजों (अर्थात उस की दोनों आँखे) में लिया, और उस ने उस पर सब्र किया, तो उनके बदले में मैं ने उसे जन्नत दी।”
55	अल्लाह तआला से डरते हुए किसी चीज़ को छोड़ देना।	“अवश्य तुम किसी चीज़ को अल्लाह तआला से डरते हुए नहीं छोड़ोगे, मगर अल्लाह तआला तुम्हें उस से उत्तम चीज़ देगा।”
56	शरमगाह और जुबान को सुरक्षित रखने का सवाब	जो व्यक्ति मुझे दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (जुबान) की और दोनों पैरों के बीच की चीज़ (शरमगाह) की हिफ़ाज़त की गारन्टी दे दे, तो मैं उसे जन्नत की गारन्टी देता हूँ।
57	घर में घुसते समय और खाते समय ज़िक्र करने का सवाब	“जब आदमी अपने घर में घुसता है, और घुसते समय और खाते समय अल्लाह का ज़िक्र करता है। तो शैतान कहता है : न तो तुम्हारे लिए सोना है और न ही खाना। और जब आदमी घर में घुसता है और घुसते समय अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना पा लिया, और जब खाने के समय ज़िक्र नहीं करता है तो शैतान कहता है : तुम ने सोने का ठिकाना भी पा लिया और खाना भी।”
58	खाने पीने और नया कपड़ा पहनने के बाद अल्लाह का	जिस व्यक्ति ने खाना खाया फिर यह दुआ पढ़ी : “अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्अमनी हाज़ा व रज़कनीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्मिन्नी व ला कुव्वः”। “सभी तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी हर्कत और ताक़त के बिना मुझे खिलाया, और मुझे यह रोज़ी दी। तो उस के पिछले पाप माफ़ कर दिए जाते हैं। और जब नया कपड़ा पहन ले तो कहे : “अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व रज़कनीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्मिन्नी व ला कुव्वः”।

	<b>शुक्र अदा करना</b>	“सभी तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरी हकत और ताकत के बिना मुझे यह कपड़ा पहनाया, और मुझे यह रोजी दी। तो उस के पिछले पाप माफ़ कर दिए जाते हैं।”
59	<b>जो व्यक्ति यह चाहता हो कि अल्लाह उसके काम की कठिनाई को आसान कर दे</b>	फ़ातिमा <small>رضی اللہ عنہا</small> ने नौकर मांगा तो आप <small>ﷺ</small> ने उन्हे और अली को कहा : तुम दोनों ने मुझ से जो मांगा है क्या मैं इससे बेहतर चीज़ तुम्हें न बता दूँ? जब तुम अपने बिछौने पर जाओ तो 34 बार <b>अल्लाहू अक्बर</b> और 33 बार <b>सुब्हानल्लाहू</b> और 33 बार <b>अल्हम्दु लिल्लाहू</b> कह लिया करो, यह तुम्हारे लिए नौकर से बेहतर है।
60	<b>सम्भोग करन से पहले की दुआ</b>	यदि तुम में से कोई अपनी पत्नि के पास हम-बिस्तरी के लिए आए और यह दुआ पढ़े : <b>“बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निबश्शैतान व जन्निबिश्शैतान मा रज़कतना”</b> । “हे अल्लाह! हमें शैतान से बचा, और इस सुहबत द्वारा जो औलाद हमें दे उसे भी शैतान से बचा, तो उनके बीच जो औलाद भी मुक़दर होगी उसे शैतान घाटा नहीं पहुँचा सकेगा।
61	<b>पत्नि के अपने पति को खुश रखने की फ़ज़ीलत</b>	जो औरत इस हाल में मरी हो कि उसका पति उससे खुश हो तो वह जन्त में जाएगी।
62	<b>वालिदैन के साथ नेकी करने और नातादारी निभाने का सवाब</b>	“अल्लाह की मर्जी वालिद की मर्जी में है”। “जिसे यह बात खुश करती हो कि उस की रोज़ी बढ़ाई जाए, और उस की उम्र बढ़ाई जाए तो वह अपनी नातेदारी को निभाए।”
63	<b>यतीम की क़िफ़ालत</b>	मैं और यतीम को देख-भाल करने वाला दोनों जन्त में इस तरह होंगे, और आप <small>ﷺ</small> ने अपनी शहादत की उँगली और बीच वाली उँगली से इशारा किया। और उन दोनों उँगलियों को फैलाया।
64	<b>हुस्ने अख़्लाक़ का सवाब</b>	मोमिन अपने हुस्ने अख़्लाक़ (सु-स्वभाव) के कारण दिन भर रोज़ा रखने वाले और रात में क़ियाम करने के दर्जे को पालेता है, क़ियामत के दिन मोमिन बन्दे के तराजू में हुस्ने अख़्लाक़ से अधिक भारी कोई चीज़ नहीं होगी।
65	<b>नरमी और शफ़क़त करने का सवाब</b>	“अल्लाह अपने बन्दों में से रहम करने वालों पर रहम करता है, तुम धरती वालों पर रहम करो आकाश वाला तुम पर रहम करेगा।”
66	<b>मुसलमानों के लिए भलाई चाहने का सवाब</b>	“तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए भी वही चीज़ पसंद न करे जो अपने लिए पसंद करता है।”
67	<b>लाज शरम</b>	“हया और शरम से मात्र भलाई ही आती है।” “हया ईमान का एक हिस्सा है।” “चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : हया करना, खुशबू लगाना, मिस्वाक करना और निकाह करना।”
68	<b>सलाम से आरम्भ करना</b>	एक व्यक्ति नबी <small>ﷺ</small> की सेवा में हज़िर हुवा, और उसने कहा : <b>السَّلَامُ عَلَيْكُمْ</b> आप <small>ﷺ</small> ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप <small>ﷺ</small> ने फ़रमाया: इसके लिए 10 नेकियां हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : <b>السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ</b> आप <small>ﷺ</small> ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप <small>ﷺ</small> ने फ़रमाया: इसके लिए 20 नेकियां हैं, फिर एक और व्यक्ति आया, और उसने कहा : <b>السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ</b> आप <small>ﷺ</small> ने उसके सलाम का जवाब दिया फिर वह बैठ गया तो आप <small>ﷺ</small> ने फ़रमाया: इसके लिए 30 नेकियां हैं।
69	<b>मुलाक़ात के समय मुसाफ़हा करने का सवाब</b>	जो दो मुसलमान व्यक्ति आपस में मुलाक़ात करें, और मुसाफ़हा करें तो इससे पहले कि वह अलग-अलग हों बख़्श दिए जाते हैं।
70	<b>मुस्लिम व्यक्ति की इज़ज़त का बचाव करने का सवाब</b>	“जिस ने अपने मुस्लिम भाई की इज़ज़त का बचाव किया अल्लाह तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन जहन्नम से उस के चेहरे का बचाव करेगा।”
71	<b>नेक लोगों के साथ मुहब्बत करना और उनके साथ बैठना</b>	“तुम उनके साथ होगे जिस से तुम ने मुहब्बत की।” अनस <small>رضی اللہ عنہ</small> कहते हैं : सहाबए किराम किसी चीज़ से उस क़दर खुश नहीं हुए जिस क़दर इस हदीस से खुश हुए।
72	<b>अल्लाह की बड़ाई के लिए मुहब्बत करने वालों का सवाब</b>	“अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मेरी बड़ाई के लिए मुहब्बत करने वालों के लिए नूर के मेंबर होंगे, हाल यह होगा कि उन पर नबी और शहीद भी रश्क करेंगे।

73	अपने भाई के लिए द्रुआ करने वाले का सवाब	“अपने भाई के लिए उस की गैर मौजूदगी में द्रुआ कबूल होती है, उस के सर के पास फ़रिश्ता नियुक्त होता है, और वह जब भी अपने भाई के लिए द्रुआ करता है तो उस पर नियुक्त फ़रिश्ता आमीन कहता है, और कहता है तेरे लिए भी इसी के तरह हो।”
74	मोमिन मर्दों और औरतों के इस्तिग़फ़ार करने का सवाब	“जिस ने मोमिन मर्दों और औरतों के लिए इस्तिग़फ़ार किया तो अल्लाह तआला उस के लिए प्रत्येक मोमिन मर्द और औरत के बदले एक नेकी लिखता है।”
75	कष्टदायक चीज़ को रास्ते से हटाने का सवाब	“मैं ने एक आदमी को जन्नत की नेमतों से लाभ उठाते देखा एक गाछ को काटने के कारण जो बीच रास्ते में था और लोगों को तकलीफ़ पहुंचा रहा था।
76	झगड़ा लड़ाई और मज़ाक़ में भी झूट से बचने और अच्छे स्वभाव वालों का सवाब	मैं उस व्यक्ति के लिए जन्नत के किनारे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने हक़ पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया, और उस व्यक्ति के लिए भी जन्नत के बीच में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसने मज़ाक़ में भी झूट नहीं बोला, और उस व्यक्ति के लिए जन्नत के बालाई दरजे में एक घर का ज़िम्मेदार हूँ जिसके अख़लाक़ अच्छे हों।
77	गुस्सा पी जाने का सवाब	जो व्यक्ति गुस्सा पी जाए और वह उसे कर गुज़रने की शक्ति रखता हो, तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसे सारी मख़्लूक़ के सामने ब्रूलाएगा, और बड़ी बड़ी आँख वाली हूरों में से जिसे चाहे चुन लेने का अधिकार देगा।
78	किसी की भलाई या बुराई की साक्ष्य देना	“जिस के लिए तुम ने भलाई की साक्ष्य दी उस पर जन्नत वाजिब हो गई, और जिस के लिए तुम ने बुराई की साक्ष्य दी उस पर जहन्नम वाजिब हो गई, तुम धरती पर अल्लाह के गवाह हो।”
79	मुसलमान के ऐब को ढकना	“जो व्यक्ति किसी मुस्लिम से दुनिया की कठिनाइयों में से किसी एक कठिनाई को दूर करता है तो अल्लाह तआला उस से क़ियामत की कठिनाइयों में से एक कठिनाई दूर करेगा, और जो व्यक्ति किसी तंगहाल पर आसानी करता है तो अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उस पर आसानी करेगा, और जिस ने किसी व्यक्ति की बुराई को संसार में छुपाया, तो अल्लाह तआला दुनिया में और क़ियामत के दिन उस पर पर्दा करेगा, और अल्लाह तआला बन्दे की सहायता में होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।
80	आख़िरत को प्रधानता देना	“जिस की फ़िक्र आख़िरत की हो तो अल्लाह तआला उस के दिल में बेनियाज़ी (निःस्पृहता) पैदा कर देता है, और उस की बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठी कर देता है, और दुनिया उस के पास ज़लील हो कर आती है।”
81	वे अमल जिनसे अल्लाह के अर्श के नीचे साया नसीब होगा, जिस दिन उसके सिवाए कोई साया नहीं होगा।	सात किसिम के व्यक्ति हैं जिन्हें अल्लाह तआला क़ियामत के दिन अपने अर्श के साए के नीचे जगह देगा, उस दिन उस साए के सिवाए कोई और साया नहीं होगा : <b>1</b> आदिल इमाम (न्याय-शील शासक), <b>2</b> वह नौजवान जो अल्लाह तआला की इबादत में पला-बढ़ा हो, <b>3</b> वह व्यक्ति जिसका दिल मस्जिद के साथ लटका हूवा हो (अर्थात मस्जिद की ख़ास महबूबत उसके दिल में हो, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तज़ार में बे-करार रहता हो) <b>4</b> वे दो व्यक्ति जो मात्र अल्लाह के लिए महबूबत करते हों, उसी पर वे आपस में इकट्ठे हूए हों, और उसी पर एक दूसरे से बिछड़े हों। <b>5</b> वह व्यक्ति जिसे कोई सुन्दरी और ऊँचे खानदान वाली औरत पाप करने के लिए ब्रूलाए, लेकिन वह उसके जवाब में कहे : मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। <b>6</b> वह व्यक्ति जिसने कोई सदका किया और उसे छिपाया यहाँ तक उसके बाएं हाथ को भी जानकारी नहीं कि उसके दाएं हाथ ने क्या खर्च किया है। <b>7</b> वह व्यक्ति जिसने एकान्त में अल्लाह को याद किया और उसके डर से उसकी आँखों से आँसू उमड पड़े।
82	मग़िफ़रत तलब करना	जिस व्यक्ति ने इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ लिया तो अल्लाह तआला उस की हर तंगी को दूर कर देता है, और हर गुम और फ़िक्र को ख़तम कर देता है, और जहां से उस के गुमान में भी नहीं होता उसे रोज़ी देता है।

## ऐसे काम जिन्हें करना निषिद्ध है

क्र	निषिद्ध कर्म	नबी ﷺ का फरमान
1	लोगों की खातिर कर्म करना	“अल्लाह तआला का फरमान है : मैं साझी बनाने वाले के शिर्क से बेनियाज़ (निःस्पृह) हूँ, जिस ने कोई कर्म किया जिस में मेरे साथ किसी दूसरे को साझी बनाया तो मैं उसे और उस के कर्म को उस के मुंह पर मार देता हूँ।”
2	बाहिरी अच्छाई और भित्री बिगाड़	“मुझे ऐसी कौम के बारे में अवश्य जानकारी है जो कियामत के दिन तिहामा के सफेद पहाड़ों जैसी नेकियां लेकर आएंगे, जिन्हें अल्लाह तआला खाई हुई भूस की तरह कर देगा।” सौबान ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! आप उनकी सिफत हमें बता दिजिए, ताकि हम अवज्ञा के कारण उन में से न हो जाएं, तो आप ने फर्माया : “सुन लो! वे तुम्हारी ही चम्डी वाले तुम्हारी बिरादरी के लोग हैं, और जिस प्रकार तुम रातों में कियाम करते हो वे भी करते हैं, लेकिन वे ऐसे लोग हैं कि जब अकेले में होते हैं तो पाप किया करते हैं।”
3	घमंड	“जन्नत में ऐसा व्यक्ति नहीं जाएगा जिस के दिल में कण बराबर भी घमंड हो” किब्र का अर्थ है : हक का इन्कार करना और लोगों को हकीर समझना।
4	कपड़ा नीचे तक पहनना	पाजामा, कमीज़ और पगड़ी इन सभी में इस्बाल का ऐतिबार होता है, और जिस ने कोई चीज़ घमण्ड करते हुए नीचा करके पहना तो अल्लाह तआला उस की ओर कियामत के दिन नहीं देखेगा।
5	हसद	“तुम हसद से बचो; क्योंकि हसद नेकी इस तरह से मिटा देता है जिस तरह आग लकड़ी को राख बना देती है। या कहा : घास भूस को।”
6	सूद	“नबी ﷺ ने सूद लेने वाले और सूद देने वाले पर ला'नत की है।” “सूद का एक दिहम जिसे आदमी जानते हुए खाता है 36 औरतों से बलात्कार करने से बढ़कर है।”
7	शराबी	“हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में नहीं जाएगा, और न ही मोमिन व्यक्ति जादू के कारण, और न ही नाता तोड़ने वाले जन्नत में जाएंगे।”
8	झूट	“बर्बादी हो उस के लिए जो लोगों को हंसाने के लिए बातें करता है, तो झूट बोलता है, उसका सत्यानास हो, उसका सत्यानास हो”।
9	जासूसी	“जिस ने लोगों की बातें सुनी जब कि लोग उसे नापसंद करते हों या उस से दूर रहते हों तो कियामत के दिन उस के कान में पिघलाया हुआ शीशा डाला जाएगा”।
10	फोटो	“कियामत के दिन सारे लोगों में सब से कठिन अज़ाब फोटोग्राफरों को होगा”। “जिस घर में कूत्ता या फोटो हो उसमें फ़रिश्ते नहीं जाते”।
11	चुगली	“चुगली करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा”। नमीम: का अर्थ है : फूट डालने के लिए लोगों की बातें फैलाना।
12	ग़ीबत	“आप ﷺ ने पूछा : जानते हो ग़ीबत क्या है? लोगों ने कहा : अल्लाह और उसके रसूल अधिक बेहतर जानते हैं, तो आप ﷺ ने फरमाया: तुम्हारा अपने भाई का चर्चा ऐसी चीज़ द्वारा करना जिसे वह नापसंद करता हो। पूछ गया : यदि मेरे भाई में वह कमी हो तो? आप ने फरमाया: यदि उसमें कमी है तो तूने उसकी ग़ीबत की, नहीं तो उस पर इल्ज़ाम लगाया”।
13	ला'नत	“मोमिन को लानत करना उसकी हत्या करने जैसे है”। “ला'नत करने वाले कियामत के दिन सिफारिशी या गवाह नहीं होंगे”।
14	राज़ फैलाना	“कियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बुरा वह व्यक्ति होगा जो अपनी बीवी के पास जाए और बीवी उस के पास फिर वह उस की राज़ को फैला दे”।
15	बुरा कर्म	“कियामत के दिन अल्लाह के यहाँ सब से बुरा व्यक्ति वह है जिसे लोगों ने उस की बुराई से बचने के लिए छोड़ दिया हो”। और “आदम के सन्तान की अधिकतर गलतियां उस की जुबान द्वारा होती है”।
16	मुस्लिम व्यक्ति पर कुफ़ की तुहमत लगाना	“जिस किसी ने भी अपने भाई को कहा : ऐ काफिर! तो वह बात उन में से किसी एक की ओर पलटती है, यदि मुआमल: वैसा नहीं है तो कहने वाले की ओर बात पलट आती है”।



17	<b>दूसरे की ओर निस्वत करना</b>	“जिसने जानबूझकर अपने पिता के बजाय दूसरे की ओर अपनी निस्वत की तो उस पर जन्नत हराम है”। “जिस ने अपने बाप से बेजारी की तो यह कुफ़्र है”।
18	<b>मुसलमान को डराना</b>	“किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि वह किसी दूसरे मुस्लिम भाई को डराए।” “जिस ने किसी मुस्लिम की ओर धार-दार चीज़ से इशारा किया तो फ़रिश्ते उस पर ला'नत करते रहते हैं यहाँ तक कि उसे छोड़ दे”
19	<b>इस्लामी देश में मुस्तामन की हत्या</b>	“जिस ने मुआहद (ग़ैर मुस्लिम जिस के साथ ऐग्रीमेंट हो) का नाहक़ हत्या कर दिया तो वह जन्नत की खुशबू तक नहीं पाएगा जब कि एक साल की दूरी से ही उस की महक़ पाई जायेगी।”
20	<b>औलिया के साथ दुश्मनी</b>	“अल्लाह तआला कहता है : जिस ने मेरे वली से दुश्मनी की तो मैं उस के साथ जंग का एलान करता हूँ।”
21	<b>मुनाफ़िक और फ़ासिक को सरदार बनाना</b>	“मुनाफ़िक को सरदार न कहो; क्योंकि यदि वह सरदार हो जाए तो तुम ने अपने रब को नाराज़ कर दिया।”
22	<b>प्रजा के साथ धोकाधड़ी</b>	“अल्लाह जिसे भी प्रजा की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी देता है, और जिस दिन भी मरता है इस हाल में मरता है कि उसने अपने प्रजा के साथ धोका किया होता है तो अल्लाह उस पर जन्नत को हराम कर देता।”
23	<b>बिना जानकारी के फ़त्वा देना</b>	“जिसे बिना ज्ञान के फ़त्वा दिया गया तो गुनाह फ़त्वा देने वाले के ऊपर होता है।”
24	<b>सुस्ती में जुम्आ या अन्न की नमाज़ छोड़ देना</b>	“जिस ने तीन बार लापर्वाई के कारण जुम्आ छोड़ दिए तो अल्लाह उस के दिल पर मोहर लगा देता है।” “जिस ने अन्न की नमाज़ छोड़ दी उस के कर्म बर्बाद हो गए।”
25	<b>नमाज़ में कोताही करना</b>	“हमारे और काफ़िरों के बीच सीमा नमाज़ है; तो जिस ने नमाज़ छोड़ दी वह काफ़िर हो गया।” “इन्सान और शिर्क के बीच फ़ासला नमाज़ छोड़ना है।”
26	<b>नमाज़ी के सामने से जाना</b>	“नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले को यदि यह पता चल जाए कि उस पर कितना गुनाह है, तो उस के लिए 40 तक बैठे रहना उस के आगे से जाने से बेहतर है।”
27	<b>नमाज़ियों को तक्लीफ़ देना</b>	“जिस ने पियाज़ लहसून और क़ूरस खाई वह हमारी मस्जिद के करीब न आए क्योंकि फ़रिश्तों को उन चीज़ों से तक्लीफ़ होती है जिन से आदम की औलाद को तक्लीफ़ होती है।”
28	<b>ज़मीन हड़प करना</b>	“जिस ने अत्याचारी में एक वित्त ज़मीन हड़पा तो अल्लाह तआला क़्यामत के दिन सात तह ज़मीन का तौक़ उस के ग़ले में डालेगा।”
29	<b>अल्लाह को नाराज़ करने वाली बातें करना</b>	“आदमी अल्लाह की नाराज़गी की बात करता है जिस की वह पर्वा नहीं करता जब कि उस के कारण 70 साल तक जहन्नम में गिरता चला जाता।”
30	<b>बेमतलब की बातें करना</b>	“ऐसी बातें अधिक न करो जो अल्लाह के ज़िक्र से ख़ाली हो, क्योंकि ज़िक्र के सिवाय अधिक बातें दिल की सख्ती का कारण हैं।”
31	<b>बनावटी बातें करना</b>	“अवश्य मेरे पास तुम में से सब से अधिक मबूज़ और मेरी बैठक से दूर वे होंगे जो बनावटी बातें करते हैं, गप हाँकते हैं, और घमंड करते हैं।”
32	<b>अल्लाह तआला के ज़िक्र से गाफ़िल रहना</b>	जो लोग भी किसी सभा में बैठते हैं और उस में अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते और अपने नबी ﷺ पर दरूद नहीं भेजते तो यह सभा उन के लिए अफ़सोस का कारण बनता है, यदि अल्लाह तआला चाहे तो उन्हें अज़ाब दे या माफ़ कर दे।
33	<b>किसी मुसलमान की मुसीबत पर खुश होना।</b>	अपने मुस्लिम भाई के दुःख पर खुश न हो, कि अल्लाह उस पर रहम कर दे और तुम्हें मुसीबत में डाल दे”। और जो कोई किसी को किसी पाप पर जिस से तौबा कर लिया हो शर्मीन्दा करता है तो जब तक उस पाप को न करले उसे मौत नहीं आएगी।
34	<b>मुसलमानों से बातें न करना</b>	किसी मुस्लिम के लिए यह जायज़ नहीं कि अपने मुस्लिम भाई से तीन दिन से अधिक बात न करे, यदि तीन दिन से अधिक बात नहीं करता है और उसी अवस्था में उस की मौत होजाती तो जहन्नम में जाएगा।

35	<b>सरे आम गुनाह करना</b>	मेरी उम्मत के सारे लोग माफ़ कर दिए जाएंगे सिवाय सरे आम पाप करने वाले के।
36	<b>बुरी आदत</b>	बुरी आदत कर्मों को उसी तरह बर्बाद कर देती है, जिस तरह सिरका शहद को।
37	<b>हदूया देकर वापस लेना</b>	“हदूया देकर वापस लेने वाला व्यक्ति कूते की तरह है जो उल्टी कर के उसे चाट लेता है।” “किसी व्यक्ति के लिए यह जायज़ नहीं कि वह हदूया देकर उसे वापस ले।”
38	<b>पड़ोसी का अत्याचार</b>	किसी व्यक्ति का दस औरतों से बलात्कार करने का पाप अपने पड़ोसी की बीवी से बलात्कार करने से कम है, और किसी व्यक्ति का दस घरों से चोरी करने का पाप अपने पड़ोसी के घर से चोरी करने से कम है।
39	<b>हराम चीज़ें देखना</b>	“आदम की संतान पर ज़िना का हिस्सा लिख दिया गया है जिसे वह हर हाल में पा कर रहेगा, आँखें ज़िना करती हैं और उनका ज़िना देखना है, और कानों का ज़िना सुनना है, और ज़ुबान का ज़िना बोलना है, और हाथ का ज़िना पकड़ना है, और पैर का ज़िना चल कर जाना है, और दिल चाहत करता है और तमन्ना करता है, और शरमगाह उसे सत्य कर दिखाती है या झूटला देती है।”
40	<b>किसी व्यक्ति का अजनबी औरत को छूना</b>	किसी व्यक्ति के सर में सूई को चुभाना उस के लिए इस बात से बेहतर है कि किसी अजनबी औरत को छुए जो कि उस के लिए जायज़ नहीं है। “मैं औरतों से मुसाफ़हा नहीं किया करता”।
41	<b>निकाहे शिगार करना</b>	“नबी ﷺ ने शिगार से रोका है।” शिगार यह है कि आदमी अपनी बेटी की शादी इस शर्त पर करे कि दूसरा व्यक्ति अपनी बेटी की शादी करे और दोनों के बीच महर न रखी जाए।
42	<b>मातम करना</b>	“जिस पर मातम किया जाता है वह क़यामत के दिन अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण अज़ाब दिया जाता है।” “मुर्दा अपनी क़ब्र में अज़ाब दिया जाता है अपने ऊपर मातम किए जाने के कारण”
43	<b>गैरुल्लाह की क़सम खाना</b>	“जिस ने गैरुल्लाह की क़सम खाई उसने कूफ़ किया या शिर्क किया।” “जिसे क़सम खानी हो, वह अल्लाह की क़सम खाए या खामोश रहे।”
44	<b>झूटी क़सम खाना</b>	“जिस ने ऐसी क़सम खाई जिस से नाहक मुसलमान व्यक्ति का माल हड़प करे तो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह उस पर गुस्सा होगा।”
45	<b>सौदा में क़सम खाना</b>	“तुम सौदा में अधिक क़सम खाने से बचो; क्योंकि यह सौदे को बेचवाती है, फिर बर्कत मिटा देती है।” “क़सम सौदा बेचवाती है, पर बर्कत मिटा देती है।”
46	<b>काफ़िरों का रूप अपनाने वाला</b>	“जिस ने किसी कौम की रूप अपनाई तो वह उन में से है।” “वह हम में से नहीं जिस ने दूसरों का रूप अपनाया।”
47	<b>क़ब्र पर ता'मीर करना</b>	“नबी ﷺ ने क़ब्रों को चूना लगाने, उस पर बैठने और उस पर इमारत बनाने से रोका।”
48	<b>धोका और ख़यानत</b>	“अल्लाह तआला क़यामत के दिन जब अगलों और पिछलों को इकट्ठा करेगा, तो हर धोकेबाज़ के लिए एक झंडा गाड़ा जाएगा, और कहा जाएगा : यह फ़लां बिन फ़लां का धोका है।”
49	<b>क़ब्र पर बैठना</b>	“यदि तुम में से कोई अंगारे पर बैठे जो उस का कपड़ा जलादे, और उस के चमड़े तक पहुंच जाए, यह उस के लिए बेहतर है क़ब्र पर बैठने से।”
50	<b>जो अपनी स्वागत में लोगों का खड़ा होना पसन्द करता हो</b>	जो व्यक्ति अपने स्वागत में लोगों का खड़े होना पसन्द करता हो तो अपना स्थान नरक बना ले।
51	<b>बिना ज़रूरत के मांगना</b>	“तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन पर मैं क़सम खाता हूँ, और मैं तुम्हें हदीस सुनाता हूँ उसे याद करलो ... और न ही किसी बन्दे ने मांगने का दर्वाज़ा खोला मगर अल्लाह उस पर फ़कीरी का दर्वाज़ा खोल देता है।”

52	<b>सौदे में दलाली करना</b>	“अल्लाह के रसूल ने इस बात से रोका है कि शहरी देहाती के लिए बेचे, और दलाली मत करो, और न ही कोई अपने भाई के सौदे पर सौदा करे।”
53	<b>खोई हुई चीज़ की तलाश के लिए मस्जिद में एलान करना</b>	“जो मस्जिद में किसी व्यक्ति को खोई हुई चीज़ का एलान करता सुने, तो कहे : अल्लाह उसे तुम्हें वापस न मिलाए; इसलिए कि मस्जिदें इस के लिए नहीं बनाई गई हैं।”
54	<b>शैतान के पीछे</b>	“शैतान को गाली मत और उस की बुराई से पनाह चाहो। एक सहाबी कहते हैं कि मैं नबी ﷺ के पीछे सवार था, आप की सवारी फिसली तो मैं ने कहा : शैतान हलाक हो, जिस पर नबी ﷺ ने कहा : यह मत कहो कि शैतान हलाक हो; क्योंकि तुम्हारे यह कहने से वह फूल कर घर जैसा होजाता है, और कहता मेरी शक्ति से ऐसा हुवा, पर यह कहा करो : बिस्मिल्लाह; क्योंकि तुम्हारे यह कहने से वह अपमान हो कर मक्खी जैसा हो जाता है।
55	<b>बुखार को गाली देना</b>	बुखार को गाली मत दिया करो; क्योंकि वह इन्सान के पाप को वैसे ही खतम कर देता है जिस प्रकार भट्टी लोहे की जंग को।
56	<b>गुम्राही की ओर बुलाना</b>	“जिस ने गुम्राही की ओर बुलाया तो उसे उस के अनुसार पाप करने वाले के बराबर गुनाह मिलता है, दोनों के गुनाहों में कुछ भी कमी नहीं होती।”
57	<b>पीने में निषिद्ध चीज़ें</b>	“नबी ﷺ ने मशकीज़: या पानी के बर्तन के मुंह से पानी पीने से रोका है।” “नबी ﷺ ने खड़े होकर पानी पीने से डांटा है।”
58	<b>सोने या चाँदी के बर्तन में पानी पीना</b>	“सोने या चाँदी के बर्तन में पानी न पीओ, और न ही पतले या मोटे रेशम का कपड़ा पहनो, इसलिए कि यह दुनिया में काफ़िरों के लिए है और आख़िरत में तुम्हारे लिए है।”
59	<b>बायां हाथ से पानी पीना</b>	“हरगिज़ तुम में से कोई बाएं हाथ से खाना न खाए और न पानी पिए; क्योंकि शैतान बायां हाथ से खाता पीता है।”
60	<b>रिश्ते काटना</b>	“नाता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।”
61	<b>नबी ﷺ पर दरूद न भेजना</b>	“उस आदमी की नाक मिट्टी में मिले जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दरूद नहीं भेजी।” “बख़ील व्यक्ति वह है जिस के पास मेरा चर्चा हुवा पर उस ने मुझ पर दरूद नहीं भेजी”
62	<b>कुत्ता पालना</b>	“जिस ने कुत्ता पाला सिवाय शिकारी कुत्ता, और जानवर की सुरक्षा करने वाले कुत्ता के तो उस की नेकी में से प्रत्येक दिन दो कीरात की कमी होती है।”
63	<b>जानवरों को सताना</b>	“एक औरत को बिल्ली के कारण अज़ाब हुवा, उस ने उसे कैद किए रखवा यहाँ तक कि मर गई तो उस के कारण वह अज़ाब दी गई।” “जानदार का निशाना न साधो”
64	<b>जानवरों के गले में घंटी लटकाना</b>	“रहमत के फ़रिश्ते उन लोगों के साथ नहीं होते जिन के साथ कुत्ता या घंटी हो।” “घंटी शैतान की बांसूरी है।”
65	<b>अल्लाह के नामों</b>	यदि तुम ऐसा देखो कि अल्लाह तआला किसी को उस के पाप पर संसारिक सुविधाएं दिए जा रहा है, तो वास्तव में यह उसे ढील देना है, फिर इस आयत की तिलावत की : ﴿فَلَمَّا سُوا مَا دُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً ۖ فِذَا هُمْ مُلْسُونَ﴾ “फिर जब वह लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिन की उन्हें नसीहत की जाती थी तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उन को मिली थीं खूब मचल गए तो हम ने उन को अचानक पकड़ लिया, फिर तो वह बिल्कुल मायूस हो गए।”
66	<b>दुनिया को तर्जीह देना</b>	“जिस की फ़िक्र मात्र दुनिया की हो तो अल्लाह तआला उसे लोगों का मुहताज बना देता है, और उस की इकट्टी चीज़ों को बिखेर देता है, और दुनिया से मात्र उसे उतनी ही चीज़ प्राप्त होती है जो उस की तक्दीर में है।”

## सदा के लिए जन्नत या जहन्नम की ओर

●●● **क़ब्र** : क़ब्र परलोक का पहला ठिकाना है, काफ़िर और मुनाफ़िक़ के लिए आग के गढ़े के रूप में, और मोमिन के लिए कियारी होगी। कई एक पाप के कारण वहाँ अज़ाब होगा : जैसे पेशाब से न बचना, चुगली करना, ग़नीमत के माल में ख़यानत करना, झूठ बोलना, नमाज़ के समय सोए रहना, क़ुरआन के अनुसार कर्म न करना, बलात्कार करना, बालमैथुन करना, सूदी कारोबार करना, कर्ज़ वापस न लौटाना इत्यादि। और क़ब्र के अज़ाब से निम्न चीज़ें बचा सकती हैं : नेक कर्म जो कि अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस हो, क़ब्र के अज़ाब से शरण चाहना, सूरतुल मुल्क की तिलावत करना। और इसके अज़ाब से शहीद, जिहाद में पहरा देने वाले, जुम्हा के रोज़ मरने वाले, और पेट की बीमारी में मरने वाले सुरक्षित रखे जायेंगे।

●●● **सूर में फूंक मारना** : वह एक बड़ा कर्न है, जिसे इस्माफ़ील ने मुंह से लगा रखा है, और इस इन्तिज़ार में हैं कि कब उसमें फूंक मारने का आदेश मिले, घबरा देने वाली फूंक : ﴿ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ﴾ "और सूर में फूंक दिया जाएगा तो आकाशों और धरती वाले सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, परन्तु जिसे अल्लाह चाहे।" जिस के बाद पूरी दुनिया बर्बाद हो जाएगी। और 40 दिन के बाद उठाए जाने के लिए सूर में फूंक मारा जाएगा : ﴿ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ﴾ "फिर दोबारा सूर फूंका जाएगा तो वह एकदम खड़े होकर देखने लग जाएंगे।"

●●● **दोबारा जीवित किया जाना** : फिर अल्लाह तआला एक तरह की बारिश बर्साएगा जिस से जिस्म हरे भरे होजाएंगे (रीढ़ की हड्डी से)। और एक नई जीवन होगी जिस में मौत नहीं आएगी। सब नंगे पैर होंगे, शरीर पर कपड़ा न होगा, फ़रिश्तों और जिन्नों को देख सकेंगे, और अपने अपने अमल के साथ दोबारा जीवित किए जाएंगे।

●●● **एकट्ठा किया जाना** : अल्लाह तआला हिसाब किताब के लिए सबों को एक ऐसे बड़े दिन में जो कि 50 हज़ार साल के बराबर होगा इकट्ठा करेगा, लोग घबराए हुए और मदहोश होंगे, उन्हें ऐसा लगेगा कि वे संसार में क़छ क्षण ही रहे थे, सूरज एक मील की दूरी पर कर दिया जाएगा, लोग अपने अपने कर्तूत के अनुसार पसीना में डूब जाएंगे। उस दिन कमज़ोर और घमण्डी लोग लड़ेंगे, काफ़िर अपने साथी, शैतान और उसके एलचियों को अदालत के कटहरे में ला खड़ा करेगा, एक दूसरे को शराप रहे होंगे, अत्याचारी मारे ग़म के अपने हाथों को चबा रहे होंगे। और जहन्नम को 70 हज़ार लगाम के साथ खींचा जाएगा, हर लगाम को 70 हज़ार फ़रिश्ते खींच रहे होंगे। काफ़िर उसे देख कर अपनी जान के बदले छुटकारा की तमन्ना करेगा, या फिर वह मिट्टी हो जाने की आर्जू करेगा। और पापी लोगों का हाल यह होगा: ज़कात के इन्कारियों के धन को आग की तख़ती बना दी जाएगी, जिस से उन्हें दागा जाएगा। घमण्डियों को चिंवटियों की तरह इकट्ठा किया जाएगा, धोके बाज़, खाइन और ग़ासिब रुस्वा किए जाएंगे। चोर अपनी चोरी के धन को ला हज़िर करेंगे, सारी भेदें ख़ुल जाएंगी। पर नेक लोगों को घब्राहट नहीं होगी। वह दिन उन पर जुह की नमाज़ की तरह बीत जाएगा।

●●● **शिफ़ाअत** : महान शफ़ाअत नबी ﷺ के लिए ख़ास है, यह शफ़ाअत आप महशर के दिन लोगों से कष्ट दूर करने और उनका हिसाब करने के लिए करेंगे। और साधारण शफ़ाअत दूसरे नबी और सदाचारी व्यक्ति करेंगे जो कि मोमिनों को जहन्नम से निकालने और उनके दर्जे उच्च करने के लिए होंगे

●●● **हि़साब** : लाइन के लाइन लोगों की पेशी उनके रब के सामने होगी, वह उन्हें उनके कर्मों को देखाएगा और इसके बारे में पूछेगा, उन की उम्र, जवानी, धन, ज्ञान, वचन के बारे में सवाल करेगा, और आंख, कान तथा दिल की नेमतों के बारे में प्रश्न करेगा। काफ़िरों और मुनाफ़िकों का हि़साब उन्हें डांट पिलाने और उन पर दलील कायम करने के लिए सारे आम लोगों के सामने होगा, और उन के विरोध में लोग, धरती, दिन, रात, धन दौलत, फ़रिश्ते, और स्वयं उन के साक्षि देंगे, यहाँ तक कि उन का अपराध प्रमाणित हो जाएगा और वे इफ़्कार कर लेंगे। और मोमिनों के साथ अल्लाह तआला अकेले में सोध पूछ करेगा, और उन से इफ़कारे ज़ुर्म कराएगा, यहाँ तक कि जब वह यह सोचने लगेगा कि बर्बाद हो गया तो अल्लाह तआला कहेगा : “मैं ने संसार में तुम्हारे इन पापों पर परदा डाल दिया था, और आज तुम्हारे लिए इन्हें क्षमा कर देता हूँ। और सब से पहले मुहम्मद ﷺ की उम्मती का हि़साब होगा, और सब से पहले नमाज़ का हि़साब होगा, फिर खून के बारे में फैसला होगा।

●●● **सहीफ़ों का उडना** : फिर सहीफ़े उड़ेंगे, और लोग अपने अपने कर्मपत्र लेंगे, जो कि हर छोटी बड़ी चीज़ को घेरे होगी। ﴿لَا يَأْتِيهِمْ فِيهَا سَمْعٌ وَلَا بَصِيرَةٌ وَلَا يَأْتِيهِمْ فِيهَا الْهَدْيُ﴾ **मोमिन अपने कर्मपत्र को बाएं हाथ से लेगा, जबकि काफ़िर पीठ पीछे अपने बाएं हाथ में लेंगे।**

●●● **तराजू** : फिर लोगों को बदला देने के लिए हकीकी तराजू में उनके कर्मों को तौला जाएगा, जो कि बहुत ही बारीकबी होगी, उसके दो पलड़े होंगे। उन कर्मों को भारी कर देगा जो ख़ालिस अल्लाह के लिए शरीअत के अनुकूल होंगे। जिन कर्मों को वह वजनी करेगा वह हैं : लाइलाह इल्लल्लाह, अच्छे आचरण, और जि़क़्र जैसे : अल्लहुम्मु लिल्लाह, और सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल्ल अज़ीम। और लोगों की अच्छाइयों और बुराइयों का निर्णय करेगा।

● **हौज़** : फिर मोमिन हौज़ के पास आएंगे, जो उस में से एक बार पानी पी लेगा कभी पियासा न होगा, और हर नबी का हौज़ ख़ास होगा, पर उसमें सब से बड़ा हमारे नबी ﷺ का होगा, उस का पानी दूध से उजला होगा, मधु से मीठा होगा, उस की सुगन्ध कस्तूरी से अधिक होगी, उसके बर्तन सोने और चाँदी के होंगे सितारों की संख्या में। उस की लम्बाई जार्डन में ऐला नामक जगह से लेकर अदन से अधिक होगी, और उस का पानी कौसर से आएगा।

●● **मोमिनों का परीक्षा** : हशर के अन्तिम दिन काफ़िर अपने भगवानों के पीछे हो लेंगे जिन्हें उन्होंने पूजा था, तो वे उन्हें झूंड के झूंड जानवरों के गोल की तरह पैरों के बल या चेहरों के बल जहन्नम में पहुंचा देंगे। और मात्र मोमिन और मुनाफ़िक बच जाएंगे, तो उनके पास अल्लाह तआला आएगा और पूछेगा : “किसके इन्तिज़ार में हो?” वे कहेंगे : “हम अपने रब का इन्तिज़ार कर रहे हैं”। तो जब वह अपनी पिंडली खोलेगा तो उसे पहचान लेंगे। और सारे सज्दे में गिर पड़ेंगे सिवाय मुनाफ़िकों के, अल्लाह तआला फ़र्माता है : ﴿يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ﴾ **“जिस दिन पिंडली खोल दी जाएगी और सज्दे के लिए बोलाए जाएंगे तो सज्दा न कर सकेंगे”**। फिर वे अल्लाह के पीछे पीछे चलेंगे, वह सिरात (पुल) लगाएगा, और उन्हें नूर देगा, पर मुनाफ़िकों का नूर बुझ जाएगा।

● **स्त्रिअत (पूल)** : यह पूल है जो कि जहन्नम पर बना होगा, ताकि मोमिन इस से पार करके जन्नत की ओर जाएं, इस की सिफ़त में नबी ﷺ का फ़रमान है : “यह माएल होने और फिसलने की जगह है, जिस पर कांडे और टेढ़े सर वाली लोहे की सलाई होंगे, सादान के कांटे की तरह, जो कि बाल से पतला, और तलवार से तेज़ होगा।” और उस जगह प्रत्येक मोमिन को अपने अपने कर्म के हि़साब से नूर दिया जाएगा, सब से ऊँचा पहाड़ की तरह होगा, और सब से कम इन्सान के अंगूठे के किनारे में होगा। उनके लिए रौशनी होगी तो अपने कर्मों के हि़साब से पार कर ले जाएंगे। कुछ मोमिन पलक झपकते ही पार कर जाएंगे, और कुछ बीजली की तरह, कुछ हवा की तरह, कुछ पक्षी की तरह, कुछ अच्छे घोड़े और सवारी

की तरह, तो कुछ लोग सहीह सालिम बच जाएंगे, और कुछ छोड़ दिए जाएंगे और उन्हें खरोच लगे होंगे और कुछ जहन्नम में गिरे पड़े होंगे। परन्तु मुनाफ़िकों के पास रौशनी न होगी, वह लौटेंगे फिर उनके और मोमिनों के बीच दीवार खड़ी कर दी जाएगी, फिर वे पुल पार करना चाहेंगे तो जहन्नम में गिर जाएंगे।

●● **जहन्नम** : इसमें काफ़िर जाएंगे, फिर कुछ पापी मुसलमान, फिर मुनाफ़िक, हर 1000 में से 999 जहन्नम में जाएंगे, उसके 7 दरवाज़े होंगे, संसार की आग से 70 गुना अधिक होगी। अधिक सजा के लिए काफ़िर की डील बढ़ा दी जाएगी, उसके दोनों मोंदों के बीच की दूरी 3 दिन की होगी, और दांत उहद पहाड़ की तरह, चम्डा मोटा होजाएगा और उसे बदला जाएगा ताकि अजाब चखे, उनके लिए जल गरम पानी होगा, जो अंतड़ियों को काट देगा, और खाना थूहड़, पीप और खून होगा, सब से कम सजा वाला व्यक्ति वह होगा जिस के दोनों पैरों के नीचे अंगारे होंगे जिस से उस का दिमाग खौल रहा होगा। उसमें उनके चमड़े पकेंगे, गलेंगे, चेहरे झूलसेंगे, घसेटे जाएंगे, पैरों में बेड़ीयां होंगी, गले में तौक होंगे। उस की गहराई बहुत अधिक होगी यदि उस में कोई बच्चा डाला जाए तो उस की तह तक पहुंचने में 70 साल लगेगा। उसके इंधन काफ़िर और पत्थर होंगे, हवा गरम होगी, काले धुंए का साया होगा, पोशाक आग का होगा, वह प्रत्येक वस्तु को खा जाएगा किसी को छोड़ेगा नहीं, वह क्रोध से झिंझलाएगा और चिल्लाएगा, चमड़ो को जला देगा, और हड्डियों और दिलों तक पहुंच जाएगा।

● **कन्तर** : आप ﷺ ने फरमाया: “मोमिन जहन्नम से छूटकारा पाएंगे तो जन्नत और जहन्नम के बीच कन्तर: पर रोक लिए जाएंगे, और उस अत्याचार का तस्फ़िया किया जाएगा जो उन्होंने ने संसार में किया था, यहाँ तक कि जब अपने सारे पाप से साफ़ सूथरा होजाएंगे तो उन्हें जन्नत में जाने की अनुमति दे दी जाएगी, तो उस हस्ती की कसम जिस के हाथ में मेरी जान है उन में से हर कोई अपने दुनिया के घर से अधिक जन्नत के घर के बारे में जानता होगा।”

● **जन्नत** : मोमिनों का ठिकाना, उसकी ईंट सोने और चाँदी की होगी, और गारा कस्तूरी का, उस की कंकरियां मोती और लाल के होंगे, उस की मिट्टी जा'अफ़रान की होगी। उस के 8 गेट होंगे, प्रत्येक गेट की चौड़ाई 3 दिन की मसाफ़त बराबर होगी, जो कि भीड़ के कारण तंग पड़ जाएंगे। उस में 70 दर्जे होंगे हर 2 दर्जे के बीच की दूरी आकाश और धरती जितनी होगी। फ़िर्दौस सब से ऊपरी मंजिल होगी, और यहीं से नहरें बहेंगे, उस की छत रहमान का अर्श होगा, उस की नहरें शहद, दूध, शराब और पानी की होंगी, जो बिना खोदाई के बहेंगी, मोमिन जिस तरफ़ चाहेगा उसे बहा लेजाएगा। उसके मेवे हमेशगी के लिए हैं, करीब और झुके होंगे। उस का खेमा मोती का होगा, उस की चौड़ाई 60 मील होगी, उस के हर कोने में रहने वाले होंगे, जो सुन्दर होंगे जिन की शरीर और चेहरे पर बाल न होगा, आँख सूर्मई होंगी, न उनकी जवानी ढलेगी न कपड़े पुराने होंगे, उन्हें न तो पेशाब आएगा, न पाखाना न थूक और खकार, उनकी कंधी सोने की होगी, और पसीने की महक कस्तूरी जैसी होगी, जन्नती औरते हसीन क़ुवारी कन्या होंगी, जो कि महबूबा और हम उम्र होंगी, सब से पहले नबी ﷺ जाएंगे और सारे नबी। कन्तर दर्जे के जन्नती को उस की ख़ाहिश से दस गुना अधिक दिया जाएगा। उनके नौकर लड़के होंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, बिखरे हुए मोतियों की तरह। और जन्नत की सब से महान नेमत होगी अल्लाह तआला को देखना, उस की खूशी और उस में हमेशा रहना।

**नोट** : यह महान घटनाएं जिन से होकर ●मोमिन, ●मुनाफ़िक और ●काफ़िर गुज़रेंगे, लगातार होंगे यहाँ तक कि हर कोई अपने अन्तिम ठिकाने तक पहुँच जाएगा।

# वुजू का तरीका



वुजू के बिना नमाज़ स्वीकार नहीं की जाती, वुजू के लिए पाक पानी का होना ज़रूरी है, पाक पानी वह जो अपनी असली हालत पर बाकी हो, जैसे समुन्दर का पानी, कुंवा, चश्मा और नहर का पानी।

**नोट:** थोड़ा पानी मात्र नापाकी पड़ने से ही नापाक हो जाता है, अलबत्ता ज़्यादा पानी जो कि 210 लिटर से अधिक हो, तो जब तक नापाकी पड़ने के कारण उसके रंग, या मज़ा या बू में परिवर्तण न आजाए वह नापाक नहीं होता।



बिस्मिल्लाह कह कर वुजू शुरू करें, वुजू करते समय दोनों हथेलियों का धोना मुस्तहब है, अलबत्ता ऐसे व्यक्ति पर जो रात की नींद से जगे तो उस पर इन्हें 3 बार धोना ज़रूरी हो जाता है।

**नोट:** वुजू के अंगों में से किसी भी अंग को तीन बार से अधिक धोना मकरूह है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार कुल्ली करे, जबकि 3 बार करना अफज़ल है।

**नोट:** 1- मात्र मुंह में पानी डालने और निकालने से कुल्ली नहीं हो जाती, बल्कि मुंह में पानी को घुमाना ज़रूरी है।

2- कुल्ली करते समय मिस्वाक करना मुस्तहब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार नाक में पानी डाले। पर 3 बार डालना अफज़ल है।

**नोट:** मात्र नाक में पानी डाल लेना काफी नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि सांस द्वारा पानी खींचे और सांस द्वारा ही झाड़ कर निकाले। ऐसा 1 बार करना वाजिब है, और 3 बार करना अफज़ल है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार चेहरा धोए, पर 3 बार धोना अफज़ल है। चेहरा धुलने की वाजिबी सीमा यह है : चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक, और लम्बाई में ठुड़ी से लेकर आम तौर पर सर के बाल निकलने की जगह तक।

**नोट:** धनी दाढ़ी का खिलाल करना मुस्तहब है, और यदि हल्की हो तो वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार दोनों हाथों को उँगलियों के किनारे से लेकर कोहनियों तक धोए, पर 3 बार धोना अफज़ल है।

**नोट:** बायां हाथ से पहले दायां हाथ को धुलना मुस्तहब है।



फिर पूरे सर का मसह करे, और शहादत की उँगलियों को दोनों कानों में डाले, और अंगूठे से कान के बाहरी भाग का मसह करे। यह सब कुछ मात्र 1 बार करे।

**नोट:** 1- चेहरे की सीमा से लेकर गुदी तक सर का मसह करना वाजिब है। 2- गुदी से नीचे के बालों का मसह करना वाजिब नहीं है। 3- सर पर बाल न हों तो चम्ड़े का मसह करेंगे। 4- दोनों कानों के पीछे की सफ़ेदी का मसह करना वाजिब है।



फिर वाजिबी रूप से 1 बार टखने समेत दोनों पैर धोए, पर 3 बार धोना अफज़ल है।

## चेतावनियाँ :

- 1 वुजू के अंग 4 हैं : 1- कुल्ली करना, नाक में पानी डालना और चेहरा धोना। 2- दोनों हाथों को धोना। 3- सर और दोनों कानों का मसह करना। 4- टखने समेत दोनों पैरों को धोना। इन अंगों के बीच तरतीब वाजिब है, और इसमें आगे पीछे करने से वुजू बातिल होजाता है।
- 2 लगातार धोना वाजिब है, यदि एक अंग के बाद दूसरा अंग धोने में इतनी देरी होजाए कि पहला अंग सूख जाए तो वुजू बातिल होजाएगा।
- 3 वुजू के बाद यह दुआ पढ़ना सुन्नत है : अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व्हदहू ला शरीक लह, व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुह।

## नमाज़ का तरीका



जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़ने की इच्छा करे तो सीधे खड़े होकर तक्बीरतुल एहराम **“अल्लाहु अक्बर”** कहे, मुक्तदी को सुनाने के लिए इमाम तक्बीरतुल इहाम और बाकी सारी तक्बीरों को जोर से कहे, और बाकी नमाज़ी धीमी आवाज़ से कहें। तक्बीर कहते हुए दोनों कन्धों तक रफउल् यदैन करे, उंगलियाँ आपस में मिली हुई हों। इमाम के तक्बीर कह लेने के बाद मुक्तदी तक्बीर कहे।

**नोट :** अरकान और वाजिबी अक्वाल को जिस कदर नमाज़ी अपने आप को सुना सके उतनी मिक्दार में जह यानी जोर से कहना वाजिब है, चाहे सिरि ही नमाज़ क्यों न हो। और कमतर जह ये है कि दूसरा व्यक्ति सुन ले। और कमतर सिरं ये है कि स्वयं सुन ले।



दाहने हाथ द्वारा बायां हाथ की हथेली या कलाई पकड़े, और उसे अपने सीने पर बांध ले, नज़र सज्दे की जगह पर गड़ाए रहे, फिर धीमी आवाज़ में कोई एक दुआ-ए-सना पढ़े, जैसे: **سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ**

**“सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहमिदक व तबारकस्मुक व तआला जहुक व लाइलाह गैरुक”** फिर अऊजु बिल्लाह पढ़े, फिर बिस्मिल्लाह पढ़े, फिर सूरतु-ल-फ़ातिहा पढ़े, जही नमाज़ों में मुक्तदी पर किराअत करना वाजिब नहीं है, पर इमाम के सकतों में, और जिन में जह से किराअत नहीं है उनमें फ़ातिहा पढ़लेना मुस्तहब है, (सहीह हदीस की रू से हर नमाज़ की हर रकअत में फ़ातिहा पढ़ना वाजिब है मुतर्जिम) फिर कोई और सूरत मिलाए, इमाम फ़ज़्र की नमाज़ में और मग़्िब और इशा की पहली दोनों रकअतों में जह से किराअत करे बाकी नमाज़ों में सिरि किराअत करे।

**नोट :** सूरतों को क़ुआन की तर्तीब के मुताबिक पढ़ना मुस्तहब है, जबकि तर्तीब को उलट देना मेरूह है। और कल्मे की तर्तीब को पलट देना या एक ही सूरत की आयतों की तर्तीब को पलट देना हराम है।



फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहे, तक्बीरतु-ल-इहाम में रफउ-ल-यदैन करने की तरह रफउ-ल-यदैन करे, और रुकुअ में जाए, दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर इस तरह रखे गोया कि उन्हें पकड़े हुए है, उँगलियों को फैलाए रहे, पीठ को फैलाए और उसी की बराबरी में सर रखे, फिर 3 बार **“सुब्हान रब्बिय-ल-अज़ीम”** कहे, यह बात ध्यान में रहे कि रुकुअ मिल जाने से रकअत मिल जाती है।

**नोट :** तक्बीराते इन्तिकाल और तस्मीअ अर्थात : **“अल्लाहु अक्बर”** और **“समिअल्लाहु लिमन् हमिदह”** कहने का समय एक रुकन 1/4अवस्था1/2 से दूसरे रुकन 1/4अवस्था1/2 के लिए जाने के बीच है न कि उस से पहले या बाद में, और यदि कोई जानबूझकर इन्हें कहने में देरी करे तो उसकी नमाज़ बातिल हो जाएगी।



फिर **“समिअल्लाहु लिमन् हमिदह”** कहते हुए सर उठाए, तक्बीरतु-ल-एहराम में रफउ-ल-यदैन करने की तरह रफउ-ल-यदैन करे, जब सीधा खड़ा हो जाए तो **“रब्बना व लक-ल-हम्दु हम्दन् कसीरन् तैइबन् मुबारकन् फ़ीहि मिल्अ-स्-समावाति व मिल्अ-ल-अर्ज़ि व मिल्अ माबैनुहुमा व मिल्अ मा शिअत मिन शैइ-म्-बा'द”** पढ़े।

**नोट :** **“रब्बना व लक-ल-हम्दु ...”** कहने का समय सीधे खड़े होजाने के बाद है न कि रुकुअ से उठने के बीच में।



फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहते हुए सज्दे में जाए, और अपने दोनों बाजूओं को पहलू से, और पेट को दोनों रानों से हटाए रखे, और दोनों हाथों को कंधों की बराबरी में रखे, दोनों पैरों के किनारों को धरती से लगाए रखे, हाथ और पैर की उँगलियों को काबे की ओर करे, फिर 3 बार **“सुब्हान रब्बिय-ल-आअला”** कहे।

**नोट :** इन सात अंगों पर सज्दा करना वाजिब है : दोनों पैरों के किनारे, दोनों घुटने, दोनों हथेलियाँ और नाक के साथ पेशानी। जानबूझकर बिना उज़्र के किसी भी एक अंग पर सज्दा न करने से नमाज़ बातिल होजाती है।





फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहते हुए सर उठाए, और बैठे, दोनों सज्दों के बीच बैठने का 2 सहीह तरीका है : ① अपना बायां पैर बिछा कर उस पर बैठ जाए, दायां पैर खड़ा रखे, और उँगलियां काबे की ओर मोड़ ले। ② दोनों पैरों को खड़ा ले, उँगलियों को काबा की ओर मोड़ ले, और ऐड़ी पर बैठे, और 3 बार **“रब्बिफर्ली”** कहे, और चाहे तो यह दुआएं भी मिलाए, **“वर्हम्नी, वज्जुनी, वर्फअनी, वर्जुकनी, वन्सुनी, वल्दिनी, व आफिनी, वअफु अन्नी”**, फिर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे, फिर **“अल्लाहु अक्बर”** कहते हुए सर उठाए, और दोनों पैरों के पंजों पर सहारा लेते हुए खड़ा हो जाए, और पहली रकअत की तरह दूसरी रकअत पढ़े।

**नोट :** सुरतुल फातिहा को क्याम में पढ़ा जाएगा, यदि पूरी तरह से खड़ा होने से पहले पढ़ना शुरू कर दिया, तो खड़े होने के बाद उसे दोहराना जरूरी है नहीं तो नमाज़ बातिल होजाएगी।



दूसरी रकअत पढ़ कर तशह्हुद के लिए उसी तरह बैठे जिस तरह दोनों सज्दों के बीच बैठा था, और अपने बाएं हाथ को बाएं जांघ पर, और दाएं को दाएं जांघ पर रखे, दाएं की दोनों किनारे वाली उँगलियों को मोड़ले, अंगूठे और बीच वाली उँगली का गोल घेरा बना ले, और शहादत की उँगली से इशारा करता रहे, और तहीयात पढ़े :  
التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ. أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

**“अत्तहियातु लिल्लाहि वससलावतु वत्तैइबातु अस्सलामु अलैक ऐयुहन्नबियु व रस्मतुल्लाहि व बरकातुह, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहु व रसूलुह”**। फिर तीसरी और चौथी रकअत वाली नमाज़ में **“अल्लाहु अक्बर”** कहते हुए तीसरी रकअत के लिए उठे, और रफ़उ-तू-यदैन करे, और चौथी रकअत के लिए उठते हुए रफ़उ-तू-यदैन न करे, पहली रकअत ही की तरह तीसरी और चौथी रकअत भी पढ़े, लेकिन इन्में पस्त आवाज़ से मात्र सरतुल फातिहा पढ़े।



फिर अन्तिम तशह्हुद के लिए तवरुक करके बैठे, तवरुक के कई एक तरीके हैं जो कि सहीह हैं : ① बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को खड़ा रखे, और धरती पर बैठे। ② बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के पिंडली के नीचे से निकाल ले, दाएं पैर को सुलादे, और धरती पर बैठे। ③ बायां पैर बिछाकर उसे दायां पैर के नीचे से पिंडली और जांघ के बीच से निकाल ले, और धरती पर बैठे। मात्र अन्तिम तशह्हुद में तवरुक करना सुन्नत है, फिर तहीयात पढ़े :  
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ ... **“अत्तहियातु लिल्लाहि ...”**, फिर दरुद पढ़े :  
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

**“अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि-व-अला आलि मुहम्मद, कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदि-व-अला आलि मुहम्मद, कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद,”** और यह दुआ पढ़े :  
اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَشَرِّ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ  
**“अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बिक मिन् अज़ाबिल्कब्रि व अज़ाबिन्नारि व फित्ति-तू-मह्या वल्ममाति व शरि-तू-मसीहिदज्जालि”** और दूसरी साबित दुआएं भी पढ़ना सुन्नत है।



फिर दोनों ओर सलाम फेरे, पहले दाएं ओर चेहरे को करते हुए **السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ** **“अस्सलामु अलैकुम व रस्मतुल्लाह”** कहे और इसी तरह बाएं ओर करते हुए भी। जब सलाम फेर ले तो अपनी जगह पर बैठे हुए नबी ﷺ से साबित दुआएं पढ़े।

## ज्ञान अनुसार कर्म की अनिवार्यता

वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न हो, अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनो के यहाँ निहित है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَعْمَلُونَ ۗ كَرِهَ اللَّهُ عِبْدًا قَائِلِينَ أَن يَقُولُوا مَا لَا تَعْمَلُونَ﴾

“हे मोमिनो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं, तुम जो करते नहीं उस का कहना अल्लाह को सख्त नापसंद है। अबू हुदैर: رضي الله عنه कहते हैं : “वह ज्ञान जिसके अनुसार कर्म न किया जाए उस खजाने की तरह है जिसे अल्लाह के रास्ते में खर्च न किया जाए”।

और फुजैल रहिमुहल्लाह कहते हैं : “ज्ञानी उस समय तक जाहिल रहता है जब तक उसके अनुसार कर्तव्य न करे”। और मालिक बिन दीनार कहते हैं : “तुम ऐसे व्यक्ति से मिलोगे जो एक अक्षर में भी गलती नहीं करता, लेकिन उसका सम्पूर्ण कर्म ग़लती से भरा होगा”।

मुसलमान भाईयो  
और बहनो !

अल्लाह तआला ने आप के लिए इस लाभ-दायक किताब को पढ़ना आसान कर दिया, पर इस पढ़ाई का फल अभी बाकी है, और वह है इसके अनुसार कर्म करना।

■ इस किताब में आप ने कुरआनी आयतों और उनकी तफ़सीर पढ़ीं, आप ने इन से जो कुछ भी सीखा है उस के अनुसार कर्म करने की कोशिश करें; क्योंकि सहाबए किराम رضي الله عنهم “नबी ﷺ से दस आयतों सीखा करते थे, फिर दूसरी दस आयतों उस समय तक नहीं सीखते जब तक कि पहली आयतों का ज्ञान न होजाए और उनके अनुसार कर्म न कर लें, वह कहते हैं : हम ने ज्ञान और कर्म दोनों को एक साथ सीखा”। जैसा कि शरीअत ने हमें इस पर उभारा है, इब्ने अब्बास इस आयत : ﴿يَسْأَلُونَكَ حَتَّىٰ تَلَاوَنَهُ﴾ “वे उसे पढ़ने के हक़ के साथ पढ़ते हैं” की तफ़सीर में कहते हैं : जैसा अनुसरण करना चाहिए वे वैसा ही उसका अनुसरण करते हैं। और फुजैल कहते हैं : कुरआन कर्म करने के लिए उतरा लेकिन लोगों ने उस की तिलावत को कर्म बना लिया।

■ आप ने नबी ﷺ की हदीसों भी पढ़ीं, जिन्हें अपनाने और उनके अनुसार कर्म करने के लिए आप जल्दी कीजिए; क्योंकि इस उम्मत के नेक लोग जो कुछ भी पढ़ते थे उसके अनुसार अपनी जीवन को ढालने और उसकी ओर बुलाने में जल्दी करते थे आप ﷺ की इस हदीस की पैरवी करते हुए : “यदि मैं तुम्हें किसी चीज़ का आदेश दूँ तो शक्ति भर उसे बजा लाओ, और किसी चीज़ से रोकूँ तो उस से रुक जाओ”। 1/4बुखारी एवं मुस्लिम/2 और अल्लाह तआला की सज़ा से डरते हुए जैसा कि उसने फ़रमाया :

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ “सुनो जो लोग उसके 1/4अल्लाह के रसूल के 1/2 आदेश का विरोध करते हैं, उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त न आ पड़े, या उन्हें कोई दुःख की मार न पड़े।” और यह है इस के कुछ उदाहरण :

▶ उम्मुल् मोमिनीन उम्मे हबीबा رضي الله عنها नबी ﷺ की यह हदीस रिवायत करती हैं : “जिस ने दिवा तथा रात्री में 12 रकअत नमाज़ पढ़ी, तो इनके बदले उस के लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है”। उम्मे हबीबा رضي الله عنها कहती हैं जब से मैं ने यह हदीस सूनी इन्हें नहीं छोड़ा।

▶ इब्ने उमर رضي الله عنهما इस हदीस को : “मुसलमान का कोई भी हक़ न हो जिस की वह वसीयत करना चाहता हो, तो उस पर तीन रातों न आएँ मगर उस की वसीयत लिखी हुई हो”।

रिवायत करते हैं, और कहते हैं : जब से मैं ने अल्लाह के रसूल से यह हदीस सुनी मुझ पर कोई भी रात ऐसी नहीं बीती कि मेरी वसियत लिखवी न हो।

► इमाम अहमद रहमते कहते हैं : “मैं ने जो भी हदीस लिखवी उस के अनुसार कर्म किया, यहाँ तक कि मुझ पर यह हदीस गुज़री कि नबी ﷺ ने सिंघी लगवाई और अबू तैबा को एक दीनार दिया, तो मैं ने भी जिस समय सिंघी लगवाई सिंघी लगाने वाले को एक दीनार दिया”।

► इमाम बुखारी रहमते कहते हैं : “जिस समय से मुझे गीबत के हराम होने का ज्ञान हुआ, मैं ने किसी की गीबत नहीं की, मुझे अवश्य उम्मीद है कि अल्लाह से मैं इस हालत में भेंट कसंगा कि किसी की गीबत करने पर वह मेरा मुहासबा नहीं करेगा।”

► हदीस में आता है : “जिस ने हर नमाज़ के बाद आयतुल् कुर्सी पढ़ी उसे जन्नत में जाने से मात्र उस की मौत ही रोक सकती है”। इब्नुल् कैइम रहमते कहते हैं : “मुझे शैखुल् इस्लाम के इस कथन का पता चला है कि मैं ने किसी भी नमाज़ के बाद इसे पढ़ना नहीं छोड़ा सिवाय इस के कि मैं भूल गया हूँ या इस तरह की कोई और बात होगई हो”।

■ इल्म प्राप्त करने और उस के अनुसार कर्म करने के बाद तुम पर ज़रूरी है कि उस की ओर लोगों को बोलाओ, और अपने आप को सवाब से और दूसरों को भलाई से महरूम न करो। नबी ﷺ ने फ़रमाया : “भलाई की ओर बुलाने वाले को उस पर कर्म करने वाले के बराबर सवाब मिलता है”। और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया : “तुम में श्रेष्ठ वह है जिस ने कुरआन का ज्ञान सीखा और सिखाया”। और आप ने फ़रमाया : “मेरी ओर से लोगों तक पहुँचा दो चाहे एक आयत ही क्यों न हो”। इसलिए जितना ही तुम भलाई को फैलाओगे उतनाही तुम्हारे सवाब में बढ़ौतरी होगी, और जीवन में तथा मौत के पश्चात भी तुम्हारी नेकियाँ जारी रहेंगी। नबी ﷺ ने फ़रमाया : “जब इन्सान मर जाता है तो उस के कर्म ख़तम होजाते हैं सिवाय तीन चीज़ों से : सदका जारिया से, ऐसे ज्ञान से जिस से लाभ उठाया जा रहा हो, या नेक औलाद से जो कि उस के लिए दुआ करे”।

**प्रकाश :** प्रत्येक दिन हम 17 बार से अधिक सुरतुल् फ़ातिहा पढ़ते हैं, इस के द्वारा हम उन लोगों से पनाह मांगते हैं जिन पर अल्लाह का क्रोध हुआ तथा जो गुम्राह थे, परन्तु हम उन्हीं जैसा कर्म करते हैं, इल्म सीखते नहीं और जिहालत जैसा अमल करते हैं, और इस प्रकार हमारा कर्म गुम्राह नसारा जैसा हो जाता है, या इल्म सीखते हैं पर कर्म नहीं करते, और हम धिक्कारित यहूदियों की छवि अपना लेते हैं।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें लाभ-दायक ज्ञान, और नेक कर्म से नवाज़े।

अल्लाह और उस के रसूल अधिक बेहतर जानते हैं, और दरूद तथा सलाम नाज़िल हो हमारे सरदार और हबीब मुहम्मद पर और उनके परिवार-परिजन और सारे सहाबा (साथियों) पर।



w w w . t a f s e e r . i n f o

ISBN : 978-603-90056-2-9